डॉ. साध्वी रत्नत्रयी : एक परिचय

नाम साध्वी रत्नत्रयी - तीन तन, एक मन
डॉ ज्ञानलताजी म सा
डॉ दर्शनलताजी म सा

समता-वाणी

छतरमल के मासखमण की तपस्या
सुशीला देवी के 36 की तपस्या
के उपलक्ष मे बगडिया परिवार की
तरफ से सप्रेम भेंट। २८-८-०

संकलन-सम्पादन

मुनि ज्ञान

संकलन-सम्पादन-सहयोग

प्रकाश मुनि

मंत्र विभाग-संकलन-सम्पादन

पंडित ज्ञानदत्त पाण्डेय आचार्य

प्रकाशक :
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, बीकानेर (राज.) 334005

- समता वाणी
- सकलन-सम्पादन मुनि ज्ञान/मुनि प्रकाश
- प्रथम सस्करण 5000 प्रतिया
- अर्थ सहयोगी
  श्री गोपालजी भूरा आत्मज श्रीमान दीपचन्दजी सा भूरा ,
- प्रकाशक
  श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ
  समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर-334005
- मूल्य 20/-
- टाईप सैटिग . टेक्नोक्रेट, उदयपुर
- मुद्रक ·
  अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
  बीकानेर दूरभाष 547073

प्रकाशकीय

स्वाध्यायियो, आत्मलक्षी-साधको एव सुज्ञ पाठको के हाथो मे **''समता-वाणी''** प्रस्तुत करते हुए हर्षानुभूति हो रही है, क्योकि काफी वर्षो से ऐसे ग्रथ की माग बनी हुई थी। सत्साहित्य के प्रकाशन हेतु कृत-सकल्प श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ का सदैव यही प्रयास रहा है कि धर्मानुष्ठान, सस्कार जागरण, स्वाध्याय, चितन, मनन एव स्व-भाव से जोडने वाला साहित्य अनवरत् प्रकाशित होता रहे। आगम, सूत्र, स्तोक, प्रवचन, काव्य, ध्यान, उपन्यास-कहानी, चितन आदि से सबधित सघ द्वारा अब तक लगभग 200 पुस्तको का प्रकाशन स्वय मे एक कीर्तिमान व ''मील का पत्थर'' है।

वर्तमान युग मे वैज्ञानिक एव तकनीकी विकास से साधन-सुविधाओ का अम्बार लगा हुआ होने पर भी मानव आज अशात, त्रस्त, तनावग्रस्त है तथा वास्तविक सुख से मुखातिब नहीं हो पा रहा है, क्योकि वह सुख की खोज बाहर कर रहा है, जबकि अनन्त, चिरतन व स्थायी सुख उसके भीतर विद्यमान है। वह भीड मे अकेला व अकेले मे भीड है। ऐसी स्थिति मे आवश्यकता है भीतर प्रवेश करने की एव स्वय से जुडने की। अपेक्षित है परिधि से केन्द्र की ओर उन्मुख होने की।

इस परिप्रेक्ष्य मे देखे तो जैन धर्म ने आत्म साक्षात्कार, आत्म विश्लेषण एव आत्म विशुद्धि को ही आत्मनोन्नयन के मूलाधार माना है। एतदर्थ हमे आप्त/आगम महापुरुषो के ध्यान, जप व स्मरण द्वारा आत्मा की अनन्त शक्ति को जागृत कर कर्म-दलिको को आत्म प्रदेशो से दूर करना पडता है ताकि वीतराग भाव का विकास हो और हम ''परमप्पा'' के पथ मे अग्रसर हो सके।

प्रस्तुत ग्रथ की सामग्री को सकलित/सम्पादित करने हेतु विद्वद्वर्य, ओजस्वी व्याख्याता, श्री ज्ञान मुनि जी म सा ने अथक परिश्रम कर यह भगीरथी कार्य सम्पन्न किया है तथा उनको सतत् सहयोग प्रदान किया है

विद्वान सेवाभावी श्री प्रकाश मुनि जी म सा ने। परिणामस्वरूप गागर मे सागर पूरित यह ज्ञान निधि अनुपम व बेजोड है। इसमे सकलित सामग्री के नियमित पठन, अध्ययन, मनन द्वारा अध्यात्म स्फुरण होता है और हम ''पर'' से ''स्व'' की ओर अग्रसर हो सकते है। अत हम मुनि-द्वय के हृदय से ऋणी एवं आभारी है।

वर्तमान में नवम् पट पर प्रशान्तमना तरुण तपस्वी आगमज्ञ, व्यसन मुक्ति के प्रणेता आचार्य पूज्य श्री रामलालजी म सा सम्यग ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अभिवृद्धि हेतु सतत् प्रयत्नशील है एव श्रमण निर्ग्रन्थ सस्कृति के संवाहक, समता विभूति आचार्य श्री नानेश साधुमार्गीय परम्परान्तर्गत हुक्मेश सघ के प्रभावक अष्टमाचार्य थे, जिन्होने साध्वाचार व सयम आराधना का उदाहरण तो सृजित किया ही, विश्व को समता-दर्शन का पीयूष भी प्रदान किया। श्री ज्ञान मुनि जी म सा गुरुदेव के अन्तेवासी सुशिष्य है, जो उनके प्रति सर्वतोभावेन समर्पित रहे और इन्होने गुरुदेव के हृदय मे विशिष्ट स्थान बनाया। यथा नाम तथा गुण ''ज्ञान'' के प्रतीक बहुमुखी विचक्षण प्रतिभा सम्पन्न अपने शिष्य की शासननिष्ठा, समर्पणा व सहकारभावना को गुरुदेव ने श्लाघनीय माना था तथा प्रसगवश फरमाया-''इनके जीवन की महत्ता का मूल्याकन जनता कर पाए या न कर पाए, इनका महत्व मेरे हृदय में है।'' वस्तुत श्री ज्ञान मुनि जी म सा ने वकृता, लेखन, सम्पादन, रचना-धर्मिता एव धर्म प्रभावना क्षेत्रो मे पृथक् पहचान बनाई है और संघ इनसे गौरवान्वित है।

हिन्दी, प्राकृत और सस्कृत विभाग में वर्गीकृत एवं परिशिष्ट रूप मे मत्र विभाग समन्वित इस ग्रथ मे चौबीसी, स्तुति, आरती, स्तवन, स्तोत्र, यत्र, मत्र, प्रत्याख्यान आदि सकलित है। मत्र एव स्तोत्र शब्द की असीम शक्ति को प्रकट करते हैं। अत निरन्तर स्वाध्याय व मनन से पाठक समत्व योग को प्राप्त कर

सिद्धि की ओर अग्रसर हो सकते है। उभय मुनिराजो का सयमीय मर्यादाओ के अनुरूप ही सकलन-सम्पादन रहा। लोकहित मे अतिरिक्त सामग्री एव मत्रो-यत्रो आदि का सकलन प श्री ज्ञानदत्तजी पाण्डेय का है तथा कम्प्यूटर सैटिग व प्रूफ सशोधन मे डा श्री सुरेश जी सिसोदिया ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। अत दोनो ही धन्यवाद के अधिकारी है।

सत्-साहित्य के प्रचार-प्रसार मे अर्थ सहयोगी श्रीमान गोपालचन्दजी सा भूरा सुपुत्र श्रीमान सेठ सा दीपचन्दजी भूरा मूल निवासी देशनोक हाल कलकत्ता को धन्यवाद व साधुवाद।

पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रथ उपादेय सिद्ध होगा तथा जन-जन इसके स्वाध्याय द्वारा आत्म कल्याण करते हुए ''समता वाणी'' को आत्मसात करेगे।

भवदीय

अध्यक्ष	महामत्री	सयोजक
राजमल चोरडिया	**धनराज बेताला**	**शातिलाल साड**

कमल सिपानी　　अभय कुमार चोरडिया

जयचन्दलाल सुखानी　　उदय नागोरी

(सदस्य, साहित्य समिति, श्री अ भा सा जेन सघ, बीकानेर)

अर्थ सहयोगी परिचय

प्रस्तुत कृति 'समता–वाणी' का प्रकाशन सघ/ शासननिष्ठ, सुश्रावक अनन्य गुरु भ्राता श्रीमान गोपालचन्दजी भूरा मूल निवासी देशनोक हाल–मुकाम कलकत्ता के अर्थ सौजन्य से हो रहा है। धर्म–तप–सेवा–सौजन्य की प्रतीक धरा–देशनोक जहाँ बेजोड लोकदेवी करणी माता से गौरवान्वित हैं वहीं श्रेष्ठिवर्यो के औदार्य, स्वधर्मी–स्नेह, जन कल्याण भावना तथा हुक्मेश सघ के सवर्द्धन/सरक्षण हेतु भी इसकी पृथक् पहचान है। इस नगरी मे ईश्वर मुनि जैसे तपस्वी साधक व वर्तमान शासनेश शास्त्रज्ञ, प्रशान्तमना, आगमवारिधि आचार्य श्री रामेश तो हुए ही है अनेक चारित्रात्माओ ने भी अणुव्रतो की पगडडी छोडकर महाव्रतो का राजमार्ग अगीकृत किया है। धन्य है 'देश' की 'नाक' देशनोक जिसे धर्म वीरो, कर्मवीरो, तपस्वियो, साधको व समर्पित कार्यकर्त्ताओ की जन्म भूमि बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

श्रीमान् दीपचन्दजी भूरा का नाम ऐसे श्रद्धानिष्ठ, चतुर्विध सघ हेतु सर्वतोभावेन समन्वित, राष्ट्रीय/सामाजिक/धार्मिक/शेक्षणिक/सास्कृतिक सस्थाओ से सम्बद्ध रहकर मुक्त हस्त से अर्थ सहयोग प्रदान करने हेतु अग्र पक्ति मे है।

श्री भूरा जी ने श्री अ भा साधुमार्गी सघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप मे नेतृत्व भी प्रदान किया है।

अल्पायु मे ही व्यवसाय क्षेत्र मे अग्रसर होकर आपने जिस लगन, निष्ठा, अध्यवसाय से साफल्य के चक्रिल सोपान तय किये वे आदर्श व अनुकरणीय है। आपने भारत के विभिन्न भागो मे ही व्यापारिक प्रतिष्ठान स्थापित न किये वरन् 'कॉटन किग' के रूप मे अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओ तक प्रामाणित निर्यातक की ख्याति अर्जित की।

सघ की स्थापना से लेकर अद्यावधि तक इसके उन्नयन हेतु किये गये आपके कार्य, अनेक शैक्षणिक/सामाजिक/धार्मिक सस्थाओ की स्थापना एव समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानेश के प्रति अप्रतिम भक्ति/सेवा/समर्पणा के मूल मे 'दीप' वत प्रकाश फैलाना व 'चन्द' वत शीतलता आपके विशेष गुण है।

सघ के गौरवशाली अध्यक्ष रहकर आपने सघ को सर्वतोमुखी ऊचाइयो पर ले गये वह इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। ८५ बसन्तो को पार करने पर भी आपमे युवक सा उत्साह है तथा सघ के विकास हेतु आप सदैव प्रयासरत तो रहते ही है अपना अमूल्य मार्गदर्शन भी प्रदान करते है। उल्लेख्य है कि आपने सघ के प्रकाशनो मे तो सहयोग प्रदान किया ही है हाल ही मे बीकानेर मे निर्माणाधीन 'समता नगर' मे श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ को दो भूखण्ड भेट कर अपनी प्रशस्त भावना का परिचय दिया है।

* गुरु- आज्ञा- परायण
* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन मे
* नारी जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
* बलि- निषेध के लिए सदैव तत्परता



इनके सुपुत्र श्री गोपालचन्दजी ने भी विरासत में अपने पितृश्री व मातुश्री के संस्कारो को प्राप्त कर इन्हे सदैव वृद्धिगत रखा है। आपने उद्योग, व्यापार मे आशातीत प्रगति की है तथा श्रमनिष्ठता, प्रामाणिकता, नैतिकता को जीवन पाथेय बनाया है तथा अपने पितृ श्री के पदचिन्हो का अनुसरण कर 'समता वाणी' की ५००० प्रतियो के प्रकाशन का अर्थ-भार वहन किया है वह स्तुत्य व श्लाघनीय है।

संघ श्री भूरा परिवार के प्रति आभार, धन्यवाद व साधुवाद ज्ञापित करता है। विश्वास है सघ की गतिविधियो के सचालन, सातत्य, विकास हेतु आपका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

हिन्दी विभाग

विषय	पृष्ठांक

- गुरु- आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
- बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत



- गुरु- आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर
- बलि- निषेध के लिए सदैव



प्राकृत विभाग

- गुरु- आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर
- बलि- निषेध के लिए सदैव समु



संस्कृत विभाग

* गुरु- आज्ञा- परायण
* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्



मंत्र विभाग

- गुरु- आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
- बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत





- गुरु- आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर
- बलि- निषेध के लिए सदैव

प्रथम मंगल

मगल–स्वरूप, मगल स्थिति, मगल प्रभु का नाम है,
उन मगलो मे प्रथम मगल, अरिहत को प्रणाम है,
साक्षात् तीर्थकर स्वय सबुद्ध सहज साकार है,
मगल करण मगल वदन मगल चरण अविकार है।।

सब बधनो से रहित सहज सब आवरण से मुक्त है,
भव–बीजाकुर नाशकर निज दिव्यता से युक्त है,
मुक्तिदाता, त्राणदाता जानते सब बात है,
सिद्ध परमात्म प्रभु ! तुझे वदना दिन–रात है।।

सब ग्रथियो को तोडने मे जो सदा निष्णात है,
आत्मदर्शी समस्थिति जो परमश्रुत विख्यात है,
शातिमय, वैराग्यमय आनन्द पारावार है,
वीतरागरूप मुनिजन सदा भूमि कर्म के अवतार है।।

धर्म–धर्म कर रहे पर धर्म तो निजरूप है,
धर्म मगल, आत्म मगल मगल महान् स्वरूप है,
सब आवरण को तोडकर देता परम श्रुतज्ञान है,
जब धर्म प्रकटे आत्म मे तब प्राप्त केवलज्ञान है।।



* गुरु- आज्ञा- परायण
* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
* कुरीति- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

जय-मांगलिक

अर्हत जय जय,
सिद्ध प्रभु जय जय,
साधु जीवन जय जय,
जिन धर्म जय जय ॥

अर्हत मगल,
सिद्ध प्रभु मगल ।
साधु – जीवन मगल,
जिन – धर्म मगल ॥

अर्हत उत्तम,
सिद्ध प्रभु उत्तम ।
साधु – जीवन उत्तम ।
जिन – धर्म उत्तम ॥

अर्हत शरण,
सिद्ध प्रभु शरण ।
साधु – जीवन शरण,
जिन – धर्म शरण ॥

चार शरण दुख–हरण जगत् मे,
और न शरणा कोई होगा।
जो भव्य प्राणी करे आराधन,
उसका अजर – अमर पद होगा।।

अगूठे अमृत बसे लब्धि तणा भडार।
श्री गुरु गौतम समरिये मनवाछित फल दातार॥
कामधेनु "गौ" शब्द थी "त्" ते तरु सुरवृक्ष।
"म" मे मणि चितामणि "गौतम" नाम प्रत्यक्ष॥

सिद्ध-स्तुति

तुम तरण–तारण दुख– निवारण,
भविक जीव आराधन।
श्री नाभिनन्दन जगत–वन्दन,
नमो सिद्ध निरजन।।१।।

जगत–भूषण विगत–दूषण,
प्रणव प्राण निरूपक।
ध्यान – रूप अनूप उपम,
नमो सिद्ध निरजन।।२।।

आज्ञा- परायण
★ निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
★ नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
★ बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत



गगन – मडल मुक्ति–पदवी,
सर्व – ऊर्ध्व – निवासन।
ज्ञान – ज्योति अनन्त राजे,
नमो सिद्ध निरजन ।।३।।

अज्ञाननिद्रा विगत – वेदन,
दलित – मोह निरायुष।
नाम – गोत्र – निरतराय,
नमो सिद्ध निरजन ।।४।।

विकट क्रोधा मान योधा,
माया – लोभ – विसर्जन।
राग – द्वेष – विमर्द अकुर,
नमो सिद्ध निरजन ।।५।।

विमल केवल–ज्ञान लोचन,
ध्यान – शुक्ल – समीरित।
योगिना अतिगम्य रूप,
नमो सिद्ध निरजन ।।६।।

योग ने समोसरण मुद्रा,
परिपल्यक – आसन।

सर्व दीसे तेज – रूप,
नमो सिद्ध निरजन ।।७।।

जगत जिनके दास दासी,
तास आस निरासन।
चन्द्र पै परमानन्द – रूप,
नमो सिद्ध निरजन ।।८।।

स्व–समय समकित दृष्टि जिनकी,
सोय योगी अयोगिक।
देखतामा लीन होवे,
नमो सिद्ध निरजन ।।६।।

चन्द्र सूर्य दीप – मणि की,
ज्योति येन उल्लधित।
ते ज्योति थी अपरमज्योति,
नमो सिद्ध निरजन ।।१०।।

तीर्थ सिद्धा अतीर्थ सिद्धा,
भेद पच – दशाधिक।
सर्व – कर्म – विमुक्त चेतन,
नमो सिद्ध निरजन ।।११।।

* गुरु- आज्ञा- परायण
* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत



एके मॉही अनेक राजे,
अनेक मॉही एकक।
एक अनेक की नाहि सख्या,
नमो सिद्ध निरजन ।।१२।।

अजर अमर अलख अनत,
निराकार निरजन।
परब्रह्म ज्ञान अनत – दर्शन,
नमो सिद्ध निरजन ।।१३।।

अतुल सुख की लहर मे,
प्रभु लीन रहे निरतर।
धर्मध्यान थी सिद्ध – दर्शन,
नमो सिद्ध निरजन ।।१४।।

ध्यान – धूप मन – पुष्प,
पचेन्द्रिय – हुताशन।
क्षमा – जाप सतोष – पूजा
पूजो देव निरजन ।।१५।।

तुम मुक्ति–दाता कर्म घाता,
दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थ–नन्दन जगत–वन्दन,
महावीर जिनेश्वर ।।१६।।

महावीर प्रभु की आरती

तर्ज पूर्ववत्

जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो,
जग नायक सुखदायक, अति गम्भीर प्रभो।
ॐ जय महावीर प्रभो। ध्रुव ।
कुण्डलपुर मे जन्मे, त्रिशला के जाये। स्वामी०।
पिता सिद्धारथ राजा, सुर नर हर्षाये । ॐ १ ।
दीनानाथ दया निधि, है मगलकारी । स्वामी०।
जग हित सयम धारा, प्रभु पर उपकारी। ॐ २ ।
पापाचार मिटाया, सत्यपथ दिखलाया। स्वामी०।
दया धर्म का झण्डा, जग मे फहराया। ॐ ३ ।
अर्जुनमाली गौतम, श्री चन्दनबाला। स्वामी०।
पार जगत से बेडा, उनका कर डाला। ॐ ४ ।
पावन नाम तिहारा, जग – तारण हारा। स्वामी० ।
निश दिन जो नर ध्यावे, कष्ट मिटे सारा। ॐ ५ ।
करुणा – सागर तेरी, महिमा है न्यारी। स्वामी० ।
'ज्ञान मुनि' गुण गावे, चरणन बलिहारी। ॐ ६ ।



नवकार मंत्र की आरती

तर्ज पूर्ववत्

जय अरिहताण, स्वामी जय अरिहताण।
भाव भक्ति से नित प्रति, प्रणमू सिद्धाण।।
ॐ जय अरिहताण। ध्रुव ।

दर्शन ज्ञान अनन्ता, शक्ति के धारी। स्वामी०।
यथाख्यात चारित है, कर्म- शत्रु हारी। ॐ १ ।

हे सर्वज्ञ सर्वदर्शी बल, सुख अनन्त पाये। स्वामी० ।
अगुरु – लघु अमूरत, अव्यय कहलाये । ॐ २ ।

णमो आयरियाण, छत्तीस गुण पालक। स्वामी० ।
जैन धर्म के नेता, सघ के सचालक। ॐ ३ ।

णमो उवज्झायाण, चरण करण ज्ञाता। स्वामी० ।
अग उपाग पढाते, ज्ञान दान दाता। ॐ ४ ।

णमो लोए सव्व साहूण, ममता मद हारी। स्वामी०।
सत्य अहिसा अस्तेय, ब्रह्मचर्य धारी। ॐ ५ ।

'चौथमल' कहे शुद्ध मन, जो नर ध्यान धरे। स्वामी०।
पावन पच परमेष्ठी, मगलाचार करे। ॐ ६ ।

पांच पदों की वंदना

(१) णमो अरिहंताणं

नमु श्री अरिहत, कर्मा को कियो अन्त,
हुआ सो केवलवत्त, करुणा, भडारी है।
अतिशय चौतीसधार, पैतीस वाणी उच्चार
समझावे नरनार, पर उपकारी है।।
शरीर है सुन्दराकार सूरज सो झलकार,
गुण है अनन्तसार, दोष परिहारी है।
कहत है तिलोकरिख, मन वच काया करी,
लुली लुली बारबार, वदना हमारी है।।१।।

(२) णमो सिद्धाणं

सकल करम टाल, वश कर लियो काल,
मुक्ति मे रह्या माल, आत्मा कु तारी है,
देखत सकल भाव, हुवा है जगतराव,
सदा ही क्षायिक भाव, भये अविकारी है,
अचल अटल रूप, आवे नही भवकूप,
अनूप स्वरूप रूप, ऐसे सिद्ध धारी है,

→ निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
→ नारी- जागरण के लिए निरन्तर
→ बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत



कहत है तिलोकरिख, बताओ ए वास प्रभु,
सदाही उगते सूर, वदना हमारी है।।२।।

(३) णमो आयरियाणं

गुण है छत्तीस पूर, धारत धर्म उर,
मारत करम क्रूर, सुमति विचारी है,
शुद्ध सो अचारवत, सुन्दर है रूपकत,
भणिया सभी सिद्धात बाचणी सु प्यारी है,
अधिक मधुर वेण, कोई नही लोपे केण,
सकल जीवारा सेण, कीरती अपारी है,
कहत है तिलोकरिख, हितकारी देत सीख,
ऐसे आचारजजी, ताकु वदना हमारी है।।३।।

(४) णमो उवज्झायाणं

पढत इग्यारह अग, करमा सू करे जग,
पाखडी को मान भग, करण हुस्यारी है,
चउदह पूर्वधार, जानत आगम सार,
भवियन के सुखकार, भ्रमता निवारी है।।
पढावे भविक जन, थिर कर देत मन,

तप् करी तावे तन ममता कु मारी है,
कहत है तिलोकरिख, ज्ञान भानु परतिख,
ऐसे उपाध्याय ता कू, वदना हमारी है।।४।।

(५) णमो लोए सव्व साहूणं

आदरी सजम भार, करणी करे अपार,
सुमति गुपति धार, विकथा निवारी है,
जयणा करे छ काय, सावद्य न बोले वाय।
बुझाय कषाय लाय, किरिया भडारी है।।
ज्ञान भणे आठो याम, लेवे भगवत नाम,
धर्म को करे काम, ममता कु मारी है,
कहत है तिलोकरिख, करमा को टाले विख,
ऐसे मुनिराज, ताकू वदना हमारी है।।५।।

नवकार मंत्र की महिमा

नवकार मत्र है महामत्र
इस मत्र की महिमा भारी है,
आगम मे कथी गुरुवर से सुनी
अनुभव मे जिसे उतारी है।। ध्रु०।।
'अरिहंताणं' पद पहला है
अरि आरति दूर भगाता है,



* गुरु- आज्ञा- परायण
* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन म
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रय
* रूढि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

'सिद्धाणं' सुमिरन करने से
मनवाछित सिद्धि पाता है।
'आयरियाणं' तो अष्टसिद्धि
नवनिधि के भडारी है।नवकार १।
उवज्झायाणं अज्ञान तिमिर हर
ज्ञान प्रकाश फैलता है,
'सव्वसाहूणं' सब सुखदाता
तन मन को स्वस्थ बनाता है।
पद पाचो के सुमिरन करने से
मिट जाती सकल बीमारी है। नवकार २।
श्रीपाल सुदर्शन मयणरया
जिसने भी जपा आनन्द पाया,
जीवन के सूने पतझड मे
पुनि फूल खिले सौरभ छाया।
मन नदनवन मे रमण करे,
यह ऐसा मगलकारी है। नवकार ३।
नित्य नई बधाई सुने कान,
लक्ष्मी वरमाला पहनाती है,
'अशोक मुनि' जय विजय मिले,
शाति प्रसन्नता बढ जाती है,
सम्मान मिले सत्कार मिले,
भवजल से नैया तारी है। नवकार ४।

परमेष्ठी-महिमा

(राग असावरी त्रिशला)

जय जय जय जयकार, परमेष्ठी (ध्रुव)

जय जय भविजन–बोध–विधाता,
जय जय आतम–शुद्धि विधाता,
जय भव – भजनहार, परमेष्ठी।।जय०।।

जय सब सकट चूरण – कर्त्ता,
जय सब आशा पूरण – कर्त्ता।
जय जग – मगलकार, परमेष्ठी।।जय०।।

तेरा जाप जिन्होने कीना,
परमानन्द उन्होने लीना।
कर गये खेवा पार, परमेष्ठी।।जय०।।

लीना शरणा सेठ सुदर्शन,
शूली से बन गया सिहासन।
जय जय करे नर नार, परमेष्ठी।।जय०।।

द्रौपदी – चीर सभा मे हरना,
तब तेरा ही लीना शरणा।
बढ गया चीर पार, परमेष्ठी।।जय०।।



- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन में
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
- रूढि- निषेध के लिए सदैव तत्परता

सोमा ने तुम सुमिरन कीना,
सर्प फूल–माला कर दीना।
वरते मगलाचार, परमेष्ठी।।जय०।।
'अमर' शरण मे सप्रति आया,
श्रद्धा की सुमनाञ्जलि लाया।
शीघ्र करो उद्धार, परमेष्ठी।।जय०।।

मंगल-धुन

सबसे बढकर है नवकार, करता है भवसागर पार।
चौदह पूर्व का यह सार, बारबार जपो नवकार।।
ऋषभ जय, प्रभु पारस जय जय।
महावीर जय, गुरु गौतम जय जय।।

महावीर को भज ले मनवा, गौतम को भज ले।
शान्ति करेगे, शान्तिनाथ को भज ले।।

देव हमारे श्री अरिहन्त, गुरु हमारे सद्गुणी सत।
धर्म हमारा दया–प्रधान, शास्त्र हमारे सत्य निधान।।

श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर, त्रिशलानन्दन हरियो पीर।
अधम उद्धारण श्री अरिहत, पतित पावन भज भगवत।।

गुरु गौतम सुमरो हर बार, घर घर वरते मगलाचार।
बोलो सब मिल जय जय कार, होवे अपना भी उद्धार।।

जय अचलासन

जय अचलासन, शान्ति सिहासन
द्वेष–विनाशन, शासन–स्यन्दन।

सन्मति – कारण, कुमति – निवारण,
भवभय – हारण, शीतल चन्दन।

जय करुणा–वरुणालय जय जय,
जीव सभी करते अभिनन्दन।

जय सुख – कन्दन, दुरित – निकन्दन,
जय जग – वन्दन, त्रिशला – नदन।।

जैन विश्वगान

(राष्ट्रगान की धुन)

(१)

शिवपुरपथ–परिचायक जय हे,
सन्मति युग – निर्माता।
गगा कल–कल स्वर मे गाती,
तव गुण – गौरव – गाथा।



* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन मे
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

सुर–नर–किन्नर, तव पद–युग मे,
नित नत करते माथा।

सब तेरे गुण गाते,
सादर शीश झुकाते।

हे सद्बुद्धि – प्रदाता।
दुख–हारक, सुख–दायक जय हे।

सन्मति युग निर्माता।
जय हे, जय हे जय हे।
जय जय जय जय हे।।

(२)

मगल–कारक, दया–प्रचारक,
खग – पशु – नर – उपकारी।

भविजन–तारक, कर्म–विदारक,
सब जग तव आभारी।

जब तक रवि शशि तारे,
तब तक गीत तुम्हारे।

विश्व रहेगा गाता
सन्मति युग निर्माता।

जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

(३)

भ्रातृ–भावना भुला परस्पर,
लडते है जो प्राणी।
उनके उर मे प्रेम बसाती,
तेरी मीठी वाणी।
सबमे करुणा जागे,
जग से हिसा भागे।
पावे सब सुखसाता
हे दुर्जय, दुख–त्रायक जय हे।
सन्मति युग – निर्माता
जय हे, जय हे, जय हे।
जय जय जय जय हे।।

मंगल-माला

जय जिन ऋषभ अजित जग–स्वामी,
जय जिन सभव शिवगति–गामी।

---

* निरन्तर आत्मा- चिन्तन- मनन म
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रया
* [illegible]- निषेध के लिए सदैव समुद्यत



जय अभिनन्दन सुमति शिवकर,
जय प्रभु पद्म सुपार्श्व हितकर।
जय चन्द्रप्रभ सुविधि जिनेशा,
जय शीतल श्रेयास महेशा।
जय जिन वासुपूज्य भय-हारी,
जय प्रभु विमल अमल अविकारी।
जय अनन्त जय धर्म सुनामी,
जय प्रभु शान्ति कुन्थु अर स्वामी।
जय जिन मल्लिनाथ मुनिसुव्रत,
जय नमि नेमि पार्श्वहित - दुर्मत।
जय जिन वर्द्धमान जग-वन्दन,
जय प्रभु सन्मति पाप - निकन्दन।
जय गौतम जय चन्दनबाला,
जय जिन - वाणी मगल - माला।।

मेरी भावना

जिसने राग-द्वेष-कामादिक जीते, सब जग जान लिया,
सब जीवो को मोक्ष-मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो,
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी मे लीन रहो।।१।

विषयो की आशा नही जिनके, साम्यभाव, धन रखते है,
निजपर के हित–साधन मे जो, निशदिन तत्पर रहते है,
स्वार्थ–त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते है,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दु ख–समूह को हरते है।।२।।

रहे सदा सत्सग उन्ही का, ध्यान उन्ही का नित्य रहे,
उन्ही जैसी चर्या मे यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।
नही सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नही कहा करूँ,
परधन–वनिता पर न लुभाऊँ, सतोषामृत पिया करूँ।।३।।

अहकार का भाव न रक्खू, नही किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरो की बढती को, कभी न ईर्ष्या–भाव धरू।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल–सत्य व्यवहार करू,
बने जहॉ तक इस जीवन मे, औरो का उपकार करू।।४।।

मैत्री – भाव जगत मे मेरा, सब जीवो पर नित्य रहे,
दीन – दु खी जीवो पर मेरे उर से करुणास्रोत बहे।
दुर्जन – क्रूर – कुमार्ग–रतो पर, क्षोभ नही मुझ को आवे,
साम्यभाव रक्खू मै उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।।५।।

गुणी जनो को देख हृदय मे, मेरे प्रेम उमड आवे,
बने जहॉ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नही कृतघ्न कभी मै, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण – ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषो पर जावे।।६।।

* गुरु- आज्ञा- परायण
* निरन्तर अध्ययन- चिंतन- मनन मे
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रया
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यता



कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखो वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे,
तो भी न्यायमार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे।।७।।

होकर सुख मे मग्न न फूले, दुख मे कभी न घबरावे,
पर्वत, नदी, श्मशान भयानक, अटवी से नही भय खावे,
रहे अडोल – अकप निरतर, यह मन दृढतर बन जावे,
इष्ट – वियोग अनिष्ट योग मे, सहनशीलता दिखलावे।।८।।

सुखी रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे,
वैर, पाप, अभिमान छोड जग, नित्य नये मगल गावे।
घर – घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे,
ज्ञान–चारित्र उन्नत कर अपना, मनुज जन्मफल सब पावे।।६।।

ईति–भीत्ति व्यापे नही जग मे, वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोग – मरी–दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शाति से जिया करे,
परम अहिसा – धर्म जगत मे, फैल सर्व–हित किया करे।।१०।।

फैले प्रेम परस्पर जग मे, मोह दूर पर रहा करे,
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नही, कोई मुख से कहा करे।
बन कर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति–रत रहा करे,
वस्तुस्वरूप विचार खुशी से, निजानन्द मे रमा करे।।११।।

साप्ताहिक आरती

(१) रविवार

जय–जयकार करे, स्वामी जय–जयकार करे।
'पद्म–प्रभ' जिन सुमिरे, मगलाचार करे।।
ॐ जय जयकार करे।। ध्रुव।।

'श्रीधर' नन्द निरूपम, सुषमा के जाये । स्वामी॰।
कोशाम्बी मे घर – घर, सुर नर गुण गाये। ॐ १ ।
शुभ – स्कन्द सुआनन, सुन्दर भुज प्यारी। स्वामी॰।
लक्षण नेत्र अरु काया, पद्म वरण धारी। ॐ २ ।
वर्षी दान दे, सयम ले, बन केवल ज्ञानी। स्वामी॰।
भवी जनो हित प्रभु ने, प्रकट करी वाणी। ॐ ३ ।
पूरण परम दयालु, पुरुषोत्तम नामी।स्वामी॰।
अधम उद्धारण जग मे, तुम सा नही स्वामी। ॐ ४ ।
'चौथमल' कहे जो जन, शुद्ध मन से ध्यावे। स्वामी॰।
लक्ष्मी लहर करे वहॉ, नित्य मगल छावे। ॐ ५ ।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं नमः पद्मप्रभवे मम ग्रह शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। (जाप ७०००। माला लाल रंग)

* गुरु-आज्ञा-परायण
* निरन्तर अध्ययन-चिन्तन-मनन में
* नारी-जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
* बलि-निषेध के लिए सदैव समुद्यत



(२) सोमवार

(तर्ज पूर्ववत्)

जय जिनवर चन्दा, स्वामी जय जिनवर चन्दा,
सुख सम्पति के दाता, वरते आनन्दा।
ॐ जय जिनवर चन्दा। ध्रुव ।
'जयन्त' विमान से आये, 'लक्ष्मी' के नन्दा। स्वामी०।
'महासेन' घर जन्मे, 'चन्द्र-पुरी' चन्दा। ॐ १।
शशि लक्षण युत्त सोहे, श्वेत वरण काया। स्वामी०।
राज-रमणी रिद्धि भोगी, सयम-पद पाया। ॐ २।
केवलज्ञान अनूपम दर्शन के धारी । स्वामी०।
अमित सुखोत्तम पाये, गुण के भडारी। ॐ ३।
प्रात· समय शुद्ध मन से, चन्दा चित्त चाहवे। स्वामी०।
कमला केलि करे वहा, जग सुयश छावे। ॐ ४ ।
'चौथ मुनि' चमके चहुँ दिशि, चन्दा चित्त धारे।
विजय बधाई बरसे, भव – जल से तारे।ॐ५।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं नमश्चन्द्र प्रभवे मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। (जाप ६०००। माला सफेद रंग)

(३) मंगलवार

(तर्ज पूर्ववत्)

जय वासुपूज्य देवा, स्वामी जय वासुपूज्य देवा।
भाव–भक्ति से सुर, नर करे पद सेवा।।
ॐ जय वासुपूज्य देवा । ध्रुव ।

पिता 'वसु' महाराया, चम्पा पुरी भारी। स्वामी०।
माता 'जया' गुणधारी छवि अद्‌भूत प्यारी। ॐ १।

माणक द्युति सम काया चिह्न 'महिष धारी'। स्वामी०।
राज्य–लक्ष्मी भोगी, आत्म उजवारी। ॐ २।

गो स्वामी जग पूजित, है जग के स्वामी। स्वामी०।
प्रतिबोधित कई प्राणी, बन गये शिवगामी। ॐ ३ ।

जो कोई तुझ भक्ति मे, तन्मय हो जावे। स्वामी० ।
ग्रह–शान्ति हो घर मे, मगल बरतावे। ॐ ४ ।

'चौथमल' भावो से, शरण तेरी चाहवे। स्वामी०।
शुद्ध समकित हो मेरी, यही भाव भावे। ॐ ५ ।

मन्त्र- ॐ ह्रीं श्रीं नमः भगवते वासुपूज्यप्रभवे मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। (जाप ८०००। माला लाल रंग)



* गुरु- आज्ञा- परायण
* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन मनन में
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
* रूढ़ि- निरोध के लिए सदैव समुद्यत

(४) बुधवार

(तर्ज पूर्ववत्)

जिन जयकार करे, स्वामी जिन जयकार करे।
वर्धमान गुण प्रकटे, जो जन ध्यान धरे।।
ॐ जिन जयकार करे। ध्रुव ।
'कुण्डलपुर' सिद्धार्थ, 'त्रिशला' सुत प्यारे। स्वामी०।
जन्मे वीर जिनेश्वर, सुर सेवा सारे। ॐ १।
कचन वरण अनूपम, शुभ सुन्दर काया। स्वामी०।
निरखत नयन न हारे, शार्दूल चिन्ह पाया। ॐ २ ।
वैभव विश्व का भोगी, बने पूर्ण ज्ञानी। स्वामी०।
सत्य धर्म समझा कर, तारे भवि प्राणी। ॐ ३ ।
सति-पति सुत माता को, गज भूधर सुमिरे। स्वामी०।
मै गौतम गुरु समरु, वाछित काज सरे। ॐ ४ ।
'चौथमल' श्रद्धायुत, जो भवि जन ध्यावे। स्वामी०।
ऋद्धि सिद्धि हो वृद्धि, सब सुख यश पावे। ॐ ५ ।

मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं नमः वर्द्धमानाय मम् ग्रहशांतिं कुरु-कुरु स्वाहा। (जाप १००००। माला पीला रंग)

(५) गुरुवार

(तर्ज पूर्ववत्)

जय जिनवर ज्ञानी, स्वामी जय जिनवर ज्ञानी।
'सुमतिनाथ' प्रभु जग मे, सुमति के दानी।।
ॐ जय जिनवर ज्ञानी। ध्रुव ।
'मेघरथ' नृप के घर मे, मगला पटरानी। स्वामी०।
स्वप्न चतुर्दश देखी, हृदय हरषानी। ॐ १ ।
कौशल पुरी है सुन्दर, जन्मे जिनराया। स्वामी०।
क्रौच पक्षी पद लक्षण, कनक वरण काया। ॐ २ ।
सयम ले केवल पद पा, ज्योति विकसाई। स्वामी०।
सब प्राणी हित प्रभु ने, वाणी प्रकटाई। ॐ ३ ।
ब्रह्म मुहूर्त मे एक चित्त सुमति गुण गावे। स्वामी०।
भक्त–शिरोमणि होकर, नित्यनान्द पावे। ॐ ४ ।
'चौथमल' कहे प्रभु का, पावन नाम सरे। स्वामी०।
शुद्ध बुद्ध की वाणी हो, दुर्गुण दोष हरे। ॐ ५ ।

मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं नमः सुमतिनाथाय मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। (जाप १२०००। माला पीला रंग)



→ गुरु- आज्ञा- परायण
→ निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन में
→ नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
→ बलि निषेध के लिए सदैव तत्परता

(६) शुक्रवार

(तर्ज पूर्ववत्)

जय जिनवर प्यारा, स्वामी जय जिनवर प्यारा।
'सुविधिनाथ' सुखकरी, जाने जग सारा।।
ॐ जय जिनवर प्यारा। ध्रुव ।
'काकन्दी' नगरी अति सुन्दर 'सुग्रीव' महाराया। स्वामी०।
'रामा' रानी जाया, सब जन सुख पाया। ॐ १ ।
नाम नाथ का नीका, 'पुष्पदन्त' सोहे। स्वामी०।
'मकर' चिन्ह के धारी, सुर नर मन मोहे। ॐ २ ।
शुभ्रानन शुभ ज्योति, लेश्या शुभ पावे। स्वामी०।
उज्जवल दर्शन धारी, उच्च गति पावे। ॐ ३ ।
शुद्ध हृदय से जो नर, सुविधि नाथ ध्यावे। स्वामी०।
सुबुद्धि हो उसकी, सुन्दर फल पावे। ॐ ४।
'चौथमल' आशा कर, शरणा लिया तेरा। स्वामी०।
कृपा–किरण से हृदय–कमल खिले मेरा। ॐ ५ ।

मन्त्र- ॐ ह्रीं श्रीं नमः सुविधिनाथाय मम ग्रह शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। (जाप ११०००। माला सफेद)

(७) शनिवार

(तर्ज पूर्ववत्)

ॐ मुनिसुव्रत स्वामी, जय मुनिसुव्रत स्वामी।
सकट नाशक प्रभुवर, प्रणमू शिरनामी।।
ॐ मुनि सुव्रत स्वामी। ध्रुव ।
'अपराजित' से चल कर, राजगृही आये। स्वामी०।
नृप 'सुमित्र' कुल–दीपक पद्मा के जाये। ॐ १ ।
'कूर्म' सुलक्षण सोहे, श्याम वरण धारे। स्वामी०।
केवल ज्ञान उजागर, भक्तन रखवारे। ॐ २ ।
विचर–विचर कर प्रभु ने, लाखो जन तारे। स्वामी०।
आवागमन मिटा कर, पाये सुख सारे। ॐ ३ ।
ही श्री मुनिसुव्रत, जाप जपे भारी। स्वामी०।
मन्द ग्रह टल जावे, पावे सुख भारी। ॐ ४ ।
जो नर शुद्ध मन ध्यावे, सब दु ख विनसावे। स्वामी०।
'चौथमुनि' मन–वाछित, सुख सम्पत्ति पावे। ॐ ५ ।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं नमो मुनिसुव्रतस्वामिने मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। (जाप ३२०००। माला काली)



* गुरु-आज्ञा-परायण
* निरन्तर अध्ययन-चिन्तन-मनन मे
* नारी-जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
* बलि-निषेध के लिए सदैव समुद्यत

चौबीसी

(तर्ज–देख तेरे ससार की हालत)

जय जिनवर, जय तीर्थङ्कर,
जय चौबीसी भगवान्।

साधु श्रावक करे प्रणाम, २....
आप तिरे, औरो को तारे।

भरत – क्षेत्र भगवान्,
साधु श्रावक करे प्रणाम २।।टेर।।

ऋषभ देव का कीर्तन करते
अजितनाथ का नाम सुमरते।

सम्भवनाथ को चित्त मे धरते,
अभिनन्दन को वन्दना करते।

जय सुमति, जय पद्मप्रभ, जय चौबीसी भगवान्
साधु श्रावक करे प्रणाम।।१।।

सुपार्श्वनाथ का कीर्त्तन करते
चन्द्र प्रभ का नाम सुमरते।

सुविधिनाथ को चित्त मे धरते,
शीतलनाथ को वन्दना करते।

जय श्रेयांस, जय वासुपूज्य, जय चौबीसी भगवान्
साधु श्रावक करे प्रणाम।।२।।

विमलनाथ का कीर्तन करते,
अनन्तनाथ का नाम सुमरते।

धर्मनाथ को चित्त मे धरते,
शान्तिनाथ को वन्दना करते।

जय कुन्थु, जय अरनाथ, जय चौबीसी भगवान्,
साधु श्रावक करे प्रणाम।।३।।

मल्लिनाथ का कीर्तन करते,
मुनि सुव्रत का नाम सुमरते।

नमिनाथ को चित्त मे धरते,
नेमिनाथ को वन्दना करते।

जय पारस, जय महावीर, जय चौबीसी भगवान्,
साधु श्रावक करे प्रणाम।।४।।



- गुरु- आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन में ग
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयत्नर
- रूढि- निरोध के लिए सदैव तत्परता

चौबीसी

चौबीस जिनराया, मन, वच, काया,
प्रणमू पाया, द्यो साता।। टेर।।

श्री आदि जिनन्द, सम – रस – कन्द, ।
अजित – दिनन्द, भज प्राणी।।

सम्भव जग त्राता, शिव मग राता,
द्यो सुख साता हित आणी।

अभिनन्दन देवा, सुमति सुसेवा,
करो नित सेवा, रिपु–घाता।।१।।

श्री पद्म सुपास शशि–गुण रास,
सुविधि सुवास हितकारी।

श्री शीतल स्वामी, अन्तरयामी,
शिव गति गामी उपकारी।

श्रेयास दयाला, परम कृपाला,
भविजन वाला जग दाता।।२।।

वासुपूज्य सुकन्त, विमल अनन्त,
धर्म श्री सत, सतकारी।

कुन्थू अरनाथ तज जग साथ,
मल्लि सुनाथ, सग धारी।

मुनि सुव्रत, सुनमि, आत्मा ने दमी,
दुर्मति वमि तप राता।।३।।

रिष्टनेमि बढाई, नार न ब्याही,
तोरण जाई छिटकाई।

नाग नागण ताई, दिया बचाई,
पारस साई, सुख – दाई।

जय–जय वर्धमान, गुण–निधि–खान,
त्रिजग – भान शुद्ध दाता।।४।।

ससार का फन्दा, दूर निकन्दा,
धर्म का छन्दा जिन लीना।

प्रभु केवल पाया, धर्म सुनाया,
भवि समझाया, मुनि कीना।

कहे 'रिख तिलोक' सदा तस धोक,
द्यो सुख थोक, चित चाया।।५।।



→ गुरु आज्ञा- परायण
→ निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन में
→ नारी जागरण के लिए निरन्तर प्रया
→ बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यता

धन चाहे तो धर्म कर, राज चाहे तो तप।
पुत्र चाहे तो कर दया, सुख चाहे तो जप।।

यदि धर्म प्राप्त करना चाहो तो, ये चारो दुर्गुण दूर करो।
कटु वाक्य, कटुमति, कृपणता, कुटिलपने का त्याग करो।।

चौबीसी

(काटा लाग्या हो)

मैने बहुत किये अपराध,
नाथ मोहि कैसे तारोगे।टेर।
ऋषभ, अजित – सम्भव,
अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपास।

चन्द्र प्रभ ने सुविधि जिनेश्वर,
शीतल दो शिववास।नाथ०१।

श्री श्रेयास वासुपूज्य सुमरू,
विमल विमल मतिमन्त।

अनन्त नाथ ने धर्म जिनेश्वर,
शान्ति करो श्री सन्त।नाथ०२।

कुन्थुनाथ प्रभु करुणा के सागर,
अरनाथ जगदीश।

मल्लिनाथ ने मुनि सुव्रतजी,
नित्य नमाऊ शीश। नाथ॰३।

इकविसमा नमिनाथ निरूपम,
अरिष्टनेमि जगदाधार।

तोरण से प्रभु पाछा फिरिया,
शिव रमणी भरतार।नाथ॰४।

पार्श्व पारस सरीखा प्रभु जी,
ना वारिस के नाथ।

वर्धमान शासन का स्वामी,
प्रणमू जोडी हाथ।नाथ॰५।

तुम बिन पाया दुख अनन्ता,
जन्म मरण जजाल।

'त्रिलोक ऋषि' कहे जिम तिम करिने
तारो दीन दयाल।नाथ॰६।



- गुरु- आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिंतन- मनन मे
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
- बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

पैंसठिया यंत्र का छन्द

(चतुर्विंशति जिन स्तवन)

चौबीस जिनेश प्रणमु हमेश
अघ–अशिव–क्लेश–भवभयहरणम्

जपो जय जिनद, वरते आनन्द
सुखशातिवृन्द, मगलकरणम् ।।ध्रु०।।

शिवादेवी–नद आनन्द – कन्द
नेमिजिनद सभवस्वामी।

सुविधिकृपाल धन धर्मपाल
शातिदयाल अन्तर्यामी।

ज्ञानी अनत मुनिसुव्रत कत
नमि जग–महत धारे शरणम्। जपो जय १।

अरह अजित जीत, शशिप्रभु पुनीत
श्री ऋषभउदित कुल–धर्मपति।

स्वामी सुपार्श्व मुझ पुरो आश
बुद्धि प्रकाश करो विमल मति।

मल्ली से मल्ल, अरि से अटल्ल
　　तन धनुष पच्चीस हरितवरणम् ।जपो जय २।

अरनाथ धीर, महावीर वीर
　　हरो सकल पीर दो सुखसाता।

सुमति की आश दो सुमति नाथ
　　नमि जोडु हाथ, मागू दाता।

भज पद्म कद्म, सब छोड छद्म
　　दो मोक्ष सद्म, टालो मरणम् ।जपो जय ३।

वासुपूज्य जाप, शीतल प्रताप
　　हरो विषय ताप, कर दो शीतल।

श्रेयासदेव, सब करत सेव
　　कुथु कुटेव, कर दूर सकल।

पारसदयाल, करिए निहाल
　　अभिनन्दन जिन तारण–तरणम् ।जपो जय ४।

मत्रो मे मत्र, पैसठिया यत्र
　　तत्रो मे तत्र सब काज सरे।



- गुरु आज्ञा- पराधन।
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन मे
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रया
- दलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यता

तत्रो मे तत्र नित ध्यान धरे।
करे सकल सिद्धि, यश ऋद्धि वृद्धि
वाछित समृद्धि भडार भरे।
कहे अमिरिख परचो प्रत्यक्ष
गुरुदेव सीख हिरदे धरणम्। जपो जय ५।

श्री पैंसठिया यन्त्र का छन्द

(चतुर्विंशति जिन–स्तवन)

श्री नेमीश्वर सभव स्वाम,
सुविधि धर्म शान्ति अभिराम।
अनन्त सुव्रत नमिनाथ सुजाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।।१।।

अजितनाथ चन्दाप्रभु धीर,
आदीश्वर सुपार्श्व गभीर।
विमलनाथ विमल जग–जाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।।२।।

मल्लिनाथ जिन मगल–रूप,
पचबीस धनुष सुन्दर स्वरूप।

श्री अरनाथ नमू वर्धमान,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।।३।।

सुमति पद्म – प्रभू अवतस,
वासुपूज्य शीतल श्रेयस
कुथु पार्श्व अभिनन्दन भाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।।४।।

इणपरे श्री जिनवर सभारिए,
दुख दारिद्रय विघ्न निवारिए।
पच्चीसे पैसठ परमाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।।५।।

इण भणता दुख नावे कदा,
जो निज पासे राखो सदा।
धरिये पचतणुँ मन ध्यान,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।।६।।

श्री जिनवर नामे वाछित मिले,
मन–वाछित सहु आशा फले।
धर्मसिह मुनि नाम निधान,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।।७।।



- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन में
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
- बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

विधि—उपरोक्त दोनो मे से किसी भी छन्द का रविपुष्य दिन १०८ बार जप कर सिद्ध करके प्रतिदिन एक बार पाठ क इससे ग्रहशाति, विघ्नहरण, सपत्ति लाभ, प्रतिष्ठा प्राप्ति, पुत्र वा गर्भरक्षणादि सर्व मनोरथ पूर्ण होते है।

श्री पार्श्वनाथ-स्तुति

प्रणमामि सदा प्रभु—पार्श्वजिन
जिननायक दायक सौख्यघनम्।

घनचारु मनोहर देहधर
धरणिपति नित्य सुसेवकरम्।

करुणारस — रजित भव्यफणि
फणी सप्त सुशोभित मोलिमणि।

मणिकाचनरूप त्रिघोट घट
घटितासुरकिन्नर—पार्श्व—तटम्।

तटिनी पति–घोष–गभीर–स्वर
शरणागत–विश्व–अशेष–नरम्।
नरनारी – नमस्कृत नित्यमुदा
पद्मावती गावती गीत् सदा।
सततेन्द्रिय – गोप यथा कमठ
कमठासुर वारण – मुक्तहठम्।
हठहेलित – कर्मकृतान्त – बल
बल–धाम – दलदल–पकजलम्।
जलजद्वयपत्र प्रभानयन
नयनदित – भव्य – तरीशमनम्।
मन्मथ – महीरुह वह्निसम
समतागुणरत्नमय परमम्।
परमार्थविचार सदा कुशल
कुशल कुरु मे जिननाथ अलम्।
अलिनी नलिनी–नल – नीलतनु
तनुता प्रभु पार्श्व–जिन सुधनम्।
सुधन – धान्यकर करुणापर
परमसिद्धिकर दददादरम्।
वरतरु अश्वसेन कुलोद्भव
भवभृता प्रभु पार्श्वजिन शिवम्।।

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ-स्तुति

(दोहा)

कल्पबेल चिन्तामणि, काम–धेनु गुण – खान।
अलख अगोचर अगम गति, चिदानन्द भगवान्।।१।।

परम ज्योति परमात्मा, निराकार अविकार।
निर्भय रूप ज्योति स्वरूप, पूरण ब्रह्म अपार।।२।।

अविनाशी साहिब धणी, चिन्तामणि श्रीपास।
अर्ज करूँ कर जोड के, पूरो वछित आस।।३।।

मन–चिन्तित आशा फले, सकल सिद्ध हो काम।
चिन्तामणि को जाप जप, चिन्ता हरे यह नाम।।४।।

तुम सम मेरो को नही, चिन्तामणि भगवान।
चेतन की यह वीनती, दीजे अनुभव ज्ञान।।५।।

(चौपाई)

प्राणत देवलोक से आए,
जन्म बनारसी नगरी पाए,
अश्वसेन कुल–मडन स्वामी
तिहुँ जग के प्रभु अतरजामी।।६।।

वामादेवी माता के जाये,
लछन नागफणी मणि पाये,
शुभ काया नव हाथ बखाणो।
नील वर्ण तन निर्मल जाणो।।७।।

मानव यक्ष सेवे प्रभु–पाय,
पद्मावती देवी सुख–दाय,
इन्द्र–चन्द्र पारस – गुण गावे
कल्पवृक्ष चिन्तामणि पावे।।८।।

नित सुमरो चिन्तामणि स्वामी,
आशा पूरे अन्तरयामी,
धन–धन पारस पुरिसादाणी।
तुम सम जग मे को नही नाणी।।९।।

तुमरो नाम सदा सुखकारी,
सुख उपजै दुख जाय बिसारी,
चेतन को मन तुमरे पास।
मन – वछित पूरो प्रभु आस।।१०।।

(दोहा)

ॐ भगवत चिन्तामणि, पार्श्व प्रभु जिनराय।
नमो–नमो तुम नाम से, रोग–शोक मिट जाय।।११।।



- निरन्तर अध्ययन चिन्तन- मनन में
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
- दलित- निरोध के लिए सदैव तत्परता

वात पित्त दूरे टले, कफ नही आवे पास।
चिन्तामणि के नाम से, मिटे श्वास और खास।।१२।।

प्रथम दूसरो तीसरो, ताव चौथियो जाय।
शूल बहत्तर दूर हो, दादर खाज न थाय।।१३।।

विस्फोटक गडगुबडा, कोढ अठारह दूर।
नेत्र–रोग सब परिहरे, कठ – माल चकचूर।।१४।।

चिन्तामणि के जाप से, रोग शोक मिट जाय।
चेतन पारस नाम को, सुमरो मन चित लाय।।१५।।

(चौपाई)

मन शुद्धे सुमरो भगवान,
भयभजन चिन्तामणि–ध्यान,
भूत – प्रेत – भय जावे दूर।
जाप जपे सुख – सपत्तिपूर।।१६।।

डाकण साकण व्यतर देव,
भय नही लागे पारस–सेव,
जलचर थलचर उरपर जीव।
इनको भय नहि सुमरो पीव।।१७।।

बाघ सिह को भय नही होय,
सर्प गोह आवे नहि कोय,

बाट – घाट मे रक्षा करे।
चिन्तामणि चिन्ता सब हरे।।१८।।

टोणा टामण जादू करे,
तुमरो नाम लिया सब डरे,
ठग फासीगर तस्कर होय।
द्वेषी दुश्मन नावे कोय।।१६।।

भय सब भागे तुमरे नाम,
मन–वाछित पूरो सब काम,
भय – निवारण पूरे आस।
चेतन जप चिन्तामणि पास।।२०।।

(दोहा)

चिन्तामणि के नाम से, सकल सिद्ध हो काम।
राज–ऋद्धि रमणी मिले, सुख सपत्ति बहु दाम।।२१।।

हय गज रथ पायक मिले, लक्ष्मी को नही पार।
पुत्र कलत्र मगल सदा, पावे शिव दरबार।।२२।।

चेतन चिन्ता–हरण को, जाप जपो तिहुँ काल।
कर आबिल षट् मास को, उपजे मगल माल।।२३।।

पारस – नाम प्रभाव से, बाढे बल बहु ज्ञान।
मनवाछित सुख ऊपजे, नित सुमरो भगवान।।२४।।



- निरन्तर अध्ययन- चिंतन- ...
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर
- बलि- निषेध के लिए सदैव ...

सवत अठारा ऊपरे, साढ – त्रीस परिमाण।
पौष शुक्ल दिन पचमी, बार शनिश्चर जाण।।२५।।

पढे गुणे जो भाव से, सुणे सदा चित लाय।
चेतन सपत्ति बहु मिले, सुमरो मन वच काय।।२६।।

महावीर-स्तवन

जय बोलो महावीर स्वामी की।
घट–घट के अन्तर्यामी की।।ध्रुव।।

जिन जगती का उद्धार किया।
जो आया शरण वो पार किया।।
जिन पीड सुनी हर प्राणी की।
जय बोलो महावीर स्वामी की।।१।।

जो पाप मिटाने आया था।
जिन भारत आन जगाया था।।
उन त्रिशला – नन्दन ज्ञानी की।
जय बोलो महावीर स्वामी की।।२।।

हो लाख बार प्रणाम तुम्हे।
हे वीर प्रभु भगवान तुम्हे।
मुनि दर्शन मुक्ति – गामी की।
जय बोलो महावीर स्वामी की।।३।।

चौदह स्वप्न का स्तवन

राय सिद्धारथ घर पट – राणी,
नामे त्रिसला सुलक्षणा जी।
राज – भवन मॉहे पलॅगे पोढता,
चौदह सुपना राणी लह्या जी।।१।।

पहले सुपने गजवर दीठो,
बीजे वृषभ सुहामणो जी।
तीजे सिह सुलक्षण दीठो,
चौथे लक्ष्मी देवता जी।।२।।

पाचवे पचवरणी फूलनी माला,
छठे चन्दा अमिय – झर्‌यो जी।
सातमे सूरज, आठमे ध्वजा,
नवमे कलश अमिय भरयो जी।।३।।

पद्‌म सरोवर दशमे दीठो,
क्षीर समुद्र दीठो ग्यारमे जी।
देव विमान ते बार मे दीठो,
रण – झण घटा वाजतो जी।।४।।

रतनोनी राशि ते तेरमे दीठी,
अग्निशिखा दीठी चउदमे जी।

- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन मे
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रय
- बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत



चौदह सुपन देखी राणी जागी,
राय समीपे पहुँचिया जी।।५।।

सुणोजी स्वामी मै सुपना दीठा,
पाछली रात रलियामणा जी।
राजा सिद्धारथ पडित तेड़्या,
कहो पडित फल एहना जी।।६।।

अम कुलमण्डन तुम कुलदीवो,
जयवता तीर्थकर जन्मशे जी।
जे नर गावे ते सुख पावे,
आनन्द रग वधामणा जी।।७।।

श्री दीपावली का स्तवन

पूरब दिशे हुई पावा पुरी
धन धान्य ऋद्धि समृद्धि भरी।
हस्तीपाल नामे तिहॉ भूपाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१।।

गौतमे गुरुनी सेवा कीधी मनआनी,
एक रात मे हुआ केवलज्ञानी।
जो के चौदह राजु रह्या भाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।२।।

अठारे राय हुआ भगता,
दोय होय पोसा कीधा लगता,
जो के वीर सामु रह्या निहाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।३।।

प्रभुए दोय दिनरो सथारो कीधो,
सोल पहोर लगे उपदेश दीधो।
प्रभु मुक्ति गया कर्माने गाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।४।।

प्रभुजी तीस वर्ष सयम लीधो,
निज आतम कारज सिध कीधो।
वर्ष बियालीस दीक्षा पाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।५।।

प्रभु ने सात – सौ चेला चौदह–सौ चेली,
ज्याने मुक्ति महलमा दिया मेली।
जेणे कर्मना बीज दिया बाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।६।।

प्रभु ने एक राणी ने हुई एक बेटी,
जो के मुक्ति गया दुख दिया मेटी।
जमाई हुआ ज्यॉरो जमाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।७।।



- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर
- बलि- निषेध के लिए सदैव समुद

प्रभु ने एक बहन ने एकज भाई,
जो के स्वर्ग गया समकित पाई।
श्रावकना व्रत शुद्ध पाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।८।।

ऋषभदत्त ने देवानन्दा माता,
नयणे निरखता हुई साता,
दोनु मुक्ति गया कर्माने गाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।९।।

सिद्धारथ राजा ने त्रिशला राणी,
जेणे सथारो कीधो समता आणी,
अच्युत देवलोके टाको दियो झाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१०।।

जेणी राते वीरे मुक्ति पामी,
केवल पाम्या गौतम – स्वामी,
ज्यारो जाप जपो नव – करवाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।११।।

सुधर्मा स्वामी हुआ पाट – धणी,
ज्यारी कीर्ति महिमा जोर घणी।
दयामारग दीयो अजवाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१२।।

ज्यारे पाटे हुआ जबू वैरागी,
राते परण्या प्रभाते आठो त्यागी।
सोल वर्ष मे काटी कर्म जाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१३।।

आठे भामिनी वैराग्ये भीनी,
प्रभाते पियु साथे दीक्षा लीनी,
अबीहड प्रीति सघली पाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१४।।

प्रभव पण राजानो बेटो,
जीको जबूकुँवर से हुओ भेटो।
पाच–सौ से वैराग्य पाम्यो तत्काली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१५।।

बीस जिन समेत – शिखर सीझ्या,
अष्टापद गिरनार दोय सीझ्या।
वासुपूज्य सीझ्या चपा चाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१६।।

महावीरे चौमास कीधो पावापुरी,
कारतक वदी अमावस मुक्ति वरी।
भणता सुणता मगल – माली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१७।।



* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
* बलि निरोध के लिए सदैव

दिन दीवालीनो पायो टाणो,
तो रात्रि–भोजन अशनादि नहि खाणो।
ज्यारो जाप जपो शीयल पाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१८।।

गुरु – चेलानी जोडी सूरज शशी,
ऋषि रायचन्द कहे म्हारे मनडे वशी।
मै जुगतीशु जोडी जोड टकशाली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।१६।।

पूज्य जयमलजी रहिया पासो,
शहर नागौर मे कियो चौमासो।
सवत अठारा वर्प पीस्ताली,
वीर मुक्ति विराज्या दिन दिवाली।।२०।।

श्री गौतम स्वामी की स्तुति

वीर जिनेश्वर – केरो शीस,
गौतम नाम जपो निश–दीस।
जो कीजे गौतमनो ध्यान,
ते घर विलसे नवे निधान।।१।।

गौतम – नामे गजवर चढे,
मनवाछित हेला सॉपडे।

गौतम नामे नावे रोग,
गौतम नामे सर्व–सयोग।।२।।

जे वैरी विरुआ बकडा,
तस नामे नावे ढुकडा।
भूत प्रेत नवि खण्डे प्राण,
ते गौतमना करू वखाण।।३।।

गौतम नामे निर्मल काय,
गौतम नामे बाढे आय।
गौतम जिन–शासन–सिणगार,
गौतम नामे जय जयकार।।४।।

शाल दाल गोरस घृत गोल,
मनवछित कापड तबोल।
घरे सुघरणी निर्मल चित्त,
गौतम नामे पुत्र विनीत।।५।।

गौतम ऊग्यो अविचल भाण,
गौतम नाम जपो जग–जाण।
म्होटा मन्दिर मेरु – समान,
गौतम नामे सफल विहान।।६।।

घर मयगल घोडानी जोड,
वारू पहुँचे वाछित कोड।

→ निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मन
→ नारी- जागरण के लिए निरन्तर
→ बलि- निषेध के लिए सदैव समु



महियल माने म्होटा राय,
जो पूजे गौतमना पाय।।७।।

गौतम प्रणम्या पातक टले,
उत्तम नरनी सगति मिले।
गौतम नामे निर्मल ज्ञान,
गौतम नामे वाधे मान।।८।।

पुण्यवत अवधारो सहु,
गुरु गौतमना गुण छे बहु।
कहे लावण्य समय कर जोड,
गौतम तूठे सपत्ति कोड।।६।।

वीर जिन-स्तुति

श्री सिद्धारथ कुलदीपक चन्द,
त्रिशला दे राणीनो नन्द।
कोमल कचनवर्ण शरीर,
मनवाछित पूरण महावीर।।१।।

कृपानाथ करी करुणा घणी,
मुझ सामु जुओ शासन–धणी।
त्रिभुवन–नाथ आयो अब तीर,
मनवाछित पूरण महावीर।।२।।

अनन्तवली तप दुक्कर किया,
सभी कर्म कुँ दावानल दिया।
खम सम दम ने धारी धीर,
मनवाछित पूरण महावीर।।३।।

चुम्मालीसे चेला किया,
एकज दिन मे महाव्रत दिया।
गौतम – सरिखा हुआ वजीर,
मनवाछित पूरण महावीर।।४।।

समोसरणमा सुण्यो अधिकार,
अमृतवाणी रूप दीदार।
दीठे हरखे हियडू हीर,
मनवाछित पूरण महावीर।।५।।

एक पल धरे प्रभुजीनु ध्यान,
पग–पग प्रगटे पुण्यनिधान।
वचन मीठा जिम मिसरी खीर,
मनवाछित पूरण महावीर।।६।।

चैन पामे चिन्ता चकचूर,
देखी दुश्मन नासे दूर।
दिन–दिन बाढे सपत्ति शीर,
मनवाछित पूरण महावीर।।७।।

* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर
* दहेज- निषेध के लिए सदैव संघर्ष



तुम नामे भव–सागर तरे,
तुम नामे सब कारज सरे।
ऋषि–वृद्धि पामे वर चीर,
मनवाछित पूरण महावीर।।८।।

चिन्तामणि जिम जिनवर जाप,
क्रोड भवोना काटे पाप ।
रोग शोक नाशे पर–पीड,
मनवाछित पूरण महावीर ।।६।।

वैशाख सुदि दशमी दिन जाण,
प्रभुजी पाम्या केवलनाण।
सागर जैसा होत गभीर
मनवाछित पूरण महावीर ।।१०।।

सवल अठारह तेतीसे ताम,
मेडला नगर किया गुणग्राम।
षट्कायाना प्रभुजी पीर,
मनवाछित पूरण महावीर ।।११।।

प्रभु पावापुरीमा मुक्ति गया,
ऋषि रायचन्द कहे करज्यो मया।
पहुचाडो मुझ भव जल तीर,
मनवाछित पूरण महावीर ।।१२।।

श्री गौतम स्वामी का स्तवन

मगल वरते जी, मगल वरते जी।
म्हारे गौतम गणधर, मन मे वसते जी।टेक।

धन्ना शालिभद्र की ऋद्धि,
और अष्ट महा–सिद्धि जी।
गौतम नामे प्रकटे म्हारे,
नव – विध निधि जी।मगल॰१।

लब्धि का भण्डार ज्ञान के,
गौतम है आगारे जी।
आप नाम म्हारे सब सुख,
वरते मगलाचारे जी।मगल॰२।

आप नाम अति आनन्दकारी,
चिन्ता दुख सब भागे जी।
सुख सम्पत्ति का मगल बाजा,
मुझ घर बाजे जी।मगल॰३।

नाम कल्पतरु म्हारे आगन,
दारिद्र भाग जावे जी।
मन–वाछित म्हारे ऋद्धि सम्पदा,
घर मे आवे जी।मगल॰४।



- गुरु- आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
- बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

अमृत कुम्भ मे पाया चिन्तामणि,
दुख गया सब भागी जी।
अमृत सम मीठे गौतम तुम,
मनसा लागी जी। मगल०५ ।

मन कमल तुम नाम हस है,
बैठा अति सुखकारे जी।
हर्षित प्राण हुए सब मेरे,
अपरम्पारे जी। मगल० ६ ।

किसी बात की कमी न मेरे,
गौतम गणधर पाया जी।
तीन लोक की लक्ष्मी मुझ घर,
वास बसाया जी। मगल० ७ ।

सवत उगणीसे साल सितत्तर
शहर सितारे आया जी।
"घासीलाल" कहे सप्तमी श्रावण,
गुरु शुभ पाया जी। मगल० ८।

वज्र पञ्जर आरती

दोहा—सेवक मै अरिहन्त का, परम शक्ति अब जाग।
शरण लिया भगवन्त का, गये दु ख सब भाग।
ॐ जय परमेष्ठि गुणी, स्वामी जय।
भव तारक श्रद्धा की, गूजे श्रेष्ठ धुनी ॐ।।१।।

ॐ नमो अरिहताण, शिरपे टोप धरे—स्वामी
ॐ नमो सिद्धाण मुख पट, सब दु ख लोप करे ॐ।।२।।

ॐ नमो आयरियाण, देह कवच प्यारा — स्वामी।
ॐ नमो उवज्झायाण आयुध कर धारा—ॐ।।३।।

ॐ नमो लोए सव्व साहूण, पग के शुभ मोचक—स्वामी।
एसो पच णमोक्कारो, वज्रशिला रोचक—ॐ।।४।।

सव्व पावप्पणासणो, वज्रकोट वजरी—स्वामी।
मगलाण च सव्वेसि, खाई अगार भरी—ॐ।।५।।

पढम हवई मगल, स्वाहा पदधारी—स्वामी।
ढक्कन वज्रकोट का, वज्रमय सुखकारी—ॐ।।६।।

यह रक्षा मगलमय, सुख—दु ख सहारी—स्वामी ...।
स्थिर मन नित्य जपे जो, सुख पावे नर नारी—ॐ।।७।।

सोरठा—पाऊ बोधि समाधि कर्मशत्रु को हनन कर।
हरू सकल भव व्याधि, पूर्ण परम हूॅ आप मे।।८।।

* गुरु आज्ञा परायण
* निरन्तर ...
* नारी- जागरण के लिए निरन्
* बलि- निषेध के लिए ...



श्री

नवकार चालीसा

परम पद परमेष्ठी है, पच मत्र नवकार।
प्राणी पावन वह बने, जो जपता हर बार।।टेर।।

सकल सुखो का है यह दाता, सकल श्रुति का सार कहाता।१।
सकल सुरपति जस गुण गावे, सकल सुज्ञानी जाको ध्यावे।२।
सकल सिद्धि जिनके सुमिरन मे, सकल रिद्धि जिनके चरणन मे।३।
पहिले पद अरिहन्त–कहावे, वीतराग जिन नाम धरावे।४।
केवलज्ञानी है भगवन्ता, अनन्त सुख शक्ति बलवन्ता।५।
तुम प्रभु हो देवाधिदेवा, चौसठ इन्द्र करे तुम सेवा।६।
दोष अठारह दूर निवारे, गुण बारह प्रभुजी ने धारे।७।
समवशरण मे प्रभुजी सोहे, अष्ट प्रतिहार्य सकल मन मोहे।८।
अशोक वृक्ष और स्फटिक सिहासन, तीन लोक मे प्रभु को शासन।९।
चामर छत्र भामण्डल छाजे, सुमन वृष्टि देवदुन्दुभी बाजे।१०।
दिव्य ध्वनि से भविजन तारे, तीर्थकर पुरुषोत्तम सारे।११।
सकल करम को काट दिये है, मुक्ति बीच जो वास किये है।१२।
अगम अगोचर अज अविनाशी, है सर्वज्ञ पूर्ण गुण राशी।१३।
अगुरु–लघु अमर अविकारी, प्रभुजी आठ गुणो के धारी।१४।
सिद्ध देव पचम गति माही, उपमा जाकी कही न जाही।१५।
अतुल्य सुख सम्पन्न अरूपी, सहजानन्दी सहज सरूपी।१६।
जगमग जगमग जाकी ज्योति, भव पीडा जिनको नहीं होती।१७।

परम उदार परम गम्भीरा, परम हितैषी शम दम धीरा।१८।।
विषय कषाय को दूर निवारे, निदा विकथा को नहीं धारे।।१६।।
चारो सघ के जो है नेता, पाचो इन्द्रिय सदा विजेता।।२०।।
सुन्दर तन सुन्दर छवि तिनकी, दिव्य भव्य दृष्टि है जिनकी।२१।
आचारज शासन सचालक, पचाचार के पूरण पालक।२२।
बिना विचारे जो नहीं बोले, बोली मे मानो मधु घोले।२३।।
समदर्शी सबको प्रिय लागे, सघ हित सतत सर्वदा जागे।२४।
आगम अरथ सूत्र अभ्यासी – ज्ञानज्योति दिनकर प्रकाशी।२५।
उपाध्याय चौथे पद ज्ञानी – बोध बीज दाता कल्याणी।२६।
मानस बीच शारदा राजे षट्दर्शन जाके मुख छाजे।२७।
आतमदर्शन असल बतावे, वीतराग का पथ दिखलावे।२८।
जिज्ञासु जन हो बलिहारी, ज्ञानी जिनकी महिमा भारी।२६।
पाखडी जासे घबरावे, स्याद्वाद शैली फरमावे।३०।
चरण करण ज्ञाता हो नामी, अग उपाग पढाते स्वामी।३१।
पचम पद है सब अणगारा, ब्रह्मचारी बन मन को मारा।३२।
अचित सचित छोडी सब माया, ममता का बन्धन छिटकाया।३३।
कुटिल भुजग भोग को जाना, मन तन निग्रह मे सुख माना।३४।
महाव्रत धारी पचाचारी, परम सौभागी पर उपकारी।३५।
ईर्या भाषा सदा सभाले, रसना के दूषण सब टाले।३६।
पाद विहारी समताधारी, उग्रतपस्वी अल्प आहारी।३७।
करुणा दया का स्रोत बहता, दृष्टि मे अमृत रस रहता।३८।



* गुरु-आज्ञा-परायण
* निरन्तर अध्ययन-चिन्तन-मनन
* नारी-जागरण के लिए निरन्तर प्र
* रूढ़ि-निरोध के लिए सदैव समुद्य

परम समाधिवत है भाई, मगलरूप ये सत सदाही ।३६।
सदा शरण मै इनकी चहाऊँ सुख सपत्ति आनन्द यश पाऊ ।४०।

जो प्राणी शुद्ध भाव से, परमेष्ठि गुण गाय।
अशोक मुनि सिद्ध रूप हो, परमानन्द प्रगटाय।।

जय श्री पार्श्व प्रभो स्वामी-२

आशा पूरण करिये, हरिये कष्ट विभो।।ॐजय....
पारस पुरुषादानी, शरण पडा तेरी
धरणेन्द्र पद्मावती, सहाय करो मेरी।।ॐ।।
प्रतिदिन तुम्हे मनाऊ, वाछित फल पाऊ
पाकर पारस स्वामी, मै बलि–बलि जाऊ।।२।।
मम गृह कमला आवे, सुख मे दिन जावे
दास तुम्हारा निशदिन, जय कीरती पावे।।३।।
सब विध अब तो मुझ पे, दया करो स्वामी
पाहि त्राहि माम् दीन हे अन्तर्यामी।।४।।
कामधेनु सुरतरु से मुझको फल दाता
चिन्तामणि सम तुमसे, सब कुछ मै पाता।।५।।
पारस दिव्य शिव सपत्ति, 'केवल' को दीजे
पुत्र समझ कर अपना, जल्दी शुद्ध लीजे।।६।।

जय गुरुवर देवा

(तर्ज –जय जगदीश हरे.....)

ॐ जय गुरुवर देवा, ओ स्वामी जय गुरुवर देवा।
चरण कमल की निश–दिन, पाऊ मै सेवा।। ।।टेर।।

गुरु पद की महिमा, है देवो से भारी।
प्रथम नमन सब करते, श्रद्धा दिल धारी।। ।।१।।

मुक्ति मार्ग के तुम्ही व्याख्याता–ओ स्वामी।
भव्य जीवो के तुम्ही, हो मुक्ति दाता।। ।।२।।

भव सागर से तुम बिन, कौन हमे तारे–ओ स्वामी।
मिथ्या भ्रम सब मन का, कौन है निवारे ।।३।।

मै हू नाव तुम्हारी, तुम केवट मेरे–ओ स्वामी।
अध बिच झूले नैया, कर दो किनारे।। ।।४।।

मै हू लोह खड सम, तुम पारस प्यारा–ओ स्वामी।
स्वर्ण बनू मै गुरुवर, स्पर्श पा तुम्हारा।। ।।५।।

इसीलिये तो तव चरणो की, सेवा मैं चाहता–ओ स्वामी।
"धर्म" बोध देकर के, पार करो दाता।। ।।६।।



→ गुरु- आज्ञा- परायण
→ निरन्तर अध्ययन- चिन्तन मनन मे
→ नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रय
→ बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

महावीर ने क्या किया

वीर जिनेश्वर सोई, दुनिया जगाई तूने।।टेर।।
ज्ञान की मधुर सुरीली, बशी बजाई तूने।। १ ।।वीर०

भारत की नैया डोली, मृत्यु आ सिर पर बोली।
स्वर्ग से आकर भगवान्, पार लगाई तूने।।२।।वीर०

पशुओ पै छुरियॉ चलती, रक्त की नदियॉ बहती।
करुणा के सागर, करुणा गगा बहाई तूने।।३।।वीर०

देवो की करना पूजा, बस काम था और न दूजा।
मानव की अटल प्रतिष्ठा, जग मे जताई तूने ४।।वीर०

पथो का झूठा झगडा, जनता का मानस बिगडा।
भेद सहिष्णुता की रखी सच्चाई तूने।।५।।वीर०

पाप का पक धोना, नर से नारायण होना।
'अमर' अमर पद की, राह दिखाई तूने।।६।।वीर०

श्री ऋषभजिन-स्तवन

(उमादे भटियाणी—यह देशी)

सिरि आदेश्वर स्वामी हो, प्रणमू सिरनामी तुम भणी।
प्रभु । अन्तर्यामी आप, म्हा पर म्हेर करीजे हो।

मेटीजे चिन्ता मनतणी, म्हारा काटो पुराकृत पाप।।१।।टेर।।

आदि धरम नी कीधी हो, भरत क्षेत्र अवसर्पिणी काल मे।
प्रभु ! जुगल्या धरम निवार, पहिला नरवर मुनिवर हो।।
तीर्थंकर जिन हुआ केवली, प्रभु ! तीरथ थाप्या चार।।२।।सिरि०

मॉ 'मरुदेवी' थारी हो, गज होदे मुक्ति पधारिया।
तुम जनम्या ही परमाण, पिता 'नाभि' महाराजा हो।।
भव देव तणो करी नर थया, प्रभु ! पाम्या पद निरवाण।।३।।सिरि०

भरतादिक सौ नन्दन हो, बे पुत्री 'ब्राह्मी', 'सुन्दरी'।
प्रभु ! ए थारा अगजात, सघला केवल पाया हो।।
समाया अविचल जोत मे, काई त्रिभुवन मे विख्यात।।४।।सिरि०

इत्यादिक बहु तार्‌या हो जिन कुल मे प्रभु ! तुम ऊपन्या।
काई आगम मे अधिकार, और असख्या तार्‌या हो।।
उद्धार्‌या सेवक आपरा, प्रभु ! शरणा ई आधार।।५।।सिरि०

अशरण शरण कहीजे हो, प्रभु ! विरुद विचारो साहिबा।
काई अहो गरीब निवाज, शरण तुम्हारी आयो हो।।
हूँ चाकर जिन चरणा तणो, म्हारी सुनिये अरज आवाज।।६।।सिरि०

तू करुणाकर ठाकुर हो, प्रभु ! धरम दिवाकर जग–गुरु।
काई भव दु ख दुष्कृत टाल, 'विनयचन्द' ने आपो हो प्रभु !
निज गुण सपत शाश्वती, प्रभु ! दीनानाथ दयाल।।७।।सिरि०

- गुरु- आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर
- बलि निषेध के लिए सदैव

महावीर-स्तुति

श्री महावीर स्वामी की, सदा जय हो, सदा जय हो।।टेर।।
पवित्र पावन जिनेश्वर की, सदा जय हो, सदा जय हो।।१।।श्री महा॰

तुम्हीं हो देव देवन के, तुम्हीं हो पीर पैगम्बर।
तुम्हीं ब्रह्मा, तुम्हीं विष्णु, सदा जय हो, सदा जय हो।।२।।श्री महा॰

तुम्हारे ज्ञान खजाने की, महिमा बहुत भारी है।
लुटाने से बढे हर दम, सदा जय हो, सदा जय हो।।३।।श्री महा॰

तुम्हारी ध्यान मुद्रा से, अलौकिक शान्ति झरती है।
सिह भी गोद मे सोते, सदा जय हो, सदा जय हो।।४।।श्री महा॰

तुम्हारा नाम लेने से, जागती वीरता भारी।
हटाते कर्म लश्कर को, सदा जय हो, सदा जय हो।।५।।श्री महा॰

तुम्हारा सघ सदा जय हो, 'मुनि मोतीलाल' सदा जय हो।
'जवाहरलाल' पूज्य गुरुराज, सदा जय हो, सदा जय हो।।६।।श्री महा॰

मंगलिक चार शरण-स्मरण

प्रात उठिने सुमरिये, हो, भविजन। मगलिक शरणा चार।
आपदा मिटे सपदा हुवे हो, भविजन। दौलतना दातार।
हृदय मा रखिये हो, भविजन मगलिक शरणा चार।।१।।

अरिहन्त सिद्ध साधु तणा हो, केवली भाषित धर्म ।
ए शरणा नित ध्यावता हो, भविजन । टूटे आठो कर्म । ।२ । ।हृदय॰
वाटे घाटे चालता हो, भविजन रात दिवस मझार ।
ग्राम नगरपुर विचरताहो, भविजन । विघ्न निवारणहार । ।३ । ।हृदय॰
ए चारो सुख कारिया हो, ए चारो ही जगसार ।
ए चारो उत्तम कह्या हो, भविजन । चारो हितकार । ।४ । ।हृदय॰
डायण सायण भूतडा हो, भविजन । सिह बाघ ने शूर ।
वैरी दुश्मन चोरटा हो, भविजन । रहे ते सघला दूर । ।५ । ।हृदय॰
राखो शरणानी आसथा हो, भविजन । नेडो नही आवे रोग ।
आणदवर्ते इण नामथीहो, भविजन । व्हाला तणो सयोग । ।६ । ।हृदय॰
सुखशाता वर्ते घणी हो भविजन । जो ध्यावे नर नार ।
परभव जाता जीवने हो, भविजन । एह तणो आधार । ।७ । ।हृदय॰
मन चिंतित मनोरथ फले हो भविजन । वर्ते कोड कल्याण ।
शुद्धमनथी ध्यावताहो, भविजन । निश्चय पदनिर्वाण । ।८ । ।हृदय॰
इणसरीखोशरणोनहीहो,भविजन।इणसरीखोनहीनाम ।
इणसरीखो मित्र नही हो, भविजन । ग्राम नगरपुर ठाम । ।६ । ।हृदय॰
दान शियल तप भावना हो, भविजन । ए जग मे तत्त्वसार ।
करो अराधो भाव शु हो, भविजन । पामो मोक्ष द्वार । ।१० । ।हृदय॰
जोड कीधी छे जुगतिशु हो, भविजन । 'पाली' शेखे काल ।
ऋषि'चौथमल'इमभणेहो,भविजन।सुणजोबालगोपाल । ।११ । ।हृदय॰



- गुरु- आज्ञा- पालन
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी जागरण के लिए निरन्तर
- व्यसन- निषेध के लिए सदैव

नवकार मन्त्र की महिमा

आनद मगल करू आरती, सत चरण की सेवा,
प्रभु सत चरण की सेवा।।
शिवसुख कारण विघ्न निवारण पचपरमेष्ठि देवा।
प्रभु सत चरण की सेवा ।। टेर ।।

पहली आरती अरिहन्त देवा, कर्म खपे तत् खेवा,
चौसठ इन्द्र करे तव सेवा, वाणी अमृत मेवा।।१।।आनन्द॰

बीजी आरती सिद्ध निरजन, भजन भव–भय केरा,
चिदानन्द चिद्रूप अखडित, मिटे भवो भव फेरा।।२।। आनन्द॰

तीजी आरती श्री आचारजजी, छत्तीस गुण गभीरा,
सघ शिरोमणि सोहे दिनमणि, दे हित बोध अनेरा।।३।।आनन्द॰

चौथी आरती उपाध्यायजी, भणे भणावे ऐवा,
सूत्र अर्थ करे तत् खेवा, सेवा करे तस देवा।।४।।आनन्द॰

पचम आरती सर्व साधुजी, भारड पखी जेवा,
पच महाव्रत पाले, दूषण टाले, अविचल शिव सुख लेवा।।५।।आनन्द॰

गावे सीखे ने सुणे आरती, भविजन भासे एवा,
तेहना पातक टल जावे, नित उठ मगल मेवा।।६।।आनन्द॰

भाव धरीने गावे आरती, पच परमेष्ठी देवा,
'विनयचन्द मुनि' गुण गावे, लेना शिवसुख मेवा।।७।।आनन्द॰

पंच नवकार शरण

(तर्ज राधेश्याम)

अरिहत प्रभु का शरणा लेकर, क्रोध भाव को दूर करे।
क्षमा भाव से शान्ति धरकर, मीठा ही व्यवहार करे।।१।।

सिद्ध प्रभु का शरणा लेकर, मान बडाई दूर करे।
विनीत भाव से छोटे बनकर, ऋजुता का व्यवहार करे।।२।।

आचार्यो का शरणा लेकर, झूठ कपट का त्याग करे।
सीधा सादा रहना अच्छा, जीवन सारा सरल बने।।३।।

उपाध्याय का शरणा लेकर, खोटी तृष्णा दूर करे।
मर्यादा से ज्यादा लक्ष्मी, रखकर क्या कल्याण करे।।४।।

मुनियो के चरणो मे रहकर, अपना कुछ उद्धार करे।
मूल कषायो को क्षय करके, वीतराग पद प्राप्त करे।।५।।

गुरु वन्दना

गुरुदेव ! तुम्हे नमस्कार बार बार है।
श्री चरण शरण से हुआ जीवन सुधार है।।टेर।।
अज्ञान तम हटा के ज्ञान ज्योति जगा दी।
दृढ आत्म ज्ञान मे अखण्ड दृष्टि लगा दी।
उपदेश सदाचार सकल शास्त्र सार है।।१।।गुरुदेव०



* गुरु आज्ञा- परायण
* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर
* बलि- निषेध के लिए सदैव

-विधि युक्त सिर झुका के कर रहे है वन्दना।
अब हो रही मगलमयी सद्भाव की है स्पदना।
माधुर्य से मिटा रही मनका विकार है।।२।।गुरुदेव॰

यह है मनोरथ नित्य रहे सन्त चरण मे।
अन्तिम समय समाधि मरण चार शरण मे।
यह 'सूर्य–चन्द्र' मोक्ष मार्ग मे विहार है।।३।।गुरुदेव॰

उपसर्ग हर स्तोत्र:

उपसर्ग हर श्री पार्श्व जिन, मगल करण अवतार है।
सघन कर्म विमुक्ति कारक, सर्पादि विष हरतार है।
कल्याण के सद्धाम है पर स्वय तो निष्काम है।
भक्ति सहित वन्दू उन्हे, गुणकर ललित ललाम है।।१।।

सर्पादि का विष दूर कारक, नाम जिनका मत्र है।
जो कष्ट मे ध्याये इसे, वह भव्य परम पवित्र है।
सब रोग मारी ज्वर जरादिक, पास नही आते कभी।
ग्रह भूत प्रेतादिक भगे, तव नाम लेते ही सभी।।२।।

दूर ही रहे तव नाम मत्र, प्रणाम भी बहु फल फले।
नारक पशु के दु ख टले दौर्भाग्य नर भव का गले।
जब तक रहे ससार मे, नर देवभव के सुख लहे।
तव नाम की महिमा अतुल, पर मदमति जन ना सहे।।३।।

जिनदेव पार्श्वनाथ सेवा, ससृति मे उद्भुत कही।
कल्प द्रुम काम कुभ धेनु, अचित्य मणि सम है सही।
श्रद्धा समन्वित जैसे नरादि, भीति–हत होते सदा।
पाते सतत बिन बाध्य के, अमरादि का पद है मुदा।।४।।

ॐ ह्रीँ श्रीँ ऐँ ॐ, अनन्त हो वीर्य गुणधारक विभो।
सर्व आधि–व्याधि दूर जाये, दर्श से पावन प्रभो।
मनोकामना पूरक यथा, है कल्पद्रु गुणतम परम।
वैसे सफल होते मनोरथ नाम से सुखतम चरम।।५।।

परमेष्ठि वाचक ॐ रू ह्रींकार युक्त नाग राज को।
करते नमन काम जयी, देवेन्द्र वन्द्य जिन राज को।
शान्त–दान्त–अक्लान्त–अभ्रान्त ब्रह्म से शोभित प्रवर।
ससाधना की दीप्ति से, नव चेतना देवे प्रखर।।६।।

विष के प्रहारक मन्त्र दाता पार्श्व प्रभु शिव धाम है।
ध्याये इन्हे नित ध्यान से, वह नीरूज कल काम है।
ॐ ही क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वाहा धरणेन्द्र पद्मावती मन्त्र है।
ससिद्धि का अनुपम अमोध, यह यन्त्र अरु सु–त्तत्र है।।७।।

करते नमन ॐ पचमेष्ठी, बीज मात्रिक देव को।
रक्षक परम ॐ ही सदा, शासन विधायक सेव को।
सरोद्रशाली कमठ ताप, का किये मद चूर्ण है।
करुणा सदन दिव्य दीप्ति, धन, मगल मय प्रपूर्ण है।।८।।

- गुरु- आज्ञा परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
- कुरीति- निरोध के लिए सदैव समुद

ॐ ह्रीं प्रयुक्त अष्टाक्षरी, धरणेन्द्र पद्माराजते।
प्रत्यक्ष कीरति प्रथित है, विघ्न बाधाए ना छाजते।
मद अष्ट के हारक प्रबल, सृति से न ममता मोह है।
कर्मारि के उच्छेद कर, पाते न जिनकी टोह है।।९–१०।।

हे महामुने ! यशोधनी, भक्ति प्रभावक भावना।
चाहते तुम्हारे चरण से, सम्यक्त्व की नित कामना।
ससार मे जब तक रहे, आस्था प्रबल देते रहे।
प्रकाश पुज प्रकाश की, नैया प्रवर खेते रहे।।११।।

"नमिऊण" स्तोत्र

जिनके पाद पद्म मे नमते, सदा देवो के गणवेश।
चुडामणि की दिव्य प्रभा से, सुशोभित है सौम्य विशेष।
महाभय को नष्ट करे जो, तम का करते है अवसान।
नमन करू मै पार्श्व प्रभु को, करता हूँ सस्तुति गान।।१।।

काति लावण्य नष्ट जिनका, गलित नख मुख हस्त पेर।
जलते अग प्रत्यग सारे, कुष्ट छाया लेता वैर।
तव सेवा अजलि से होता, भक्त निरामय निरापद।
कामना सब फलित होती, लहे समृद्धि सुख सम्पदा।। २–३।।

दुर्वात से घोर क्षुब्ध जलधि, वीचि मे हो रव विशेष।
दिग् विमूढ औ भयान्वित है, छुटा अरू ले श्वास नि शेष।

भटका यान तट जा लगता, चरण नमन से क्षण वार मे।
हे अन्तर्यामी ! पार्श्व जिनवर, सेवक बचे मझधार मे।। ४–५।।

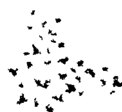
भीषण रूप दवाग्नि लेती, क्रूर पवन का पाके सग।
मुग्ध मृग पशु पक्षी भटके, करुण क्रन्दन से भीत व्रन।
वह दावानल न कुछ करता, जगद गुरु श्री पार्स शरण।
शात स्वस्थ जीवन उनका, भक्ति मे चित्त योग करण।। ६–७।।

वदन चमके अति लाल नयन, जीभ है लपलपा रही।
घोर विकराल अति काला, फण धर जो होवें सही।
तव नाम सतत लेने वाला, कीट समझ उसे फेंक दे।
तो भी नही वह रोष धरता, झुक प्रेम से निज राह ले।। ८–६।।

वन मे भील तस्कर सिह रू व्याघ्रादि का रहता डर।
आकुल व्याकुलता छायी है, त्रस्त बने सारे ही नर।
अधीर विनाशित सर्व ही जन, पाते प्रभु पारस सयोग।
प्रणाम किए होने से पाते, अविनाशी वैभव भोग।।१०–११।।

प्रज्वलित नेत्र विस्फारित मुख, विशाल काय नख वज्र रूप।
कर प्रहार कुभ स्थल चीरा, वनराज का क्रूर स्वरूप।
नभ पतित मणि रत्नो सम जो, वचनास्त्र.भूप धारे।
कुपति हरि सहार न करता, भय चिन्ता प्रभु निवारे।।१२–१३।।

शशि धवल से दन्त सुशोभित, मुसल सदृश सूड विशेष।
मधुपिग जैसे नयन युगल, चचलता जो धरे अशेष।



- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर
- बलि निषेध के लिए सदैव समु

जलधर से रव पूर्ण करि वर, हो मत्तवाला करे उद्दाम।
पर तव सुमिरण से प्रभावी, शात भव्य लगता ललाम।।१४–१५।।

तलवार के अभिघात से, शिर ध्वस्त से पाए विविध।
विदीर्ण भाले से करि है, सो पूर्ण मादकतम सविध।
औत्सुक हो विरव प्रचुर वो, कर रहा रिपु दल सहार।
पराभव दर्पशील रिपु का, तव शरण यश जय जयकार।।१६–१७।।

महाभय हर पार्श्व प्रभो, का कीर्तन सुखकार।
आनद मगल वरते सदा, भगे मन अधियार।।१८–१६।।

राजभय राक्षस दु स्वप्न, अपशकुन पीडा दूर हो।
सध्या मार्ग सकट रजनी, पढे सुने जो स्तोत्र को।
मानतुग आचार्य विरचित, भव्य स्तवन प्रभु पास का।
शमन करे सर्वविघ्न अघ, सदा शरणागत दास का।।२०–२१।।

ध्यान लीन प्रभु पार्श्व खडे, स्वरूप रमणता श्रेयकार।
कमठ उपसर्ग वैर से करता, रहे अचल प्रभु अविकार।
सुर नर किन्नर युवतिओ से, जिनका हुआ सस्तुति गान।
पार्श्व स्वामिन जयवत हो, जो अद्वेष गुण रत्न खान।।२२।।

स्तोत्र मे मत्र ऐसे गुप्त, जैसे देव अन्तर्धान।
"नमिऊण पास विसहर वसह, जिण फुलिग" रूप मत्र जान।
जाने सो ही ध्यावे भव्य, इसे अजपा जाप समान।
अचिन्त्य कारज सिद्ध होते, असीम शक्ति अक्षय निधान।।२३।।

आशा तृष्णा कामना तज, जो ध्यावे प्रभु पास को।
सतोष से दु ख दूर जाता दिल मे रखे विश्वास जो।
आधि व्याधिया दूर रहती निर्भय अवस्था पावे वो।
समय पा स्वामी तुल्य होवे, सशय जरा न प्रकाश दो।।२४।।

पूज्य हुक्मीचन्दजी का छन्द

(समता सघ के सस्थापक आचार्य)

पूज्य शहर टोडा के थे वासी, सम्वत् अठारासौ गुण्यासी।
सयम ले जीवन सफल करे, पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यान धरे।।टेर।।

पूज्य महा त्यागी ने वैरागी, जाकी शिवपुर से सूरत लागी।
आतम ज्ञान मे रमण करे, पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यान धरे।।१।।

पूज्य सब मीठा ने त्याग दिया, इक्कीस वर्ष तप बेला किया।
देवता जा की सेवा करे, पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यान धरे।।२।।

पूज्य नामे शत्रु मित्र बने, और राज पच मे श्रेष्ठ चुने।
रिद्धि सिद्धि भण्डार भरे, पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यान धरे।।३।।

पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यावे, नित नई बधाई घर आवे।
भूत प्रेत भय दूर हरे, पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यान धरे।।४।।

पूज्य हुक्मीचन्दजी को नाम रटे, तो ताव तेजरो परो हटे।
पूज्य नाम से कुष्ट रोग टरे, पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यान धरे।।५।।



* गुरु- आज्ञा- परायण
* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्य

पूज्य हुक्मीचन्दजी का गुण गावे, वह सुख सम्पत्ति आनन्द पावे।
चेला चेली पुत्र होय सरे, पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यान धरे।।६।।

पूज्य नाम लिया से आश फले, जय विजय लक्ष्मी आन मिले।
पूज्य भव सागर से तारे तिरे, पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यान धरे।।७।।

पूज्य अष्टक विमान मे जावे, बलदेव विदेह हो शिव पावे।
कहे 'चौथमल' जयकार करे, पूज्य हुक्मीचन्दजी को ध्यान धरे।।८।।

प्रार्थना-महिमा

सुबह और शाम की, प्रभुजी के नाम की।
फेरो एक माला, हो हो फेरो एक माला।।टेर।।

सकल सार नवकार मन्त्र है, परमेष्ठी की माला,
नरकादिक दुर्गति का सचमुच, जड देती है ताला।
कर्मों का जाला, मिटे तत्काला।।१।।फेरो एक माला॰

सुदर्शन और सीताजी ने, फेरी थी यह माला,
शूली का सिहासन हो गया, शीतल हो गई ज्वाला।
शील जिसने पाला, सच्चा है रखवाला।।२।।फेरो एक गाला॰

सुमिरण करके श्रीमती ने, नाग उठाया काला,
महा भयकर विषधर था, वह, बनी फूल की माला।
धर्म का प्याला, पियो प्यारे लाला।।३।।फेरो एक माला॰

द्रौपदी का चीर बढाया, दु शासन मद गाला,
मैना सुन्दरी श्रीपाल का, जीवन बना विशाला।
सुभद्रा ने तोला, चम्पा द्वार खोला।।४।।फेरो एक माला॰

राजदुलारी बाल कुमारी, देखो चन्दन बाला,
महा भयकर कष्ट उठाया, सिर मूडा था मूला।
तपस्या का तेला, सब दुख ठेला।।५।।फेरो एक माला॰

समय बीतता जाये मित्रो ! इसको सफल बना लो,
सद्गुरु के चरणो मे आ, परमेष्ठी ध्यान लगा लो।
गुण गोव 'भोला', 'हरि' ऋषि बोला।।६।।फेरो एक माला॰

तीन तत्त्व

(तर्ज चुप चुप खडे हो)

देव गुरु धर्म तत्त्व, तीन ये महान् है।
इन्हे पहिचाने वह, सच्चा बुद्धिमान है।।टेर।।

करुणा के मेघ–वीर, अमृत बहा गये,
सर्व जग जीव हित, देशना सुना गये, जी २
तू भी मीठा घूट पीले, जीवन रसाल है।।१।।देव गुरु॰

वीर पुत्र महामुनि, कर्मों से जूझते,
भौतिक सुखो को छोड, आत्म सुख ढूढते, जी २
षटकाय प्रतिपाल, गुण के निधान है।।२।।देव गुरु॰

आज्ञा- परायण
- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन मे
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रय
- दति- निषेध के लिए सदैव समुद्यत



सम्यक्त्व मूल धर्म, वीर ने बताया है,
तेरी पुण्यवानी महा, जो कि हाथ आया है, जी २
प्रेम से जो पाले वह, पावे निर्वाण है।।३।।देव गुरु॰

तत्त्व क्या है? रत्न है, ये मूल्य न अकात है,
सकट मे सुख मे ये, जन्म जन्म साथ है, जी २
'केवल' यो 'पारस' को देत ज्ञान दान है।।४।।देव गुरु॰

प्रभुवर ! ऐसी भक्ति दो

(तर्ज खडी के नीचे)

जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा, प्रभुवर ! ऐसी भक्ति दो !
समभावो से कष्ट सहू सब, मुझमे ऐसी शक्ति दो।।टेर।।

किन जन्मो मे कर्म किये थे, आज उदय वो आये है,
कष्टो का कुछ पार नही जो, मुझ पर ये मडराये है,
डिगे न मन मेरा समता से, चरणो मे अनुरक्ति दो।।१।।प्रभुवर॰

कायिक दर्द भले बढ जाये, किन्तु मन मे क्षोभ न हो,
रोम–रोम भले पीडित हो मेरा, किन्तु मन विक्षोभ न हो,
दीन भाव नही आवे मन मे, ऐसी शुभ अभिव्यक्ति दो।।२।।प्रभुवर॰

आर्त्तध्यान न आवे मन मे, दु ख दर्द को पी जाऊ,
ध्यान लगा दूँ प्रभु चरणो मे, हॅस–हॅस कर मै जी जाऊ,
रोने से ना दर्द मिटे यह, पावन चिन्तन शक्ति दो।।३।।प्रभुवर॰

महावेदना भले सतावे, ध्यान तुम्हारा ना छोड़ू,
जीवन के अन्तिम श्वासो तक, अपनी समता ना छोड़ू,
कभी न मागू तुमसे प्रभुवर ! कष्टो से मुझे मुक्ति दो।।४।।प्रभुवर०

भले न तन दे साथ जरा भी पर, मन साधन अनुरक्त रहे,
जीवन की हर श्वास तुम्हारे, चरणो की ही भक्त रहे,
रहे समाधि अविचल मेरी, शान्ति की अभिव्यक्ति दो।।५।।प्रभुवर०

तीन मनोरथ

(दोहा)

आरम्भ परिग्रह तजि करि, पच महाव्रत धार।
अन्त समय आलोयणा, करू सथारो सार।।
वो दिन धन होसी, जद करस्यू धरम विचार।।टेर।।

एक जीव के कारणे, कियो आरम्भ बेशुमार।
परिग्रह की सीमा नही कोई, दिन–दिन बढे अपार।।१।।वो दिन०

धर्म ध्यान निपजे नही, नही कीनो पर उपकार।
आरम्भ परिग्रह छोड ने, निवृत्त होसू जिन बार।।२।।वो दिन०

भव भव मे भटकत फिर्यो, काई चौरासी मझार।
साधु या श्रावकपणो, नही कीनो अगीकार।।३।।वो दिन०

ब्रह्मचर्य व्रत पालसू, कोई सयम सतरे प्रकार।
पच महाव्रत धार ने, कोई बणसू जद अणगार।।४।।वो दिन०



* गुरु-आज्ञा-पालन
* निरन्तर अध्ययन-चिन्तन-मनन
* नारी-जागरण के लिए निरन्तर प्र...
* रूढ़ि-निरोध के लिए सदैव ...

अन्त सथारो धारसू, अट्ठारे पाप परिहार।
अरिहन्त सिद्ध साधु केवली, ए चारो शरणा धार।।५।।वो दिन.

सब ही जीव खमावसू, काई खमसू बारम्बार।
शुद्ध भावे पडित मरण, कोई करसू देह विसार।।६।।वो दिन.

तीन मनोरथ ए कह्या, जो नित चिन्ते नरनार।
इण भव पर भव जीव के, कोई खरची बाधे लार।
तीन मनोरथ पूरज्यो मारे, होसी मगलाचार ।।७।।वो दिन.

हितोपदेश

(तर्ज यू कोई मिल गया)

श्वासो का क्या ठिकाना रुक जाय चलते–२
प्राणो की रोशनी भी, बुझ जाय जलते–२।।टेर।।

जीवन है स्वप्न जैसा दो दिन का है बसेरा–२
आयेगी मौत निश्चित ले जाय बचते–२ ।।१।।श्वासो.

जीवन है इक तमाशा पानी मे ज्यो वताशा–२
आयेगी मौत निश्चित ले जाय बचते–२।।२।।श्वासो.

आयेगा एक झौका जीवन का दीप है गुल–२
पेडो पर चहचहाती निष्पद है जो बुलबुल–२।।३।।श्वासो.

कितने ही घर बसाये कितने ही घर उजाडे–२
स्थायी रहा न राही श्वासो के घटते–२।।४।।श्वासो.

अरमान लम्बे बाधे टूटे न तार साधे–२
अन्तिम समय मे सब ही रहे हाथ मलते–२ । ।५ । ।श्वासो॰

आया था हाथ खाली खाली ही जा रहा है–२
परिवार और प्रियजन ले जाये हटते–२ । ।६ । ।श्वासो॰

श्वासो के ही सहारे जीवन के खेल सारे–२
श्वासो का यह पिटारा चुक जाये चुकते–२ । ।७ । ।श्वासो॰

श्वासो के तार सारे प्रभु नाम के सहारे–२
बाधेगे वे अमरनर–मर जाय हसते–२ । ।८ । ।श्वासो॰

सुख पूर्ण स्वर्ण अवसर रे मूर्ख यो न खो दे–२
'विचक्षण' भॅवर से तरना प्रभु नाम रटते–२ । ।९ । ।श्वासो॰

दस श्रावक स्तुति

(जाओ जाओ ए मेरे साधु – यह देशी)

कैसे कैसे महावीर जिनके, श्रावक हुए महान् । ।टेर । ।

पहले आनन्द श्रावक जिनके, विनय भरा अग अग ।
सत्यनिष्ठ भी पूरे पूरे, रक्खा न्याय अभग । ।१ । ।कैसे॰

कामदेव व्रत दृढ ऐसे की, शकेन्द्र ने गुण गाया ।
कर पिशाच हाथी अहि वैक्रिय, सुर भी डिगा न पाया । ।२ । ।कैसे॰

चूलणी पिया और सुरादेव, और चुल्लशतक भी भारी ।
अपने व्रत के लिये जिन्होने, प्रीत सुतो की वारी । ।३ । ।कैसे॰



महावादी थे श्री कुण्डकौलिक, क्षण मे देव हराया।
पुरुषारथ मत ही है सच्चा, करके सिद्ध दिखाया।।४।।कैसे.

श्रावक श्री सकडाल पुत्र ने, जिनमत अति दृढ धारा।
चाल अनेक चला गौशालक, किन्तु अन्त मे हारा।।५।।कैसे.

धन्य धन्य श्री महाशतक जी, निज अपराध निहारा।
सत्य वचन भी कटु क्यो बोला? सविनय दण्ड स्वीकारा।।६।।कैसे.

पिया नन्दिनी पिया सालिही, को उपसर्ग न पाया।
'पारस' ने यो उपासको का, स्वत स्तुति मगल गाया।।७।।कैसे.

राम कहो

राम कहो रहिमान कहो कोऊ, कान्ह कहो महादेव री।
पारसनाथ कहो कोऊ ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयमेव री।।टेर।।

भाजन भेद कहावत नाना, एक मृत्तिका रूप री।
तैसे खण्ड कल्पना रोपित, आप अखड सरूप री।।१।।राम.

निज पद रमे राम सो कहिये, रहम करे सो रहिमान री।
कर्षे करम कान्ह सो कहिये, महादेव निर्वाण री।।२।।राम.

परसे रूप पारस सो कहिये, ब्रह्म चिन्हे सो ब्रह्म री।
इह विधि साधो। आप 'आनन्दघन' चेतनमय निष्कर्म री।।३।।राम.

प्रभु मोरे अवगुण

प्रभु ! मोरे अवगुण चित्त न धरो।
समदरशी है नाम तिहारो, चाहो तो पार करो।।१।।

इक नदिया इक नाद कहावत, मैलो ही नीर भर्यो।
जब मिल करके इक वरण भये, सुरसरि नाम पर्यो।।२।।

इक लोहा पूजा मे राखत, इक घर वधिक पर्यो
पारस गुण अवगुण नहि चितवत, कचन करत खरो।।३।।

यह माया भ्रमजाल कहावत, 'सूरदास' सगरो।
अब की बेर मोहि पार उतारो, नहि प्रण जात टरो।।४।।

क्षमापना गीत

(तर्ज होठो से छू लो)

हम तुमको क्षमा देगे, तुम हमको क्षमा देना।
महापर्व सम्वत्सरी है, सब मिल के क्षमा करना।।टेर।।
भगवान् का कहना है, मत जीव सताओ तुम,
इससे भी बढकर है कोई, दिल ना दुखाओ तुम।
कटु वचन कहा किसी को, आज माग क्षमा लेना।।१।।हम॰

निष्कपट जो साधक हो, वही सफल हो सकता,
और शुद्ध अन्तर्मन मे ही, धर्म तो ठहर सकता।
तुम धार्मिक होकर के फिर, ऊर्ध्वगमन करना।।२।।हम॰

- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
- नारी जागरण के लिए निरन्तर
- रूढि- निषेध के लिए सदैव

यदि मन मे अशुभ सोचा, घृणा द्वेष या वैर किया,
यदि वचन से अशुभ कहा,और काया से अशुभ किया।
सच्चे मन से उसकी, मिच्छा दुक्कड कहना।।३।।हम.

आनन्द का द्वार क्षमा, अपवर्ग का मोक्ष क्षमा,
'शान्ति' देने वाली अति, निर्मल गगा क्षमा।
अपनाके क्षमा को तुम, आह्लाद प्राप्त करना।।४।।हम.

दयामय ! ऐसी मति हो जाय

(गुरु हस्ति का प्रिय भजन)

दयामय ! ऐसी मति हो जाय।
त्रिभुवन की कल्याण कामना, दिन दिन बढती जाय।।टेर।।

भूले भटके उल्टी मति के, जो है जन समुदाय।
उन्हे दिखाऊ सच्चा सत्पथ, निज सर्वस्व लगाय।।१।।दया.

औरो के दुख को दुख समझू, सुख का करू उपाय।
अपने सब दुखो को सह लू, पर दुख सहा न जाय।।२।।दया.

सत्य धर्म हो सत्य कर्म हो, सत्य ध्यये बन जाय।
सत्यान्वेषण मे ही जीवन, 'प्रेमी' यह लग जाय।।३।।दया.

मेरे अन्तर भयो प्रकाश

(तर्ज दोरो-जैनधर्म रो मारग)

मेरे अन्तर भयो प्रकाश, नही अब मुझे किसी की आश।।टेर।।

काल अनत रुला भववन मे, बधा मोह के पाश।
काम, क्रोध, मद, लोभ, भाव से, बना जगत् का दास।।१।।मेरे॰

तन धन परिजन सब ही पर है, पर की निवारो आश।
पुद्गल को अपना कर मैने, किया स्वत्व का नाश।।२।।मेरे॰

रोग शोक नही मुझको देते, जरा मात्र भी त्रास।
सदा शान्तिमय मै हू मेरा, अचल रूप है खास।।३।।मेरे॰

इस जग की ममता ने मुझको, डाला गर्भावास।
अस्थि मासमय अशुचि देह मे, मेरा हुआ निवास।।४।।मेरे॰

ममता से सताप उठाया, आज हुआ विश्वास।
भेदज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश ।।५।।मेरे॰

मोह मिथ्यात्व की गाठ गले तब, होवे ज्ञान प्रकाश।
'गजेन्द्र' देखे अलख रूप को, फिर न किसी की आश।।६।।मेरे॰

धर्म प्रेम के हीरे मोती

(तर्ज झूम झूम के दो दीवाने)

धर्म प्रेम के हीरे मोती, सन्त बिखेरे गली गली,
ले लो रे कोई वीर का प्यारा, आवाज लगाये गली गली।
वीर नाम के हीरे मोती, सन्त बिखेरे गली गली।।१।।टेर।।

दौलत के दीवानो ! सुन लो, इक दिन ऐसा आएगा,
धन दौलत और महल खजाना, पड़ा यही रह जाएगा।
अन्त समय कोई साथ न देगा, आखिर होगी चला चली।।२।।धर्म॰



* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

भाई भतीजे सगे सम्बन्धी, इक दिन तुझे भुलाएगे,
आज जो कहते हम तेरे है, आग मे तुझे जलाएगे।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली गली।।३।।धर्म.

जिसको अपना कहकर बन्धु, तू इतना इतराता है,
अन्त समय कोई साथ न देगा, तू ही अकेला जाता है।
दो दिन का यह चमन खिला है, मुरझाएगी कली कली।।४।।धर्म.

धर्म ध्यान अरु त्याग तपस्या, यही साथ मे जाते है,
सग तू कर ले साधु सन्त का, शास्त्र यही फरमाते है।
कालघडी को भूल न जाना सिर पर है तैयार खडी।।५।।धर्म.

मैं हूँ उस नगरी का भूप

(रचयिता – आचार्य श्री हस्ती)

मै हूँ उस नगरी का भूप, जहॉ नही होती छाया धूप।।टेर।।

तारामण्डल की न गति है, जहॉ न पहुँचे सूर।
जगमग ज्योति सदा जगती है, दीसे यह जग कूप।।१।। मै हूँ.

मै नही श्याम गौर वर्णा हूँ, मै न सुरूप कुरूप।
नाही लम्बा–बौना भी मै हूँ, मेरा अविचल रूप।।२।।मै हूँ.

अस्थि मास मज्जा नही मेरे, मै नहि धातु रूप।
हाथ पैर शिर आदि अग मे, मेरा नही स्वरूप।।३।।मै हूँ.

दृश्य जगत पुद्गल की माया, मेरा चेतन रूप।
पूरण गलन स्वभाव धरे तन, मेरा अव्यय रूप।।४।।मै हूँ.

श्रद्धा नगरी वास हमारा, चिन्मय कोष अनूप।
निराबाध सुख मे झूलूँ मै, सत् चित् आनन्द रूप।।५।।मै हू॰

शक्ति का भण्डार भरा है, अमल अचल मम रूप।
मेरी शक्ति के सम्मुख नहि, देख सके अरि भूप।।६।।मै हू॰

मै न किसी से दबने वाला, रोग न मेरा रूप।
'गजेन्द्र' निज पद को पहिचाने, सो भूपो का भूप।।७।।मै हू॰

संगठन की वीणा

(तर्ज जय बोलो महावीर स्वामी की)

सगठन की वीणा बजने दो।
मोय मधुर २ धुन सुनने दो।।टेर।।

अब नया जमाना आया है, सदेश प्रेम का लाया है।
टूटे हुए दिल को मिलने दो।।१।।मधुर॰

वीणा यह तान सुनाती है, सगठन का पाठ पढाती है।
मुरझी हुई कलिया खिलने दो।।२।।मधुर॰

अभिनव क्राति ऐसी लाओ, जागे मानस मजिल पाओ।
इतिहास के पन्ने लिखने दो।।३।।मधुर॰

सबको एक राह दिखाना है, बाधाए दूर हटाना है।
यह विमल भावना भरने दो।।४।।मधुर॰



* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर
* बाल शिक्षा के लिए सदैव

दुनिया यश गाथा गाएगी, इस पथ पे कदम बढायेगी।
आशा के दीपक जलने दो।।५।।मधुर॰

आओ आनन्द के आगन मे, बध जाओ एक ही बधन मे।
गगा, जमुना को मिलने दो।।६।।मधुर॰

वीणा के तार मधुर बोले, अन्दर घट के पट झट से खोले।
अब 'रसिक' प्रेम रस झरने दो।।७।।मधुर॰

पालो दृढ़ आचार

(तर्ज – वो दिन धन होसी)

पालो दृढ आचार, जैनो ! सब मिलकर।।ध्रुव।।

प्रात काल सदा उठ जाओ, अपने निज स्थानक मे आवो।
आलस दूर निवार।।१।।जैनो सब॰

सतो को पचाग नमाओ, देव धर्म को मन मे ध्याओ।
जपो मन्त्र नवकार।।२।।जैनो सब॰

सामायिक का लाभ उठाओ, प्रभु प्रार्थना विधि से गावो।
करो मधुर उच्चार।।३।।जैनो सब॰

नित्य नियम चौदह चितारो, व्रत पच्चक्खाण नया कुछ धारो।
रोको आश्रव द्वार।।४।।जैनो सब॰

करो मनोरथ त्रय का चिन्तन, अरु विश्राम चार का सुमिरन।
भावो भावना बार।।५।।जैनो सब॰

सुनो सदा मुनियो का भाषण, पूछो प्रश्न करो हल धारण।
सीखो ज्ञान अपार।।६।।जैनो सब॰

छाने बिना न पानी पीओ, अशुद्ध भोजन कभी न खाओ।
पालो नित चौविहार।।७।।जैनो सब॰

अष्टम पाक्षिक पौषध धारो, प्रतिक्रमण कर दोष निवारो।
प्रायश्चित्त लेओ धार।।८।।जैनो सब॰

बुरा किसी का मत करना

(तर्ज दिल लूटने वाले जादूगर)

यदि भला किसी का कर न सको, तो बुरा किसी का मत करना।
अमृत न पिलाने को घर मे, तो जहर पिलाते भी डरना।।टेर।।

यदि सत्य मधुर न बोल सको, तो झूठ कठिन भी मत बोलो।
यदि मौन रखो सबसे अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो।।
बोलो तो पहले तुम तोलो, फिर मुख ताला खोला करना।।१।।यदि॰

यदि घर न किसी का बाध सको, तो झोपडिया न जला देना।
यदि मरहम पट्टी कर न सको, तो खार नमक न लगा देना।।
यदि दीपक बनकर जल न सको तो, अन्धकार भी मत करना।।२।।यदि॰

यदि फूल नही बन सकते तो, कॉटे बनकर न बिखर जाना।
मानव बनकर सहला न सको तो, दिल भी किसी का न दु खाना।
यदि देव नही बन सकते तो दानव बनकर भी मत मरना।।३।।यदि॰

- निरन्तर अध्ययन- चिंतन- मनन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
- [illegible]- निर्माण के लिए सदैव समुद

'मुनि पुष्प' अगर भगवान नहीं तो, कम से कम इन्सान बनो।
किन्तु न कभी शैतान बनो, और कभी न तुम हैवान बनो।
यदि सदाचार अपना न सको तो, पापो मे पग मत धरना।।४।।यदि.

भरोसा क्या जिन्दगी का

भजमन भक्ति युक्त भगवान, भरोसा क्या जिदगानी का
क्या जिदगी का, भरोसा क्या जिदगानी का।।टेर।।
चचल अमल कमल दल ऊपर, ज्यो कण पानी का।
जान तरल त्यो तन क्षण भगुर, जग मे प्राणी का।।१।।
उदय अस्त लो राज हुवा वा, पति इन्द्राणि का।
बना तथापि रहा लोभ, तोय हा, कोडी कानी का।।२।।
शरद जलद बूद बूद सम जाहिर, जोर जवानी का।
मत कर गर्व गुमान, मान कहना गुरु ज्ञानी का।।३।।
था जग मे कहो कौन दैत्य, दश मुख की सानी का।
बता पता है कहॉ, उसी रावण अभिमानी का।।४।।
है दुर्गति दातार प्रेम, दुजी दिल–जानी का।
को नही पाया क्लेश, प्रेम कर त्रिया विरानी का।।५।।
क्या विश्वास श्वास का पुनि, इस दुनिया फानी का।
लेले सबल सग नही घर आगे नानी का।।६।।
जिन धर्म का श्री सघ रसिक है श्री जिनवाणी का।
माधव मुनि कहै कथन मानमन सुमति रानी का।।७।।

चेतन रे तू ध्यान

चेतन रे तू ध्यान आरत क्यू ध्यावे
हा रे नाहक कर्म बधावे।।टेर।।

जो जो भगवन्त भाव देखिया, सो सो ही वरतावे।
घटे बढे नही रॅच मात्र, काहे तु मन डोलावे।।१।।

आरत ध्यान ज्यू चिता अग्नि, उपजत सहू विणसावे।
शोकातुर बीते दिन रेणी, तो धर्म ध्यान घट जावे।।२।।

सुख सू निद्रा आत न रातन, अन्न उदक नही भावे।
पहरण ओढण चित्त नही चावे, राग न रग सुहावे।।३।।

भुगत्या बिन छूटे न कबहू, अशुभ उदय जब आवे।
साहूकार शिरोमणि सो ही, हर्ष सु कर्ज चुकावे।।४।।

सुख न रहे तो दु ख किम रहसी, यह भी स्यात् गुजर जावे।
कर्मबध भुगतण ही पडसी, जो आत्म ने डण्डावे।।५।।

प्रभु सुमरण अरू तपस्या करता, दृष्कृत रज झड जावे।
ज्येष्ठ कहे समता रस पीता, तुरन्त ही आनन्द पावे।।६।।

अपराध-खमाएं

हे सदगुरु ! अब चरणो मे शीश नमाये,
जय क्षमा श्रमण ! हम सब अपराध खमाये।।



→ निरन्तर [illegible]
→ [illegible] जागरण के [illegible]
→ [illegible]

निर्बाध चल रही क्या सयम की यात्रा
क्या आत्म भाव की बढती रहती मात्रा,
हम भी स्वरूप मे अपना हृदय रमाये।।१।।

श्री चरण शरण मे प्रतिक्रमण करना है,
मन, वच, काया का सारा मल हरना है,
कल्याण मार्ग मे श्रद्धा शुद्ध जमाये।।२।।

यह वीतराग का धर्म उदार हमारा,
जो सब जीवो का एक समान सहारा,
इसके पालन मे तनिक न समय गमाये।।३।।

है आप महाव्रत समिति गुप्ति के धारी,
सन्तुष्ट जितेन्द्रिय शुद्धाचार विचारी,
इन परम पवित्र गुणो मे आप समाए।।४।।

है क्रोध मान छल लोभ सदा दुख दाई,
इनके वश मे हो कर्म जाल फैलाई,
नर जन्म पाया अब सच्चा अर्थ कमाये।।५।।

हमने भव भव मे जीव अनन्त सताये,
धर्मातिक्रात मिथ्या उपचार लगाये,
निज निन्दा कर अब विषवत् विषय वमाये।।६।।

पर भावो मे रस ले निज भाव भुलाया
ममता मे 'सूरज चन्द' चित्त भरमाया
अब अचल जीव को भव–भव नही भमाये।।७।।

भावना

प्रभो मेरा हृदय गुण सिन्धु, अपरम्पार हो जाए,
सफल सब ओर से पावन, मनुज अवतार हो जाए।।१।।

खुशी हो रज हो कुछ हो रहू मै एकसा हरदम,
हृदय के यत्र पर मेरा, अटल अधिकार हो जाए।।२।।

जरा सा भी मिले मुझमे न, ढूढा चिन्ह ईर्ष्या का,
पदोन्नति देखकर दिल हर्ष से सर सार हो जाए।।३।।

अह और त्व के द्वन्द्व हो सब दूर मुझ मे से,
भुला दे स्वर्ग को वह प्रेम का ससार हो जाए।।४।।

सच्चाई का निभाऊँ प्रण, नही पीछे हटु हर्गिज,
भले ही खण्डश इस देह का सहार हो जाए।।५।।

दु खी को देख मै दु खित बनूँ सेवा मे झुट जाऊँ,
दया का दिल के हरकण मे मधुर सचार हो जाए।।६।।

मुझे स्वर्गीय सुख साम्राज्य की कुछ भी नही इच्छा,
'अमर' तो बस प्रभो तव नाम पर बलिहार हो जाए।।७।।

तर्ज :- जहाँ डाल-डाल पर

जो वचन–२ पे सयम रखकर, समतामृत पिलाता,
वो आत्म शाति है पाता।।
जो तेरे मेरे का भेद न रखकर, एकरूपता रखता,



* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन मे
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
* बलि- निषेध के लिए सदैव

निर्बाध चल रही क्या सयम की यात्रा,
क्या आत्म भाव की बढती रहती मात्रा,
हम भी स्वरूप मे अपना हृदय रमाये।।१।।

श्री चरण शरण मे प्रतिक्रमण करना है,
मन, वच, काया का सारा मल हरना है,
कल्याण मार्ग मे श्रद्धा शुद्ध जमाये।।२।।

यह वीतराग का धर्म उदार हमारा,
जो सब जीवो का एक समान सहारा,
इसके पालन मे तनिक न समय गमाये।।३।।

है आप महाव्रत समिति गुप्ति के धारी,
सन्तुष्ठ जितेन्द्रिय शुद्धाचार विचारी,
इन परम पवित्र गुणो मे आप समाए।।४।।

है क्रोध मान छल लोभ सदा दुख दाई,
इनके वश मे हो कर्म जाल फैलाई,
नर जन्म पाया अब सच्चा अर्थ कमाये।।५।।

हमने भव भव मे जीव अनन्त सताये,
धर्मातिक्रात मिथ्या उपचार लगाये,
निज निन्दा कर अब विषवत् विषय वमाये।।६।।

पर भावो मे रस ले निज भाव भुलाया,
ममता मे 'सूरज चन्द' चित्त भरमाया,
अब अचल जीव को भव–भव नही भमाये।।७।।

भावना

प्रभो मेरा हृदय गुण सिन्धु, अपरम्पार हो जाए,
सफल सब ओर से पावन, मनुज अवतार हो जाए।।१।।

खुशी हो रज हो कुछ हो, रहू मै एकसा हरदम,
हृदय के यत्र पर मेरा, अटल अधिकार हो जाए।।२।।

जरा सा भी मिले मुझमे न, ढूढा चिन्ह ईर्ष्या का,
पदोन्नति देखकर दिल हर्ष से सर सार हो जाए।।३।।

अह और त्व के द्वन्द्व हो सब दूर मुझ मे से,
भुला दे स्वर्ग को वह प्रेम का ससार हो जाए।।४।।

सच्चाई का निभाऊँ प्रण, नही पीछे हटु हर्गिज,
भले ही खण्डश इस देह का सहार हो जाए।।५।।

दु खी को देख मै दु खित बनूँ सेवा मे झुट जाऊँ,
दया का दिल के हरकण मे मधुर सचार हो जाए।।६।।

मुझे स्वर्गीय सुख साम्राज्य की कुछ भी नही इच्छा,
'अमर' तो बस प्रभो तव नाम पर बलिहार हो जाए।।७।।

तर्ज :- जहाँ डाल-डाल पर

जो वचन–२ पे सयम रखकर, समतामृत पिलाता,
वो आत्म शाति है पाता।।
जो तेरे मेरे का भेद न रखकर, एकरूपता रखता,



* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर
* दलित- [illegible] के लिए सदैव [illegible]

वो आत्म शाति है पाता।।

ये समताधारी महामुनि, हरते मोह की ज्वाला,
साम्यभाव का झरना झरता चाहे शत्रु चलाये भाला,
शात भाव मे रमण करे, इन्हे क्रोध कभी न आता।....

सत्य सरल उपदेश है इनके, शिशु भी उसको गहले,
वाणी का समरस है झरता, शात भाव से सुनले,
राग द्वेष की तोड जजीरे, आत्मभाव दर्शाता।....

विषमता का इस धरती पर, कुहरा ऐसा फैला,
ईर्ष्या क्रोध आदि से हुआ, मन दोषो का थैला,
अतर का 'प्रकाश' तू पाले, ये नाना गुरु है कहता।....

अंतिम अभिलाषा

(तर्ज – पद्म प्रभु पावन नाम तिहारो)

नाथ मै तो अत समय यही चाऊँ
गर, करणी को फल कुछ पाऊँ।।टेर।।

काम क्रोध मद लोभ निवारूँ, तृष्णा दूर हटाऊँ
आरभ परिग्रह पास न राखू, तो ममता मोह मिटाऊँ।।1।।

राग द्वेष की भावना त्यागू, मैत्री भाव बढाऊँ
निज पापा री करूँ आलोचना, सब ही जीव खमाऊँ।।2।।

माता पिता और कुटुम्ब कबीलो, नारी सू मोह हटाऊँ
विषय वासना त्यागू, हृदय से, आत्म ज्योति जगाऊँ।।3।।

अरिहन्त देव, निर्ग्रंथ गुरु पर, दृढ विश्वास जमाऊँ
दया धर्म को साचो शरणो, शुद्ध समकित उपजाऊँ।।४।।

नश्वर काया त्यागता अपणी, दिल मे नही घबराऊँ
श्वास श्वास मे ध्यान हो थारो, तो रग–रग माही रमाऊँ।।५।।

परभव माही जो गति पाऊँ, रक राजा हो जाऊँ
सब बात थारी पर एक मारी, जिणजी रो धर्म तो पाऊँ।।६।।

इण भव नही तो पर भव माही, ऐसी शक्ति पाऊँ
अष्ट कर्म दल जीत, 'जीतमल', अजर अमर होय जाऊँ।।७।।

जीवन सफल बनाऊँ

(तर्ज ओ दूर जाने वाले, मुझको न)

दिन रात मेरे स्वामी, मै भावना यह भाऊ।
देहात के समय मे, तुझको न भूल जाऊ।।टेर।।

हो कोई शत्रु अगर, सतुष्ट उनको करदू।
समता का भाव धरकर, सबसे क्षमा चहाऊ।।१।।

त्यागू आहार पानी, औषध विचार अवसर।
टूटे नियम न कोई, दृढता हृदय मे लाऊ।।२।।

जागे नहीं कषाय, नही वेदना सताये।
तुमसे ही लो लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊ।।३।।

→ निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मन
→ नारी जागरण के लिए निरन्तर
→ बलि- निषेध के लिए सदैव समु

आत्म स्वरूप अथवा, अराधना विचारू।
अरहत सिद्ध साधु, रटना यही लगाऊ।।४।।

धर्मात्मा निकट हो, चरचा धरम सुनावे।
वो सावधान रक्खे, गाफिल न होने पाऊ।।५।।

जीने की हो न वॉछा, मरने की हो न इच्छा।
परिवार मित्र जन से, मै मोह को हटाऊँ।।६।।

भोगे जो भोग पहले, उनका न होवे सुमिरन।
मै राज्य सम्पदा या, पद इन्द्र का न चाहूँ।।७।।

सम्यक्त्व का हो पालन, हो अत मे समाधि।
'शिवराम' प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ।।८।।

मेरी आत्मा बलवान हो

भगवान तेरी आराधना, मेरी जिदगी की शान हो
मुझे एक यही वरदान दो, मेरी आत्मा बलवान हो।।टेर।।

मुझे सुख की कोई परवाह नही,
दुख मे भी निकले आह नही,
बस एक तेरा ध्यान हो, होठो पे तेरा नाम हो।।१।।

दौलत रहे या ना रहे, खुशियॉ हो चाहे गम रहे।
चाहे ऑधी हो तूफान हो, विचलित न मेरा ध्यान हो।।२।।

पथ मे हजारो विघ्न भी, आए अगर डिगाने को
चाहे सामने शैतान हो, मेरे प्राण भी कुर्बान हो।।३।।
तू सूर्य है मै कमलिनी, तू चद्र है मै कुमुदिनी
तव कमल पद मे स्थान हो, भक्ति ही मेरा ज्ञान हो।।४।।
तू धर्म भानु लोक मे, तेरे दिव्य ललितालोक मे
मिटे तिमिर ज्ञान विज्ञान हो, मुक्ति ही मेरा धाम हो।।५।।

दुनिया में यूं रहे

नही भेदभाव रहता है, पूर्ण ज्ञानी मे,
दुनिया मे यू रहे, कमल ज्यू पानी मे।।टेर।।

तारो मे निरख शशि को, नही देता कष्ट किसी को,
रहता है निर्लेप, वो अपनी रवानी मे।।दुनियॉ..

तज दोष बना निर्दोषी, ज्ञानी को प्रिय खामोशी,
बोल बने अनमोल मधुरता वाणी मे।।दुनियॉ..

लगा बैठा अचल समाधि, तज जगत अगत की व्याधि,
नही रखता रच, क्षोभ, लाभ और हानि मे।।दुनियॉ..

मै सबमे सब मेरे, तजे पथ ग्रन्थ के घेरे,
रहता है सन्तुष्ट मिले जो आसानी मे।।दुनियॉ..

तज ममता बन निर्मोही, सब दुविधा दुर्मति खोई,
आत्मानन्द करे वास अमर राजधानी मे।।दुनियॉ..

मनोरथ चिंतन

हो अन्त के समय तक, भगवन ! शरण तुम्हारा।
हो आपका सहारा, मन मे रटन तुम्हारा।।टेर।।

प्रतिपल हो तेरी भक्ति बढती हो आत्म शक्ति।
निष्पाप ध्यान ध्याऊँ, तारन तिरन तुम्हारा।।हो।।१।।

स्वध्याय ध्यान सेवा, हो सघ की हमेशा।
हो दीन की भलाई, सेवन चरन तुम्हारा ।।हो।।२।।

होवे प्रकट हृदय मे सत् ज्ञान का उजेला।
सब कामना सफल हो, मन हो मगन हमारा।।हो।।३।।

सब जीव को क्षमा के, सब वैर को मिटाके।
अनशन लहू समाधी, पडित मरण हमारा।।हो।।४।।

मन को सरल बनाऊँ, जी शाति मे रमाऊँ।
आसन भी दृढ लगाऊँ, सुमरन भजन तुम्हारा।।हो।।५।।

सुरिनन्द सूर्य की ये, सुनिये विनय दयालु।
तिहू ताप पाप सब ही, होवे शमन हमारा।।हो।।६।।

त्रिशला नन्दन

जय बोलो त्रिशला नन्दन की,
शासनपति नाथ निरजन की ।।टेर।।

दूर जिन्होने अज्ञान किया,
दुष्कर तपकर सुज्ञान दिया।
पीड हरी जग के क्रन्दन की,
जय बोलो त्रिशला नन्दन की,
तीर्थकर नाथ निरजन की (जय०)।।१।।

जिनको जिन पद का भान दिया,
"निज मे प्रभुता" वरदान दिया,
बेडी काटी भव बन्धन की,
जय बोलो त्रिशला नदन की
सुमति रमण नाथ निरजन की (जय०)।।२।।

सुर नर पशु ने दुख दान किये,
पुज्य उन्ही के भगवान हुए,
लूटमची पदरज चन्दन की,
जय बोलो त्रिशला नदन की
मुक्तिवरण नाथ निरजन की (जय०)।।३।।

आनद धन समरस पान किया,
अमर हुए प्रभु निर्वाण लिया,
राह बताई शिव स्यन्दन की,
जय बोलो त्रिशलानन्दन की,
शाति भरण नाथ निरजन की (जय०)।।४।।



- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- म
- नारी- जागरण के लिए निरन्त
- बलि- निषेध के लिए सदैव स

ये सुमरिया सब सकट टले,
मन चिन्तित मनोरथ फले।

इण नामे सब सीझे काज,
लहिये मुक्तिपुरी नो राज।।४।।

भूत प्रेत इण नामे टले,
ऋद्धि सिद्धि घर आई मिले।

इण नामे सहु होय जगीश,
ये सतिया सुमरो निश–दीश।।५।।

बड़ी साधु-वन्दना

नमू अनन्त चौबीसी, ऋषभादिक महावीर।
आरज – क्षेत्रमा, घाली धर्मनी शीर।।१।।

महा अतुल बली नर, शूर वीर ने धीर।
तीरथ प्रवर्तावी, पहुँचा भवजल – तीर।।२।।

सीमधर प्रमुख, जघन्य तीर्थकर वीश।
छै अढी द्वीप मा, जयवता जगदीश।।३।।

एक–सौ ने सत्तर, उत्कृष्ट पदे जगीश।
धन्य म्होटा प्रभुजी, तेह ने नमाऊँ शीश।।४।।

केवली दोय क्रोडी, उत्कृष्टा नव सहस क्रोड।
मुनि दोय सहस क्रोडी, उत्कृष्टा नव क्रोड।।५।।



- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन मनन मे
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रया
- दहेज- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

विचरे छै विदेहे, म्होटा तपसी घोर।
भावे करि वन्दू टाले भवनी खोड।।६।।

चौबीसे जिनना, सगला ही गणधार।
चौदसे ने बावन, ते प्रणमू सुखकार।।७।।

जिन–शासन–नायक, धन्य श्री वीर जिनद।
गौतमादिक गणधर, वर्तायो आनन्द।।८।।

श्री ऋषभदेवना भरतादिक सौ पूत।
वैराग्य मन आणी, सयम लियो अद्भूत।।९।।

केवल उपजाव्यू, कर करणी करतूत।
जिनमत दीपावी, सगला मोक्ष पहूँत।।१०।।

श्री भरतेश्वर ना, हुआ, पटोधर आठ।
आदित्यजशादिक, पहुच्या शिवपुर वाट।।११।।

श्री जिन–अन्तर ना, हुआ पाट असंख।
मुनि मुक्ति पहुँच्या, टालि कर्मनो वक।।१२।।

धन्य कपिल मुनिवर, नमी नमु अणगार।
जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्र–रमणी परिवार।।१३।।

मुनि बल हरिकेशी, चित्त मुनीश्वर सार।
शुद्ध सयम पाली, पाम्या भवनो पार।।१४।।

वलि इखुकार राजा, घर कमलावती नार।
भग्गू ने जशा, तेहना दोय कुमार।।१५।।

छये छती ऋध छाडी, लीधो सयम भार।
इण अल्पकालमा, पाम्या मोक्ष–दुवार।।१६।।

वलि सयति राजा, हिरण आहिडे जाय।
मुनिवर गर्दभाली, आण्यो मारग ठाय।।१७।।

चारित्र लेईने, भेट्या गुरुना पाय।
क्षत्री राजऋषीश्वर, चर्चा करी चित लाय।।१८।।

वलि दशे चक्रवर्ती, राज रमणी ऋद्धि छोड।
दशे मुक्ति पहुँच्या, कुल ने शोभा चहोड।।१९।।

इण अवसर्पिणी काल मा, आठ राम गया मोक्ष।
बलभद्र मुनीश्वर, गया पाचमे देवलोक।।२०।।

दशार्णभद्र राजा, वीर वाद्या धरि मान।
पछि इन्द्र हटायो, दियो छकाय अभयदान।।२१।।

करकण्डू प्रमुख, चारे प्रत्येक बुद्ध।
मुनि मुक्ति पहुँच्या, जीत्या कर्म महाजुद्ध।।२२।।

धन म्होटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश।
मुनिवर अनाथी, जीत्या राग ने रीश।।२३।।

वलि समुद्रपाल मुनि, राजमती रहनेम।
केशी ने गौतम, पाम्या शिवपुरखेम।।२४।।



* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन मे
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रय
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यत

धन विजयघोष मुनि, जयघोष वलि जाण।
श्री गर्गाचार्य, पहुँच्या छै निर्वाण।।२५।।

श्री उत्तराध्ययनमा, जिनवर कर्या बखाण।
शुद्ध मन से ध्यावो, मन मे धीरज आण।।२६।।

वलि खदक सन्यासी, राख्यो गौतम–स्नेह।
महावीर समीपे, पच महाव्रत लेह।।२७।।

तप कठिन करीने, झौसी आपणी देह।
गया अच्युत देवलोके, चवि लेसे भव–छेह।।२८।।

वलि ऋषभदत्त मुनि, सेठ सुदर्शन सार।
शिवराज ऋषीश्वर, धन गागेय अणगार।।२६।।

शुद्ध सयम पाली, पाम्या केवल सार।
ये चारे मुनिवर, पहुँच्या मोक्ष मॅझार।।३०।।

भगवतनी माता, धन–धन सती देवानन्दा।
वलि सती जयन्ती, छोड दिया घर फन्दा।।३१।।

सती मुक्ति पहुँच्या, वली ते वीरनी नन्द।
महासती सुदर्शना, घणी सतियो ना वृन्द।।३२।।

वलि कार्तिक शेठे, पडिमा ग्रही शूर वीर।
जम्यो मोरा ऊपर, तापस बलती खरी।।३३।।

पछी चारित्र लीधू, मित्र एकसहस्र आठ धीर।
मरी हुआ शक्रेन्द्र, चवि लेसे भव–तीर।।३४।।

वलि राय उदायन, दिया भाणजा ने राज।
पछी चारित्र लेईने, सार्‌या आतमकाज।।३५।।

गगदत्तमुनि आनन्द, तारण तरण जहाज।
मुनि कौशल रोहो, दिया घणा ने साज।।३६।।

धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार।
आराधक हुई ने, गया देवलोक मझार।।३७।।

चवि मुक्ते जासे, वली सिह मुनीश्वर सार।
बीजा पण मुनिवर, भगवतीमा अधिकार।।३८।।

श्रेणिकनो बेटा, म्होटो मुनिवर मेघ।
तजी आठ अतेउर, आण्यो मन सवेग।।३६।।

वीर पै व्रत लेई ने, बॉधी तपनी–तेग।
गया विजय विमाने, चवि लेसे शिव वेग।।४०।।

धन्य थावच्चा – पुत्र, तजी बतीसो नार।
तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार।।४१।।

शुकदेव सन्यासी एक सहस्र शिष्य लार।
पॉच–सौ से शेलक, लीधो सजम भार।।४२।।

* निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन में म...
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयत्न...
* रूढ़ि- निषेध के लिए सदैव ...

सब सहस्र अढाई, घणा जीवो ने तार।
पुण्डरिक गिरि ऊपर कियो पादोपगमन सथार।।४३।।

आराधक हुई ने, कीधो खेवो पार।
हुआ म्होटा मुनिवर, नाम लिया निस्तार।।४४।।

धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धन्ना हुआ साध।
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जासे आराध।।४५।।

श्रीमल्लिनाथना छह मित्र, महाबलप्रमुख मुनिराय।
सर्वे मुक्ति सिधाव्या, म्होटी पदवी पाय।।४६।।

वलि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान।
पोते चारित्र लई ने, पाम्या मोक्ष निधान।।४७।।

धन्य तेतली मुनिवर, दियो छकाय अभयदान।
पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान।।४८।।

धन्य पॉचे पाडव, तजी द्रौपदी नार।
थेवरानी पासे, लीधो सयम भार।।४६।।

श्री नेमिवन्दन नो, एहवो अभिग्रह कीध।
मास–मास खमण तप, शत्रुजय जई सिद्ध।।५०।।

धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार।
कीडियोनी करुणा, आणी दया अपार।।५१।।

कडवा तुबानो, कीधो सगलो आहार।
सर्वार्थसिद्ध पहुँच्या, चवि लेसे भव–पार।।५२।।

वलि पुण्डरीक राजा, कुण्डरीक डिगियो जाण।
पोते चारित्र लेई ने, न घाली धर्ममा हाण।।५३।।

सर्वार्थसिद्ध पहुँच्या, चवि लेसे निर्वाण।
श्रीज्ञातासूत्रमा, जिनवर कर्या बखाण।।५४।।

गौतमादिक, कुँवर, सगा अठारे भ्रात।
सब अन्धकविष्णु–सुत, धारिणी ज्यॉरी मात।।५५।।

तजी आठ अतेउर, काढी दीक्षानी बात।
चारित्र लेई ने, कीधो मुक्ति नो साथ।।५६।।

श्री अनीक सेनादिक, छये सहोदर भाय।
वसुदेवना नन्दन, देवकी ज्यॉरी माय।।५७।।

भद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावई जाण।
सुलसा घर बधिया, सॉभली नेमिनी वाण।।५८।।

तजी बत्तीस–बत्तीस अतेउर, नीकलिया छिटकाय।
नल कुबेर समान भेट्या श्री नेमिना पाय।।५९।।

करी छठ–छठ पारणा, मन मे वैराग्य लाय।
एक मास सथारे मुक्ति विराज्या जाय।।६०।।



- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन मे
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रय
- रूढि- निरोध के लिए सदैव सम

वली दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय।
वली कुँवर अनाधृष्ट, गया, मुक्ति गढ मॉय।।६१।।

वसुदेवना नन्दन, धन – धन गजसुकुमाल।
रूपे अतिसुन्दर, कलावन्त वय बाल।।६२।।

श्री नेमि समीपे, छोड़्यो मोह – जजाल।
भिक्षुनी पडिमा, गया मसाण महाकाल।।६३।।

देखी सोमल कोप्यो, मस्तक बॉधी पाल।
खेराना खीरा, शिर धरिया असराल।।६४।।

मुनि नजर न खण्डी, मेटी मननी झाल।
परिषह सहीने, मुक्ति गया तत्काल।।६५।।

धन जाली मयाली, उवयालादिक साध।
साब ने प्रद्युम्न, अनिरुध साधु अगाध।।६६।।

वलि सतनेमि दृढनेमि, करणी कीधी निर्बाध।
दशे मुक्ति पहुँच्या, जिनवर वचन आराध।।६७।।

धन अर्जुनमाली, कियो कदाग्रह दूर।
वीर पै व्रत लई ने, सत्यवादी हुआ शूर।।६८।।

करी छठ–छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर।
छह मास माही, कर्म किया चकचूर।।६९।।

कुँवर अइमुत्तो, दीठा गौतम स्वाम।
सुणि वीरनी वाणी, कीधो उत्तम काम।।७०।।

चारित्र लेई ने, पहुँच्या शिवपुर ठाम।
धुर आदि मकाई, अन्त अलक्ष मुनि नाम।।७१।।

वली कृष्णरायनी, अग्रमहिषी आठ।
पुत्र–बहू दोय, सच्या पुण्यना ठाठ।।७२।।

जादव–कुल सतियॉं, टाल्यो दुख उचाट।
पहुँची शिवपुरमा, यह छे सूत्रनो पाठ।।७३।।

श्रेणिकनी राणी, काली आदिक दश जाण।
दशे पुत्रवियोगे सॉंभली वीरनी वाण।।७४।।

चन्दनबाला पै, सयम लेई हुई जाण।
तप करि देह झौसी पहुँची छे निर्वाण।।७५।।

नन्दादिक तेरह श्रेणिकनृपनी नार।
सगली चन्दनबाला पै, लीधो सयम भार।।७६।।

एक मास सथारे, पहुँची मुक्ति मॅझार।
यह नेवु जणा नो, अन्तगढमा अधिकार।।७७।।

श्रेणिकना बेटा, जालीयादिक तेवीश।
वीर पै व्रत लेई ने, पाल्यो विश्वावीश।।७८।।



- निरन्तर अध्ययन- चिंतन मनन मे
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रय
- बलि निषेध के लिए सदैव समुद्यत

तप कठिन करी ने, पूरी मन जगीश।
देवलोके पहुँच्या, मोक्ष जासे तजी रीश।।७६।।

काकन्दीनो धन्नो, तजी बतीसो नार।
महावीर – समीपे, लीधो सजम भार।।८०।।

करी छठ–छठ पारणा, आयबिल उज्झित आहार।
श्री वीर बखाण्यो, धन धन्नो अणगार।।८१।।

एक मास सथारे, सर्वार्थसिद्ध पहुँत।
महाविदेह – क्षेत्रमा करसे भवनो अन्त।।८२।।

धन्नानी रीते, हुआ नब्बे ही सत।
श्री अनुत्तरोववाईमा, भाखि गया भगवत।।८३।।

सुबाहु प्रमुख, पॉच पॉच सो नार।
तजी वीर पै लीधा, पॉच महाव्रत सार।।८४।।

चारित्र लेई ने, पाल्या निर्‌अतिचार।
देवलोके पहुँच्या, सुख–विपाके अधिकार।।८५।।

श्रेणिकना पोता, पौगादिक हुआ दस।
वीर पै व्रत लेई ने, काढ्यो देहनो कस।।८६।।

सयम आराधी, देवलोकमा जई वस।
महाविदेह क्षेत्रमा, मोक्ष जासे लेई जस।।८७।।

बलभद्रना नन्दन, निषधादिक हुआ चार।
तजी पचास अन्तेउरी, त्याग दियो ससार।।८८।।

सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध।
सर्वार्थसिद्ध पहुँच्या, होसे विदेह सिद्ध।।८६।।

धन्नो ने शालिभद्र, मुनीश्वरोनी जोड।
नारीना बन्धन, तत्क्षण नॉख्या तोड।।६०।।

घर कुटुम्ब कबीलो, धन कचननी कोड।
मास–मास खमण तप, टालसे भवनी खोड।।६१।।

श्रीसुधर्म स्वामीना शिष्य, धन–धन जम्ब स्वाम।
तजी आठ अन्तेउरी, मात–पिता धन–धाम।।६२।।

प्रभवादिक तारी, पहुँच्या शिवपुर ठाम।
सूत्र प्रवर्तावी, जगमा राख्यू नाम।।६३।।

धन ढढण मुनिवर, कृष्णरायना नन्द।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फन्द।।६४।।

वलि खन्दक ऋषिनी, देह उतारी खाल।
परिषह सहीने, भव फेरा दिया टाल।।६५।।

वलि खन्दक ऋषिना, हुआ पॉच–सौ शीष।
घाणी मा पील्या, मुक्ति गया तज रीश।।६६।।



➤ निरन्तर अध्ययन- चिन्तन- मनन मे
➤ नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
➤ बलि- निषेध के लिए सदैव प्रयत्न

सभूतिविजयतणा शिष्य, भद्रबाहु मुनिराय।
चौदह पूर्वधारी, चन्द्रगुप्त आण्यो ठाय।।६७।।

वलि आर्द्रकुमार मुनि, स्थूलभद्र नन्दिषेण।
अरणक अइमुत्तो, मुनीश्वरोनी श्रेण।।६८।।

चौबीसे जिनना मुनिवर, सख्या अठावीश लाख।
ऊपर सहस्र अडतालीस, सूत्र परम्परा भाख।।६६।।

कोई उत्तम वाचो, मोढे जयणा राख।
उघाडे मुख बोल्या, पाप लगे इम भाख।।१००।।

धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्गल ध्यान।
गज–होदे पायो, निर्मल केवल ज्ञान।।१०१।।

धन्य आदीश्वरनी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दरी दोय।
चारित्र लेई ने, मुक्ति गई सिद्ध होय।।१०२।।

चौबीसे जिननी, बडी शिष्यणी चौवीरा।
सती मुक्ते पहुँच्या, पूरी मन जगीश।।१०३।।

चौबीसे जिनना, सर्व साध्वी सार।
अडतालीस लाख ने, आठ से सत्तर हजार।।१०४।।

चेडानी पुत्री, राखी धर्मनी प्रीत।
राजीमती विजया, मृगावती सुविनीत।।१०५।।

पद्मावती, मयणरेहा, द्रौपदी दमयती सीत।
इत्यादिक सतियॉं, गई जमारो जीत।।१०६।।

चौबीसे जिनना, साधु साध्वी सार।
गया मोक्ष देवलोके, हृदय राखो धार।।१०७।।

इण अढीद्वीपमॉं घरडा तपसी बाल।
शुद्ध पच महाव्रतधारी, नमो नमो तिहुँकाल।।१०८।।

इण यतियो सतियो ना, लीजे नित प्रति नाम।
शुद्ध मन थी ध्यावो, यह तिरण नो ठाम।।१०६।।

इण यतियो सतियो सू, राखो उज्ज्वल भाव।
इम कहे ऋषि जयमल, एह तिरण नो दाव।।११०।।

सवत अठारा ने वर्ष साते शिरदार।
गढ जालोर मॉंही, एक कह्यो अधिकार।।१११।।

लघु साधु-वन्दना

साधुजी ने वन्दना नित नित कीजे,
प्रात उगन्ते सूर रे प्राणी।
नीच गति मे ते नहि जावे,
पामे ऋद्धि भरपूर रे प्राणी।सा॰१।



मोटा ते पच महाव्रत पाले,
छह कायारा प्रतिपाल रे प्राणी।
भ्रमर–भिक्षा मुनि सूझती लेवे,
दोष बियालीस टाल रे प्राणी।सा॰२।

ऋद्धि सम्पदा मुनि कारमी जाणी,
दीधी ससार ने पूठ रे प्राणी।
एहवा पुरुषानी सेवा करता,
आठ कर्म जाय टूट रे प्राणी।सा॰३।

एक एक मुनिवर रसना–त्यागी,
एक एक ज्ञानभण्डार रे प्राणी।
एक एक वैयावचिया वैरागी,
जेना गुणानो नावे पार रे प्राणी।सा॰४।

गुण सत्तावीस करी ने दीपे,
जीता परीसा बावीस रे प्राणी।
बावन तो अनाचार टाले,
तेने नमावु मारूँ शीस रे प्राणी।सा॰५।

जहाजसमान ते सन्त मुनीश्वर,
भव्य जीवे बेसे आय रे प्राणी।
परउपकारी मुनि दाम न माँगे,
देवे मुक्ति पहुँचाय रे प्राणी।सा॰६।

साधु–चरणे जीव साता रे पावे,
पावे ते लील विलास रे प्राणी।
जन्म जरा अने मरण मिटावे,
नावे फरी गर्भावास रे प्राणी।सा॰७।

एक वचन श्री सतगुरु केरो,
जो पैठे दिल माय रे प्राणी।
नरकगतिमा ते नहि जावे,
एम कहे जिनराय रे प्राणी।सा॰८।

प्रात उठी ने उत्तम प्राणी,
सुणे साधुजी रो व्याख्यान रे प्राणी।
एवा पुरुषानी सेवा करता,
पावे अमर विमान रे प्राणी।सा॰६।

सवत अठारे ने वर्ष अडतीसे,
बूसी गाव चौमास रे प्राणी।
मुनि आसकरणजी इण पर जपे,
हुँ तो उत्तमसाधारो दास रे प्राणी।सा॰१०।

श्री शांतिनाथजी का स्तवन

प्रात उठी श्री शाति जिनन्द को,
समरण कीजे घडी – घडी।



→ नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
→ बलि- निषेध के लिए सदैव तत्परता

सकट कोटि कटे भवसचित,
जो ध्यावे मन भाव धरी।प्रा॰१।

जनमत पाण जगत दुख टलियो,
गलियो रोग असाध मरी।
घट–घट अन्तर आनन्द प्रगट्यो,
हुलस्यो हिवडो हर्ष धरी।प्रा॰२।

आपद व्यन्तर विषम भय भाजे,
जैसे पेखत मृग हरी।
एकज चित्ते शुद्ध मन ध्याता,
प्रकटे परिचय परम सिरी।प्रा॰३।

गले बिलाय भरम के बादल,
परमारथ पद पवन करी।
अवर देव एरण्ड कुण रोपे,
जो निज मन्दिर केल फली।प्रा॰४।

प्रभु तुम नाम जग्यो घट अन्तर,
तो शु करिए कर्म अरी।
रतनचन्द शीतलता व्यापी,
पापनी लाय कषाय टरी।प्रा॰५।

रानी पद्मावती की ढाल

(आलोयणा)

हिवे राणी पद्मावती, जीवराशि खिमावे।
जाणपणु जग ते भलु इण वेला जो आवे।ते०१।

ते मुझ मिच्छामि दुक्कड, अरिहतो नी साख।
जे मै जीव विराधिया, चौरासी लाख।ते०२।

सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय।
सात लाख तेऊ तणा, साते वली वाय।ते०३।

दस लाख प्रत्येक वनस्पति, चउदे साधार।
बीती–चौरिंद्रिय जीवनी, बे बे लाख विचार।ते०४।

देवता तिर्यच नारकी, चार चार प्रकाशी।
चौद लाख मनुष्य ना, ये लाख चौरासी।ते०५।

इण भव परभव सेविया, जे पाप अठार।
त्रिविध त्रिविध करि परिहरू दुर्गतिनादातार।ते०६।

हिसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद।
दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद।ते०७।

परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष।
मान माया लोभ मै किया, वली राग ने द्वेष।ते०८।



कलह करी जीव दूहाव्या, दीधा कूडा कलक।
निदा कीधी पारकी, रति अरति नि शक।ते॰६।

चाडी कीधी पारकी, कीधो थापण–मोसो।
कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो।ते॰१०।

खाटकी ने भवे मै किया, जीवना वध–घात।
चिडीमार भवे चरकला, मार्‌या दिन–रात।ते॰११।

काजी मुल्ला ने भवे, पढी मत्र कठोर।
जीव अनेक जिबह किया, कीधा पाप अघोर।ते॰१२।

माछी ने भवे माछला, झाल्या जलवास।
धीवर भील कोल भवे, मृग पाड़्या पास।ते॰१३।

कोटवाल ने भवे मै किया, आकरा कर दण्ड।
बदीवान मराविया, कोरडा छडी दण्ड।ते॰१४।

परमाधामी ने भवे, दीधा नारकी दु ख।
छेदन भेदन वेदना, ताडन अतितिक्ख।ते॰१५।

कुभार ने भवे मै किया, नीमाह पचाव्या।
तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिड भराव्या।ते॰१६।

हाली–भवे हल खेडिया, फोड़्या पृथ्वीना पेट।
सूड नियाण किया घणा, दीधा बलद चपेट।ते॰१७।

माली भवे रूख रोपिया, नानाविध वृक्ष।
मूलपत्र फल फूलना, लाग्या पाप अलक्ष।ते॰१८।

अधोवाड्या ने भवे, भरिया अधिका भार।
पोठी ऊँट कोडा पड्या, दया नाणी लगार।ते॰१६।

छीपा ने भवे छेतर्या, कीधा रगण पास।
अग्नि आरम्भ किया घणा, धातुवाद अभ्यास।ते॰२०।

शूरपणे रण झूझता, मार्या माणसवृन्द।
मदिरा–मास माखण भख्या, खाधा मूल ने कद।ते॰२१।

खाण खणावी धातुनी, सर पाणी उलीच्या।
आरभकीधा अति घणा, पोते पापज सच्या।ते॰२२।

अड्गारकर्म किया वली, वन मे दव दीधा।
कसम खाधी वीतरागनी, कूडा दोष ज दीधा।ते॰२३।

बिल्लीभवे उन्दर गल्या, गिरोली हत्यारी।
मूढ गॅवार तणे भवे, मै जू लीखा मारी।ते॰२४।

भडभुजा तणे भवे, एकेन्द्रिय जीव।
जुवार चणा गेहूँ सेकिया, पाडता रीव।ते॰२५।

खाडन पीसण गारना, किया आरम्भ अनेक।
राधण इधण अग्निना, कीधा पाप उद्वेग।ते॰२६।



निरन्तर अध्ययन चिन्तन मनन मे
नारी आचरण के लिए निरन्तर प्रय

विकथा चार कीधी वली, सेव्या पच प्रमाद।
इष्टवियोग पडाविया, रोवन विषवाद।ते०२७।

साधु अने श्रावक तणा, व्रत लेई ने भाग्या।
मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूषण लाग्या।ते०२८।

साप बिच्छू सिह चीतरा, शकरा ने समली।
हिसक जीव तणे भवे, हिसा कीधी सबली।ते०२६।

सुवावडी दूषण घणा, वली गर्भ गलाव्या।
जीवाणी ढोली घणी, शील व्रत भजाव्या।ते०३०।

भव अनन्त भमता थका, कीधो देह–सम्बन्ध।
त्रिविध–त्रिविध करि वोसिरू, तिणशु प्रतिबध।ते०३१।

भव अनन्त भमता थका, कीधो परिग्रह सम्बन्ध।
त्रिविध–त्रिविध करि वोसिरू, तिणशु प्रतिबध।ते०३२।

भव अनन्त भमता थका, कीधो कुटुम्ब–सम्बध।
त्रिविध–त्रिविध करि वोसिरू, तिणशु प्रतिबध।ते०३३।

इण पर इहभव परभवे, कीधा पाप अखत्र।
त्रिविध–त्रिविध करि वोसिरू, करू जन्म पवित्र।ते०३४।

इण विध यह आराधना, भावे करसे जेह।
श्याम सुन्दर कहे पापथी, बली छूटसे तेह।ते०३५।

आलोयणा

आरम्भ–विषय–कषाय वश, भमियो काल अनन्त।
लाख चौरासी योनि मे, अब तारो भगवन्त।।१।।

करुणानिधि कृपा करी, कठिन कर्म मम छेद।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, करिये ग्रन्थी–भेद।।२।।

पतितउद्धारण नाथजी, अपनो विरुद विचार।
भूल चूक सब म्हारी, खमिये बारबार।।३।।

क्षमा करो सब माहरा, आज तलक रा दोष।
दीनदयालु देवो मुझे, श्रद्धा शील सतोष।।४।।

देव–गुरु–धर्म–सूत्र मे, नवतत्त्वादिक जोय।
अधिका ओछा जो कह्या, मिच्छा दुक्कड मोय।।५।।

जो मै जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
प्रभु तुम्हारी साख से, बार–बार धिक्कार।।६।।

कहने मे आवे कहॉ, अवगुण भर्या अनन्त।
घट–घट अन्तरयामी तुम, जानो सब भगवन्त।।७।।

बुरा बुरा सबको कहे, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधू आपना, मुझसा बुरा न कोय।।८।।

आतमनिदा शुद्ध भणी, गुणवन्त वन्दन भाव।
राग–द्वेष पतला करी, सबसे खिमत–खिमाव।।६।।



धर्म करत ससार–सुख, धर्म करत निर्वाण।
धर्मपथ साधे बिना, नर तिर्यच–समान।।

जहॉ दया तहॉ धर्म है, जहॉ लोभ तहॉ पाप।
जहॉ क्रोध तहॉ काल है, जहॉ क्षमा तहॉ आप।।

क्षमातुल्य कोउ तप नही, सुख सतोष–समान।
नही तृष्णासम व्याधि हू, धर्म दया समान।।

दुख मे सुमिरन सब करे, सुख मे करे न कोय।
जो सुख मे सुमिरन करे, दुख काहे को होय।।

सिद्ध-स्तवन

सेवो सिद्ध सदा जयकार,
जासे होवे मगलाचार।।टेक।।

अज–अविनाशी अगम अगोचर,
अमल अचल अविकार।
अन्तर्यामी त्रिभुवन – स्वामी,
अमित शक्ति – भण्डार।।१।।

कर पणट्ठ कम्मट्ठ अट्ठ गुण–
युक्त मुक्त ससार।
पायो पद परमेष्ठी तास पद,
वदू बार – बार।।२।।



* निरन्तर अध्ययन चिन्तन मनन
* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्र
* रूढि- निरोध के लिए सदैव समुद्यत

सिद्ध प्रभू का सुमिरण जग मे,
सकल सिद्धि दातार।
मन–वाछित पूरण सुर–तरुसम,
चिन्ता – चूरण – हार ।।३।।

जपे जाप योगीश रात – दिन,
ध्यावे हृदय मझार।
तीर्थकर हू प्रणमे उनको,
जब होवे अणगार।।४।।

सूर्योदय के समय भक्ति–युत,
स्थिरचित दृढता धार।
जपे 'सिद्ध' यह जाप तास घर,
होवे ऋद्धि अपार।।५।।

सिद्धस्तुति यह पढे भाव से,
प्रतिदिन जो नर – नार।
सो दिव शिव सुख पाव निश्चय,
बना रहे सरदार।।६।।

'माधवमुनि' कहे सकल सघ मे,
बढे हमेशा प्यार।
विद्या–विनय–विवेक–समन्वित,
पावे प्रचुर प्रचार।।७।।

श्री शान्तिनाथ स्तुति

साता कीजो जी, साता कीजो जी।
श्री शान्तिनाथ प्रभु, शिवसुख दीजो जी।।टेक।।

शान्तिनाथ है नाम आपका, सबने साताकारी जी।
तीन भुवन मे चावा प्रभुजी, मरी निवारी जी।।१।।

आप सरीखा देव जगत मे, और नजर न आवे जी।
त्यागी ने वीतरागी मोटा, मुझ मन भावे जी।।२।।

शान्तिनाथ मनमाही जपता, चाहे सो फल पावे जी।
ताप तेजरा दुख दारिद्दर, सब मिट जावे जी।।३।।

विश्वसेन राजा के नन्दन, अचलादेवी जाया जी।
गुरुप्रसादे चौथमल्ल कहे, घणा सुहाया जी।।४।।

आत्मशुद्धि

आत्मशुद्धि हित धर्म ध्यान का, चितन जो नर करता है।
अशुभ कर्म को दूर हटाकर मोक्षमार्ग पग धरता है।१।

जग मे अकेला आया हूँ और यहा से अकेला जाऊँगा।
कर्म शुभाशुभ सग मे लेकर, यथास्थान मै पाऊँगा।२।

मेरा मेरा करके फँसता, नही कोई जग मे तेरा है।
देह छोडकर उडेगा पछी भिन्न स्थान होगा डेरा है।३।



→ [illegible]
→ नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रय[illegible]
→ [illegible]

महा विडबना है परिजन की, अत साथ नही आता है।
निर्भय होकर देखो प्राणी, मरण अकेला पाता है।४।

धन्य धन्य नमिराज ऋषिश्वर एकत्व भावना भायी थी।
ककण से लेकर प्रेरणा, जब मिथिला ठुकराई थी।५।

स्वर्गपति ने दस प्रश्नो का, भाव पूर्ण उत्तर पाया।
खुश होकर स्वय शकेन्द्र ने ऋषि वर गुण गौरव गाया।६।

क्षण भगूर है तेरी काया, क्षण भगूर ही जग की माया।
खूब खिलाया, खूब पिलाया फिर भी है नश्वर काया।७।

देख देख तन की सुदरता खुश हो–होकर फूल रहा।
लूट गई तेरी रूप सपदा सनत् चक्री को भूल रहा।८।

वैभव मे मतवाला बनकर घूम रहा जैसे हस्ती।
रावण जैसे चले गए, फिर तैरी कौन वता हस्ती।६।

पुद्गल के ये रूप पराये, जिन्हे तू अपना मान रहा।
ज्ञानी कहते इन्हे छोड दे, क्यो तू अपनी तान रहा।१०।

त्यागी ममता जागी समता नश्वरता चित्त मे लाया।
अनित्य भावना भाकर के ही, भरत चक्री केवल पाया।११।

रोग शत्रु जब तन को घेरे, नही किसी का दाव लगा।
आत्मिक शाति जब ही पाता, मन मे समता भाव जगा।१२।

स्वय बाधता, स्वय भोगता, नही कोई शरण दाता।
त्राहि–त्राहि करके रोता, कोई न दुख से छुडावा पाता ।१३।

जन्म जरा मृत्यु के भय से भयभीत बना पामर प्राणी।
कुकृत्यो को नही छोडता, पीले जा रहा दुख की घाणी ।१४।

तीन खण्ड के स्वामी थे पर, मिला नही मरते पानी।
पुरजन परिजन पास ना आए, बीती थी जब जिदगानी ।१५।

अहो अनाथी मुनि के सिर मे, घोर वेदना छायी थी।
रहे ताकते पारिवारिक जन, चैन पलक नही पाई थी ।१६।

अरहट चाल सम जग लीला, सदा पलटती रहती है।
नही जगत मे स्थिरवासा, जिनवाणी यू कहती है ।१७।

अपना अपना किसे पुकारे, जग जीवन तो है सपना।
छोड कल्पना अपने मन की सत्य नाम प्रभु का जपना ।१८।

जग का सुख शाश्वत नही होता, जैसे बादल की छाया।
क्यो भरमाया भौतिक सुख मे, बिजली सी चचल माया ।१९।

कोई किसी का नही है शत्रु, न ही किसी का मित्र कोई
करमाधीन जगत की लीला क्यो तुने सन्मति खोई ।२०।

शालिभद्र क्या ऋद्धि पाये, नृप श्रेणिक देखन् आया।
ससार भावना भा करके ही जग बधन से मुक्ति पाया ।२१।



- [illegible] चिन्तन- [illegible]
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर [illegible]
- बलि- निषेध के लिए [illegible]

आबाद मत करना

तर्ज–करती हू तुम्हारा व्रत मे ....

उपवन के माली फूलो को बर्बाद मत करना,
और तीखे शूलो को आबद मत करना।।
क्या सोच रहा है, क्या सोच रहा है।।टेर।।

गुस्सा आने ही ना पाये आये तो शात हो।
ऐसा नही मन द्वेष से विकृत निताात हो।।
गुजरी हुई करवाहटो की, याद मत करना।।१।।

इस बेलगाम जीभ को चलने नही देना।
इस मथरा की दाल को, गलने नही देना।।
रखना काबू मे ही इसको, आजाद मत करना।।२।।

कुछ पा लिया तो मान मे, मदहोश ना होना।
पीकर ये शराब अपना होश ना खोना।
नकली तरक्की से पैदा वो, उन्माद मत करना।।३।।

अपने बुजुर्गो की बढती रहे शान हे हरदम।
अगली पीढी को सिखलाओ, तुम सत्य और सयम।
मर्यादा तोडे पैदा वो, औलाद मत करना।।४।।

जिन गुरुओ ने नवजीवन, जीने की दिशा दी।
ऊची उडान भरने की, हिम्मत और आशा दी।।
बहकावो मे आ उनसे ही, इहलात मत करना।।५।।

पर्यूषण आराधना

(तर्ज – काहे मचावे शोर पपैया ......)

जय जय जय जय कार, पर्यूषण । जय जय जय जय कार ।टेर।
स्वागत स्वागत पर्व तुम्हारा । लो अभिनदन आज हमारा ॥
वदन सौ सौ बार, पर्यूषण, जय ... ।१।

सब पर्वो का तू है राजा । तुझसे उन्नत जैन समाजा ॥
हम तुम पर बलिहार, पर्यूषण, जय, ... ।२।

तीर्थकर भी तुम्हे मनाते । सुर नर किन्नर सब गुण गाते ॥
महिमा अपरम्पार, पर्यूषण, जय, ... ।३।

सकल सघ की सेवा पल पल । बहे शाति का झरना निर्मल ॥
पाले शुद्धाचार, पर्यूषण, जय... ।४।

चाहे त्रस हो स्थावर प्राणी । चाहे मित्र हो दुश्मन जानी ॥
आतम सम व्यवहार, पर्यूषण, जय ... ।५।

मैत्री का सदेश सुहाना । भूलो अपना और बैगाना ॥
सबसे प्रीत अपार, पर्यूषण, जय ... ।६।

आओ हम सब मिल आराधे । मैत्री भावना दृढतर साधे ॥
सफल करे त्यौहार, पर्यूषण, जय ... ।७।



- [illegible]
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर [illegible]
- [illegible]

संवत्सरी आई

(तर्ज – जब तुम्ही चले परदेश।)

सब पर्वो का ताज, पुण्य दिन आज, सवत्सरी आई,
सब लो सहर्ष मनाई ।।टेर।।

चोरासी लाख जीव योनि से, जो वैर किया मन वच तन से,
भूलो वह और लो मैत्री भाव बसाई ।।हॉ आज १।।

जो जान बूझ कर पाप किया, या अनजाने अतिचार हुआ,
लो दण्ड और दो मिच्छामि दुक्कड भाई ।।हॉ आज २।।

अरिहत सिद्ध आचार्य श्री, पाठक, मुनिवर महा सतियॉजी,
श्रावक श्राविका इन सब से लो खमाई ।।हॉ आज ३।।

जो खमता और शुद्धि करता, वह प्राणी आराधक बनता,
आराधक की होती है गति सुखदाई ।।हॉ आज ४।।

यह पर्व नित्य आता है, पाले वह मुक्ति पाता है,
केवल कहते "पारस" अपना नरमाई ।।हॉ आज ५।।

निर्वाण का मार्ग

(तर्ज – कितना बदल गया इन्सान)

सम्यग ज्ञानी, समयग् दर्शी, सम्यग् सयमवान,
उसी को मिलता है निर्वाण।
शास्त्र शास्त्र मे, स्थान स्थान पर बोल गए भगवान,
उसी को मिलता है निर्वाण ।टेर।

जीव तत्व हू, जड से निराला, पुण्य शुभ्र है पाप है काला।
सवर बाध, है आश्रव नाला, बध बध निर्जरा उजाला।
मोक्ष मुक्ति है यो जो हो, इन नव तत्वो का ज्ञान ।१। उसी को...

देव वही जो अरि–हत हो, गुरु वही जो निर–ग्रथ हो।
धर्म वही जो अटल अमर हो, शास्त्र वही जो जिन भाषित हो।
जिस प्राणी की नस नस मै यो, अचल भरी श्रद्धान ।२। उसी को...

पच महाव्रत को स्वीकारे, या अणुव्रत ही अगीकारे।
जैसी शक्ति वैसा धारे, पर प्रमाद को दूर निवारे।
सिद्ध साक्षी से निरतिचार जो, पाले प्रत्याख्यान।३। उसी को...

केवल कहते 'पारस' सुन रे, सच्ची सीख ह्दय मे धर–रे।
ज्ञाता दृष्टा व्रत धर बन रे, जिससे तेरा नर भव सुधरे।
पूर्व पुण्य से तुझे मिला यह, मानव जन्म महान।४। उसी को...



सुणि नाथ बडाई, मन अकडाई, आया चलाई, प्रभु पासे,
विस्मय अति पाया, चित लजाया, गर्व गमाया, बीमासे,
प्रभु भरम मिटाया, जिन मग आया, सजम ठाया तिण सारी।।६।।

प्रथम इद्र भूति, पूर्वधर श्रुति, त्रिपदी सयुति फरमाया,
गणधर पद लीना, परम प्रवीना, शम दम भीना, तन ताया।
चुमाली से लारा, गणधर ग्यारा, भए अणगारा व्रतधारी।।७।।

चार तीरथ थाप्या, पाप उथाप्या, सुव्रत आप्या नरनारी,
केई स्वर्ग सिधाया, केई शिव पाया, श्री जिन राया हितकारी।
शैले शी भावे, प्रभु शिव पावे, जग मे नावे अविकारी।।८।।

प्रभु अलख, निरजन, भव दुख भजन, भविजन रजन, कृपाला,
जो शुद्ध मन ध्यावे, दुख पुलावे, सुख उपजावे, प्रतिपाला,
कहे रीख तिलोक, निरतर धोक, दीजो शवि थोक, भवपारी।।६।।

वैराग्य भजन

दुनिया दुखकारी तू छोड सके तो छोड–दुनिया ......।।टेर।
पाप अठारह करना पडता पाप कर्म भी बढता जाता।
है कर्म बध की ठोर–दुनिया ......(१)
पेट पापि यो खूब सतावे देश दिशावर मे भटकावे।
करनी दौडा–दोड दुनिया ......(२)
कोई के घर मे पुत्र कस सा, कोई के घर मे नार कर्कशा।
नित की मोथा फौड–दुनिया ......(३)

तिर्यचगति का दुख अपारा, मार के डर से भगे बिचारा
दुख सू पोडे राढ–दुनिया ......(१३)

जो सुख चाहो दुनिया छोडो, सयम से तुम नाता जोडो
पाप कर्म सब छोड–दुनिया ......(१४)

यह त्योहार (अक्षय तृतिया)

(तर्ज– देख तेरे ससार की.....)

इक्षु रस का किया पारणा, आखा तीज महान्
जय–जय आदि नाथ भगवान ।।टेर।।
श्रेयास कुवर ने दिया भाव से आज सुपात्तर दान।।जय..।।

ऐसा कर्म उदय मे आया, बारह मास लग आहार न पाया
सूखी कल्प वृक्ष सी काया, फिर भी दिल मे नहीं घबराया
घर–घर मे नित जावे गौचरी, देवे सब सम्मान।।जय..(१)

कोई हाथी कोई घोडा लाये, रत्न थाल कोई बहरावे
कोई कन्या भेट चढावे, प्रभु–देख पाछा फिर जावे
बारह घडी अतराय किन्ही बारह मास भुगतान ।।जय ..(२)

विचरत–विचरत महल मे आया, भोजन दोष रहित नहीं पाया।
प्रभु लौट कर बाहर आया श्रेयास कहे हे मुनिराया।
इक्षु रस निर्दोष है स्वामी यही लो कृपा निधान ।।जय..(३)



आज प्रभु कर पात्र बढाया, कुवर सलेडी रस बहराया
किया पारणा सब मन भाया, तीन लोक मे आनद छाया
घर धर हर्ष सवायो छायो, सुर नर मगल गान।।जय..(४)

आज भी जो जन वर्षी तप धरते इसी दिवस पर पारणा करते
आरभ और कषायो को तजते, वही सच्च फल तप का बरते
कर्म काटने को है 'जीतमल' तप सु मार्ग महान्।।जय..(५)

जंबू-माता- संवाद

जबू–इजाजत दे माता लेश्या सयम भार।।टेर।।
माता–इस्यो काई दुख व्याप्यो जबू राजकुवर ।।टेर।।

जबू–भगवान सुधर्मा स्वामी, आया बाग माय जी।
माता–धन्य अहो भाग्य जो, कीनो पावन आयजी।
जबू–सुन के शुभागमन, गयो दरश तायजी।
माता–धन्य ऐसे लाल को, जो धर्म को दिपायजी।
जबू–सुना वहा धर्म प्रचार ।। लेस्या ।।१।।

माता–चित क्यो उदास, जबू कहो समझायजी।
जबू–सुनके उपदेश, माता वैराग्य भायजी।
माता–ऐसे काई बोले, क्यो चित को दुखायजी।
जबू–झूंठा है ससार माता, सगी कोई नायजी।
माता–ओ काई करियो, विचार ।।जबू ।।२।।

जबू–ममता को दे छोड, आज्ञा देवो अब मायजी।
माता–इस्यो काई दियो ज्ञान, गयो भर मायजी।
जबू– वितराग वाणी सुणी, सजम मन भायजी।
माता–छोटा सू मोटो कियो क्यो अब छिटकायजी।
जबू– हे मतलब का, ससार ।।लेस्या।।३।।

माता–राज पाट धनधाम, कमी कोई नायजी।
जबू–है सब बेकार, माता सग चले नायजी।
माता–सग आठ नार थारे महला के मायजी।
जबू–दियो ज्ञान एक रात, दीनी समझायजी।
माता–सजम को छोड, विचार ।।जबू..।।४।।

जबू–निश्चय लीनी धार, माता सजम की मन मायजी।
माता–एका एकी लाल, बेटा छोड कठे जाय जी।
जबू–छोड मोह जाल, किणरा बेटा किणरी मायजी।
माता–राज सुख भोग पाछे, लीजो सजम जायजी।
जबू–नही इण बातां मे सार ।।लेस्या..।।५।।

माता– सजम खांडे की धार, कहू समझायजी।
जबू– आज्ञा देवो प्रेम से, तो मुश्किल कछु नायजी।
माता– पच महाव्रत पालणो, चलणो जीव बचायजी।
जबू– पाचो सुख समान, माता लेस्यु निभायजी।
माता– मै भी हूँ, तैयार ।।जबू..।।६।।



धन्ना० – कायर सुनरी तेरा भाई इक इक नारी छोडे।
सिहनी जाया शूरवीर तो एक साथ मुह मोडे।।
हो सजनी एक साथ मुह मोडे।।
जो करना, वह धीरे करना, यह तो अबला रीत री
यह पुरुषो की रीत नही ।।३।।

सुभद्रा० – कह दिखलाना सरल है स्वामी, उसमे जोर न आये २।
वह जननी का सच्चा जाया, जो करके दिखलाये।।
हो स्वामी, जो करके दिखलाये।।
धन जन को, दुल्हिन बधन को, सब त्याग के समय धारना,
कोई बच्चो का खेल नही ।।४।।

धन्ना० – ठीक समय पर तू ने सजनी, सोता सिह जगाया २।
ले आज बतादूॅ मेरी मा ने कैसा दूध पिलाया।।
हो मुझको कैसा दूध पिलाया।।
नारी को, दुनियादारी को, यह चला मै ठोकर मारके,
अब सयम पाल दिखाऊगा ।।५।।

सुभद्रा – स्वामी! स्वामी!! कहा जाते हो? हसि को साच न मानो २।
फिर से ऐसा नही कहूगी, मानो, मानो मानो।
हो स्वामी एक बार बस मानो
यह तेरी, चरणो की चेरी, इसे करदो क्षमा प्रदान तुम
यो मत छोड चले जाओ ।।६।।



धन्ना॰— वचन बाण का घायल शूरा, लौट कभी ना आये २।
चाहे हो बिलदान प्राण का, अपनी टेक निभाये।।
हो भगिनी अपनी टेक निभाये।।
जाऊंगा, बस अब जाऊगा, मै कठिन तपस्या धारके।।
मुक्ति महल ही जाऊगा।।७।।

कवि,— प्रण पालक अहो शूर शिरोमणि, धन्य है धन्ना तुमको २।
इतिहास तुम्हारा पढ पढ होता, गर्व हमारे दिल को।।
हो धन्ना गर्व हमारे दिल को।
जय रमणि! धन तेरी जननी! जिसने जना है तुझसा पूत रे।
"पारस" तेरा गुण गाए ।।८।।

हस्तिपाल राजा के स्वप्न

(तर्ज—खडी नीम के बीच)

राजा हस्तिपाल यू बोले, वचनामृत रस बरसाओ।
सपने देखे आज अजीब प्रभु, अर्थ कृपा कर फरमाओ ।।टेर।।

हस्ति एक बडा ही सुदर कितु फस गया दलदल मे,
वीर कहे सुन राजन्! ऐसे, कुसगत ही हलचल मे,
फस जायेगे साधु—साध्वी, सयम तजते तुम पाओ ।।१।।

हस्तिपाल—बहुत रम्य एक बाग उजाडे, ऐसा देखा बदर था।
भगवान—सघनायक होगा ऐसा ही, सघ उपवन है सुदर सा।
महाव्रतो के पेड मनोरम, शिथिलाचार से उजडाओ।।२।।

हस्तिपाल– कल्पवृक्ष सब आशा पूरे, विष–जतु से लिपटाया।
भगवान– दानवीर श्रावक जन तरू सम, लिगधारी ने भरमाया।
चूसेगे सब सत्व वे उनका, राजन् तुम ये समझ जाओ।।३।।

हस्तिपाल–काक–पक्षी मिष्ठान को तजकर, खाने अशुचि दौड चला।
भगवान–कष्टो से घबराकर साधक छोडेगे निज गच्छ भला।
शिथिल गच्छ जा कहे अन्य को, मौज बहुत तुम भी आओ।।४।।

हस्तिपाल–बलशाली एक सिह केसरी, कीडे उसको है खाते।
भगवान–जैन धर्म है, सिह सम कितु, स्वतीर्थी ही तडफाते।
अदर–अदर काटेगे, पर तीर्थी चाहे भय खाओ।।५।।

हस्तिपाल–देखा कमल उकरडी खिलते, पद्माकर खिलने वाला,
भगवान–दुष्कुल वाले तिर जायेगे, धर्म–ध्यान का पी प्याला।
ऊचे कुल वाले दुर्व्यसनी, पापो मे लिपटे पाओ ।।६।।

हस्तिपाल–देखा भगवन् कृषिवरो को, जो बीजो को बाते थे।
सडे–गले–उपजाऊ भू मे, अच्छे ऊसर खोते थे।
भगवान–धर्मीजन को दान न देगे, धर्महीन भरत पाओ।।७।।
हस्तिपाल–देखा धूल से सना पडा एक, काम कुभ था कोने मे,
भगवान–सुसाधु को कोई ना पूछे, आत्म दीप सजोने मे।
पाखण्डी शिथिलाचारी को, यश–पूजा पाते पाओ।।८।।



- निरन्तर अध्ययन- चिन्तन मन
- नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
- दलित- निरोध के लिए सदैव तत्परता

धन भी धरा रहा है, घर भी भरा रहा मिटा सका नहीं रोग कोई
हाजर हजार थे, पर सब बेकार थे, दुर खडा रहा आया जोई
हुई चला चली की अब बात है, छोडी आसा सभी ने एक साथ है।।४।।

इतने मे इक भावना जागी, प्रभु को मैने याद किया
रोग को निवार दे बिगडी सुधार दे साथ मे प्रण ये धार लिया
सब छोडूगा जग का साथ है, अब तूही प्रभु मम नाथ है।।५।।

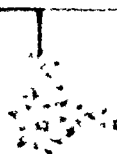
बिजली सी चमकी, रोग पे दमकी, वेदना सारी भाग गई
उसी क्षण छोडा जग नेह तोडा आत्मा मेरी जाग गई,
जरा समझ भेद भरी बात है, बोल कौन अनाथ सनाथ है।।६।।

ज्ञान ज्योति जागी, श्रेणिक सौभागी समकित व्रत आराध लिया
जीवो की दया घर धर्म दलाली कर गौत्र तीर्थकर बाध लिया,
मिले अनाथी जैसे गुरुनाथ है, "जीत" जागना तेरे हाथ है ।।७।।

अमूल्य तत्त्व-विचार

बहु पुण्यकेरा पुज थी शुभदेह मानवनो मल्यो।
तोये अरे ! भवचक्रनो, आटो नही एके टल्यो।।
सुख प्राप्त करता सुख टले छे, लेश ए लक्षे लहो।
क्षण–क्षण भयकर भावमरणे का अहो राची रहो।।१।।

लक्ष्मी अने अधिकार वधता शु वध्यु ते तो कहो।
शु कुटुम्ब के परिवारथी, वधवापणु ए नय ग्रहो।।



वधवापणु ससारनु नरदेहने हारी जवो।
एनो विचार नही अहो हो, एक पल तमने हवो!।।२।।

निर्दोष सुख, निर्दोष आनन्द, ल्यो गमे त्याथी भले।
ए दिव्य शक्तिमान जेथी, जजिरेथी निकले।।
परवस्तुमा नही मुझवो, एनी दया मुजने रही।
ए त्यागवा सिद्धात के, पश्चात दुख ते सुख नही।।३।।

हु कोण छु? क्याथी थयो? शु स्वरूप छे मारु खरु?
कोना सबधे वलगणा छे? राखु के ए परिहरु?
एना विचार विवेकपूर्वक शान्तभावे जो कर्या,
तो सर्व आत्मिक ज्ञानना सिद्धान्ततत्त्वो अनुभव्या।।४।।

ते प्राप्त करवा वचन कोनु सत्य केवल, मानवु?
निर्दोष नरनु कथन मानो, तेह जेणे अनुभव्यु।
रे आत्म तारो! आत्म तारो! शीघ्र एने ओलखो।
सर्वात्ममा समदृष्टि द्यो, आ वचन ने हृदये लखो।।५।।

विनय

अहो जगतगुरु एक, सुनिए अरज हमारी।
तुम हो दीन – दयाल, मै दुखिया ससारी।।१।।

इस भव–वन मे वादि, काल अनादि गमायो।
भ्रमत चहुगति माहि, सुख नहि दुख बहु पायो।।२।।

कर्म महारिपु जोर, एक ना कान करै जी।
मनमान्या दुख देहि, काहू सो न डरै जी।।३।।

कब हू इतर निगोद, कब हू नरक दिखावै।
सुर नर–पशुगति माहि, बहुविध नाच नचावै।।४।।

प्रभु । इनके परसग, भव माहि बुरे जी।
जे दुख देखे देव तुमसो नाहि दुरे जी।।५।।

एक जन्म की बात, कहि न सको सुनि स्वामी।
तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरजामी।।६।।

मै तो एक अनाथ, ये मिली दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनिये साहिब मेरे।।७।।

ज्ञान–महानिधि लूटि, रक निबल करि डार्यो।
इनने तुम मुझ माहि, हे जिन । अन्तर पार्यो।।८।।

पाप पुण्य की दोइ, पॉयनि बेरी डारी।
तन कारागृह मॉहि, मोहि दियो दुख भारी।।६।।

इनको नेक बिगार, मै कुछ नाहि कियो जी।
बिन कारन जगवद्य । बहुविधि वैर लियो जी।।१०।।

अब आयो तुम पास, सुनि जिन सुजस तिहारो।
नीतिनिपुण जगराय, कीजो न्याय हमारो।।११।।



दुष्टन देहु निकास, साधन को रख दीजे।
विनवै 'भूधरदास' हे प्रभु ढील न कीजै।।१२।।

प्रार्थना

हमारी वीर हरो भव पीर

मै दुख–तपित दयामृत–सर तुम, लख आयो तुम तीर।
तुम परमेश मोख मग–दर्शक, मोह दावानल–नीर।।१।।

तुम विनु हेतु जगत–उपकारी, शुद्ध चिदानन्द धीर।
गणपति–ज्ञानसमुद्र न लघै, तुम गुणसिन्धु गहीर।।२।।

याद नही मै विपति सही जो, धर–धर अमित शरीर।
तुम गुण चितत नशत जाय भय, ज्यो घन चलत समीर।।३।।

कोटि वार की अरज यही है, मै दुख सहुँ अधीर।
हरहु वेदना – फन्द 'दौल' को, कतर कर्म – जजीर।।४।।

गुरुदेव

वे गुरु मेरे उर बसो, जे भवजलधि–जहाज।
आप तिरे पर तारहि, ऐसे श्री मुनिराज।टेक।

मोह महारिपु जीत के, छोडे सव घर–वार।
होय विरागी वन बसे, आतम शुद्ध विचार।।१।।

रोग–उरग–बिल वपु गिण्यो, भोग भुजग समान।
कदली तरु ससार है, त्यागो सब यह जान।।२।।

पच महाव्रत आदरे, पाचो समिति – समेत।
तीन गुपति पाले सदा, अजर अमर पद हेत।।३।।

धर्म धरे दश लक्षणी, भावे भावना सार।
सहे परीसह बीस दो चारित–रतन भण्डार।।४।।

रतन–त्रय निज उर धरे, अरु निर्ग्रन्थ त्रिकाल।
जीते काम–पिशाच को, स्वामी परम दयाल।।५।।

जेठ तपै रवि आकरो, सूखे सरवर नीर।
शैल–शिखर मुनि तप तपै दाझै नगन शरीर।।६।।

पावस रैन डरावनी, बरसे जलधर – धार।
तरु–तल निवसै साहसी, बाजे झझा वार।।७।।

शीत पडे कपि–मद गलै, दाझे सब वनराय।
ताल तरगिणी के तटै, ठाडे ध्यान लगाय।।८।।

इण विधि दुद्धर तप तपै, तीनो काल मझार।
लागे सहज स्वरूप मे, तन सौ ममत निवार।।६।।

पूरब–भोग न चिन्तवै, आगम–वाछा नाहि।
चहूँ गति के दुखसो डरै, सुरति लगी शिवमाहि।।१०।।



रग–महल मे पोढते, कोमल सेज बिछाय।
ते ककराली भूमि मे, सोवे सवर काय।।११।।

गज चढि चलते गर्व सो, सेना सजि चतुरग।
निरखि–निरखि पग वे धरै, पालै करुणा अग।।१२।।

वे गुरु चरण जहाँ धरै, जग मे तीरथ तेह।
सो रज मम मस्तक चढो, 'भूधर' मागे येह।।१३।।

नाम-महिमा

(तर्ज . रे मन ! भज–भज दीनदयाल)

जाके नाम लेत इक छिन मे, कटे कोटि अघ जाल।टेक।

परम ब्रह्म परमेश्वर स्वामी, देखे होत निहाल।
सुमरन करत परम सुख पावत, सेवत भाजे काल।।१।।

इन्द्र फणिद्र चक्कधर गावे, जाको नाम रसाल।
जाको नाम ज्ञान परगासे, नाशै मिथ्या–जाल।।२।।

जाके नाम समान नही कछु उर्ध्व मध्य पाताल।
सोई नाम जपो नित द्यानत, छोड विषय विकराल।।३।।

श्री शान्तिनाथजी का छन्द

शान्तिनाथजी को कीजे जाप, क्रोड भवारा काटे पाप।।टेर।।
शान्तिनाथजी मोटा देव, सुर, नर, सारे जा की सेव।।१।।

दुख दारिद्र जावे, दूर, सुख सम्पत होवे भरपूर।
ठग फासीघर जावे भाग, बलती होवे शीतल आग।।२।।शा॰

राज लोकमा कीर्ति घणी, शान्ति जिनेश्वर माथे धणी।
जो ध्यावे प्रभुजी नु ध्यान, राजा देवे अधिको मान।।३।।शा॰

गड गुँबड पीडा मिट जाय, द्वेषी दुश्मन लागे पाय।
सगलो भाग्यो मननो भर्म, पामो समकित काटो कर्म।।४।।शा॰

सुनो प्रभु मोरी अरदास, हू सेवक तुम पूरो आश।
मुझ मन चिन्तित कारज करो, चिता आरति विघ्न हरो।।५।।शा॰

मेटो म्हारा आल जजाल, प्रभु मुझने तू नयन निहाल।
आपणी कीरति ठामो ठाम, सुधारो प्रभुजी म्हारो काम।।६।।शा॰

जो नित प्रति प्रभुजी ने रटे, मोतिया काच बिन्द फूला कटे।
चेप लावण दोनो झड जाय, बिन औषध कट जावे छाय।।७।।शा॰

प्रभु नाम आख निर्मल थाय, धुन्ध पटल जाला कट जाय।
कमलो पीलो झर झरे, शान्ति जिनेश्वर साता करे।।८।।शा॰

गरमी व्याधि मिटावे रोग, स्वजन मित्र नो मिले सजोग।
एहवा देव न दीखे और, नही चले दुश्मन को जोर।।९।।शा॰

लुटेरा सब जावे नास, दुर्जन फीका होवे दास।
शान्तिनाथ की कीर्ति घणी, कृपा करो हे त्रिभुवन । धणी।।१०।।शा॰



अरज करु छू जोडी हाथ, आपसु नही कोई छानी बात।
देख रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारा पाप।।११।।शा.

मुझ मन चिंतित करिये काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज।
तुम सम जग माहीं नहीं कोय, तुम सुमर्या से साता होय।।१२।।शा.

तुम पास चले नहीं मिरगी रोग, ताव तेजरो नाखो तोड।
मरी मिटाई कीधी प्रभु सन्त, तुम गुण नो नहीं आवे अन्त।।१३।।शा.

तुमने सुमरे साधु सती, तुमने सुमरे जोगी जती।
काटो सकट राखो मान, अविचल पदनु आपो स्थान।।१४।।शा.

सम्वत् अठारे चौराणू जाण, देश मालवो अधिक वखाण।
शहर जावरे चातुर्मास, हूँ प्रभु तुम चरणा रो दास।।१५।।शा.

'ऋषि रुघनाथ' कीधो छन्द, काटो प्रभुजी म्हारा फन्द।
मै जोऊ प्रभुजी की वाट, मुझ मन चिंता सगली काट।।१६।।शा.

"श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्त्रोत"

उज्जवल कपूर सुधा रसादिक शशि किरणमय! क्याकहे?
लावण्य अनुपम मणिप्रभा मय। शमनमय। मगल लहे।
सर्वत्र शोभा रूप सुषमा। सौम्य चेतन मय विभो।
शुक्ल ध्यायी वदन सुखकर, भवालम्बन हो प्रभो।।१।।

पाताल तल तम के विनाशक, धवल कीरत प्राज्य है।
सुर–असुर गण पर निरन्तर, कृपा भृत साम्राज्य है।

लोक सुखकर । आपसे, वारिधि कपित गात है।
हे प्रभो । यश रूप शुभ्र, मराल सम प्रख्यात है।।२।।

है पुण्य की राशि प्रबल, मिथ्या तिमिर हर सूर्य है।
मनसिज गजादिक के प्रशामक, मोक्ष पद परिपूर्य है।
इन्द्रादि से सपूज्य हो, ज्ञान प्रकाशक देव हो।
शान्ती सुधारस के प्रसारक, श्री पार्श्व प्रभु गुण गेय हो।।३।।

चिन्तामणि समफल प्रदाता, दिव्य रूप हो सौम्यतम।
सजीवनी घूटी प्रपायक, जाप जपते दिव्यतम।
इन्द्रादि का ऐश्वर्य भी, विजित फिर क्या चीज है?
अघमल प्रहारक सिद्धिदायक, गुण प्रचय के बीज है।।४।।

महिमा परक चिन्तामणि, श्री पार्श्व प्रभु अभिराम है।
रक्षक प्रतापी कष्ट वारक, भव्य जन सुखधाम है।
व्यामोह नाशक प्रखर ! ऋद्धि, सिद्धि प्रदायक देव है।
श्री भी समर्पित नित रहे, भक्तो के गृह स्वयमेव है।।५।।

रवि बाल्य हो या लघुहरि, उर्जा प्रसारक है यथा।
सुरवृक्ष का अकुर सदा, फल अमिततम देता तथा।
अगार की लघु भी शलाका, काष्ठ ज्वालक दिव्य है।
अमृत की एक बूद भी, नव रूप देती भव्य है।।६।।

चिन्तामणि ह्रीं रूप श्री ॐ, शक्ति से भरपूर है।
अर्हं नमीऊण जाप से, मिटते कर्मदल क्रूर है।



त्रिलोक का वशीकरण है, कामादि विषनिल परिहरे।
वसहाकित द्युति मंत्र से, ऋद्धि संसिद्धि श्री॰वरे।।७।।

ह्री श्री नमो संयुक्त का, करता सतत शुभ ध्यान है।
हृत् पद्म मे आधान कर, साधो ! सुखद सद्ज्ञान है।
निज भाल, भुज कर नाभि मे, धर मन्त्र ध्यावे प्रेम से।
वो अष्ट दल हिय कमल मे शिव पद लहे ध्रूव नेम से।।८।।

रोग शोक कलह मारी, अरि मिटे तव नाम से।
अधि व्याधि औ असमाधि, दूर हो गुण धाम से।
दरिद्रयहारी व्याल हस्ती सिह श्वापद दूर हो।
प्रभु पार्श्व के सन्नाम से, कलिमल विकल परिचूर हो।।६।।

गीर्वाण कल्प द्रुमादि धेनु, कुम्भ मणि पद शोभते।
देव दानव मनुज जन के, सध्यान मे मन मोहते।
लक्ष्मी सदा चरणो की चेरी, ब्रह्माण्ड सस्थायिनी।
चिन्तामणि श्री पार्श्व के, नित पाद मे सशायिनी।।१०।।

लौकिक दु खादि को हरे, लोकोत्तर सुख ससाध्य है।
श्री पार्श्व प्रभु अरुपार्श्व यक्ष, जिनके हृदय सस्थाप्य है।
इच्छा प्रपूरक कर्म नाशक, पार्श्व प्रभु गुण धाम है।
प्रकाश बोधि बीज दाता, सब सवारे काम है।।११।।

श्री शान्ति चालीसा

।।दोहा।।

शान्तिनाथ जिनवर विभो,
शान्ति के अवतार।
वन्दन पद पकज तले,
करते बार हजार।।

।।चौपाई।।

अचला गर्भ मे आप पधारे।
माता चवदे स्वप्न निहारे।।१।।

हस्ती वृषभ सिह को देखा।
लक्ष्मी लखकर हरख विशेखा।।२।।

दिनकर चन्द्र ध्वजा लहराती।
कलश पुष्प माला मन भाती।।३।।

पद्म सरोवर क्षीर समुन्दर।
देव विमान बारवा सुन्दर।।४।।

रत्नो का था ढेर निराला।
उर्ध्व शिखा निर्धूमक ज्वाला।।५।।

सुनकर विश्वसेन हर्षाये।
नर नारी मिल मगल गाये।।६।।



धन्य तात अरू धन्य है माई।
जिसने ऐसी ज्योति पाई।।७।।

परम शुद्ध तीर्थंकर माता।
इन्द्र चरण मे शीश नवाता।।८।।

गर्भ समय मृग रोग निवारा।
रक्खा नाम शान्ति तव प्यारा।।६।।

पूर्व जन्म मे मेघ कृपालू।
नीतिवान थे पूर्ण दयालू।।१०।।

शरणागत पारावत काजा।
मास काट निज तन का ताजा।।११।।

दिया बाज को मति हरसाई।
देवो ने जय ध्वनी सुनाई।।१२।।

चक्रवर्ति पचम कहलाये।
षट्पद देव आपने पाये।।१३।।

सयम पथ पर कदम बढाया।
तब देवो मे उत्सव छाया।।१४।।

अष्टादश दूषण को टारे।
गुण जिनवर ने बारह धारे।।१५।।

मिली देह प्रभु को अति प्यारी।
करे नमन सुर औ नर नारी।।१६।।

पूर्ण ज्ञान दर्शन के धारी।
अमित वीर्य से कर्म सहारी।।१७।।

तीर्थंकर प्रभु तीर्थ प्रणेता।
आत्म शत्रु के वीर विजेता।।१८।।

भा–भण्डल की विभा निराली।
नही सूर्य मे भी वह लाली।।१६।।

देव दुन्दुभि सुन्दर बजती।
विजय घोषणा दुनिया करती।।२०।।

छत्र तीन मस्तक पर सोहे।
मुक्ता झालर मन को मोहे।।२१।।

समवशरण मे जहा विराजे।
घन गभीर मधुर स्वर गाजे।।२२।।

मन्द पवन गन्धोदक सरसे।
कल्प वृक्ष के पुष्प सुबरसे।।२३।।

कन्द पुष्प सम चामर ढुलते।
कान्तिधार निर्झर से लगते।।२४।।



प्रातिहार्य है मगलकारी।
वर्णन की ना शक्ति हमारी।।२५।।

खम दम सम प्रभु तुम हो धीरा।
जपे जाप कटती भव पीरा।।२६।।

मिथ्या देव धरम गुरु तजना।
शान्तिनाथ को नित उठ भजना।।२७।।

भूत प्रेत अरू आधि व्याधि।
मिटे सभी फिर मिले समाधी।।२८।।

शान्तिनाथ को जो नर ध्यावे।
अष्ट सिद्धि नव निधि फल पावे।।२६।।

शान्तिनाथ की करजो सेवा।
उसकी आशा पूरे देवा।।३०।।

गुण गण जो जन तेरे गाते।
विश्व वन्द्य पद वे पा जाते।।३१।।

शेर सर्प सक़ट कोई आवे।
शान्ति पाठ से सब भग जावे।।३२।।

निर्जन वन श्मशान हो कोई।
भक्तो को कछु कष्ट न होई।।३३।।

हे सर्वज्ञ । विश्व के ज्ञाता।
जपे जाप जो शान्ति पाता।।३४।।

चुगल चोर चाण्डाल जुआरी।
पाकर शरण नही ससारी।।३५।।

काट कर्म शिवलोक सिधाये।
शान्ति प्रभु पचम गति पाये।।३६।।

अगम अगोचर अमित अरूपी।
चिदानन्द परमात्म सरूपी।।३७।।

नही वर्ण रूपादिक जामे।
जन्म जरा दुख मृत्यु न वामे।।३८।।

जेठ सुदी तेरस सुखदायी।
जन्म मरण मुक्ति सरसाई।।३६।।

शान्तिनाथ अर्जी सुन लीजे।
धर्म गोतम को ध्रुव पद दीजे।।४०।।

।।दोहा।।

दो हजार सैतीस मे, शूले वर्षावास।
नाना गुरु की कृपा से, रचा गया सोल्लास।।

।।इति श्री शान्ति चालीसा।।



भक्तामर पाठ

भक्ति युक्त निज शीश झुका, जब देव वन्दना करते है,
उनके मुकुट मणि रत्नो मे, दिव्य तेज जो भरते है।
मिथ्यातम कर दूर जीव को, भवोदधि से सुपथ गहले,
ऐसे श्री जिनराज चरण को विधि सहित वन्दन पहले।।१।।

तत्व ज्ञान से पूर्ण स्वर्गपति, इन्द्रो ने महिमा गाई,
भाव भरे स्तोत्र रचनाकर करी स्तुति मन चाई,
आश्चर्य, मे तुच्छ बुद्धि हूँ फिर भी साहस ठाऊगा,
उन्ही श्री आदि जिनन्द की, मै भी महिमा गाऊगा।।२।।

देख चन्द्र की छाया जल मे, बालक का मन जाता है,
ज्ञान नही होने के कारण उसे पकडना चाहता है।
बुद्धि हीन हू निर्लज होकर, तब स्तोत्र की तैयारी,
करने को उद्यत हुआ, मेरा साहस अतिशय भारी।।३।।

प्रलय काल के प्रबल वेग मे, सागर जब लहरे देता,
किसकी ताकत भुजा के बल से पार तैरकर कर लेता?
उसी भाति हे गुण सागर तेरी गुण महिमा गाने मे,
मेरा क्या सामर्थ्य स्वय बृहस्पति अपूर्ण बनाने मे।।४।।

यद्यपि मुझमे शक्ति नही है तेरी महिमा गाने की,
पर भक्ति के वश मे हूँ, इच्छा है स्तोत्र बनाने की।
सिह के मुह मे देख लाल, शक्ति का ध्यान नही लाती हैं।
प्रीति के वश मे हो हिरणि, सिह से लडने जाती है।।५।।

कोयल क्यो ना हरदम बोले, बसन्त ही जब आती है,
आमो की मजरि ही बस उसको मीठा बुलवाती है।
उसी तरह अल्पज्ञ हूँ पर तव भक्ति मुझे विवश करती,
शक्ति नही बस भक्ति ही, इस रचना का कारण रखती।।६।।

सम्पूर्ण विश्व मे घोर तिमिर, छाया रहता है अति भारी,
पर पल मे हो जाय नष्ट जब आती रवि किरणे प्यारी।
उसी तरह तेरी स्तुति करता है जो देह धारी।
क्षण भर मे नष्ट हो जाते है भव भव के पातक भारी।।७।।

साधारण जल का बिन्दु, कमलिनी के पत्तो पर होता,
मोती नही, पर उस पत्ते पर वह मोती सा ही है सोहता।
उसी तरह मुझ मन्द मति से तुच्छ स्तोत्र बन पावेगा,
पर तेरे प्रभाव से भगवन्, सज्जन के मन भावेगा।।८।।

सूर्य उदय से प्रथम प्रभा को देख कमल खिल उठता है,
सूर्य देख कर कमल खिले इसमे क्या आश्चर्य लगता है?
तेरी केवल चर्चा से ही पाप नष्ट हो जाय सभी,
इस स्तोत्र से होवेगे ही, इसमे नही सन्देह कभी।।९।।



उदार हृदय स्वामी का सेवक, समय पडे पाकर धन धान,
अपने स्वामी के समान ही हो जाता भगवन धनवान।
उसी तरह हे जग भूषण, जो तेरी महिमा गाते है,
तेरे समान ही उच्च पद पर, विश्व वद्य हो जाते है।।१०।।

एक बार जो क्षीर सागर का मीठा पानी पी लेता,
फिर खारा पानी पीने की कैसे इच्छा रख सकता ?
उसी तरह जो तेरे दर्शन कर लेता है सुख दाई,
अन्य देवो के दर्शन को वो कभी न मन देगा भाई।।११।।

पुदगल परमाणु से तव शरीर बना है गुण धामी,
वे परमाणु उतने ही थे, सारे विश्व मे हे स्वामी।
यदि अधिक परमाणु होते, अन्य रूप कोई बनता,
स्पष्ट है इस धरती पर, नही रूपवान तुमसा जचता।।१२।।

निष्कलक और दिव्य छवि है, तेरे मुख सुख कन्दा की,
उपमा कैसे दे सकता हू उसे कलकी चन्दा की।
दिन मे ढाक के पते सा वो, प्रभाहीन हो जाता है,
पर तेरा मुख तो है उज्जवल सदा एक सा रहता है।।१३।।

चन्द्र किरण सम निर्मल भगवन, गुण समूह तेरा भारी,
तीन भवन का करे उलंघन, इसमे क्या आश्चर्य कारी।
तीन जगत के नाथ आपका, जो भी आश्रय चित्त धरता
भला उसे स्वतन्त्र गगन मे कोन अडचना दे सकता।।१४।।

प्रलय–काल की हवा से भगवन, सारे पर्वत हिल जाते,
पर सुमेरु पर्वत को किचित भी नही डिगा पाते।
तेरे सन्मुख देवागना ने भोग प्रदर्शन दिखलाया,
पर वो तेरे विरक्त भाव को किचित नही डिगा पाया।।१५।।

ससारी दीपक मे भगवन, तेल धुआ बत्ती होती,
जरा हवा के झोके मे ही, बुझ जाती उसकी ज्योती।
वो केवल घर का उजियाला, तू त्रिभुवन का है उद्योत,
बुझा सके नही प्रलय हवा, सदाअखडित अविचल ज्योत।।१६।।

सूर्य–अस्त होता सन्ध्या को, तू तो सदा प्रकाशी है,
तीन जगत का तू उजियाला, वो एक जम्बू वासी है।
राहू ग्रह लेता है सूर्य को तू निष्कलक सूर्य का नूर।
उसके तेज को मेघ ढके, पर तुने कर्म किये चकनाचूर।।१७।।

कैसे चन्द्र की देऊ उपमा, वह तो रात्रि मे ही रहता,
साधारण अन्धकार हरे, और राहू ग्रसे बादल ढकता।
पर तेरा मुख सदा उदय, अज्ञान मोह तम को हरता,
तीन जगत मे सदा प्रकाशी, अनत कान्ति का तू धरता।।१८।।

पकी हुई अन्न राशि पर, गर मेघ आकर बरसे,
सिवाय कीचड फैलाने के, अन्य लाभ क्या हो उससे।
जहा तेरा मुख रूपी चन्द अज्ञान तिमिर को हरता है।
चन्द्र सूर्य का शीत उष्ण वहा, व्यर्थ आतपसा लगता है।।१९।।



उदार हृदय स्वामी का सेवक, समय पडे पाकर धन धान,
अपने स्वामी के समान ही हो जाता भगवन धनवान।
उसी तरह हे जग भूषण, जो तेरी महिमा गाते है,
तेरे समान ही उच्च पद पर, विश्व वद्य हो जाते है।।१०।।

एक बार जो क्षीर सागर का मीठा पानी पी लेता,
फिर खारा पानी पीने की कैसे इच्छा रख सकता ?
उसी तरह जो तेरे दर्शन कर लेता है सुख दाई,
अन्य देवो के दर्शन को वो कभी न मन देगा भाई।।११।।

पुद्गल परमाणु से तव शरीर बना है गुण धामी,
वे परमाणु उतने ही थे, सारे विश्व मे हे स्वामी।
यदि अधिक परमाणु होते, अन्य रूप कोई बनता,
स्पष्ट है इस धरती पर, नही रूपवान तुमसा जचता।।१२।।

निष्कलक और दिव्य छवि है, तेरे मुख सुख कन्दा की,
उपमा कैसे दे सकता हू उसे कलकी चन्दा की।
दिन मे ढाक के पते सा वो, प्रभाहीन हो जाता है,
पर तेरा मुख तो है उज्जवल सदा एक सा रहता है।।१३।।

चन्द्र किरण सम निर्मल भगवन, गुण समूह तेरा भारी,
तीन भवन का करे उलघन, इसमे क्या आश्चर्य कारी।
तीन जगत के नाथ आपका, जो भी आश्रय नित्त धरता
भला उसे स्वतन्त्र गगन मे कौन अडचना दे सकता।।१४।।

प्रलय–काल की हवा से भगवन, सारे पर्वत हिल जाते,
पर सुमेरु पर्वत को किंचित भी नही डिगा पाते।
तेरे सन्मुख देवागना ने भोग प्रदर्शन दिखलाया,
पर वो तेरे विरक्त भाव को किंचित नही डिगा पाया।।१५।।

ससारी दीपक मे भगवन, तेल धुआ बत्ती होती,
जरा हवा के झोके मे ही, बुझ जाती उसकी ज्योती।
वो केवल घर का उजियाला, तू त्रिभुवन का है उद्योत,
बुझा सके नही प्रलय हवा, सदाअखडित अविचल ज्योत।।१६।।

सूर्य–अस्त होता सन्ध्या को, तू तो सदा प्रकाशी है,
तीन जगत का तू उजियाला, वो एक जम्बू वासी है।
राहू ग्रह लेता है सूर्य को तू निष्कलक सूर्य का नूर।
उसके तेज को मेघ ढके, पर तुने कर्म किये चकनाचूर।।१७।।

कैसे चन्द्र की देऊ उपमा, वह तो रात्रि मे ही रहता,
साधारण अन्धकार हरे, और राहू ग्रसे बादल ढकता।
पर तेरा मुख सदा उदय, अज्ञान मोह तम को हरता,
तीन जगत मे सदा प्रकाशी, अनत कान्ति का तू धरता।।१८।।

पकी हुई अन्न राशि पर, गर मेघ आकर बरसे,
सिवाय कीचड फैलाने के, अन्य लाभ क्या हो उससे।
जहा तेरा मुख रूपी चन्द अज्ञान तिमिर को हरता है।
चन्द्र सूर्य का शीत उष्ण वहा, व्यर्थ आतपसा लगता है।।१६।।



देवो मे सम्मानित केवल ज्ञान, तेरा तुम ही बुद्ध हो,
त्रिभुवन के कल्याण मार्ग के, रचेता शकर तुम खुद हो।
कल्याण मार्ग की विधि के दाता ब्रह्मा भी तो आप ही हो,
पुरुषो मे उत्तम होने से पुरुषोत्तम तो आप ही हो।।२५।।

त्रिभुवन पीडा हरण हार हो, तुमको मेरा नमस्कार,
जग के उज्जवल अलकार, प्रणाम तुम्हे मेरा हर बार।
तीन जगत के नाथ आपके, चरणो मे जाऊ बलिहार,
भव सागर के शोषण कर्त्ता, तुमको वन्दन बारम्बार।।२६।।

जग मे जितने गुण थे भगवन् सबने तुममे किया निवास,
अवगुण रहते सदा घमण्ड मे, आते नही तुम्हारे पास।
क्योकि जग के अन्य देवो ने उनको अपना रखा है,
पर दोषो से रहित आपने गुण का ही रस चखा है।।२७।।

नभ मे बादल के समीप जब सूर्य प्रतिबिम्ब छाता है,
शोभा देता है अति सुन्दर सबके मन को भाता है।
उसी तरह अशोक वृक्ष के नीचे तेरी छवि प्यारी,
निर्मल अग शोभा पाता है, आसमान सा प्रियकारी।।२८।।

प्रकाशमान मणियो से युक्त है, रत्नजडित तव सिहासन,
उस पर कितना प्यारा लगता, शरीर आपका हे भगवन।
उदयाचल पर्वत के शिखर पर जब भी सूरज आता है,
कितना सुन्दर और मनोहर, अति शोभा वह पाता है।।२९।।



→ नारी- [illegible]
→ [illegible]

समवशरण मे उच्च सिहासन पर जब तुम बैठे होते,
सफेद कुज के पुष्प जैसे दो, आस पास चवर ढुलते।
सुमेरु गिरि के दोनो तटो पर मानो दो झरने झरते।
चन्दा सम निर्मल जल बहता ऐसे श्री चामर लगते।।३०।।

तेरे शीश पर तीन छत्र शोभा पाते है प्रियकारी,
चन्दा जैसी कान्ति जिनकी तेज सूर्य से भी भारी।
मणियो की पड रही जाल वो ऐसा तेज दिखाते है,
उर्ध्व, मृत्यु, पाताल लोक पति मानो तुम्हे बताते है।।३१।।

हे नाथ आपके समव–शरण मे देव दुदुभी बजती है,
उच्च स्वर गम्भीर गुजारव मे वो ऐसी लगती है।
तीन लोक को करा रही हो, मानो तेरा समयागम ध्यान,
करती हो तव विजय घोषणा, गाती हो तेरा यश गान।।३२।।

गधोदक पानी से भीगे मद पवन सौरभ सरसा,
उर्ध्व मुखी पचवर्णी पारी जातिक पुष्पो की वरसा।
समवशरण मे जब होती है माना यो कहते सारे,
पुष्प रूप धारण करे बरस रहे स्वय वचन प्रभु के प्यारे।।३३।।

जहा विराजो आप दयानिधि वही आपके मुख के पास,
प्रभा अति तेजस्वी छाती भामण्डल का दिव्य प्रकाश,
यद्यपि सूर्य सा तेजस्वी है, पर आतप न कर पाता,
शशिज्योत ज्यो सौम्य, आपकी वीतरागता दरसाता।।३४।।

समवशरण मे आप प्रभु जब वचनामृत बरसाते है,
धर्म तत्व का प्रतिपादन कर मोक्ष मार्ग दरसाते है,
विशुद्ध अर्थ और सरल सर्व ही भाषानुगामिनी है,
पैतीस अतिशय युक्त वह भाषा सबके ही मन भाविनी है।।३५।।

खिला हुआ सुवर्ण वर्णी कमल समूह लगता प्यारा,
नख पक्ति युक्त चरण कमल तव है उसको जीतन हारा,
ऐसे उत्तम चरण कमल हे नाथ आप जहा रखते है,
वहा देव गण पद्म कमल की, आकर रचना करते है।।३६।।

अष्ट महाप्रतिहार्यादि की इन विभूतियो के स्वामी,
अन्य हरिहरादि देवो को, नही मिले रहती खामी।
जिस प्रकार अन्धकार हरण को, होती दिव्य सूर्य ज्योति,
वैसी ग्रह नक्षत्रादि मे प्रभा कभी नही हो सकती।।३७।।

मद से झरता कपोल जिसका, मलिन और चचल होता,
उन्मत भवरो की गुज्जार से, छाया क्रोध भान खोता।
ऐसा रोष भरा हाथी भी, अगर जो सामने आवेगा,
तेरा आश्रय लेने वाला, भक्त नही घबरावेगा।।३८।।

मदोन्मत कुजर के मस्तक का जो विदारण कर लेता,
रक्त मिश्रित मोतियो से पृथ्वी को चमका देता,
तेरे युगल चरण पर्वत का जो भी आश्रय मन धरता,
क्या ताकत वो पराक्रमी सिह उसका सामना कर सकता।।३९।।



प्रचण्ड पवन तिनके उछले औ, भयप्रद ज्वाला भभक रही,
मानो जग को हडप जायेगी, ऐसी अग्नि धधक रही,
जैसे चन्दन का एक बिन्दु, मेटे मणो तेल का कान्त,
तेरा पवित्र नाम लेने से होती, वो अग्नि भी शान्त।।४०।।

लाल नेत्रो मे क्रोध भरा और ऊँचा फण फुकार करे,
मन्दोमत्त अति काला सर्प, आ पैरो तले वह विचरे,
तेरे नाम की नाग दमनी जडी यह जिसके हृदय है,
सर्प न बाधा पहुचा सकता, चाहे कितना ही निर्दय है।।४१।।

घोडे करे हुकार गर्जना, हस्ती भी करते भारी,
रण मे हो बलवान भूपति, ले अपनी सैना सारी।
किन्तु सूर्य के उदय होते ही, अन्धकार नष्ट हो जाता,
इसी तरह तव भक्ति के बल, रण मे जीत भक्त पाता।।४२।।

बरस रहे हो बरछी भाले, तलवारो की लगकर मार,
बहे वेग मे हाथियो के रक्त रूपी जहा जल की धार।
यद्यपि पार करने का इच्छुक, पर योद्धा बल हुआ समाप्त,
तेरा भक्त तो कर ही लेता शत्रु पथ से जय को प्राप्त।।४३।।

भयकर है मगरमच्छ बड–वाग्नि भी जलती न्यारी,
समुद्र तरगो मे जहाज, डोलायमान हो रहा भारी,
ऐसा जहाज भी कुशल पूर्वक, सागर तट को पा लेता,
तव सुमिरण भक्तो की यात्रा सुख से पार करा देता।।४४।।

जलोधर आदि रोगो से झुक जो कुबडा हो जाता,
जीवन आशा छोड चुका जो, दशा शोचनीय को पाता।
वे नर तेरे चरण कमल की, रज हृदय से अपनाते,
रोग सोग हो दूर शीघ्र ही कामदेव से बन जाते।।४५।।

पावो से ले गले तक जो अग साकलो से जकडा,
बेडियो की बडी–बडी नोको ने जघा को रगडा
वे नर भी जब तेरे नाम का, ध्यान हृदय मे लाते है।
बन्धन जाते टूट स्वय ही, शीघ्र मुक्त हो जाते है।।४६।।

हस्तिसिह अरु अग्नि सर्प हो, युद्ध शत्रु सागर या रोग,
बन्धन हो या अन्य कोई भी, जीवन मे विपदा सयोग।
हे नाथ आपके इस स्तोत्र को, भक्ति युक्त जो भी गाते,
उनके यह सारे भय क्षण मे स्वय ही डरकर भग जाते।।४७।।

पुष्प हार ज्यो शोभा देता, वैसे ही यह गुण की माल,
बुद्धिमान कर धारण इसको, हो जावेगा परम निहाल।
कर कण्ठस्थ गाता जो रचना, मानतुग के मन भाती,
लक्ष्मी को पा लेता 'जीत' वह स्वय विवश होकर आती।।४८।।

वीर-स्तुति

सत मुनिजन पडित ब्राह्मण, और गृहस्थ सज्जन नर–नार।
अन्य मति भी आकर करते, मुझसे प्रश्न यह बारम्बार।।



कौन ओ कैसे महापुरुष वो, जिनने जग कल्याण विचार।
विमल ज्ञान से स्वतत्र निश्चित धर्म बताया जन हितकार।।१।।

आप जानते जिन्हे खूब, कर कृपा मुझे भी बतलाओ।
महावीर के ज्ञान दर्शन और शीलाचार को समझाओ।।
जैसा आपने देखा समझा, सुना किसी गुणधामी से।
आर्य जम्बू स्वामी यू पूछे, गुरु सुधर्मा स्वामी से।।२।।

गुरुदेव कहे सुणो आर्य वो सच्चिदानन्द सत्य ध्यानी थे।
कर्म विनाशक महा यशस्वी ऋषी अनन्ता ज्ञानी थे।।
त्यागमय जीवन ही जिनका, उनकी महत्ता को जानो।
जन कल्याणक धर्म और सयम अखंडता पहिचानो।।३।।

महावीर ने तीन लोक की, त्रस और स्थावर जो काया।
द्रव्य दृष्टि से नित्य और पर्याय से अनित्य बतलाया।।
अनेकान्तवाद से अकित, अहिसा धर्म जग नायक है।
भवसागर मे डूबते को, द्वीप समान सहायक है।।४।।

सभी पदार्थ ज्ञाता दृष्टा काम क्रोध शत्रु मारे।
केवल ज्ञानी निष्कलक और अटल वीर निर्भय प्यारे।।
आत्म भाव से लीन अध्यात्मी अपरिग्रही उजियारे थे।
मृत्यु विजय कर अजर अमर हुए ऐसे वीर हमारे थे।।५।।

जग मगलकारी प्रज्ञा थी वे स्वतत्र सदा विहारी थे।
भव–सिन्धु से तिरने 'वाले' उपसर्ग सहे हजारी थे।।

परिषह मे समभाव सूर्य सम, अखड तेज के धारी थे।
वैरोचन अग्नि ज्यो ज्ञान से, मिथ्या तिमिर सहारी थे।।६।।

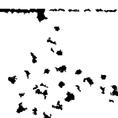
ऋषभ आदि तीर्थकर द्वारा, प्रचलित धर्म का उद्धारा।
मननशील विलक्षण ज्ञानी, काश्यप वश का उजियारा।।
स्वर्ग लोक मे जैसे इन्द्र, असख्य देवो का स्वामी है।
वैसे ही इस युग मे वीर ही, धर्म के नेता नामी है।।७।।

महावीर है अनुपम जग मे, अनन्त ही ज्ञान गुणाकर है।
स्वयभू रमण ज्यू अपार निर्मल, शुद्ध और अक्षय सागर है।।
क्रोध मान माया और लोभ से रहित वासना मुक्त भगवान।
देवो मे ज्यो इन्द्र प्रभावी, उसी तरह जग मे थे महान।।८।।

जिस प्रकार सुमेरू पर्वत, सब पर्वत से है आला।
स्वर्गवासी देवो का प्रिय है अनेक मनोहर गुणवाला।।
उसी तरह थे जग मे श्रेष्ठ, महावीर अनता शक्तिवान।
प्राणी मात्र को आनन्दकारी, थे सत्य शील गुणो की खान।।६।।

एक लाख योजन ऊचा, सुमेरु पर्वत है सुखकार।
भूमि मे एक हजार योजन, और नभ मे निन्नाणु हजार।।
तीन काण्ड से युक्त पडक वन शोभित होता ध्वजा समान।
त्रिजग पति तेरे भी कोट है, सम्यग दर्शन चरित्र ज्ञान।।१०।।

नभ स्थल कर स्पर्श खडा है, सुमेरु पर्वत प्यारा।
चारो ओर प्रदक्षिण करते सूर्य चन्द्र और ग्रह तारा।।



नारी जागरण [illegible]
[illegible]

सुवर्ण सम है सुन्दर कान्ति, नन्दन वन आदि सोहे।
देवो की तो बात ही क्या, वो स्वय इन्द्र का मन मोहे।।११।।

जिसकी कन्दरा से देवो का, स्वर सगीत बरसता है।
तपे हुए सोने सम जिसका उज्जवल तेज निखरता है।।
सब पर्वत मे श्रेष्ठ सुमेरु, नीची ऊची मेखमाला।
मगल ग्रह के समान है जो, अति उज्जवल कातिवाला।।१२।।

भूमण्डल के बीच सुमेरु, सभी पर्वतो का सरताज।
सूर्य समान अति तेजस्वी, दिव्य काति वाला गिरीराज।।
विविध प्रकार के रत्नो से विचित्र प्रभाये बनती है।
उसकी उज्जवल किरणे तो, दशोदिशा अलोकित करती है।।१३।।

जिस प्रकार जग मे पर्वत का राजा सुमेरु नामी है।
उसी प्रकार त्रिजग मे यशस्वी, भगवन महावीर स्वामी है।।
ज्ञान दर्शन शील गुणधामी, जातिवान सद्गुण की खान।
धर्म मार्ग मे उग्र श्रमी थे, ज्ञात पुत्र महावीर महान।।१४।।

जैसे लम्बे पर्वत मे निषध की महिमा भारी है।
वलयाकार गिरि मे ज्यो रुचक पर्वत श्रेयकारी है।।
इसी प्रकार इस अखिल विश्व के ज्ञाता श्री महावीर प्रभो।
त्यागी ऋषी मुनियो ने बताया, तुमको सबसे श्रेष्ठ विभो।।१५।।

अहिसा धर्म प्रधान दिपाया, जग को देकर सद उपदेश।
सब ध्यानो मे श्रेष्ठ ध्यान, उस शुल्क ध्यान मे लगे जिनेश।।

भगवन के शुक्ल ध्यान की धारा, चदा के सम निर्मल थी।
अर्जुन सुवर्ण शख और वो जल के फेन सम उज्जवल थी।।१६।।

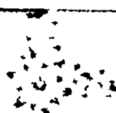
सदा काल के लिए कर्मदल, समूल नष्ट कर जिनराया।
सर्व प्रधान आदि अनन्त वो उत्कृष्ट मोक्ष धाम पाया।।
नही किसी पर किया भरोसा, अपने बल पर बढे थे नाथ।
ज्ञान दर्शन शील के द्वारा, कर्म बन्ध काटे थे तात।।१७।।

वृक्षो मे शाल्मली श्रेष्ठ है जो देवो को प्रिय लगता।
सुवर्णकुमार जाति का जहा, आ भवन पति क्रीडा करता।।
सभी वनो मे नन्दन वन है, श्रेष्ठ सुमेरु पर्वत पर।
ज्ञान शील मे श्रेष्ठ थे ज्यूही महावीर इस भूतल पर।।१८।।

जिस प्रकार शब्दो मे अनुपम, सदा मेघ की गर्जन है।
नभ मे शशि और सुगन्ध मे ज्यो श्रेष्ठ बावना चदन है।।
उसी तरह इह लोक और परलोक वासना को कर नेष्ट।
भूमण्डल के सब मुनियो मे महावीर थे सबसे श्रेष्ठ।।१६।।

स्वयभूरमण प्रधान सदा ही, सभी समुद्रो मे नामी।
नागकुमार जाति के देव का, ज्यो है धरणेन्द्र स्वामी।।
सभी रसो मे है उत्तम ज्यो, सदा ईख का ही रस पान।
उसी तरह तप साधना मे महावीर थे सर्व प्रधान।।२०।।

हाथी मे ऐरावत हाथी, पशुओ मे सिहराज महान।
नदियो मे गगा नदी नामी, पक्षी मे नही गरुड समान।।



उसी तरह इस मोक्ष मार्ग के, सच्चे उपदेशक प्यारे।
ज्ञात पुत्र श्री महावीर ही, प्रमुख नेता थे सारे।।२१।।

योद्धाओ मे वासुदेव, फूलो मे अरविन्द कमल महान।
क्षत्रीय जन मे होते है ज्यो चक्रवर्ती सबसे ही प्रधान।।
उसी तरह ऋषि मुनियो मे भी सबसे उत्तम और महान।
इस जग मे हो गए श्रेष्ठ श्री महावीर प्रभु गुण की खान।।२२।।

सभी तरह के दानो मे है, सदा ही उत्तम अभयदान।
पाप रहित और करुण सत्य की, सब सत्यो मे उत्तम शान।।
तप मे उत्तम ब्रह्मचर्य है, ऐसे ही त्रिलोक प्रधान।
सबसे उत्तम हो गए जग मे, श्रमण भगवन श्री वर्धमान।।२३।।

सर्वार्थसिद्ध के देवो की ज्यो सुखमय आयुष्य मोटी है।
इन्द्रसुधर्मा सभा सामने, और सभाये छोटी है।।
सब धर्मो मे मोक्ष ही उत्तम, वैसे ही इस जग माही।
महावीर है श्रेष्ठ ज्ञान मे, उन सम दूजा को नाही।।२४।।

पृथ्वी पर आधारभूत थे सब जीवो के प्रतिपालक।
आशा तृष्णा रहित प्रभु थे कर्म रिपु के सहारक।।
उपयोग युक्त था ज्ञान, कभी धनधान न सग्रह कीना था।
महा भयकर भवसागर तिर, अभय अमर पद लीना था।।२५।।

क्रोध मान मायादि लोभ रुप, आत्म दोषो का कर सहार।
सर्व श्रेष्ठ श्री महावीर ने अरिहत पद पाया सुखकार।।

पापाचरण नही किया कभी भी, और नही करवाया था।
करने वालो का अनुमोदन, कभी न मन मे भाया था।।२६।।

क्रिया अक्रिया और विनय, अज्ञानवाद भी समझ लिया।
स्वय जानकर फिर जनता मे, सत्य मर्म प्रकाश किया।।
ज्ञान के सग सग सयम के, उत्कृष्ट साधक थे प्रभु वीर।
जीवन भर शुद्ध सयम पाला, दोष रहित क्रिया मे धीर।।२७।।

रात्रि भोजन कभी न करते, नही नारी स्पर्श किया।
जग के दु ख का क्षय करने को, तप मे जीवन लगा दिया।।
लोक और परलोक को जाना, सभी वासनाये छोडी।
महावीर थे कठोर साधक, कर्म शृखलाये तोडी।।२८।।

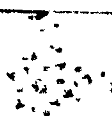
राग द्वेष के महान विजेता, महावीर प्रभु की वाणी।
शब्द अर्थ से शुद्ध है इस पर श्रद्धा रखेगे जो प्राणी।।
कर्म रिपु को जीत सिद्ध या इन्द्र स्वर्ग के सोहेगे।
गुरु सुधर्मा कहे हे जम्बू अन्त अमर वे होवेगे।।२६।।

महावीराष्टक स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

(तर्ज जिसने रागद्वेष कामादिक जीते)

केवल ज्ञान रूपी दर्पण मे, जीव अजीव झलकते है,
व्यय उत्पाद और ध्रोव्य रूप से, तीन काल को लखते है।



सूर्य समान जगत के साक्षी, सत्यमार्ग के प्रकाशवान,
ऐसे श्री महावीर रहे नित, नयन पथ पर विराजमान।।१।।

अचचल है नेत्र कमल, जो सदा लालिमा रहित रहे,
हृदय के समभाव का मानो, जनता को सदेश कहे।
शान्त वीतरागमुद्रा है, सदा शुद्ध और निर्मल जान,
ऐसे श्री महावीर रहे नित, नयन पथ पर विराजमान।।२।।

जिनके चरण कमल मे करते, इन्द्र देव जब नमस्कार,
उनके मुकुट की मणी प्रभा से, होता दिव्य तेज सचार।
सुमिरण से ही होती जग की, भव ज्वाला जलधार समान,
ऐसे श्री महावीर रहे नित, नयन पथ पर विराजमान।।३।।

नदन मेढक जैसे प्राणी, साधारण स्तुति कर,
क्षण भर मे सद्‌गुण उपजाले, स्वर्गो मे जा बने अमर।
मानव मोक्ष धाम पाले फिर, इसमे क्या आश्चर्य सुजान।
ऐसे श्री महावीर रहे नित, नयन पथ पर विराजमान।।४।।

तपे स्वर्ण सम कान्ति जिनकी, पर मोह नही था देह मे,
ज्ञान पुज, विचित्र आत्मा, सिद्धार्थ सुत अजन्मे।
ससार राग से सदा रहित थे, फिर भी कहलाते श्रीमान,
ऐसे श्री महावीर रहे नित, नयन पथ पर विराजमान।।५।।

जिनकी वाणी गगा से, वचनो की तरगे उठती है,
ज्ञान नीर से अखिल विश्व को, शाति दे दु ख हरती है।

विद्वान रूपी हसो द्वारा आज भी जग मे सेवित जान,
ऐसे श्री महावीर रहे नित, नयन पथ पर विराजमान।।६।।

त्रिलोक को जीतने वाला, दुर्जय मदन का वेग चढे,
बडे बडे योद्धा डिग जाते, भर योवन मे तुम भी लडे।
आध्यात्मिक बल लख कर तेरा, कामदेव भागा ले प्राण,
ऐसे श्री महावीर रहे नित, नयन पथ पर विराजमान।।७।।

मोह रोग के लिए वैद्य सम, विश्व बधु जग मे यशकार,
सज्जन जन का भय हर लेते शरण सदा मगल दातार।
जग कल्याणक गुण तो जिनमे, एक से एक बढकर जान,
ऐसे श्री महावीर रहे नित, नयन पथ पर विराजमान।।८।।

आठ श्लोको मे स्तुति, महावीर प्रभु की हितकार,
भाव भरी भरपूर भक्ति से, भागचन्द ने की तैयार।
जो साधक इस स्तुति को, पढे सुने नित ध्यावेगा,
अष्ट कर्म को जीत शीघ्र ही, मोक्ष धाम को पावेगा।।६।।

अथ ग्रहशान्ति छन्द

गुरु देव नमी कहुँ, ग्रह शान्ति सुख कार।
विधिवत जपने से, पावे समाधि सार।।१।।

जन्म स्थाने राशो, पीडे ग्रहो की राश।
जो भक्त जपादि, आराधे तव खास।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूँ ऋषभादि; वर्धमान जिनराज।
शनि आदि विघ्न को, दूर करो महाराज।।३।।

शनि राहू केतू जब, दुष्ट स्थान मे जावे।
मुनि सुव्रत नेमि जपि, बीज वर्ण सुख पावे।।४।।

विमलनाथ मगल मे, गुरु मे पारसनाथ।
सुमति जिन शुक्रे जपो, सोमे चन्द्र प्रभु साथ।।५।।

बुध मे जिन सुविधि जपो, रवि मे अर जिन राज।
अवशेष जिनेशा सभी, रखो तनु मुझ साज।।६।।

भाले भुज वाले, दक्षिण नाभी साथ।
कर अष्ट दल चिते, जपे बीज जिन नाथ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीं हँ हॉ बीज साथ जिन नाम।
त्रिकाल एकान्ते जपे, अष्टोत्तर शत काम।।८।।

रोग शोक दालीदर, कफ आदिक दु ख दूर।
आदि ध्याधि उपाधि, विघ्न हुए चक चूर।।६।।

डाकिनी साकिनी, दुष्ट सर्पणि ग्रहरोग।
जिन जाप से नाशे, पावे वाछित भोग।।१०।।

चक्रेश्वरी आदि देवी, देवे मम सुख साज।
काली महाकाली, सानुकूल जिनराज।।११।।

धन धान्य सपदा, पावे सौख्य रसाल।
जिन ध्यान से ग्रह सुख, गावै घासीलाल।।१२।।

नव ग्रह जिन नामे, पूरे वाछित आश।
अष्ठत्तर अहमदनगर, गुरुवर किया प्रकाश।।१३।।

परिवार-भावना

आदि प्रभु ने दीर्घ दृष्टि से किया व्यवस्थित जग परिवार
आदि मनुज को बडे प्रेम से किये प्रदान थे सुसस्कार।
जीवन पद्धति प्रदान करके, किया मनुज पर था उपकार
उपकारी तीर्थकर प्रभु के, चरणो मे मस्तक भिवार।।१।।
गुरुदेव की आज्ञा लेकर, श्रावक धर्म करे स्वीकार।
विनय–विवेक से हरा–भरा फिर कर देगे अपना परिवार।
हमे हमेशा अनुभवियो की बातो मे आनन्द मिले।
हर कोशिश से सद्‌गुण पाए कला जीवन की सतत् खिले।।२।।
सदा सत्य वचनो से घर मे सम्पादित विश्वास करे।
पूछी बातो का जवाब भी बडे प्रेम से व्यक्त करे।
वचन तुच्छ उच्चारित करके रोष न कभी बढाए हम।
प्रशात भाव से रहे प्रेम से, क्रोध न सर मे चढाए हम।।३।।
भूल यदि हो गई, दण्ड जो मिला, उसे स्वीकार करे।
रोष न रक्खे समझे मुझ पर, घरवाले उपकार करे।
अतर मे जागृत हो करके, अपनी भूल सदा देखे।
अपने घर परिवार के खातिर सारे शूल सहज फेके।।४।।

कपटी वृत्ति मन मे रखकर, क्लेश के बीज न बायेगे।
टेडे रास्तो पर न चलेगे, हृदय तिजोरी जोएगे।
खून के रिश्ते नही तोडेगे, नही अदालत जायेगे।
कभी प्रसग गर आए तो, प्रभु राम–सा बन अपनाएगे।।५।।

घर मार्यादा छोड कभी, पर–स्त्री को स्थान नही देगे।
मन की इच्छा पूरी करने, गलत राह हम नही लेगे।
टेढे रास्ते नही चाहिए, राजमार्ग ही रहे अच्छा।
क्षणिक सुखो मे नही लिपटेगे, कर्म हमारा हो सच्चा।।६।।

आनन्दमय परिवार के खातिर, वर्तन नम्र रखेगे हम।
इन्द्रिय सुख की करे उपेक्षा, मधुर विचार की हो सरगम।
रोगी आलसी रहे नही, इसलिए परिश्रम खूब करे।
कसरत प्राणायाम आदि से जीवन मे आरोग्य भरे।।७।।

कोई किसी को हीन दृष्टि से, घर मे कभी न देखेगा।
समझदारी से बात करेगा, व्यर्थ न कोई छेडेगा।
वस्तु हल्की हो या भारी कोई अकेला ना खाये।
कभी अबोला रहे न घर मे लक्ष्मी आए या जाए।।८।।

मिलकर सारे करे प्रार्थना, प्रतिदिन का हो यह व्यवहार।
नमस्कार उपकारी जनो को रोज करेगे हम इकबार।
सत् साहित्य का थोडा वाचन, थोडी बात अपनेपन की।
बात–बात मे भूल स्वीकारे, यह रीति अच्छे घर की।।६।।

सेवा भाव बढाने को हम, खुद ही सेवा प्रथम करे।
आदर भाव बढाने खातिर, मुख से ऊँचे शब्द झरे।
अपनी सद्वृत्ति की सुई से, टूटे मन हम जोडेगे।
प्रेम सम्बन्ध टिकाने खातिर, चाहे सो कर गुजरेगे।।१०।।

घर को साफ रखेगे हरदम, ये है विश्रान्ति का स्थान।
जीव किटाणु बढ ना पाए, इसी बात पर देगे ध्यान।
आलवन क्यो मजदूरो का, पराधीनता क्यो घर मे।
प्रथम करे फिर बोले, बल भरले अपने ही कर मे।।११।।

घर मे चिन्ता नही चाहिए, झूठी बढाई के खातिर।
ऋण लेकर जलसा न करेगे, व्यर्थ प्रसशा के खातिर।
पैसो के बल खेल कदापि, घर मे हम नही खेलेगे।
जल्दी सोना जल्दी उठना, यही नियम हम सब लेगे।।१२।।

गाली गलौच घर मे करना, अच्छे घर की रीत नही।
ऊँचे स्वर से धमकाना है, भलाई के विपरीत यही।
गरजमद कोई घर आवे, निराश करना ठीक नही।
देकर मैत्री टिकायेगे है ऊँचे घर की लीक यही।।१३।।

कर्तबगारी क्या है ये घर वालो को सिखलायेगे।
क्या करना क्या छोडना ये भी हम समझायेगे।
भूल यदि कर दे कोई तो शासन भी आवश्यक है।
भूल न हो फिर से घर मे इसलिए ये परमावश्यक है।।१४।।

दु खी करना घरवालो को, घर को नरक बनाना है।
एक दूसरे को सुख देना, घर मे स्वर्ग बुलाना है।
आपस मे अनुकूलता यह तो लक्षण मानव जीवन का।
सिर्फ देखते ही रहना यह लक्षण है पशुता का।।१५।।

घर मे हो गर दु खी कोई, हम भी दु खी होवेगे।
मधुर–मधुर व्यवहार से, अपने घर को सुखी बनावेगे।
घर मे शान्ति रहे सदा, ऐसा ही वर्तन रखेगे।
हर प्रसग मे साथ रहेगे, कभी न चुप्पी साधेगे।।१६।।

घर के विविध व्यक्ति की बाते, बाहर कभी न बोलेगे।
बाहर की बातो को लेकर घर मे, जहर न घोलेगे।
चाहे जितना सहन करेगे, किन्तु भेद न खोलेगे।
रहते खाते जहा पर है, वही पर कुर्बानी देगे।।१७।।

चक्र गृहस्थी का ये अपना, सुन्दर गति से फिरायेगे।
केन्द्र स्थान मे 'तप सयम की, मजबूती को लायेगे।
पुण्य की परिधि सब मिलकर के निर्मल मन से चढायेगे।
आरी है प्रत्येक, व्यक्ति, निश्चय चक्र से चलायेगे।।१८।।

सम्यक् ज्ञान की गहराई को, सबके मन मे भर देगे।
सशय वृत्ति की दीवारे, दृढ विश्वास से ढा देगे।
रहे परस्पर अनुकूल, ऐसी रहे भूमिका हम सबकी।
दर्शन, ज्ञान चरित्र रत्नमयी, होगी शान अपने घर की।।१९।।

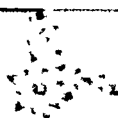
अध श्रद्धा नही चाहिए, नही चमत्कारो की धूम।
देव देवी देते है सुख, इस भ्रम का नही लगने दे धून
भयभीतो को भूत सताते, भय घातक है जीवन मे।
आधि व्याधि उपाधि का डर नही घूस पाए अन्तर मे।।२०।।

भूमि पूजन वास्तु शान्ति को लेगे जिन आज्ञा आधार।
विवाह या मृत्यु प्रसग मे जैन धर्ममय हो व्यवहार।
कचन काम के त्यागी जो है, वे गुरु हमको है स्वीकार।
कथनी करनी एक रखे वे गुरु ले जाये भव के पार।।२१।।

अभक्ष खाने पीने पर जिस घर मे बन्धन नही रहता।
टॉनिक पाव बटर इत्यादि बियर व्हिस्की सब कुछ चलता।
ऐसे घर के लोगो को सात्विक बुद्धि आ नही सकती।
तुच्छ भावना बढती जाती, जग जाती स्वार्थी वृत्ति।।२२।।

आहार सात्विक विचार सात्विक सात्विकताका हो परिधान।
हिसक दोषी महगी चीजो से तो अच्छा घर का धान।
अशुद्ध चीजे घर मे आती, होती घर की शान्ति भग।
सात्विकता का ले आलबन घर की शान्ति रखे अभग।।२३।।

उपकारी लोगो का अन्तिम समय सुधारे हिम्मत से।
व्रत प्रत्याखानादि देकर भाव बढाए मेहनत से।
सथारा देगे आसक्ति के बन्धन छुडवायेगे।
सागारी सथारा प्रतिदिन हम भी लेते जायेगे।।२४।।



सदा सर्वदा सुख की वृद्धि हो इस घर के प्रागण मे।
मगल काम विचार भी मगल, मगल बरसे ऑगन मे।
पाच परम इष्टो की श्रद्धा, आनन्दमय जीवन का स्रोत।
हे अरिहत प्रभु हम पाए, इकदिन केवल ज्ञान की ज्योत।।२५।।

श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र

(हिन्दी काव्य)

(तर्ज जिसने राग द्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया)

कल्याण धाम त्रिभुवन सुनाम महान उदार है श्रेकारी।
जग पीडा से पीडित आते, पाते अभय जहा ससारी।।
भव सिधु मे फसे जीव, को जहाज सम सुखकन्दन है।
उन्ही श्री जिनराज चरण को भाव युक्त यह वन्दन है।।१।।
कमठ के मान विदारण को जो धूमकेतू बन आये थे।
अपार गुण गरिमा के सागर, पार नही कोई पाये थे।।
सुरगुरु भी रह जाते अपूर्ण, फिर भी साहस ठाता हूँ।
आश्चर्य, उन पार्श्व प्रभु की, मै स्तुति गाता हूँ।।२।।
अनत ज्ञान के सूर्य आपके, स्वरूप का साधारण ही।
मै मिथ्या अधकारी जीव तो, कर न सकू कुछ वर्णन ही।
दिन का अधा उल्लू पुत्र, जिसने न कभी सूरज देखा।
वो क्या खाक बना सकता है, सूर्य रूप की कुछ रेखा।।३।।

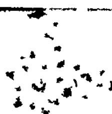
मोह कर्म को जीत केवली, तेरे गुण लख तो जाता।
पर वो उनका पूर्ण रूप से, वर्णन तो नही कर पाता।।
प्रलयकाल मे पानी बिन, सागर की रत्न राशि दिखती।
पर न कभी कर सकता है, कोई उन रत्नो की गिनती।।४।।

उज्जवल गुण की खान आप हो, मै जड बुद्धि का धारी।
पर भक्ति वश करी है मैने, स्तुति की तैयारी।।
विशाल सागर की सीमा, बालक हाथो से बतलाता।
अपनी बुद्धि अनुसार क्या, वो वर्णन नही कर पाता।।५।।

बिना विचारे बिना शक्ति के, यह स्तुति कर रहा हूँ।
बडे बडे योगी असमर्थ, मै तो साहस धर रहा हूँ।।
मनुष्य की भाषा मे पक्षी यद्यपि बोल नही पाता।
पर अपनी अव्यक्त भाषा मे, उसका काम चल ही जाता।।६।।

हे नाथ आपकी स्तुति का, महत्व तो है अति भारी।
यहा तो केवल नाम ही तेरा, है त्रिभुवन जन दुखहारी।।
गर्मी से व्याकुल प्राणी को कमल सागर तो सुख देता।
उसकी ठण्डी हवा का झोका, पहले ही व्यथा हर लेता।।७।।

प्रभो आप ध्यानस्थ भक्त के, हृदय विराजित हो जाते।
तो उसके कर्मो के बन्धन, तत्क्षण ढीले पड जाते।।
चन्दन वृक्ष की ओर ज्यो ही, वन मयूर आते दिखते है।
उस पर लिपटे सर्प भयकर, शीघ्र भागने लगते है।।८।।



हे जिनेन्द्र जो भक्त आपके केवल दर्शन को पाता।
एक नही हजारो भयकर, कष्टो से वह बच जाता।।
सूर्य किरण, पृथ्वीपति या, गोस्वामी को जब लख लेता।
धन पशुजन सब छोड शीघ्र ही, चोर वहा से चल देता।।६।।

भव जीवो को भव सिधु से, तारक आप कैसे बनते।
अपने हृदय मे धारण कर, हम उल्टा तुम्हे पार करते।।
पर अब समझा नाथ पानी मे खाली मशक नही तिरती।
पवन ही है आधार तिरण मे, पवन भरे पर तिर सकती।।१०।।

हरि हरादि देव पराजित, हो गए कामदेव आगे।
आश्चर्य वो तेरे सन्मुख, क्षण भर मे ही दूर भागे।।
जैसे अग्नि काडो को, जो जग जल शात ही करता है।
वो जल भी नष्ट होता जब, सागर बडवानल जलता है।।११।।

हे अनन्तान्नत गरिमा वाले, तुमको हृदय मे धारण कर।
फिर भी भक्त हल्के ही रहते, झट तिर जाते भवसागर।।
महापुरुषो का स्वभाव ही, सदैव अचिन्त्य सा रहता।
रहस्यपूर्ण होते है काम और असम्भव सम्भव बनता।।१२।।

बिना रोष के कोई कैसे, टिक सकता शत्रु आगे।
क्रोध आपने जीत लिया, फिर कैसे कर्म रिपु भागे।।
पर जब देखा हिम पाले से, हरा सघन वन जल जाता।
क्रोध से शक्ति तेज क्षमा की, बर्फ आग से है ज्यादा।।१३।।

कर्म मैल से रहित प्रभो, योगी जन तुमको ध्याते है।
हृदय कमल कर्णिका मे, वे तेरा ध्यान लगाते है।।
जैसे कमल का कमलग टूटा तो, कमल मे ही मिल पाता है।
वैसे भक्त इस हृदय कमल मे, तेरी खोज लगाता है।।१४।।

विशुद्ध हृदय से ध्यान आपका, जो भव्य प्राणी करते है।
इस शरीर को छोड शीघ्र वे, शुद्ध परमात्मा बनते है।।
जिस प्रकार अग्नि का तेज, पाषाण रूप हर लेता है।
स्वर्णधातु को शीघ्र ही वो फिर, शुद्ध स्वर्ण कर देता है।।१५।।

शरीर के मध्य भाग हृदय मे, भक्त ध्यान तेरा धरते।
आश्चर्य हे प्रभो आप, उस शरीर को ही नष्ट करते।।
पर जब देखा महापुरुष, जिस कार्य मे मध्यस्थ पडते है।
उसके सारे कलह भाव को, पूर्णतया नष्ट करते है।।१६।।

अध्यात्म चेतना वाले मनीषी पुरुष ध्यान तेरा धरते।
साधारण सी आत्मा को भी, वह परमात्मा कर लेते।।
जिस प्रकार पानी का यदि, अभेद बुद्धि से करते पान।
विषय विकार हो दूर वही जल, हो जाता अमृत समान।।१७।।

अखिल विश्व मे देव आप ही, और देव नही कोई दूजा।
हरि हरादि रूप मे करते, अन्य मति तेरी ही पूजा।।
जिस प्रकार कोई मनुष्य को, रोग पिलिया हो जाता
स्वच्छ श्वेत वर्ण शख को भी, वह पीला ही लख

धर्मोपदेश सत्सग से तेरे, वृक्ष अशोक हो जाते नाथ।
मानव शोक रहित हो जावे इसमे आश्चर्य की क्या बात।।
सूर्योदय के होने पर, केवल मानव ही नही जगता।
समस्त जीव विकसित हो जाते, स्वय कमल भी खिल उठता।।१६।।

समवशरण मे प्रभो ! देव सब ओर पुष्प बरसा करते।
आश्चर्य सब डठल नीचे सारे ऊर्ध्व मुखी पडते।।
पंर अब समझा हे मुनीश ! सुमन शरण तेरी आते।
उनके बधन नीचे खिसकते ऊपर कभी न उठ पाते।।२०।।

गम्भीर हृदय सागर से उत्पन्न, वाणी की मधुरी झनकार।
उचित ही उपमा दी ज्ञानी ने, उसे बताई अमृत धार।।
जिस प्रकार अमृत से मानव, अजर अमर हो जाता है।
तेरे वचनामृत से प्राणी, शीघ्र मोक्ष पद पाता है।।२१।।

देवो द्वारा प्रभो आप पर, श्वेत–चवर जब ढुलते है।
नीचे से ऊपर जाते, एक रहस्य सूचना देते है।।
जो भी भक्त विनम्र भाव से, ऐसे ही नमस्कार करते।
ऊर्ध्व गति की ओर ही जाते नीच गति मे नही पडते।।२२।।

रत्न जडित सिहासन पर, जब धर्म देशना देते हो।
श्याम वर्ण वाले हे नाथ, तुम मन मयूरसा हरते हो।।
जब सुवर्ण सुमेरु शिखर पर, श्याम घटा आकर छाती।
उमड घुमड कर उसकी गर्जना, मयूर का मन हरषाती।।२३।।

तेरे शरीर के किरणो की, जब निल प्रभा उभर आती।
अशोक वृक्ष के लाल पत्तो की, रक्त छवि सब मिट जाती।।
श्रवण, ध्यान तो दूर आपके, केवल पास जो आ जाता।
वो सचेतन प्राणी निश्चय, वीतराग पद को पाता।।२४।।

देव दुन्दुभी नभ मे जब, चऊ ओर गर्जन करती है।
तीन लोक के जीवो मे बस यही प्रेरणा भरती है।।
शिवपुर की यात्रा के यात्री, शीघ्र उपस्थित हो जाओ।
मोक्षपुरी के सार्थवाह, श्री पार्श्वप्रभु के सग आओ।।२५।।

तेरे शीश पर तीन छत्र, जिनमे मोती की झालर है।
त्रिभक्ति से तारागण सग, मानो चद्रमा हाजिर है।।
क्योकि तेरे दिव्य ज्ञान ने तीन जगत मे किया प्रकाश।
क्या गिनती अब वहा चद्र की, आया दौडा तुम्हारे पास।।२६।।

समवशरण मे आप विराजित, होते हो जब हे सिरमोर।
माणिक्य, सुवर्ण और रजत मे, तीन कोट होते चऊ ओर।।
तेरा यश, प्रताप, काति, त्रिजग मे होने के बाद।
और जगह नहीं मिली तो, मानो यहा आकर हो गये आबाद।।२७।।

स्वर्गपति जब इन्द्र आपको, करते स्वामी नमस्कार।
उनकी दिव्य पुष्प मालाये, चरणो मे जाती बलिहार।।
रत्नजडित मुकटो को छोड, वो क्यो चरणो मे गिरती है।
पर अब समझा सुमन मन को वहीं तो शाति मिलती है।।२८।।

माना कि हे नाथ आप, ससार विमुक्त कहाते है।
फिर भी अपने अनुयायी भक्तो को पार लगाते है।।
जल मे अधोमुखी रहकर, मिट्टी का घडा तिराता ही है।
विपाकयुक्त वो आप मुक्त हो, यह गुण और भी ज्यादा ही है।।२६।।

हे जिनेन्द्र इस अखिल विश्व मे, यद्यपि आप ही ईश्वर है।
फिर भी ससारी जीवो का, तुमको पाना दुश्कर है।।
नित्य स्वभाव से युक्त अलिपि, कर्म लेप से रहित प्रभो।
अज्ञ प्राणियो के सरक्षक, पर है केवल ज्ञान विभो।।३०।।

दुष्ट कमठ ने क्रोधित होकर, धूल आप पर बरसाई।
भीषण रूप से जो उड उडकर, सारे नभ स्थल मे छाई।।
पर तू तो क्या तेरी छाया, मलिन तक नही हो पाई।
उसी धूल से ग्रस्त हो गई, वो दुरात्मा दु ख दायी।।३१।।

दूजी बार फिर उसी मेघ ने, जल वर्षा की अति भारी।
बादल गरजे बिजली चमकी, मूसलधारा भयकारी।।
जिसे तैरना था मुश्किल, वो तेरा कुछ न सकी बिगार।
कर्म भार दे मार कमठ के लिए, बनी वो दुष्ट तलवार।।३२।।

उसी दुष्ट कमठासुर ने, तुमको पथ भ्रष्ट बनाने को।
अत्यन्त निर्दयी पिशाच के दल, भेजे तुम्हे सताने को।।
बिखेर केश भयानक सुरत, नर मुण्डमाल उगलते आग।
तेरा तो कुछ कर न सके, पर बढी कमठ के भव दु ख लाग।।३३।।

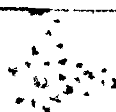
हे त्रिभुवन ! के नाथ जगत मे, वे ही जन धन्यवादी है।
जिनके अग का रोम रोम, तेरी भक्ति का आदि है।।
उल्लसित और प्रफुलित होकर चरण कमल मे चित धरते।
वे जन धन त्रिकाल जो तेरी भाव सहित पूजा करते।।३४।।

इस अपार सागर मे घूमते, अनन्त काल हो गया मुझे।
पर मालूम होता है मैने, कभी न देखा सुना तुझे।।
यदि आपके नाम का जो, पवित्र मन्त्र मै सुन पाता।
विपत्ति रूपी काला नाग, फिर मेरे पास नही आता।।३५।।

यद्यपि आपके चरण कमल है, अभिष्ट फलदायक भगवान।
निश्चय रूप से समझ गया मै, जन्मातर मे किया न ध्यान।।
इसीलिए तो इस भव मे मै, सदा तिरस्कृत बन जाता।
तेरा चरण पुजारी हो वो, कभी अनादर नही पाता।।३६।।

मेरी आख पर मिथ्या मोह का, गहरा अधेरा छाया था।
इसीलिए तो एक बार भी, तेरे दर्श नही पाया था।।
यदि दर्श कर लेता तो, यह अनर्थ क्यो पीडित करते।
भक्त और अनर्थ के तो, मेल परस्पर नही मिलते।।३७।।

हे जन जन के नाथ आपका, नाम सुना उपासना की।
दर्श किए सब बाहिर दृष्टि से, हृदय से नही साधना की।।
प्रभो दर्श के बाद दु ख क्यो फिर भी दु ख उठाता हूँ।
भाव रहित क्रिया होने से सफल नही हो पाता हूँ।।३८।।



दुखित जीवो के प्रतिवत्सल हो, शरणागत के हो प्रतिपाल।
तुम करुणा के पवित्र धाम हो, और पुरुषोत्तम दीनदयाल।।
भक्ति भाव से नम्र हुये, मुझ सेवक पर किरपा करिए।
शीघ्र ही तत्परता दिखला, इस दु ख जड को दूर ही हरिये।।३६।।

तेरे चरण है अतुल बलि, दुखी जन की रक्षा करते है।
शरणागत को देते शरण और कर्म शत्रु को हरते है।।
ऐसे मगलमय चरणो का, अवलम्बन पाया प्यारा।
किन्तु ध्यान से शून्य अभागा, रहा दीन दु ख का मारा।।४०।।

स्वर्गपति इन्द्रो के पूज्यनीय और वदनीय हो हे तात।
सभी पदार्थ के हो ज्ञाता, भव सिधु से तारक नाथ।।
त्रिजग के आधार दयामय, मुझ पर दया तो लावो ही।
घोर कष्टो के सागर से, रक्षा कर पवित्र बनाओ ही।।४१।।

निम्न श्रेणी का भक्त हू, मै, मेरी भक्ति मे है क्या असर।
फिर भी भव भव सचित भक्ति का, फल कुछ मिले अगर।।
हे शरणागत नाथ शरण तेरी है, भव भव मै पाऊ।
आप ही स्वामी बने हमेशा, और नही कुछ भी चाऊ।।४२।।

हे देव अटल श्रद्धा के द्वारा स्थिर बुद्धि वाले जन।
प्रेमभाव से सघन रूप मे, उल्लसित हुये हो जिनके मन।।
तेरे मुख कमलो की ओर, अपलक लक्ष्य रखते ज्ञानी।
विधि सहित स्तुति करते, और गुण गाते जो प्राणी।।४३।।

भक्त जनो के नेत्र कमल को, विकसित करने वाले देव।
निर्मल विमलचन्द्र सम स्वामी, जो जन करे तुम्हारी सेव।।
वो यहा तो रमणीय स्वर्ग सुख, सदा भोगता जाता है।
अत कर्म दल 'जीत' शीघ्र ही, मोक्ष धाम को पाता है।।४४।।

रत्नाकर पच्चीसी

शुभ केली के आनन्द के धन के मनोहर धाम हो
नरनाथ से सुरनाथ से पूजित चरण गत काम हो
सर्वज्ञ हो सर्वोच्च हो सबसे सदा ससार मे
प्रज्ञा कला के सिन्धु हो आदर्श हो आचार मे।।१।।
ससार दुख के वैद्य हो त्रैलोक्य के आधार हो
जय श्रीश । रत्नाकर प्रभो । अनुपम कृपा अवतार हो
हे वितराग । विज्ञप्ति मेरी मुग्ध की सुन लीजिए
क्योकि प्रभो । तुम विज्ञ हो मुझको अभय वर दीजिए।।२।।
माता पिता के सामने बोली सुनाकर तोतली,
करता नही क्या अज्ञ बालक बाल्य–वश लीलावली?
अपने हृदय के हाल को त्यो ही यथोचित रीति से,
मै कह रहा हू, आपके आगे विनय से प्रीति से।।३।।
मैने नही जग मे कभी कुछ दान दीनो को दिया,
मै सच्चरित भी हू नही, मैने नही तप भी किया।
शुभ भावना मेरी हुई, अब तक न इस ससार मे,
मे घूमता हू, व्यर्थ ही भ्रम से भवोदधि–धार मे।।४।।



क्रोधाग्नि मे रात–दिन हा, जल रहा हू हे प्रभो !
मै लोभ नामक साप से काटा गया हू हे विभो !
अभिमान के खल ग्राह से अज्ञानवश मे ग्रस्त हू
किस भॉति हो स्मृत आप, माया–जाल से मै व्यस्त हूँ।।५।।

लोकेश ! पर–हित भी किया मैने न दोनो लोक मे,
सुख–लेश भी फिर क्यो मुझे हो, झीकता हूँ शोक मे।
जग मे हमारे से नरो का जन्म ही बस व्यर्थ है,
मानो जिनेश्वर ! वह भवो की पूर्णता के अर्थ है।।६।।

प्रभु ! आपने निज मुख सुधा का दान यद्यपि दे दिया,
यह ठीक है, पर चित्त ने उसका न कुछ भी फल लिया।
आनन्द–रस मे डूबकर सद्वृत वह होता नही,
है वज्र सा मेरा हृदय, कारण बडा बस है यही।।७।।

रत्नत्रयी दुष्प्राप्य, है प्रभु से उसे मैने लिया,
बहु काल तक बहु बार जब जग का भ्रमण मैने किया।
हा खो गया वह भी विवश मै नीद आलस के रहा,
बतलाइये उसके लिए रोऊँ प्रभो किसके यहॉ ?।।८।।

ससार ठगने के लिए वैराग्य को धारण किया,
जग को रिझाने के लिए उपदेश धर्मो का दिया।
झगडा मचाने के लिए मम जीभ पर विद्या बसी,
निर्लज्ज हो कितनी उडाऊँ हे प्रभो ! अपनी हॅसी।।९।।

परदोष को कह कर सदा मेरा बदन दूषित हुआ,
लख कर पराई नारियो को हा नयन दूषित हुआ।
मन भी मलिन है सोचकर पर की बुराई हे प्रभो !
किस भॉति होगी लोक मे मेरी भलाई हे प्रभो !।।१०।।

मैने बढाई निज विवशता हो अवस्था के वशी,
भक्षक रतीश्वर से हुई उत्पन्न जो दु ख राक्षसी।
हा ! आपके सम्मुख उसे अति लाज से प्रकटित किया,
सर्वज्ञ ! हो सब जानते स्वयमेव ससृति की क्रिया।।११।।

अन्यान्य मन्त्रो से परम परमेष्ठि–मत्र हटा दिया,
सच्छास्त्र–वाक्यो को कुशास्त्रो से दबा मैने दिया।
विधि–उदय को करने वृथा, मैने कुदेवाश्रय लिया,
हे नाथ, यो भ्रमवश अहित मैने नही क्या–क्या किया?।।१२।।

हा ! तज दिया मैने प्रभो ! प्रत्यक्ष पाकर आपको,
अज्ञान वश मैने किया फिर देखिये किस पाप को।
वामाक्षियो के कुछ कटाक्षो पर सदा मरता रहा,
उनके विलासो का हृदय मे ध्यान मै धरता रहा।।१३।।

लख कर चपल–दृग–युवतियो के मुख मनोहर रसमयी
जो मन–पटल पर राग भावो की मलिनता बस गयी,
वह शास्त्र–निधि के शुद्ध जल से भी न क्यो धोई गई?
बतलाइए यह आप ही मम बुद्धि तो खोई गई।।१४।।



मुझमे न अपने अग के सौन्दर्य का आभास है,
मुझमे न गुणगण है विमल मुझमे न कला विलास है।
प्रभुता न मुझमे स्वप्न को भी चमकती है, देखिये,
तो भी भरा हू गर्व से मै मूढ हो किसके लिए ?।।१५।।

हा ! नित्य घटती आयु है पर पाप–मति घटती नही,
आई बुढौती पर विषय से कामना हटती नही।
मै यत्न करता हू, दवा मै धर्म मै करता नही।
दुर्मोह–महिमा से ग्रसित हू नाथ ! बच सकता नही।।१६।।

अघ–पुण्यको, भव–आत्म को मैने कभी माना नही,
हॉ आप आगे है खडे दीनानाथ से यद्यपि यही।
तो भी खलो के वाक्य को मैने सुना कानो वृथा,
धिक्कार मुझको है, गया मम जन्म ही मानो वृथा।।१७।।

सत्पात्र–पूजन देव पूजन कुछ नही मैने किया,
मुनिधर्म श्रावकधर्म का भी, नही सविधि पालन किया।
नर–जन्म पाकर भी वृथा ही मै उसे खेता रहा,
मानो अकेला घोर वन मे व्यर्थ ही रोता रहा।।१८।।

प्रत्यक्ष सुखकर जिन मत से प्रीति मेरी थी नही।
जिननाथ ! मेरी देखिये है मूढता भारी यही।
हा ! कामघुक कल्पद्रुमादिक के यहा रहते हुए,
मैने गॅवाया जन्म को धिक्कार दुख सहते हुए।।१९।।

मैने न रोका रोग–दुख सभोग–सुख देखा किया,
मन मे न माना मृत्यु–भय–धन–लाभ ही लेखा किया।
हा ! मै अधम पुद्गल सुखो का ध्यान नित करता रहा,
पर नरक–कारागार से मन मे न मै डरता रहा।।२०।।

सद्वृत्ति से मन मे न मैने साधुता हा ! साधिता,
उपकार करके कीर्ति भी मैने न की कुछ अर्जिता।
चउ तीर्थ के उद्धार आदिक कार्य कर पाया नही,
नर–जन्म पारस तुल्य निज मैने गॅवाया व्यर्थ ही।।२१।।

शास्त्रोक्त विधि वैराग्य भी करना मुझे आता नही।
खल–वाक्य भी गतक्रोध हो सहना मुझे आता नही
अध्यात्म–विद्या है न मुझमे है न कोई सत्कला,
फिर देव ! कैसे यह भवोदधि पार होवेगा भला?।।२२।।

सत्कर्म पहले जन्म मे मैने किया कोई नही,
आशा नही जन्मान्य मे उसको करूगा मै कही।
इस भाति का यदि हू जिनेश्वर क्यो न मुझको कष्ट हो?
ससार मे फिर जन्म तीनो क्यो न मेरे नष्ट हो?।।२३।।

हे पूज्य ! अपने चरित को बहुभॉति गाऊँ क्या वृथा,
कुछ भी नही तुमसे छिपी है पापमय मेरी कथा।
क्योकि त्रिजग के रूप हो तुम, ईश हो, सर्वज्ञ हो,
प्रथ के प्रदर्शक हो, तुम्ही मम चित्त के मर्मज्ञ हो।।२४।।



दीनोद्धारक धीर आप सा अन्य नही है,
कृपा–पात्र भी नाथ ! न मुझसा अपर कही है।
तो भी माँगू नही धान्य धन कभी भूल कर
अर्हन् ! केवल बोधिरत्न होवे मगलकर।।२५।

श्री रत्नाकर गुणगान यह
दुरित दुख सबके हर।
बस एक यही है प्रार्थना
मगलमय सबको करे।।



○ श्री वीतरागाय नम ○

श्री लालाजी रणजीत सिंह जी कृत

श्री बृहदालोयणा

दोहा

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगजन[1] अरिहत।
इष्टदेव वदू सदा, भयभजन भगवत।।१।।
अरिहत सिद्ध समरू सदा, आचारज उवझाय।
साधु सकल के चरण कू, वदू शीश नमाय।।२।।
शासन नायक समरिये, भगवन्त वीर जिनन्द।
अलिय[2] विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द।।३।।
अगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार।
श्री गुरु गौतम समरिये, वाछित फल दातार।।४।।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध।
ज्यो घन[3] बरसत बेलि तरु, फूल फलन की वृद्ध।।५।।
पच परमेष्ठी देव को, भजनपूर पहिचान।
कर्म अरि भाजे सभी, होवे परम कल्याण।।६।।
श्री जिन युगपद कमल मे, मुझ मन भ्रमर बसाय।
कब ऊगे वो दिन करू, श्रीमुख दर्शन पाय।।७।।

१ कर्मरूपी शत्रु का नाश करने वाले, २ मिथ्या, ३ मेघ।



प्रमणी पदपकज[1] भणी, अरिगजन अरिहन्त।
कथन करू अब जीव का, किंचित् मुझ विरतत।।८।।
आरम्भ विषय कषाय वश, भमियो काल अनत।
लख चौरासी योनि से, अब तारो भगवन्त।।६।।
देव गुरु धर्म सूत्र मे, नव तत्वादिक जोय।
अधिका ओछा जे कह्या, पिच्छा दुक्कड मोय।।१०।।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, भरियो रोग अथाग।
वैद्यराज गुरु शरण से, औषध ज्ञान वैराग।।११।।
जै मै जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
प्रभो तुम्हारी साख से, बारम्बार धिक्कार।।१२।
बुरा–बुरा सबको कहू, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधू आपणो, तो मोसू[2] बुरा ना कोय।।१३।।
कहवा मे आवे नही, अवगुण भरया अनन्त।
लिखवा मे क्योकर लिखू, जानो श्री भगवन्त।।१४।।
करुणानिधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, करजो ग्रथि भेद[3]।।१५।।
पतित उधारण नाथजी, अपनो विरद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खमिये बारम्बार।।१६।।
माफ करो सब माहरा, आज तलक रा दोष।
दीन दयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील सन्तोष।।१७।।

---

१ चरण रूपी कमल, २ मेरे से, ३ कर्मो की गाठ को तोडना।

आत्म निन्दा शुद्ध भणी, गुणवन्त वदन भाव।
राग द्वेष पतला करी, सबसे खमत खमाव।।१८।।
छूटू पिछला पाप से, नवा न बाधू कोय।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय।।१६।।
परिग्रह ममता तजि करी, पच महाव्रत धार।
अन्त समय आलोयणा, करू सथारो सार।।२०।।
तीन मनोरथ[1] ए कह्या जो ध्यावे[2] नित्य मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिवसुख धन्न।।२१।।
अरिहन्त देव निर्ग्रन्थ गुरु, सवर निर्जरा धर्म।
केवलिभाषित शासतर, यही जैनमत धर्म।।२२।।
आरभ विषय कषाय तज, शुद्ध समकित व्रत धार।
जिन आज्ञा परमाण कर, निश्चय खेवो पार।।२३।।
खिण[3] निकमो रहणो नही, करणो आतम काम।
भणणो गुणणो सीखणो, रमणो ज्ञान आराम [4]।।२४।।
अरिहन्त सिद्ध सब साधुजी, जिन आज्ञा धर्मसार।
मगलीक उत्तम सदा, निश्चय शरणा चार।।२५।।
घडी–घडी पल पल सदा, प्रभु सुमरण को चाव।
नरभव सफलो जो करे, दान शील तप भाव।।२६।।

---

१ मन की अभिलाषा, २ चिन्तन करना, ३ क्षण–थोडी देर भी, ४ बगीचा।



सिद्धा जैसो जीव है, जीव कोई सिद्ध होय।
कर्म मैल का आतरा, बूझे[1] विरला कोय।।१।।
कर्म पुद्गल रूप है, जीव रूप है ज्ञान।
दो मिलकर बहुरूप है, बिछड्या[2] पद निरवाण।।२।।
जीव कर्म भिन्न–भिन्न करो, मनुष्य जन्म को पाय।
ज्ञानातम वैराग्य से, धीरज ध्यान जगाय।।३।।
द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असख्य प्रमाण।
काल थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन ज्ञान।।४।।
गर्भित[3] पुद्गल पिण्ड मे, अलख[4] अमूरति[5] देव।
फिरे सहज भव चक्र मे, यह अनादि की टेव[6]।।५।।
फूल अतर घी दूध मे, तिल मे तेल छिपाय।
यू चेतन जड करम सग, बध्यो ममत दु ख पाय।।६।।
जो जो पुद्गल की दशा, ते निज माने हस[7]।
या ही भरम विभाव से, बढे करम को वश।।७।।
रतन बध्यो गठडी विषे, सूर्य छिप्यो घन माय।
सिह पिजरा मे दिया, जोर चले कुछ नाय।।८।।
ज्यो बन्दर मदिरा पिया, बिच्छू डकित गात।
भूत लग्यो कौतुक करे, त्यो कर्मो का उत्पात।।६।।

---

१ समझे, २ अलग होना, ३ मिला हुआ, ४ दिखाई न देने वाल
५ आकार रहित, ६ आदत, ७ आत्मा।

कर्म सग जीव बूढ है, पावे नाना रूप।
कर्म रूप मल के टले, चेतन सिद्ध सरूप।।१०।।
शुद्ध चेतन उज्जवस दरब, रह्यो कर्म मल छाय।
तप सयम से धोवता, ज्ञान ज्योति बढ जाय।।११।।
ज्ञान थकी जाने सकल, दर्शन श्रद्धा रूप।
चारित्र से आवत रुके, तपस्या क्षपण[१] सरूप।।१२।।
कर्म रूप मल[२] के शुधे, चेतन चॉदी रूप।
निर्मल ज्योति प्रकट भया, केवल ज्ञान अनूप[३]।।१३।।
मूसी[४] पावक[५] सोहगी[६], फूका तणो उपाय।
राम चरण चारू मिल्या, मैल कनक[७] को जाय।।१४।।
कर्म रूप बादल मिटे, प्रगटे चेतन चद।
ज्ञानरूप गुण चादनी, निर्मल ज्योति अमन्द[८]।।१५।।
रागद्वेष दो बीज से, कर्म बध की व्याध[९]।
ज्ञानातम वैराग्य से, पावे मुक्ति समाध।।१६।।
अवसर बीत्यो जात है, अपने वश कछु होत।
पुण्य छता पुण्य होत है, दीपक दीपक ज्योत।।१७।।
कल्पवृक्ष चिन्तामणि, इस भव मे सुखकार।
ज्ञान वृद्धि इनसे अधिक, भव दुख भजनहार।।१८।।

१ क्षप करना, २ मैल, ३ उपमा रहित, ४ मूसी–मूस सोना चांदी गलाने के बर्तन, ५ पावक–अग्नि, ६ सोहगी–सोना चादी साफ करने का खार, ७ कनक–सोना, ८ उत्कृष्ट ९ पीडा।



राई मात्र घट बध नही, देख्या केवल ज्ञान।
यह निश्चय कर जानके, तजिये परथम[1] ध्यान।।१६।।
दूजा[2] कभी न चितिये, कर्मबध बहु दोष।
तीजा[3] चौथा[4] ध्याय के, करिये मन सतोष।।२०।।
गई वस्तु सोचे नही, आगम वाछा नाय।
वर्तमान वर्ते सदा, सो ज्ञानी जग माय।।२१।
अहो समदृष्टि जीवडा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अन्तर्गत न्यारो रहे, ज्यो धाय खिलावे बाल।।२२।।
सुख दु ख दोनू वसत है, ज्ञानी के घट माय।
गिरि[5] सर[6] दीसे मुकुर[7] मे, भार भीजवो नाय।।२३।।
जो जो पुद्गल फरसना, निश्चय फरसे सोय।
ममता–समता भाव से, करम बध खय होय।।२४।।
बाध्या सोई भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव।
फल निर्जरा होत है, यह समाधि चित चाव।।२५।।
बाध्या बिन भुगते नही, बिन भुगत्या न छुडाय।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय।।२६।।
पथ्य[8] कुपथ्य[9] घट बध करी, रोग हानि वृद्ध थाय।
यूं पुण्य पाप किरिया करी, सुख दु ख जग मे पाय।।२७।।

---

१ आर्त्तध्यान, २ रौद्रध्यान, ३ धर्मध्यान, ४ शुक्लध्यान, ५ पर्वत, ६ तालाब
७ दर्पण–काच, ८ पथ्य–गुणकारी, ६ कुपथ्य–अवगुण करने वाला।

सुख दिया सुख होत है, दुख दिया दुख होय।
आप हणे नही अवर कू, तो आपकू हणे न कोय।।२८।।
ज्ञान गरीबी गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष।
इनकू कभी न छाडिये, श्रद्धा शील सतोष।।२९।।
सत मत छोडो हो नरा, लक्ष्मी चौगुनी होय।
सुख दु.ख रेखा कर्म की, टाली टले न कोय।।३०।।
गोधन गजधन रत्न धन, कचन खान सुखान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूल समान।।३१।।
शील रतन मोटो रतन, सब रतना की खान।
तीन लोक की सपदा, रही शील मे आन।।३२।।
शीले सर्प न आभडे[1], शीले शीतल आग।
शीले अरि[2] करि [3], केसरी [4], भय जावे सब भाग।।३३।।
शील रतन के पारखी, मीठा बोले बैन[5]।
सब जग से ऊचा रहे, जो नीचा राखे नैन[6]।।३४।।
तन कर मन कर वचन कर, देता न काहु दुख।
कर्म रोग पातक[7] झडे, देखत वा का मुख।।३५।।
पान खिरतो इम कहे, सुन तरूवर[8] वनराय।
अब के बिछडे कब मिले, दूर पडेगे जाय।।१।।

१ डसे २ शत्रु, ३ हाथी, ४ सिह, ५ वचन ६ नयन–आख, ७ पाप, ८ वृक्ष।



तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो पत्र इक बात।
इस घर एही रीत है, इक आवत इक जावत।।२।।
बरस दिनो की गॉठ को, उच्छव [१] गाय बजाव।
मूरख नर समझे नही, बरस गाठ को जाय।।३।।
सोरठा–पवन तणो विश्वास, किण कारण ते दृढ कियो।
इनकी एही रीत, आवे के आवे नही।।४।।
दोहा–करज बिराना काढ के, खर्च किया बहु दाम।
जब मुद्दत पूरी हुवे, देणा पडसी दाम।।५।।
बिन दियॉ छूटे नही, यह निश्चय कर मान।
हस–हस के क्यो खरचिये, दाम बिराना जान।।६।।
जीव हिसा करता थका, लागे मिष्ट अज्ञान।
ज्ञानी इम जाने सही, विष मिलियो पकवान।।७।।
काम भोग प्यारा लगे, फल किपाक समान।
मीठी खाज खुजावता, पीछे दुख की खान।।८।।
जप तप सजम दोहलो, औषध कडवी जाण।
सुख कारण पीछे घणो, निश्चय पद निरवाण।।९।।
डाभ अणी [२] जल बिन्दुवो, सुख विपयन को चाव।
भवसागर दुख जल भर्यो, यह ससार स्वभाव।।१०।।
चढ उत्तग [३] जहा से पतन, शिखर नही वो कूप [४]।

१ उत्सव, २ कुश के अग्रभाग पर, ३ ऊचा, ४ कुआ।

जिस सुख अन्दर दु ख बसे, सो सुख भी दु ख रूप।।११।।
जब लग जिसके पुण्य का, पहुचे नही करार[1]।
तब लग उसको माफ है, अवगुण करे हजार।।१२।।
पुण्य क्षीण जब होत है, उदय होत है पाप।
दाझे [2] वन की लाकडी, प्रजले आपो आप।।१३।।
पाप छिपाया ना छिपे, छिपे तो मोटा भाग।
दाबी दूबी ना रहे, रूई लपेटी आग।।१४।।
बहु बीती थोडी रही, अब तो सुरत सभार।
परभव निश्चय जावणो, वृथा जन्म मत हार।।१५।।
चार कोस गामान्तरे, खरची बाधे लार।
परभव निश्चय जावणो, करिये धर्म विचार।।१६।।
रज विरज ऊची गई, नरमाई के ताण[3]।
पत्थर ठोकर खात है, करडाई के ताण।।१७।।
अवगुण उर धरिये नही, जो हुवे बिरख[4] बबूल।
गुण लीजे कालू कहे, नही छाया मे शूल।।१८।।
जैसी जापे वस्तु है, वैसी दे दिखलाय।
वाका बुरा न मानिये, वो लेन [5] कहा से जाय।।१६।।
गुरु कारीगर सारिखा, टॉची वचन विचार।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार।।२०।।

१ करार–मियाद, मर्यादा, २ जलना, ३ कारण, ४ वृक्ष, ५ लेने के लिए।



सतन की सेवा किया, प्रभु रीझत[1] है आप।
जाका बाल खिलाइये, ताका रीझत बाप।।२१।।
भवसागर ससार मे, दीपा श्री जिनराज।
उद्यम करी पहुचे तीरे, बैठी धर्म जहाज।।२२।।
निज आतम कू दमन कर, पर आतम कूं चीन।
परमातम को भजन कर, सोई मत परवीन।।२३।।
समझू शके पाप से, अण–समझू हरषत।
वे लूखा वे चीकणा, इण विध कर्म बधत।।२४।।
समझ सार ससार मे, समझू टाले दोष।
समझ–समझ कर जीव ही, गया अनता मोक्ष।।२५।।
उपशम विषय कषाय नो, सवर तीनू योग।
किरिया जतन विवेक से, मिटे कुकर्म दु ख रोग।।२६।।
रोग मिटे समता बधे, समकित व्रत आराध।
निर्वैरी सब जीव का, पावे मुक्ति समाध।।२७।।



सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगजन अरिहन्त।
इष्टदेव वन्दू सदा, भयभजन भगवन्त।।१।।
अनन्त चौबीसी जिन नमू, सिद्ध अनन्ता कोड।
वर्तमान जिनवर सभी, केवली प्रत्येक कोड।।२।।

१ खुश होना।

गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार।
यथायोग्य वदन करू, जिन आज्ञा अनुसार।।३।।
प्रथम एक नवकार गुणनो।।
णमो अरिहताण। णमो सिद्धाण। णमो आयरियाण।
णमो उवज्झायाण। णमो लोए सव्वसाहूण।
एसो पच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मगल।



पच परमेष्ठी देव को, भजन पूर पहिचान।
कर्म अरि भाजे सभी, शिवसुख मगल थान।।४।।
अरिहन्त सिद्ध समरू सदा, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरण कू, वदू शीश नमाय।।५।।
शासन नायक समरिये, वर्धमान जिनचन्द।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द।।६।।
अगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार।
श्री गुरु गौतम समरिये, वाछित फल दातार।।७।।
श्री जिन युग पद–कमल मे, मुझ मन अलिय[1] बसाय।
कब ऊगे वो दिन करू, श्री मुख दर्शन पाय।।८।।

---

१ अलिय–भ्रमर।



प्रणमी पद–पकज भणी, अरिगजन अरिहन्त।
कथन करू अब जीव का, किचित मुझ विरतत।।६।।
हू अपराधी अनादि को, जन्म–जन्म गुना किया भरपूर के।
लूटिया प्राण छ काय ना, सेविया पाप अठार करूर के।
श्री मुनि सुव्रत साहिबा।।१।।

आज दिन तक इस भव मे और पहले सख्यात असख्यात अनन्त भवो मे कुगुरु, कुदेव और कुधर्म की सद्दहणा प्ररूपणा फरसना सेवानादि सबधी पाप दोष लगा हो उनका मिच्छामि दुक्कड। मैने अज्ञानपन से, मिथ्यात्वपन से, कषायपन से अशुभयोग से, प्रमाद करके, अपछदा अविनीतपना किया, श्री अरिहन्त भगवत वीतराग देव, केवलज्ञानी, गणधर देव, आचार्य जी महाराज, धर्माचार्य जी महाराज, उपाध्याय जी महाराज, साधु जी महाराज, आर्या जी महाराज, तथा सम्यग्दृष्टि, स्वधर्मी श्रावक और श्राविका इन उत्तम पुरुषो की तथा शास्त्र, सूत्रपाठ, अर्थ, परमार्थ ओर धर्म राम्बन्धी समस्त पदार्थो की अविनय, अभक्ति, आशातना आदि की, कराई, अनुमोदी, मन, वचन काया से द्रव्य, क्षेत्र काल, भाव से सम्यक प्रकार विनय भक्ति आराधना पालना फरसना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रम से नही की, नही कराई, नही अनुमोदी तो मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब मुझे माफ करो, मै मन, वचन, काया करके खमाता हू।

दोहा– मै अपराधी गुरुदेव को, तीन भवन को चोर

ठगू विराना माल मै, हा हा कर्म कठोर।।१।।

कामी कपटी लालची, अपच्छदा अविनीत।

अविवेकी क्रोधी कठिन, महापापी* रणजीत।।२।।

जे मै जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।

नाथ तुम्हारी साख से, बारम्बार धिक्कार।।३।।

मैंने छकायपन से छकाय की विराधना की–पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय–सन्नी, असन्नी, गर्भज चौदह प्रकार के सम्मूर्छिम आदि त्रस स्थावर जीवो की विराधना मन, वचन, काया से की, कराई, अनुमोदी, उठते बैठते सोते हालते चालते शस्त्र वस्त्र मकानादि उपकरण उठाते, धरते, लेते, देते, वर्तते वर्तावते, अण्पडिलेहणा दुप्पडिलेहणा सम्बन्धी अप्रमार्जना दुष्प्रमार्जना सबधी, न्यूनाधिक विपरीत पडिलेहणा सबधी ओर आदि विहार आदि अनेक प्रकार के कर्त्तव्यो मे सख्यात, असख्यात और निगोद आसरी अनन्त जीवो के जितने प्राण लूटे उन सब जीवो का मैं अपराधी हू, निश्चय करके बदले का देनदार हू, सब जीव मेरे प्रति माफ करो, मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो।

---

* पढने (बाचने) वाले यहा अपना नाम बोले।



देवसी, राई, पक्खी, चौमासी और सम्वत्सरी सबधी बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड, बारम्बार मै खमाता हू। तुम सब क्षमा करो।

गाथा— खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वैर मज्झ न केणइ।।1।।

वह दिन धन्य होगा जिस दिन छ काय के वैर बदले से निवृत्त होऊगा, समस्त चौरासी लाख जीव योनि को अभयदान देऊगा, वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा।

दोहा— सुख दिया सुख होत है, दु ख दिया दु ख होय।
आप हणे नही अवरकू आपकू हणे न कोय।।1।।

दूजा पाप मृषावाद—झूठ बोलना। क्रोध के वश, मान के वश, माया के वश, मृषा (झूठ) वचन बोला, निदा विकथा की, कर्कश कठोर मर्म वचन बोला इत्यादि अनेक प्रकार से मृषा बोला बोलवाया और अनुमोदा, उनका मन वचन काया से मिच्छा मि दुक्कड।

दोहा— थापनमोसा मै किया, करी विश्वासघात।
परनारी धन चोरिया, प्रकट कह्यो नही जात।।1।।

मुझे धिक्कार—धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। वह दिन धन्य होवेगा जिस दिन सर्व प्रकार से मृषावाद का त्याग करूगा, वह दिन मेरा परम कल्याण स्वरूप होगा।

तीसरा पाप— अदत्तादान— बिना दी हुई वस्तु चोरी करके लेना। यह बडी चोरी लौकिक विरुद्ध, अल्प चोरी मकान सबधी अनेक प्रकार के कर्त्तव्यो मे उपयोग सहित या विना उपयोग से

अदत्तादान–मन वचन काया से चोरी की, कराई अनुमोदी तथा धर्म–सम्बन्धी ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप श्री भगवन्त गुरुदेव की बिना आज्ञा किया, उसका मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन सर्व प्रकार से अदत्तादान का त्याग करूगा। वह दिन मेरा परम कल्याण का होवेगा।।३।।

चौथा पाप मैथुन–मैथुन सेवन करने के लिए मन वचन और काया के योग प्रवर्ताये, नवबाड सहित ब्रह्मचर्य नही पाला, नवबाड मे अशुद्धपन से प्रवृत्ति हुई, मैने मैथुन सेवन किया, दूसरो से कराया और सेवन करने वालो का अच्छा समझा, उसका मन वचन काया से मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन मै नवबाड सहित ब्रह्मचर्य–शीलरत्न आराधूगा यानी सर्वथा प्रकार से काम विकार से निवर्तूगा। वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा।।४।।

पाचवा– परिग्रह– सचित्त परिग्रह तो दास, दासी, द्विपद, चतुष्पद (पशु) आदि अनेक प्रकार के और अचित्त परिग्रह–सोना, चादी, वस्त्र आभूषण आदि नव प्रकार के है उनकी ममता मूर्छा की, क्षेत्र घर आदि नव प्रकार के बाह्य परिग्रह और चौदह प्रकार के अभ्यन्तर परिग्रह को रखा, रखवाया और अनुमोदा तथा रात्रि भोजन, अभक्ष्य आहारादि सम्बन्धी पाप दोष सेव्या हो वह मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। वह दिन मेरा धन्य होवेगा



जिस दिन सब प्रकार के परिग्रह का त्याग कर ससार से निवर्तूंगा, वह दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा।।५।।

छठा– क्रोध–क्रोध करके अपनी आत्मा को तथा पर आत्मा को दु खी किया।।६।। सातवा मान–अहकार भाव लाया तीन गारव और आठ मद आदि किया।।७।। आठवॉ मायाधर्म सम्बन्धी तथा ससार सम्बन्धी अनेक कर्त्तव्यो मे कपट किया।।८।। नववॉ लोभ–मूर्छा भाव लाया, आशा तृष्णा वाछा आदि की।।९।। दसवॉ राग–मन पसन्द वस्तु से स्नेह किया। ।।१०।। ग्यारहवॉ द्वेष–नापसद वस्तु देखकर उस पर द्वेष किया।।११।। बारहवॉ कलह–अप्रशस्त (खराब) वचन बोलकर क्लेश उत्पन्न किया।।१२।। तेरहवॉ अभ्याख्यान–झूठा कलक किया।।१३।। चौदहवॉ पैशुन्य–दूसरे की चुगली की।।१४।। पन्द्रहवॉ पर परिवाद–दूसरे का अवगुण वाद (अवर्णवाद) बोला।।१५।। सोलहवा रति अरति– पाच इन्द्रियो के २३ विषय और २४० विकार है, इनमे मनपसन्द पर राग किया और नापसन्द पर द्वेष किया तथा सयम तप आदि पर अरति (अरुचि) की तथा आरम्भादिक असयम और प्रमाद मे रति भाव किया।।१६।। सत्रहवॉ माया मृषावाद–कपट सहित झूठ बोला।।१७।। अठारहवॉ मिथ्या दर्शनशल्य–श्री जिनेश्वर देव के मार्ग मे शका काक्षा आदि विपरीत प्ररूपणा की।।१८।।*

* यहा अठारह पाप स्थानो की आलोयणा विशेष विस्तारपूर्वक अपनी इच्छानुसार कहनी चाहिए।

इस प्रकार अठारह पाप स्थान द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से जानते, अजानते मन, वचन और काया से सेवन किया, कराया, और अनुमोदा, दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ या सुत्ते वा जागरमाणे वा, इस भव मे, परभव मे, पहिले के सख्यात, असख्यात, अनन्त भवो मे भवभ्रमण करते आज दिन* तक राग–द्वेष, विषय, कषाय, आलस, प्रमाद आदि पौद्‌गलिक प्रपच, परगुण पर्याय की विकल्प भूल की, ज्ञान की विराधना की, चारित्राचारित्र की व तप की विराधना की, शुद्ध श्रद्धा, शील, सतोष, क्षमा आदि निज स्वरूप की विराधना की उपशम, विवेक, सवर, सामायिक पौषध, प्रतिक्रमण, ध्यान, मौन आदि व्रत पच्चक्खाण, दान, शील, तप वगैरह की विराधना की, परम कल्याणकारी इन बोलो की आराधना पालनादि मन वचन और काया से नही की, नही कराई और नही अनुमोदी। छह आवश्यक सम्यक् प्रकार विधि उपयोग सहित आराधा नहीं, फरसा नही, विधि उपयोग रहित निरादरपने से किया, किन्तु आदर सत्कार भाव भक्तिसहित नही किया। ज्ञान के चोदह, समकित से पाच, बारह व्रतो के साठ, कर्मादान के पन्द्रह, सलेखणा के पाच इन निन्नाणवे अतिचारो मे तथा १२४ अनाचारो मे तथा साधुजी के १२५ अतिचारो मे तथा ५२ अनाचारो का श्रद्धानादिक मे विराधना आदि जो कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार आदि सेवन किया,

* यहा बोलने वाले वर्तमान मे जो सवत्, महीना और तिथि हो वह कहे।



सेवन कराया, अनुमोदा, जानते अजानते मन, वचन, काया से उनका मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड।

मैने जीव को अजीव श्रद्धह्या परूप्या, अजीव को जीव श्रद्धया, परूप्या, धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म श्रद्धह्या परूप्या तथा साधु को असाधु व असाधु को साधु श्रद्धया परूप्या तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज महासतियाजी की सेवा भक्ति मान्यता आदि यथाविधि नही की, नही कराई, नही अनुमोदी तथा असाधुओ की सेवा भक्ति मान्यता आदि का पक्ष किया, मुक्तिमार्ग मे ससार का मार्ग यावत् पचीस मिथ्यात्व मे किसी मिथ्यात्व का सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा मन, वचन, काया से, पचीस कषाय सम्बन्धी, पचीस क्रिया सम्बन्धी तेतीस आशातना सम्बन्धी ध्यान के १६ दोष, वदना के ३२ दोष, सामायिक के ३२ दोष, पोषध के १८ दोष सम्बन्धी मन वचन और काया से जो कोई पाप दोष लगा, लगाया, अनुमोदा उसका मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। महामोहनीय कर्मबध के तीस स्थानक को मन वचन ओर काया से सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा, शील की नववाड तथा आठ प्रवचन माता की विराधनादि, श्रावक के २१ गुण ओर बारह व्रत की विराधनादि मन वचन और काया से की, कराई, अनुमोदी तथा तीन अशुभ लेश्या के लक्षणो की, बोलो की सेवना की व तीन शुभ लेश्या के लक्षणो की और बोलो की विराधना की, चर्चा वार्त्ता वगैरह मे श्री जिनेश्वर देव का मार्ग लोपा, गोपा, नही माना, अछते को स्थापना

की, छते की स्थापना नही की और अछते का निषेध नहीं किया, छते की स्थापना और अछते का करने का नियम नही किया, कलुषता की, तथा छह प्रकार के ज्ञानावरणीय बन्ध के बोल, ऐसे ही छह प्रकार के दर्शनवरणीय बन्ध के बोल, आठ कर्म की अशुभ प्रकृति के बोल, सत्तावन कारणो से पाप की बयासी प्रकृति बाधी, बधाई अनुमोदी, मन वचन काया करके उनका मुझे धिक्कार–धिक्कार वारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। एक–एक बोल से लगाकर कोडा कोडी यावत् सख्याता असख्याता अनता–अनत बोलो से जानने योग्य बोलो को सम्यक् प्रकार जाना नही, श्रद्दह्या नही, प्ररूप्या नही, तथा विपरीतपने से श्रद्धा आदि की, कराई अनुमोदी, मन वचन काया से, उनका मुझे धिक्कार–धिक्कार बरम्बार मिच्छा मि दुक्कड।

एक–एक बोल से यावत् अनन्ता बोलो मे छोडने योग्य बोल को छोडा नही, उनको मन वचन काया से सेवन किया, सेवन कराया और अनुमोदा उनका मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। एक–एक बोल से लगाकर जाव अनन्ता अनन्त बोलो मे आदरने योग्य बोलो को आदरा नही आराधा नहीं, पाला नही, फरसा नही, विराधना, खडना आदि की, कराई, अनुमोदी, मन वचन काया से उनका मुझे धिक्कार–धिक्कार वारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। श्री जिन भगवन्त जी महाराज आपकी आज्ञा मे जो–जो प्रमाद किया और सम्यक् प्रकार उद्यम नहीं किया नही कराया, नहीं अनुमोदा मन वचन काया करके तथा अनाज्ञा मे उद्यम किया, कराया, अनुमोदा,

एक अक्षर के अनन्तवे भाग मात्र दूसरा कोई स्वप्न मात्र मे भी श्री भगवन्त महाराज आपकी आज्ञा से न्यूनाधिक विपरीत प्रवृत्ति की हो तो उसका मुझे धिक्कार--धिक्कार बारम्बार मिच्छामि दुक्कड।

दोहा

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा, करी फरसना सोय।
अनजाने पक्षपात मे, मिच्छा दुक्कड मोय।।१।।
सूत्र अर्थ जानू नही, अल्प बुद्धि अनजान।
जिनभाषित सब शास्त्र का, अर्थ पाठ परमाण।।२।।
देव गुरु धर्म सूत्र कूं, नव तत्त्वादिक जोय।
अधिक ओछा जे कह्या, मिच्छा दुक्कड मोय।।३।।
हू मगसेलियो * ही रह्यो, नही ज्ञान रस भीज।
गुरु सेवा न करी सकू, किम मुझ कारज सीझ।।४।।
जाने देखे जे सुने, देवे सेवे मोय।
अपराधी उन सबन का, बदला देसूं सोय।।५।।
गबन करू बुगचा रतन, द्रव्य भाव सब कोय।
लोकन मे प्रगट करू, सूई पाई मोय।।६।।
जैन धर्म शुद्ध पाय के, बरते विषय कपाय।
यह अचम्भा हो रह्या, जल मे लागी लाय।।७।।

---

* मगसेलिया एक प्रकार का पत्थर होता है जो पानी से कभी नहीं भीजता है।

जितनी वस्तु जगत मे, नीच–नीच मे नीच।
सब से मै पापी बुरो, फसू मोह के बीच।।८।।
एक कनक अरु कामिनी, दो मोटी तलवार।
उठ्यो थो जिन भजन कू, बिच मे लियो मार।।९।।

सवैया

मै महापापी छाड के ससार, छार–छार ही का विहार करू, अगला कछु धोय कीच, फेर कीच बीच रहू, विषय सुख चाहू मन प्रभुता बधारी है। करत फकीरी ऐसी, अमीरी की आस करू, काहेकूॅ धिक्कार सिर पगडी उतारी है।।१०।।

दोहा

त्याग न कर सग्रह करू, विषय वमन जिम आहार।
तुलसी ए मुझ पतित कू, बारम्बार धिक्कार।।११।।
राग द्वेष दो बीज है, कर्म बन्ध फल देत।
इनकी फासी मे बध्यो, छूटू नही अचेत।।१२।।
रतन बध्यो गठडी विषे, भण छिप्यो घन माय।
सिह पिजरा मे दियो, जोर चले कछु नाय।।१३।।
बुरा–बुरा सबको कहू, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधू आपणो, तो मोसूॅ बुरो न कोय।।१४।।
कामी कपटी लालची, कठिन लोह को दाम।
तुम पारस परसग थी, सुवर्ण थासू स्वाम।।१५।।

श्लोक

मै जपहीन हू, तपहीन हू, प्रभु हीन सवर समगत।
दे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणागत।
प्रभु आयो तुम शरणागत।।१६।।

दोहा

नही विद्या नही वचन बल, नही धीरज गुण ज्ञान।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान्।।१७।।
विषय कषाय अनादि को, भरियो रोग अगाध।
वैद्यराज गुरु शरण से, पाऊ चित्त समाध।।१८।।
कहवा मे आवे नही, अवगुण भर्या अनन्त।
लिखवा मे क्योकर लिखू, जाणो श्री भगवन्त।।१९।।
आठ कर्म प्रबल करी, भमियो जीव अनादि।
आठ कर्म छेदन करी, पावे मुक्ति समाधि।।२०।।
पथ कुपथ कारण करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
इम पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुख जग मे पाय।।२१।।
बाध्या बिन भुगते नही, बिन भुगत्या न छुटाय।
आप ही करता भोगता, आपे दूर कराय।।२२।।
सुसाया* सा१ अविवेक हू, आख मीच अधियार।
मकडी जाल बिछायके, फसू आप धिक्कार।।२३।।

* सुसाया–सुसलिया–खरगोश, १ सा–सरीखा–समान

सर्व भक्षी जिम अग्नि हू, तपियो विषय कषाय।
अपच्छन्दा अविनीत मै, धर्मी ठग दुख दाय।।२४।।
कहा भयो घर छाड के, तजियो न माया सग।
नाग तजी जिम कॉचली, विष नही तजियो अग।।२५।।
आलस विषय कषाय वश, आरम्भ परिग्रह काज।
योनि चौरासी लख भम्यो, अब तारो महाराज।।२६।।
आतम निदा शुद्ध भणी, गुणवन्त वदन भाव।
राग द्वेष उपशम करी, सबसे खमत खमाव।।२७।।
पुत्र कुपुत्र जो मै हुआ, अवगुण भरह्या अनन्त।
मायत[1] विरद[2] विचार के, माफ करो भगवत।।२८।।
शासनपति वर्धमान जी, तुम लग मेरी दौड।
जैसे समुद्र जहाज बिन, सूझत ओर न ठौड।।२६।।
भव भ्रमण ससार दुख ताका वार न पार।
निर्लोभी सतगुरु बिना, कौन उतारे पार।।३०।।
भव सागर ससार मे, दीपा श्री जिनराज।
उद्यम करि पहुचे तीरे, बैठी धर्म जहाज।।३१।।
पतित उद्धरन नाथजी, अपनो विरद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खमिये बारम्बार।।३२।।
माफ करो सब माहरा, आज तलक रा दोष।
दीन दयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील सन्तोष।।३३।।

१ मायत–माता–पिता २ विरद–पद।

देव अरिहन्त निर्ग्रन्थ गुरु, सवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र है, यही जैनमत धर्म।।३४।।
इस अपार ससार मे, शरण नही अरु कोय।
या ते तुम पद कमल ही, भक्त सहायी होय।।३५।।
छूटू पिछला पाप से, नवा न बाधू कोय।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय।।३६।।
आरभ परिग्रह तजी करी, समकित व्रत आराध।
अन्त अवसर आलपेय के, अनशन चित्त समाध।।३७।।
तीन मनोरथ ए कह्या, जे ध्यावे नित्यस मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न।।३८।।

श्री पच परमेष्ठी भगवत गुरुदेव महाराज जी आपकी आज्ञा है। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, सयम, सवर, निर्जरा ओर मुक्ति मार्ग यथाशक्ति से शुद्ध उपयोग सहित आराधने फरसने सेवने की आज्ञा है। बारम्बार शुभयोग सम्बन्धी, सज्झाय, ध्यानादिक अभिग्रह, नियम, पचक्खाण आदि करने की समिति गुप्ति प्रमुख आराधने की सर्व प्रकार आज्ञा है।

दोहा

निश्चय चित्त शुद्ध मुख पढत, तीन योग थिर थाय।
दुर्लभ दीसे कायरा, हलुकर्मी चित भाय।।१।।
अक्षर पद हीणो अधिक, भूल चूक कही होय।
अरिहत सिद्ध आत्म साख से, मिच्छा दुक्कड मोय।।२।।

भूल चूक मिच्छा मि दुक्कड।

श्री नमस्कार-सूत्र

णमो अरिहताण

णमो सिद्धाण

णमो आयरियाण

णमो उवज्झायाण

णमो लोए सव्वसाहूण।

एसो पच नमोक्कारो,

सव्व – पाव – प्पणासणो ।

मगलाण च सव्वेसि,

पढमं हवइ मगल ।।

-भगवतीसूत्र

श्री मंगलसूत्र

चत्तारि मगल

अरिहता मगल

सिद्धा मगल

साहू मगल

केवलि--पण्णत्तो धम्मो मगल ।

चत्तारि लोगुत्तमा

अरिहता लोगुत्तमा

सिद्धा लोगुत्तमा

साहू लोगुत्तमा

केवलि--पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।

चत्तारि सरण पवज्जामि

अरिहते सरण पवज्जामि

सिद्धे सरण पवज्जामि

साहू सरण पवज्जामि

केवलि--पण्णत्त धम्म सरण पवज्जामि ।

-आवश्यकसूत्र

श्री चतुर्विंशति-स्तव सूत्र

(लोगस्स)

लोगस्स उज्जोयगरे,
धम्म – तित्थयरे जिणे।
अरिहते कित्तइस्स,
चउवीस – पि केवली ।।१।।

उसभमजिय च वदे,
सभवमभिणदण च सुमइ च।
पउमप्पह सुपास,
जिण च चदप्पह वदे ।।२।।

सुविहि च पुप्फदत,
सीअल–सिज्जस–वासुपुज्ज च।
विमलमणत च जिण,
धम्म सति च वदामि ।।३।।

कुथु अर च मल्लि,
वदे मुणिसुव्वय नमिजिण च।

वदामि रिट्ठनेमि,
पास तह वद्धमाण च।।४।।

एव मए अभित्थुआ,
विहुय – रयमलापहीणजरमरणा।
चउवीस पि जिणवरा,
तित्थयरा मे पसीयतु ।।५।।

कित्तिय – वदिय – महिया,
जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग – बोहि – लाभ,
समाहिवरमुत्तम दितु।।६।।

चदेसु निम्मलयरा
आइच्चेसु अहिय पयासयरा।
सागर – वर – गभीरा,
सिद्धा सिद्धि मम दिसतु।।७।।

-आवश्यकसूत्र

सिद्ध-अर्हन्त-वन्दना

चत्तारि अट्ठ दस दो अ, वदिया जिणवरा चउवीस,
परमट्ठनिट्ठियट्ठा सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ।।१।।

जे य अइया सिद्धा, जे य भविस्सतिऽणागए काले।
सपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ।।२।।

सिद्धाण बुद्धाण पारगयाण परपरगयाण।
लोगग्गमुवगयाण नमो सया सव्वसिद्धाण ।।३।।

जो देवाण वि देवो, ज देवा पजली नमसति।
त देवदेवमहिअ सिरसा वदे महावीर ।।४।।

इक्को वि नमुक्कारो जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स।
ससारसायराओ तारेइ नर वा नारीं वा ।।५।।

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइखडे अ जबूदीवे अ।
भरहेरवयविदेहे धम्माइयरे नमसामि ।।६।।

उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाण निसीहिया जस्स।
त धम्मचक्कवट्टि अरिट्ठनेमि नमसामि ।।७।।

जय वीयराय! जगगुरु! होउ मम तुह पभावओ भयव।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ।।८।।

लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआ परत्थकरण।
सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखडा ।।६।।

तमतिमिरविद्धसणस्स सुरगणनरिदमहिअस्स।
सीमाहरस्स वदे पप्फोडिअ – मोहजालस्स ।।१०।।

सिद्धाण नमो किच्चा, सजयाण च भावओ।
अत्थधम्मगइ तच्च अणुसट्ठि सुणेह मे ।।११।।

मंगल पाठ

(श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी)

अरहत नमोक्कारो, जीव मोयइ भवसहस्साओ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहि–लाभाए ।।१।।

अरहत नमोक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो।
मगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मगल ।।२।।

सिद्धाण नमोक्कारो, जीव मोयइ भवसहस्साओ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहि–लाभाए ।।३।।

सिद्धाण नमोक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो।
मगलाण च सव्वेसि, बीय हवइ मगल ।।४।।

आयरिय–नमोक्कारो, जीव मोयइ भवसहस्साओ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहि–लाभाए ।।५।।

आयरिय–नमोक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो।
मगलाण च सव्वेसि, तइय हवइ मगल ।।६।।

उवज्झाय–नमोक्कारो, जीव मोयइ भवसहस्साओ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहि–लाभाए ।।७।।

उवज्झाय–नमोक्कारो, सव्व–पाव– प्पणासणो।
मगलाण च सव्वेसि, चउत्थ हवइ मगल ।।८।।

साहूण नमोक्कारो, जीव मोयइ भवसहस्साओ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहि–लाभाए ।।९।।

साहूण नमोक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो।
मगलाण च सव्वेसि, पचम हवइ मगल ।।१०।।

एसो पच–नमोक्कारो, जीव मोयइ भवसहस्साओ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहि–लाभाए ।।११।।

एसो पच–नमोक्कारो सव्व–पाव–प्पणासणो।
मगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मगल ।।१२।।

-आवश्यकनिर्युक्ति



श्री नान्दी मंगल-सूत्र

जयइ जगजीव–जोणी–
विंयाणओ, जग –गुरु जगाणदो ।
जग–नाहो जग–बधू,
जयइ जगप्पियामहो भयव ।।१।।

जयइ सुयाण पभवो,
तित्थयराण अपच्छिमो जयइ।
जयइ गुरु लोगाण
जयइ महप्पा महावीरो ।।२।।

भद्द सव्व–जगुज्जोयगस्स,
भद्द जिणस्स वीरस्स।
भद्द सुरासुर नमसियस्स,
भद्द धुय – रयस्स ।।३।।

गुणभवण–गहण सुयरयण–भरिय,
दसण – विसुद्ध– रत्थागा।
सघनगर ! भद्द ते,
अखड– चारित्त – पागारा ।।४।।

सजम–तव–तुम्बा रयस्स,
-नमो सम्मत्त–पारियल्लस्स।

अप्पडिचक्कस्स जओ,
होउ सया सघ – चक्कस्स ।।५।।

भद्द सीलपडागूसियस्स,
तव–नियम–तुरय–जुत्तस्स।
सघरहस्स भगवओ,
सज्झाय – सुनन्दि – घोसस्स ।।६।।

कम्मरय–जलोह–विणिग्गयस्स,
सुयरयण – दीहनालस्स।
पच– महव्वय– थिर कण्णियस्स,
गुण – केसरालस्स ।।७।।

सावगजण महुयर–परिवुडस्स,
जिण–सूर–तेय–बुद्धस्स।
सघ– पउमस्स भद्द,
समण – गण – सहस्सपत्तस्स ।।८।।

तव – सजम – मयलछण ।
अकिरिय–राहु–मुहदुद्धरिस निच्च।
जय सघ–चद । निम्मल
सम्मत्त–विसुद्ध–जोण्हागा ।९।।

परतित्थिय–गहपह नासगस्स,
तव – तेय – दित्तलेसस्स ।



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासर
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

नाणुज्जोयस्स जए,
भद्द दमसघ – सूरस्स ।।१०।।

भद्द धिइवेलापरिगयस्स,
सज्झाय – जोग – मगरस्स।
अक्खोहस्स भगवओ,
सघ–समुद्दस्स रुदस्स ।।११।।

गुणरयणुज्जलकडय,
सीलसुगधि–तवमडि उद्देस्स।
सुय–बारसग–सिहर,
सघ – महामदर वन्दे ।।१२।।

निव्वुइपह–सासणय,
जयइ सया सव्वभाव देसणय।
कुसमय–मय–नासणय,
जिणिद वर–वीर–सासणय ।।१३।।

-नन्दीसूत्र

महामंगल

अरहता मज्झ मगल, अरहता मज्झ देवया।
अरहते कित्तइत्ताण, वोसिरामि त्ति पावग ।।१।।

सिद्धा य मज्झ मगल, सिद्धा य मज्झ देवया।
सिद्धेय कित्तइत्ताण, वोसिरामि त्ति पावग ।।२।।

आयरिया मज्झ मगल, आयरिया मज्झ देवया।
आयरिए कित्तइत्ताण, वोसिरामि त्ति पावग ।।३।।

उवज्झाया मज्झ मगल, उवज्झाया मज्झ देवया।
उवज्झाए कित्तइत्ताण, वोसिरामि त्ति पावग ।।४।।

साहू य मज्झ मगल, साहू य मज्झ देवया।
साहू य कित्तइत्ताण, वोसिरामि त्ति पावग ।।५।।

एए पच मज्झ मगल, एए पच मज्झ देवया।
एए पच कित्तइत्ताण, वोसिरामि त्ति पावग ।।६।।

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्ग - हरं पासं पासं
वंदामि कम्म - घण मुक्कं
विसहर विस निन्नासं
मंगल - कल्लाण - आवासं।।१।।

जिनशासन पर होने वाले उपसर्गो को दूर करने वाला पार्श्व नामक देव जिनका चरण–सेवक है, जो कर्म रूपी सघन बादलो से मुक्त होकर प्रकाशमान है, जिनके नाम–स्मरण मात्र से सर्प का भयकर विष सहसा नष्ट हो जाता है और जो मगल तथा कल्याण के निवास स्थान है, उन भगवान् पार्श्वनाथ स्वामी के चरणो मे वदना करता हूँ।



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयास
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

विसहर - फुलिंग - मंतं
कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह - रोग मारी
दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ।।२।।

सर्प के विष को उतारने के लिए भगवान पार्श्वनाथ का पवित्र नाम ही उत्कृष्ट मत्र है, अत जो मनुष्य इस नाममत्र को सदा अपने कठ मे धारण करता है, उसके दुष्ट ग्रह, भीष्ण रोग, काल ज्वर आदि सबके सब उपद्रव पूर्ण रूप से शान्त हो जाते है।

चिट्ठउ दूरे मंतो
तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नर-तिरिएसु वि जीवा
पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ।।३।।

हे प्रभो! आपके नाम--मन्त्र का जप तो बहुत बडी चीज है, यहॉ तो केवल आपको भाक्तिपूर्वक किया हुआ नमस्कार ही अमित फल देने वाला है। जो आपका भक्त है, वह कभी भी मनुष्य, तिर्यच आदि गतियो मे दु ख और दुर्भाग्य नहीं पा सकता। वह जहॉ भी रहेगा, आनन्द मे रहेगा।

तुह सम्मत्ते लद्धे
चिंतामणि-कप्पपायव ब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं
जीवा अयरामरं ठाणं ।।४।।

हे प्रभो ! चिन्तामणि रत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक महिमाशाली सम्यक्त्व भक्ति प्राप्त हो जाने पर साधको को किसी भी प्रकार का भय नही रहता। वे बडे आनन्द के साथ बिना किसी विघ्न–बाधा के अजर–अमर मोक्ष धाम को प्राप्त कर लेते है।

इअ संथुओ महायस !
भत्ति-ब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव ! दिज्ज बोहिं
भवे भवे पास जिणचंद ! ।।५।।

हे महायशस्वी श्री पार्श्वनाथ जिन चन्द्रदेव ! इस प्रकार भक्ति–भावना से भरपूर हृदय से मैने आपकी यह स्तुति की है, अतएव जब तक मोक्ष प्राप्त न हो तब तक भव–भव मे मुझे सम्यक्त्व रत्न प्रदान करना।

टिप्पणी

यह उपसर्गहर स्तोत्र आचार्य भद्रबाहु स्वामी की अमर कृति है। जैन–स्तोत्र साहित्य के सुप्रसिद्ध नव स्मरण मे इसका दूसरा स्थान है। उपसर्गहर स्तोत्र पर विविध मत्रो का एक कल्प ग्रन्थ भी है परन्तु उपसर्गहर का मूल मत्र वह है जिसका उल्लेख स्तोत्र की दूसरी गाथा मे 'विसहर फुलिग मत' के रूप



मे किया है। इसी गुप्त मत्र का स्पष्ट उल्लेख आचार्य मानतुग अपने नमिऊण स्तोत्र के अन्त मे करते है। पाठको की जानकारी के लिए यह मन्त्र इस प्रकार है–

(१) "ॐ ह्रीं श्रीं नमिऊण पास विसहर
वसह जिण फुलिंग ह्रीं श्रीं अर्ह नमः।"

संतिनाह-सम्मदिट्ठिय-रक्खा

('संतिकरं-स्तवन')

संतिकरं संतिजिणं, जग-सरणं जय-सिरीइ दायारं।
समरामि भत्त-पालग-निव्वाणी-गरुड-कय-सेव ।।१।।

अर्थ-

जो शान्ति करने वाले है, जगत् के जीवो के लिए शरणरूप है, जय और श्री के देने वाले है तथा भक्तजनो का पालन करने वाले, निर्वाणीदेवी और गरूड–यक्ष द्वारा सेवित है, ऐसे श्रीशान्तिनाथ भगवान् का मै स्मरण करता हूँ, ध्यान करता हूँ।

मूल-

ॐ स नमो विप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामि-पायाणं।
झौं स्वाहा मंतेणं सव्वासिव -दुरिय-हरणाणं।।२।।
'ॐ संति-नमुक्कारो, खेलोसहि माइ-लद्धि-पत्ताणं।
स्रौं ह्रीं नमो सव्वोसहि-पत्ताणं च देइ सिरिं।।३।।

अर्थ-

विप्रुडौषधि, श्लेष्मौषधि, सर्वौषधि आदि लब्धियाँ प्राप्त करने वाले सर्व उपद्रव और पाप का हरण करने वाले, ऐसे श्री शान्तिनाथ भगवान को स्मरण करता हूँ।

ऐसे मन्त्राक्षर पूर्वक शान्तिनाथ भगवान को किया हुआ नमस्कार जय और श्री को देता है ।।२–३।।

मूल -

वाणी-तिहुअण-सामिणी-सिरिदेवी-जक्खराय-गणिपिडगा।
गह-दिसिपाल-सुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते।।४।।

अर्थ-

सरस्वती, त्रिभुवनस्वामिनी–श्रीदेवी, यक्षराज गणिपिटक, ग्रह, दिशापाल एव देवेन्द्र सदा ही जिनभक्तो की रक्षा करे।।४।।

मूल-

रक्खंतु ममं रोहिणि-पन्नत्ती वज्जसिखला य सया।
वज्जांकुसि-चक्केसरि-नरदत्ता-कालि-महाकाली।।५।।
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी य वइरुट्टा।
अच्छुत्ता माणसिआ, महमाणसिया उ देवीओ।।६।।

अर्थ -

रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृङ्खला, वज्राङ्कुशी, चक्रेश्वरी,



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासरत
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

नरदत्ता, काली, महाकली, गौरी, गान्धारी, महाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसी, महामानसी ये सोलह विद्यादेवियॉ मेरा रक्षण करे ।।५–६।।

मूल-

जक्खा गोमुह-महजक्ख-तिमुह-जक्खेस-तुंबरू कुसुमो।
मायंग-विजय-अजिआ,बंभो मणुओ सुरकुमारो।।७।।
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तह य जक्खिंदो।
कूबर-वरुणो भिउडी, गोमेहो पास - मायंगो।।८।।

अर्थ -

गोमुख, महायक्ष, त्रिमुख, यक्षेश, तुम्बरू, कुसुम, मातङ्ग, विजय, अजित, ब्रह्म, मनुज, सुरकुमार, षणमुख, पाताल, किन्नर, गरूड, गन्धर्व, यक्षेन्द्र, कुबेर, वरुण, भृकुटि, गोमेध, पार्श्व ओर मातग्ड ये चौबीस यक्ष तित्थ–रक्खण–रया–तीर्थ का रक्षण करने मे तत्पर ।।७–८।।

मूल-

देवीओ चक्केसरि-अजिआ-दूरिआरि-कालि-महाकाली।
अच्चुअ-संता-जाला,सुतारयाऽसोय-सिरिवच्छा।।९।।
चंडा विजयंकुसि पन्नइत्ति-निव्वाणि-अच्चुआ धरणी।
वइरुट्ट-छुत्त गंधारि-अंब पउमावई-सिद्धा ।।१०।।

इय तित्थ रक्खण-रया, अन्ने वि सुरा सुरीउ चउहा वि।
वंतर-जोइणि पमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं।।११।।

अर्थ -

चक्रेश्वरी, अजिता, दुरितारि, काली, महाकाली, अच्युता, शान्ता, ज्वाला, सुतारका, अशोका, श्रीवत्सा, चण्डा, विजया, अकुशी प्रज्ञप्ति, निर्वाणी, अच्युता (बला), धारिणी, वैरोट्य्या, अच्छुप्ता, गान्धारी, अम्बा, पद्मावती और सिद्धायिका ये शासनदेवियाँ तथा भगवान् के शासन का रक्षण करने मे तत्पर ऐसे अन्य चारो प्रकार की देव–देवियाँ तथा व्यन्तर, योगिनी आदि दूसरे भी हमारी रक्षा करे।६–१०–११।।

मूल-

एवं सुदिट्ठि-सुरगण-सहिओ संघस्स सति-जिणचन्दो।
मज्झ वि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरि-थुय-महिमा ।।१२।।

अर्थ -

इस प्रकार श्रीमुनिसुन्दरसूरि ने जिनकी महिमा रूप स्तुति की है, ऐसे श्रीशान्तिनाथ जिनेश्वर सम्यग्दृष्टि देवो के समूह श्रीसघ की और मेरी भी रक्षा करे।।१२।।

मूल-

इअ 'संतिनाह-सम्मद्दिट्ठिय-रक्खं' सरइ तिकालं जो।
सव्वोवद्दव-रहिओ, स लहइ सुह-संपयं परमं।।१३।।



अर्थ -

इस प्रकार **'शान्तिनाथ-सम्यग्दृष्टिक-रक्षा'** (स्तोत्र) का जो तीनो काल स्मरण करता है, वह सर्व उपद्रवो से रहित होकर उत्कृष्ट सुख–सम्पदा को प्राप्त करता है।।१३।।



श्रीमुनिसुन्दरसूरिकृत **'शान्ति-स्तव'** अपनी मन्त्रमय रचना के कारण सलिलादि–भयविनाशी और शान्त्यादिकर माना जाता है, इसके अन्तर्गत शान्ति मन्त्रो के कारण शान्तिकर, पुष्टिकर और तुष्टिकर माना जाता है।

इसमे मुख्य तीन लब्धि मत्र है–प्रथम **"ॐ नमो विप्पोसहि पत्ताणं"** विघ्न हरने वाला और शान्ति करने वाला है। भयकर ज्वर, बाढ आदि के समय इसका पाठ करने से शान्ति होती है। दूसरा **"ॐ नमो खेलोसहि माइलद्धि पत्ताणं"** यह मन्त्र रोग नाशक है। तीसरा **"ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताणं"** यह मत्र लक्ष्मीदायक मन्त्र है। इन तीनो मत्रो को १०८ बार स्तोत्र की दूसरी व तीसरी गाथा से दिपावाली की रात मे सिद्ध किया जाता है।

सिद्ध करने के बाद प्रयोग के समय सात बार स्तोत्र बोलकर मत्र का १०८ बार जाप किया जाता हे।

श्री मानदेव सूरिकृत

तिजयपहुत्त स्तोत्रं

तिजय पहुत्त पयासय-अट्ठ महापाडिहेर जुत्ताण।
समयक्खित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं।।१।।

भावार्थ- तीर्थकरो के अष्ट—महाप्रातिहार्य होने से त्रिभुवन का स्वामित्व सिद्ध होता है। ये तीर्थकर अढाई द्वीप मे (काल क्षेत्र मे) उत्कृष्ट काल मे एक सौ सत्तर होते है। उनका मै स्मरण करता हूँ।

पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो।
नासेउ सयलदुरिअं, भवियाणं भत्ति जुत्ताणं।।२।।

भावार्थ - पच्चीस, अस्सी, पन्द्रह और पचास इस प्रकार तीर्थकरो का समूह भक्ति से युक्त ऐसे भव्य जीवो के समग्र पापकर्मो का नाश करो।

बीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नतरी जिणवरिंदा।
गह भूअ रक्ख साइणि-घोरुवसग्गं पणासंतु।।३।।

भावार्थ- बीस, पैतालीस, तीस तथा पचहत्तर जिनेश्वर देव (तिर्थकर देव) ग्रह, भूत, राक्षस और शाकिनी के घोर उपसर्ग का नाश करो।

सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो।
वाहि-जल-जलण-हरि-करि-चोरारि महाभयं हरउ।।४।।



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासरत
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

भावार्थ-सत्तर, पैतीस, साठ और पाच जिनेश्वर–देवो का समूह व्याधि, जल अथवा ज्वर, अग्नि, सिह, हाथी, चोर और शत्रु सम्बन्धी घोर भय को दूर करो।

पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा।
रक्खंतु मे सरीर देवासुर पणमिआ सिद्धा।।५।।

भावार्थ- पचपन,दस पैसठ और चालीस सिद्ध बने हुए तीर्थकर जो देवो और असुरो के द्वारा नमस्कृत है वे मेरे शरीर की रक्षा करो।

ॐ ह र हुं हः स र सुं सः, ह र हुं हः तह य चेव सर सुं सः।
आलिहिय नामगब्भं चक्कं किर सव्वओभद्दं।।६।।

भावार्थ- ॐ ह र हु ह तथा स र सु स और पुन ह र हु ह तथा स र सु स नामक मत्र के बीजाक्षर सहित मध्य मे साधक का नाम लिखा है, ऐसा यह सर्वतोभद्र नामक यत्र होता है।

ॐ रोहिणी पन्नति, वज्जसिंखला तह य वज्जंकुसिया।
चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी।।७।।
गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता।
माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ।।८।।

भावार्थ- उस यत्र मे ॐ (प्रणवबीज) ह्रीं।(माया बीज) और श्रीं इन मत्र के साथ सोलह देवियो के नाम इस अनुक्रम

से लिखे–

(१) रोहिणी, (२) प्रज्ञप्ति, (३) वज्रश्रृंखला, (४) वज्राकुश, (५) चक्रेश्वरी, (६) नरदत्ता, (७) काली, (८) महाकाली, (९) गौरी, (१०) गाधारी, (११) महाज्वाला,(१२) मानवी, (१३) वैरोट्या, (१४) अच्छुप्ता,(१५) मानसी (१६) महामानसिका। ये सभी विद्यादेवियॉ रक्षा करो।

पंच दस कम्म भूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं।
विविह रयणाइ वन्नो, व सोहिअं हरउ दुरिआइं।।९।।

भावार्थ - पॉच भरत, पॉच ऐरावत और पॉच महाविदेह– इस प्रकार पन्द्रह कर्म–भूमियॉ है। उनमे उत्कृष्ट एक साथ एक सौ सत्तर जिनेश्वर देव होते हैं। (एक महाविदेह की बत्तीस विजय होने से पॉच महाविदेह की एक सौ साठ विजय मे एक–एक तीर्थकर होने से एक सौ साठ तीर्थकर होते है।) उनमे पॉच भरत और पॉच ऐरावत के कुल दस मिलने से १७० होते है। उन सबकी यहॉ स्तुति की गई है। अर्थात पन्द्रह कर्म–भूमियो मे उत्पन्न विविध रत्नादि के वर्ण द्वारा शोभित एक सौ सत्तर जिनेश्वर देव हमारे, पापो का हरण करो।

चउतीस अइसय जुआ, अट्ठ महापाडिहेर कयसोहा।
तित्थयरा गयमोहा, झाए अव्वा पयत्तेणं ।।१०।।

भावार्थ- चौतीस अतिशयो से युक्त, अष्ट महाप्रतिहार्यो से शोभित तथा मोह रहित तीर्थकर गण आदरपूर्वक ध्यान करने



योग्य है।

ॐ वर कणयसंखविद्दुम-मरगय घणसन्निह विगयमोहं।
सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामर पूइअं वंदे स्वाहा।।११।।

भावार्थ- श्रेष्ठ स्वर्ण, शख, मूगे, नीलम और मेघ सदृश वर्ण वाले, मोह रहित, सर्व देवो से पूजित एक सौ सत्तर जिनेश्वरो को मै वन्दन करता हूँ। यहॉ प्रारम्भ मे जो 'ओकार' शब्द लिखा है, वह परमेष्ठी–वाचक है। और अन्त मे जो 'स्वाहा' शब्द लिखा है, वह देवो को भेट (हवि) देने के समय बोला जाता है–ऐसा सर्वत्र समझे।

ॐ भवण वइ वाणवंतर-जोइसवासी विमाणवासी अ।
जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा।।१२।।

भावार्थ- भुवनपति, वाणव्यतर, ज्योतिषी और वैमानिक इन चारो ही देवनिकाय मे जो कोई भी दुष्ट अर्थात शासन के द्वेषी देव हो वे सभी मुझ पर उपशात हो।

चन्दणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं।
एगंतराइगहभूअ-साइणिमुग्गं पणासेइ।।१३।।

भावार्थ- चदन और कर्पूर द्वारा काष्टपट्ट पर यह यत्र आलेखित कर फिर उसे जल द्वारा धोकर वह जल पीने से एकातरिक ज्वर, ग्रह, भूत, शाकिनी और मोगक तथा उपलक्षण से अन्य भी रोग और भूतादि के आवेश का सर्वथा नाश होता है।

इय सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं।
दुरिआरि विजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह।।१४।।

भावार्थ- इस प्रकार सम्यक् मत्र रुप यह सौ सत्तर जिनेश्वर देवो का यत्र द्वार के बीच लिखा हो, तो वह कष्ट और शत्रु का विनाश करता है। अत हे भव्यजनो ! सदेहरहित होकर आप उसका निरन्तर (नित्य) पाठ करे।

श्री नमिऊण स्तोत्र

नमिऊण पणय सुरगण चूडामणि किरण-रंजिअं मुणिणो
चलण-जुयलं महाभय पणासणं संथवं वुच्छं।।१।।

जिनके चरण युगल नमे हुए देव गणो के मस्तक मणियो की किरणो से शोभायमान है और जो महाभयो को नष्ट करने वाले है, उन महामुनि तीर्थेश प्रभु पार्श्वनाथ को नमस्कार करके उनकी मै स्तुति करूँगा।

सडिय कर चरण नह मुह निव्वुड-नासा विवन्न-लावन्ना।
कुट्ठ महारोगानल फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा।।२।।

ते तुह चलणाराहण सलिलंजलि-सेय वुड्ढि उच्छाहा
वणदव-दड्ढा गिरि पायवव्व पत्ता पुणो लच्छिं।।३।।

जिनके हाथ, पाव, नख और मुख सडे हुए है, बैठी हुई नासिका के कारण जिनका सौदर्य नष्ट हो गया है तथा जिनके शरीर के सब अग प्रत्यग कुष्ट महारोग की ज्वालाओ से जल



रहे है वे आपके चरणो की सद् सेवा, सुश्रुषा और जलाजलि के अभिसिचन से पुन दावानल से जले पर्वतीय वृक्ष बरसात होने से हरे भरे होकर शोभा पाते है वैसे निरामय हो जाने से उत्साह एव उमग लिए नव जीवन पाए शोभित होते है।

दुव्वाय-खुभिय जलनिहि, उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे।
संभंत भय विसंठुल'-निज्जामय मुक्क वावारे।।४।।

अविदलिय-जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छियं कूलं।
पास जिण चलण जुयलं निच्चं चिअ जे नमंति नरा।।५।।

जिस समय प्रबल तूफान के कारण सागर क्षुब्ध हो उठता है, जल की प्रचण्ड तरगो से भीषण आवाज होने से दिग्विमूढ भयाकुल बना हुआ कर्णधार भी अपना काम छोड देता है, उस स्थिति मे भी भगवान पार्श्वनाथ के चरणो मे नित्य नमन करने वाले मनुष्य शीघ्र ही सुरक्षित किनारे को प्राप्त करते है।

खर-पवणद्धुय वणदव, जालावलि-मिलिय सयल दुमगहणे।
डज्झन्त-मुद्धमय बहु भीसण-रव भीसणंमि वणे ।।६।।

जग गुरुणो कम जुयलं, निव्वाविय सयल तिहुअणाभोअं।
जे समरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं।।७।।

जब दावग्नि भडक, प्रचण्ड हवा के कारण फैलती हुई सघन वृक्षो के निविड तक पहुच जाती है। उस समय भद्रिक हिरणी आदि पशु—पक्षियो के करुण क्रन्दन से सारा जगल

भयावह हो उठता है। वह भयानक दावानल न उन मनुष्यो को भयभीत कर सकता है न उन्हे क्षति पहुँचा सकता है। जो सर्व लोक के दृष्टा जगद्गुरु त्रिलोकी नाथ श्री पार्श्व प्रभु के चरण युगल मे स्थिर होकर उन्हे स्मरण करता है।

विलसंत भोग भीषण फुरिआरुण नयण तरल-जीहालं।
उग्ग भुयंगं नव-जलय सच्छहं भीसणायारं ।।८।।

मन्नंति कीड सरिसं, दूर परिच्छूढ विसम विसवेगा।
तुह नामक्खर फुड सिद्ध मंत गुरुआ नरा लोए।।६।।

हे भगवन ! आपके नामाक्षर रुपी मत्र का अविराम उच्चारण करने वाला मनुष्य इस ससार मे चमकीले शरीर, अत्यधिक लाल नेत्र, लपलपाती जीभ, घने काले, विकाराल आकार वाले भयकर विषधर को क्षुद्र–कीट सम मानकर दूर फेक देते है।

अडवीसु भिल्ल तक्कर पुलिंद सद्दूल सद्द भीमासु
भय विहुर वुन्न कायर उल्लूरिय पहिय सत्थासु।।१०।।

अविलुत्त विहव सार तुह नाह पणाम मत्त वावारा।
ववगय विग्घा सिग्घं पत्ता हिय इच्छियं ठाणं।।११।।

जो वन भील, तस्कर, सिह और बाघ के शब्दो से भयावह हो उठता है, जहॉ मुसाफिर सार्थवाह घबराए, परेशान, कायर–साहस शक्तिहीन बना लूट लिए जाते है। ऐसे भयावह जगल मे जो आपको नमस्कार करने मे सलग्न बना रहता है।



वे निर्विध्नता पूर्वक अपने जान–माल का रक्षण करते हुए सुरक्षित स्थान को प्राप्त कर लेते है।

पज्जलियानल नयणं, दूर वियारिय मुहं महाकायं।
नह-कुलिसघाय विअलिय गइंद कुंभत्थला भोअं।।१२।।

पणय-ससंभम-पत्थिव, नह मणि माणिक्क पडिअ पडिमस्स।
तुह वयण पहरण धरा, सीहं कुद्धं पि ण गिणंति।।१३।।

जिसकी ऑखे रक्ताभ है, जिसने दूर से ही मुह फाड रखा है, जो नाखून रुप वज्र के प्रहार से महाकाय गजेन्द्र के कुभस्थल को चीरने वाले कोपायमान सिह को आपके श्री चरणो मे समादर पूर्वक झुके और मणि माणिक के समान आपके जीवनाकाश से बरसते हुए वचनो के अस्त्र को धारण करने वाला नरेन्द्र कुछ नही गिनता है।

ससि धवल दंतमुसलं, दीह करुल्लाल वुड्ढि उच्छाहं।
महुपिंग नयण जुयलं, ससलिल नव जलहरारावं।।१४।।

भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते न वि गणंति।
जे तुम्ह चलण जुयलं मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा।।१५।।

हे मुनीश्वर! पार्श्वनाथ जो आपके उन्नत पाद पद्मो मे सम्यक्तया हैं, वे चन्द्र जैसे श्वेत मुसलवत् दात वाले है। जिसकी लम्बी सूड सचार से उत्साह सवर्धित है, मधु की तरह जिसकी आखे पीली है, जल सहित मेघ की तरह जिसकी

गडगडाहट है ऐसे भयोत्पादक विशालकाय गजेन्द्र के सनिकट आने पर भी उसे कुछ नही समझते है।

समरम्मि तिक्ख खग्गा-भिघाय पव्विद्ध उद्धुय कबंधे ।
कुंतविणि भिन्न-करि-कलह मुक्क सिक्कार पउरम्मि।।१६।।

निज्जिय-दप्पुद्धुर-रिउ नरिंद निवहा भडा जसं धवलं।
पावंति पाव पसमिण ! पासजिण ! तुह-प्पभावेण।।१७।।

जहॉ तीक्ष्ण तलवारो के वार के प्रहार से सिर से अलग हो धड नाचने लगते हैं, भालो से विदीर्ण हाथियो की प्रचूर चिग्घाडो से व्याप्त खूखार युद्ध मे भी शूरवीर सुभट अभिमान से उन्मत्त गर्वीलेशेर को परास्त करके हे पाप नाशक। पार्श्व जिनेश आपके प्रभाव से नरेन्द्र समान यश कीर्ति को प्राप्त करते है।

रोग जल जलण विसहर चोरारि मइंद गय रण भयाइं।
पास जिण नाम सकित्तणेण पसमन्ति सव्वाइं।।१८।।

एव महा-भयहरं पास जिणंदस्स संथवमुआरं।
भविय जणाणंदयरं कल्लाण परंपर निहाण।।१६।।

भगवान पार्श्वनाथ के नाम सकीर्तन, गुणानुकीर्तन से व्याधि, जल, अग्नि, विषधर, चोर, शत्रु, सिह, हस्ति और युद्ध आदि के सब भय नष्ट हो जाते है। इस प्रकार भगवान पार्श्वनाथ का स्तोत्र महाभयो का विनाशक, भक्ति प्रधान भव्य



जनो के लिए आनन्द करने वाला तथा कल्याणकारी परम्परा के निर्वाह का अक्षय कोष है।

रायभय-जक्ख-रक्खस,कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख पीडासु
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु।।२०।।

जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य 'माणतुगंस्स।
पासो पावं पसमेउ, सयल, भुवण-च्चिअ-च्चलणो।।२१।।

नरेन्द्र, यक्ष, राक्षस, बुरे स्वप्न, अपशुकन, ग्रह--नक्षत्रो की पीडाओ के समय दोनो सध्या काल, मार्ग चलते, उपसर्ग आने पर, और रात्रि के समय मे जो मनुष्य इस स्तोत्र को पढता है और जो सुनता है, उनके तथा स्तोत्र कर्त्ता कवि मानतुग के पाप कर्मो /पाप वासना के कुत्सित सस्कारो को वे भगवान श्री पार्श्वनाथ प्रशान्त करे, जिनके चरण सम्पूर्ण जगत वदित–पूजित है।

उवसग्गं ते कमठा-सुरम्मि झाणाओ जो ण संचलिओ।
सुर-नर-किन्नर जुवइंहिं, संथुओ जयउ पासजिणो।।२२।।

कमठ नामक दैत्य के उपसर्ग देने पर भी ध्यान से चलायमान नही हुए, देव, मनुष्य और किन्नर युवतियो द्वारा जिनकी स्तुति की गयी है, वे पार्श्व जिनेन्द्र जयवन्त हो।

एयस्स मज्झयारे, अट्ठारस्स अक्खरेहिं जो मंतो।
जो जाणइ सो झायइ, परम पयत्थं फुडं पासं।।२३।।

इस स्तोत्र के मध्य मे "नमिउण पास विसहर वसह जिण फुलिग" आए हुए इन अठारह अक्षरो का जो (चिन्तामणि नामक गुप्त) मत्र है, उसे गुरुगम से विधि सहित जो जानता है वह परम पद को प्राप्त हुए पार्श्व प्रभु को भव्य रूप से ध्याता है।

पासह समरणं जो कुणइ, संतुट्ठ हियएण।
अट्ठुत्तर-सय-वाहि भयं, नासइ तस्स दूरेण।।२४।।

जो मनुष्य सतुष्ठ हृदय से पार्श्वनाथ प्रभु का स्मरण करता है, उसके एक सौ आठ व्याधियाँ एव भय दूर से ही नष्ट हो जाते है।

"इति"

श्री उपसर्गहर-स्तोत्र बड़ा

(आचार्य भद्रवाहु स्वामी)

उवसग्गहर पास
पास वदामि कम्मघाणमुक्क।
विसहर – विसनिन्नास,
मगल – कल्लाण आवास।।१।।

विसहर – फुलिग – मत,
कठे धारेइ जो सया मणुओ।



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासरत
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

तस्स गह–रोग–मारी,
दुट्ठजरा जंति उवसाम।।२।।

चिट्ठउ दूरे मंतो,
तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु, वि जीवा,
पावंति न दुक्ख–दोहग्ग।।३।।

तुह सम्मत्ते लद्धे,
चिंतामणि –कप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेण,
जीवा अयरामर ठाण।।४।।

ॐ अमरतरु–कामधेणु,
चिन्तामणि–कामकुंभमाईए।
सिरी पासनाह–सेवा–
गयाणं सव्वे वि दासत्त।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ॐ तुह दसणेण सामिय,
पणासेइ रोग–सोग–दोहग्ग।
कप्पतरुमिव जायइ,
ॐ तुह दसणेण समफलहेउ स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं नमिऊण पणवसहियं,

मायाबीएण धरणनागिद।
सिरीकाम – रायकलिय,
पासजिणद नमसामि।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीं पास विसहर–
विज्जामतेण झाण झाएज्जा।
धरण पउमादेवी,
ॐ ह्रीं क्ष्मल्व्र्यूं स्वाहा।।८।।

ॐ थुणेमि पास,
ॐ ह्रीं पणमामि परमभत्तीए।
अट्ठक्खर – धरणिदो,
पउमावइ पयडिया कित्ती।।६।।

ॐ नट्ठट्ठ–मयट्ठाणे,
पणट्ठकम्मट्ठ–नट्ठससारे।
परमट्ठ – निट्ठियट्ठे,
अट्ठगुणाधीसर वदे ।।१०।।

इय सथुओ महायस ।
भत्तिब्भर–निब्भरेण हियएण।
ता देव । दिज्ज बोहि,
भवे भवे पास जिणचद । ।।११।।



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासरत
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

श्री नवपद स्तुति

उप्पन्न–सन्नाण–महोदयाण,
सप्पाडिहेरासण–सठियाण।
सद्देसणाणदिय–सज्जणाण,
नमो नमो होउ सया जिणाण।।1।।

सिद्धाणमाण – दरमालयाण,
नमो नमोऽनतचउक्कयाण।
सूरीण दूरीकयकुग्गहाण,
नमो नमो सूर–समप्पहाण।।2।।

सुत्तत्थ–वित्थारण–तप्पराण,
नमो नमो वायग–कुजराण।
साहूण ससाहिय–सजमाण,
नमो नमो सुद्ध–दया –दमाण।।3।।

जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स,
नमो–नमो निम्मल दसणस्स।
अन्नाण–समोह–तमोहरस्स,
नमो नमो नाणदिवायरस्स।।4।।

आरहियाखडियसक्कियस्स,
नमो नमो सजम–वीरियस्स।

तिजय-पहुत का सर्वतोभद्र यन्त्र

ॐ भवणवइवाणवंतर

अजितनाथाय नम	रोहिणी	प्रज्ञति	ह्रीं	वज्र श्रृखला	वज्रा कुशी	शातिनाथाय नम
महामानसी	ह २५	र ८०	क्षि	हु १५	ह ५०	चक्रेश्वरी
मानसी	ह २०	र ४५	प	सु ३०	स ७५	नरदत्ता
ब्लू	क्षि	प	ॐ	स्वा	हा	श्री
अच्छुप्ता	ह ७०	र ३५	स्वा	हु ६०	ह ५१	काली
वैरोट्या	स ५५	र १०	हा	सु ६५	स ४०	महाकाली
वर्धमानाय नम	मानवी	महा ज्वाला	क्लीँ	गाधारी	गौरी	पार्श्वनाथाय नम

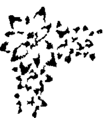
जे केवि दुट्ठ देवा

जोइसवासी विमाणवासी य

ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा

* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासरत

* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता



कम्मद्दुमोम्मूलण–कुजरस्स,
नमो नमो तिव्वतवोभरस्स।।५।।

इय नव–पयसिद्ध, लद्धिविज्जासमिद्ध
पयडिय–सर–वग्ग, ह्रीं तिरेहा–समग्ग।

दिसवइ–सुरसार, खोणि–पीढावयार
तिजय–विजयचक्क, सिद्धचक्क नमामि।।६।।

श्री आदिदेव स्तवन

(आचार्य श्री देवेन्द्र)

सिरि रिसहनाह तुह पयनहकतीओ जयतु तिजयस्स।
जतीओ वज्जपजरभाव भावारिभीयस्स।।१।।

तुह कमकमल विमल दट्ठु दुराउ देव पइदिवस।
धन्ना कलिमल–मुक्का रायमरालुव्व धावति।।२।।

असरिसभव–दुह–ददोलिघोलियाण जियाण जयनाह।
त चिय इक्को सरण सीयत्ताण व दिणनाहो।।३।।

तिहुयणपहु। अमय पिव सम्म तुह पवयणे परिणयमि।
अजरामरभाव खलु लहति लहु लहुय कम्माणो।।४।।

देव। वरनाण–दसण –दुहावि तुह दसणेण देहीण।
नीरेण चीवराण खणेण खयमेइ मालिन्न।।५।।

तुहसमरणेण सामिय ! किलिट्ठकम्मोवि सिज्झए जीवो।
किं न हु जायइ कणग लोह पि रसस्स फरिसेण।।६।।

पहु ! तुह गुणथुणणेण विसुद्धचित्ताण भवियसत्ताण।
घणनीरेण व जबूफलाइ विगलति पावाइ।।७।।

दसण–पवणे नयणे भाल नाल हवइ तुह नमणे।
ता पच्चक्खीभाव लहु मह तिजईस ! वियरेसु ।।८।।

इय सथुओसि देविदविदवदिय ! जुगाइजिणचद !
मह देसु निप्पकप भवे–भवे नियपए भत्ति।।६।।

श्री महावीर-स्तोत्र

(आचार्य श्री अभयदेव)

जइज्जा समणो भयव, महावीरे जिणुत्तमे।
लोगनाहे सयबुद्धे, लोगतियविबोहिए।।१।।

वच्छर दिण्णदाणोहे, सपूरियजणासए।
नाणत्तयसमाउत्ते, पुत्ते सिद्धत्थराइणो।।२।।

चिच्चा रज्ज च रट्ठ च, पुर अतेउर तहा।
निक्खमित्ता आगारोआ,पव्वइए अणगारिय ।।३।।

परीसहाण नो भीए, भेरवाण खमाखमे।
पचहा समिए गुत्ते, बभयारी अकिचणे।।४।।



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासर
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

,निमम्मे निरहकारे, अकोहे माणवज्जिए।
अमाए लोह विम्मुको, पसते छिन्नबधणे ।।५।।

पुक्खर व अलेवे , सखो इव निरजणे।
जीवे वा अप्पडिग्घाए, गयण व निरासए।।६।।

वाए वा अपडिबद्धे, कुम्मो वा गुत्तइदिए।
विप्पमुक्को विहगुव्व, खग्गिंसिगव्व एगगे।।७।।

भारडे वाऽपमत्ते य, वसहे वा जायथामए।
कुजरो इव सोडीरे, सीहो वा दुद्धरिस्सए।।८।।

सागरो इव गभीरे, चन्दो व सोमलेसए।
सूरो वा दित्ततेउल्ले, हेम वा जायरूवए।।६।।

सव्वसहे धरित्ति व्व, सायरिंदु व्व सच्छहे।
सुट्ठु हुयहुआस व्व, जलमाणे य तेयसा।।१०।।

वासी–चदणकप्पे य, समाणे लेट्ठुकचणे।
समे पूयावमाणेसु समे मुक्खे भवे तहा।।११।।

नाणेण दसणेण य, चरित्तेणमणुत्तरे।
आलएण विहारेण,मद्दवेणऽज्जवेण य।।१२।।

लाघवेण य खतीए, गुत्ती मुत्ती अणुत्तरे।
सजमेण तवेण य, सवरेणमणुत्तरे।।१३।।

अणेग–गुणगणाइण्णे, धम्मसुक्काण झायए।
घाइक्खएण सजाए, अणतवरकेवली।।१४।।

वीयराए य निग्गथे, सव्वन्नू सव्वदसणे।
देविद–दाणविदेहि, निव्वत्तिय–महामहे।।१५।।

सव्वभासाणुगाए य, भासाए सव्वससए।
जुगर्व सव्वजीवाण,छिदिउ भितगोयरे।।१६।।

हिए सुहे य निस्सेस–कारए सव्वपाणिण।
महव्वयाणि पचे व पणवित्ता सभावणे।।१७।।

ससारसायरे बुड्ड–जतु–सताण तारए।
जाणव्व देसिय तित्थ, सपत्ते पचमि गई।।१८।।

से सिवे अयले निच्चे, अरुए अयरामरे।
कम्मप्पवचनिम्मुक्के, जए वीरे जए जिणे।।१६।।

से जिणे वद्धमाणे य, महावीरे महायसे ।
असखदुक्ख–खिण्णाण अम्हाण देउ निव्वुइ।।२०।।

इय परममोआ सथुओ वीरनाहो,
परमपसमदाणा देउ तुल्लत्तण मे।

असमसुहदुहेसु सग्गसिद्धीभवेसु,
कणय–कयवरेसु सत्तुमित्तेसु वावि।।२१।।

पयडी व सइ पहाण,



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासरत
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

सीसेहि जिणेसराण सुगुरूण।
वीरजिण थव एय,
पढउ कय अभयसूरीहि।।२२।।

।।दशवैकालिकसूत्रम्।।

दुमपुप्फिया पढमं अज्झयणं।।१।।

धम्मो मगलमुक्किट्ठं, अहिसा सजमो तवो।
देवावि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ।।१।।

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रस।
ण य पुप्फ किलामेइ, सो य पीणेई अप्पय।।२।।

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए सति साहुणो।
विहगमा व पुप्फेसु, दाण–भत्तेसणा रया।।३।।

वय च विति लब्भामो, ण य कोइ उवहम्मइ।
अहागडेसु रीयते, पुप्फेसु भमरा जहा।।४।।

महुगारसमा बुद्धा, जे भवन्ति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दन्ता, तेण वुच्चन्ति साहुणो ।।५।।

इति दुमपुप्फियानामं पढममज्झयण समत्तं।।१।।

।। अह सामण्णपुव्वयं दुइअं अज्झयणं ।।२।।

कह नु कुज्जा सामण्ण, जो कामे न निवारए।
पए–पए विसीयतो, सकप्पस्स वस गओ।।१।।
वत्थ–गध–मलकार, इत्थीओ सयणाणि य।

अच्छदा जे न भुञ्जन्ति, न से चाइत्ति वुच्चई ।।२।।

जे य कते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठि कुव्वई।
साहीणे चयइ भोए, से हु "चाइ"–त्ति वुच्चई।।३।।

समाए पेहाए परिव्वयतो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा।
"न सा महनोवि अहपि तीसे", इच्चेव ताओ विणएज्ज राग।।४।।

आयावयाहि । चय सोगमल्ल, कामे कमाही कमिय खु दुक्ख।
छिन्दाहि दोस विणएज्ज राग, एव सुही होहिसि सम्पराए।।५।।

पक्खन्दे जलिय जोइ, धूमकेउ दुरासय।
नेच्छन्ति वन्तय भोत्तु, कुले जाया अगन्धणे।।६।।

धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो त जीवियकारणा।
वन्त इच्छसि आवेउ, सेय ते मरण भवे।।७।।

अह च भोगरायस्स, त चऽसि अधगवण्हिणो।
मा कुले गधणा होमो, सञ्जम निहुओ चर।।८।।

जइ त काहिसि भाव, जा जा दिच्छसि नारिओ।
वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि।।९।।

तीसे सो वयण सोच्चा, सजयाए सुभासिय।
अकुसेण जहा नागो, धम्मे सम्पडिवाइओ।।१०।।

एव करेन्ति सम्बुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो त्ति बेमि।।११।।

इति सामण्णपुव्वयं नाम दुइअं अज्झयणं समत्तं।।२।।

।।अह खुड्डियायारकहा तइयं अज्झयण।।३।।



सञ्जमे सुट्ठिअप्पाण, विप्पमुक्काण ताइण।
तेसिमेयमणाइण्णा, निग्गथाण महेसिण।।१।।

उद्देसिय[1] कीयगड[2] नियाग[3] अभिहडाणि[4] य।
राइ–भत्ते[5] सिणाणे[6] य, गध[7] मल्ले[8] य वीयणे[9] ।।२।।

सन्निही गिही–मत्ते य,रायपिण्डे किमिच्छए।
सम्वाहणा दन्तपहोयणा य, सम्पुच्छणा देह पलोयणाय।।३।।

अट्ठावए य नालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए।
तेगिच्छ पाहणा पाए, समारम्भं च जोइणो।।४।।

सेज्जायर–पिण्ड च, आसन्दीपलीयङ्कए।
गिहन्तरनिसेज्जा य, गायस्सुव्वट्टणाणि य।।५।।

गिहिणो वेआवडिय, जा य आजीववत्तिया।
तत्तानिव्वुडभोइत्त, आउरस्सरणाणि य।।६।।

मूलए सिङ्गबेरे य, उच्छुखण्डे अनिव्वुडे।
कन्दे मूले य सच्चित्ते, फले वीए य आमए।।७।।

सोवच्चले सिन्धवे लोणे, रोमा–लोणे य आमए।
सामुद्दे पसु–खारे य, काला–लोणे य आमए ।।८।।

धूवणेत्ति वमणे य, वत्थीकम्मविरेयणे।
अञ्जणे दन्तवणे य, गायब्भङ्गविभूसणे।।९।।

सव्वमेयमणाइन्न, निग्गथाण महेसिण।
सञ्जमम्मि अ जुत्ताण, लहुभूयविहारिण ।।१०।।

पचासव परिण्णाया, तिगुत्ता छसु सञ्जया।
पचनिग्गहणा धीरा,निग्गन्था उज्जुदसिणो।।११।।

आयावयन्ति गिम्हेसु, हेमन्तेसु अवाउडा।
वासासु पडिसलीणा सञ्जया सुसमाहिया।।१२।।

परिसहरिऊदन्ता, धूअमोहा जिइन्दिया।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो।।१३।।

दुक्कराइ करित्ताण, दुस्सहाइ सहित्तु य।
केइऽत्थ देवलोएसु, केइ सिज्जन्ति नीरया।।१४।।

खवित्ता पुव्वकम्माइ, सञ्जमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडा ।। त्ति बेमि।।१५।।

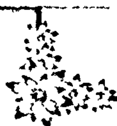
इति खुड्डियायारकहा नाम तइयमज्झयण समत्त ।।३।।

।।अह छज्जीवणियानाम चउत्थ अज्झयण।।४।।

सुय मे आउस तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपण्णत्ता सेय मे अहिज्झिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती।।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपण्णत्ता सेय मे अहिज्झिउ अज्झयण धम्मपणत्ती।।

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपण्णत्ता सेय मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती।



त जहा–पुढवि–काइया १, आउ–काइया २, तेउ–काइया ३, वाउ–काइया ४, वणस्सइ–काइया ५, तस–काइया ६, पुढवी चित्तमतमक्खाया अणेग जीवा पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थ–परिणएण। आऊ चित्तमन्तमक्खाया अणेग–जीवा पुढो–सत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएण। तेऊ चित्तमन्तमक्खाया अणेण जीवा पुढो–सत्ता अण्णत्थ सत्थ–परिणएण। वाऊ चित्तमन्तमक्खाया अणेग–जीवा पुढो–सत्ता अण्णत्थ सत्थ–परिणएण। वणस्सई चित्तमन्तमक्खाया अणेग–जीवा, पुढो सत्ता, अण्णत्थ सत्थ–परिणएण। तं जहा–अग्ग–वीया, मूल बीया, पोर बीया, खन्ध बीया, बीय–रूहा, सम्मुच्छिमा, तण लया वणस्सइ काइया, स वीया, चित्तमन्तमक्खाया अणेग जीवा, पुढो सत्ता, अण्णत्थ सत्थ परिणएणं। से जे पुण इमे अणेगे वहवे तसा पाणा, त जहा अडया, पोयया, जराउया, रसया ससेइमा, सम्मुच्छिमा, उब्भिया, उववाइया, जेसि केसि च पाणाण, अभिक्कन्त, पडिक्कन्त, सडकुचिय पसारिय रूय, भन्त, तसिय, पलाइय आगइ–गइ–विन्नाया, जे य कीडपयङ्गा जा य कुन्थु पिपीलिया, सव्वे वेइन्दिया, सव्वे तेइन्दिया, सव्वे चउरिन्दिया, सव्वे पञ्चिन्दिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया। सव्वे नेरइया, सव्वे मणुआ, सव्वे देवा, सव्वे पाणा, परमाहम्मिआ, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ।

इच्चेसि छण्ह जीवनिकायाण नेव सय दण्ड समारम्भिज्जा, नेवन्नेहि दण्ड समारम्भाविज्जा, दण्ड समारम्भंन्ते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।।

पढमे भन्ते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमण। सव्व भन्ते ! पाणाइवाय पच्चक्खामि। से सुहुम वा, बायर वा, तस वा, थावर वा, नेव सय पाणे अइवाइज्जा, नेवऽन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तपि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि। पढमे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण ।।१।।

अहावरे दुच्चे भन्ते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमण। सव्व भन्ते ! मुसावाय पच्चक्खामि ! से कोहा वा, लोहा वा, भया वा,हासा वा, नेव सय मुस वइज्जा नेवऽन्नेहि मुस वायाविज्जा, मुस वयन्तेवि-अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए, तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तपि अन्न न समणुजाणामि।-तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि। दुच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण ।।२।।

अहावरे तच्चे भन्ते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमण। सव्व भन्ते ! अदिन्नादाण पच्चक्खामि । से गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, अप्प वा, बहु वा, अणु वा, थूल वा चित्तमन्त वा, अचित्तमन्त वा, नेव सय अदिन्न गिण्हिज्जा, नेवऽन्नेहि अदिन्न गिण्हाविज्जा, अदिन्न गिण्हन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि। तच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण।।३।।



अहावरे चउत्थे भन्ते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमण ! सव्व भन्ते ! मेहुण पच्चक्खामि। से दिव्व वा, माणुस वा, तिरिक्खजोणिय वा, नेव सय मेहुण सेविज्जा नेवऽन्नेहि मेहुण सेवाविज्जा मेहुण सेवन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा ! जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि। चउत्थे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण।।४।।

अहावरे पञ्चमे भन्ते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमण। सव्व भन्ते ! परिग्गह पच्चक्खामि। से अप्प वा, बहु वा, अणु वा, थूल वा, चित्तमन्त वा अचित्तमन्त वा। नेव सय परिग्गह परिगिण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं परिग्गह परिगिण्हाविज्जा परिग्गह परिगिण्हन्तेऽवि अन्न न समणुजाणामि। जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तपि अन्न न समणुजाणेजा। तस्स भन्ते। पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि। पञ्चमे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण।।५।।

अहावरे छट्ठे भन्ते ! वए राइ–भोयणाओ वेरमण ! सव्व भन्ते ! राइ–भोयण पच्चक्खामि। से असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा नेव सय राइ भुञ्जिज्जा नेवऽन्नेहिं राइ भुञ्जाविज्जा, राइ भुञ्जतेऽवि अन्न न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए, तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते। पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि। छट्ठे भन्ते ! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राइ–भोयणाओ वेरमण।।६।।

इच्चेयाइ पञ्च महव्वयाइ राइ–भोयण–वेरमण छट्ठाई अत्तहियट्ठियाए उवसपज्जित्ता ण विहरामि।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजय–विरय–पडिहय पच्चक्खाय–पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढवि वा, भित्ति वा, सिल वा, लेलु वा, ससरक्ख वा कायं, ससरक्ख वा वत्थ, हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण वा, किलिचेण वा, अगुलियाए वा, सिलागए वा, सिलागहत्थेण वा, न आलि–हिज्जा, न विलिहिज्जा, न धट्टिज्जा, न भिन्दिज्जा। अन्न न आलिहाविज्जा, न विलिहाविज्जा, न घट्टाविज्जा, न भिन्दाविज्जा। अन्न आलिहन्त वा, विलिहन्त वा, घट्टत वा, भिन्दन्त वा न समणुजाणिज्जा। जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।।1।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा सजय–विरय–पडिहय–पच्चक्खाय –पावकम्मे, दिवा वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदग वा, आस वा, हिम वा, महिय वा, करग वा, हरितणुग वा, सुद्धोदग वा, उदउल्ल वा काय, उदउल्ल वा वत्थ, ससिणिद्ध वा काय, ससिणिद्ध वा वत्थ, न आमुसिज्जा, न सम्फुसिज्जा, न आवीलिज्जा, न पवीलिज्जा, न अक्खोडिज्जा, न पक्खोडिज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा अन्न न आमुसाविज्जा, न सम्फुसाविज्जा, न आवीलाविज्जा, न पवीलाविज्जा, न अक्खोडाविज्जा, न पक्खोडाविज्जा, न आयाविज्जा न पवाविज्जा अन्न आमुसन्त वा सम्फुसन्त वा, आविलन्त वा, पवीलन्त वा, अक्खोडन्त वा,पक्खोडन्त



वा, आयावन्त वा, पयावन्त वा, न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए, तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।२।

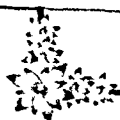
से भिक्खूवा॰ भिक्खुणी वा, संजय–विरय पडिहय–पच्चक्खाय –पावकक्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसा–गओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणि वा, इङ्गाल वा, मुम्मुर वा, अच्चि वा, जाल वा, अलाय वा, सुद्धागणि वा, उक्क् वा, न उञ्जिजज्जा, न घटिज्जा, न भिन्दिज्जा, न उज्जालिज्जा, न पज्जालिज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्न न उज्जाविज्जा, न घट्टाविज्जा, न भिन्दाविज्जा, न उज्जालाविज्जा, न पज्जालाविज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्न उज्जन्त वा, घट्टन्त वा, भिन्दन्त वा, उज्जालन्त वा, पज्जालन्त वा, निव्वावन्त वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तऽपि अन्न न समणुजाणामि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।।३।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजय–विरय–पडिहय–पच्चक्खाय–पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुणेण वा, तालियण्टेण वा, पत्तेण वा, पत्त–भङ्गेण वा, साहाए वा, साहा–भगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण–हत्थेण वा, चेलेण वा, चेल–कन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा काय, वाहिर वावि पुग्गल न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्नं न फुमाविज्जा, न विआविज्जा, अन्न फुमन्त वा, वीअत वा, न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तऽपि

अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते। पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।।४।।

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा, सजय विरय–पडिहय पच्चक्खाय–पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा, बीय पइट्ठेसु वा, रुढेसु वा, रुढ पइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जाय पइट्ठेसु वा, हरिएसु वा, हरिय–पइट्ठेसु वा, छिन्सु वा, छिन्न पइट्ठेसु वा, सचित्तेसु वा, सचित्त–कोलपडिनिसिएसु वा, न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा न निसीइज्जा न तुयट्टिज्जा, अन्न न गच्छाविज्जा न चिट्ठाविज्जा न निसीया–विज्जा न तुयट्टाविज्जा अन्न गच्छन्त वा,चिट्ठन्त वा, निसीयन्त वा, तुयट्टन्त वा, न समणुजाणिज्जा जावज्जी–वाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्त पि अन्न न समणुजाणमि। तस्स भन्ते। पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।।५।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजय–विरय पडिहय पच्चक्खाय–पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे, वा, से कीड वा पयग वा, कुन्थु वा, पिपीलिय वा, हत्थसि वा, पायसि वा, बाहुसि वा उरुसि वा, उदरसि वा, सीससि वा, वत्थसि वा, (पडिग्गहसि वा, कबलसि वा, पायपुच्छणसि वा) रयहरणसि वा, गुच्छगसि वा, उडगसि वा, दण्डगसि वा, मीढगसि वा, फलगसि वा, सेज्जसि वा, सथारगसि वा, अन्नयरसि वा,तह–प्पगारे उवगरणजाए तओ सज्जयामेव पडिलेहिय–पडिलेहिय पमज्जिअ–पमज्जिअ एगन्तमवणिज्जा नो ण सङ्घायमावज्जिजज्जा।।६।



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासरत
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

अजय चरमाणो अ, पाणभूयाइ हिसइ।
बन्धइ पावय कम्म, त से हाई कडुअ फल ।।१।।

अजय चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाइ हिसइ।
बन्धइ पावय कम्म, त से होई कडुअ फल ।।२।।

अजय आसमाणो य, पाण भूयाइ हिसइ।
बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल।।३।।

अजय सयमाणो अ, पाणभूयाइ हिसइ।
बन्धइ पावय कम्म, त से होई कडुअ फल ।।४।।

अजय भुज्जमाणो अ, पाणभूयाइ हिसइ।
बन्धइ पावय कम्म, त से हाई कडुअ फल ।।५।।

अजय भासमाणो अ, पाणभूयाइ हिसइ।
बन्धइ पावय कम्म, त से हाई कडुअ फल ।।६।।

कह चरे कह चिट्ठे कहमासे कह सए।
कह भुज्जन्तो भासन्तो, पावकम्म न बन्धइ।।७।।

जय चरे जय चिट्ठे, जयमासे जय सए।
जय भुज्जन्तो भासंतो पावकम्म न बन्धइ।।८।।

सव्व-भूयप्प-भूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ।
पिहिआसवस्स दन्तस्स, पावकम्म न बन्धइ।।९।।

पढम नाण तओ दया, एव चिट्ठइ सव्वसजए।
अन्नाणी कि काही, किवा नाही सेयपावग।।१०।।

सोच्चा जाणाइ कल्लाण, सोच्चा जाणाइ पावग।
उभयऽपि जाणई सोच्चा, ज सेय त समायरे।।११।।

जो जीवेऽवि न याणइ, अजीवेऽवि न याणइ।
जीवाजीवे अयाणन्तो कह सो नाहीइ सजम।।१२।।

जो जीवेऽवि वियाणइ, अजीवेऽवि वियाणइ।
जीवाजीवे वियाणन्तो, सो हु नाहिइ सजम।।१३।।

जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ।
तया गइ बहुविह, सव्वजीवाण जाणइ।।१४।।

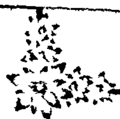
जया गइ बहुविह, सव्वजीवाण जाणइ।
तया पुण्ण च पाव च, बन्ध मोक्ख च जाणइ।।१५।।

जया पुण्ण च पाव च, बन्ध मोक्ख च, जाणइ।
तया निव्विन्दए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।।१६।।

जया निव्विन्दए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ सजोग, सब्भिन्तर बाहिर।।१७।।

तया चयइ सजोग, सब्भिन्तर बाहिर।
तया मुडे भवित्ताण, पव्वइए अणगारिय।।१८।।

जया मुडे भवित्ताण, पव्वइए अणगारिय।
तया सवरमुक्किट्ठ, धम्म फासे अणुत्तर।।१६।।



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासरत
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

जया सवरमुक्किकट्ठ, धम्म फासे अणुत्तर।
तया धुणइ कम्म–रय, अबोहि–कलुसकड ।।२०।।

जया धुणइ कम्म रय, अबोहि–कलुसकड।
तया सव्वत्तग नाण, दसण चाभिगच्छइ ।।२१।।

जया सव्वत्त–ग नाण, दसण चाभिगच्छइ।
तया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली।।२२।।

जया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली।
तया जोगे निरूभित्ता, सेलेसि पडिवज्जइ।।२३।।

जया जोगे निरूभित्ता, सेलेसि पडिवज्जइ।
तया कम्म खवित्ताण, सिद्धि गच्छइ नीरओ।।२४।।

जया कम्म खवित्ताण, सिद्धि गच्छइ नीरओ।
तया लोग–मत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ।।२५।।

सुह–सायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणा–पहोअस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स।।२६।।

तवो–गुण–पहाणस्स, उज्जुमइ खान्ति–सजम–रयस्स।
परीसहे जिणन्तस्स, सुल्लहा सुगई तारिसगस्स।।२७।।

पच्छा वि ते पयाया, खिप्प गच्छन्ति अमर–भवणाइ
जेसि पिओ तवो सजमो अ, खति अ बभचेर च।।२८।।

इच्चेय छज्जीवणिअ, सम्मदिट्ठि सया जए।
दुल्लह लहित्तु सामण्ण, कम्मुणा न विराहिज्जासि।।२९।।

।। इति छज्जीवणिआ णामं चउत्थ अज्झयण सम्मत्त ।।४।।

श्रीमहावीरस्तुतिः

पुच्छिस्सु ण समणा माहणा य,
अगारिणो या परितित्थिया य।
से केइ णेगतहिय धम्ममाहु,
अणेलिस साहुसमिक्खयाए ।।१।।

अन्वयार्थ-

समणा–साधु,, माहणा–ब्राह्मण, य–और, अगारिणो–श्रावक लोग, य–तथा, परितित्थिया–बौद्ध आदि परमतावलम्बी, पुच्छिसु–पूछने लगे कि जिसने, साहुसमिक्खयाए–भली भाति विचार करके, णेगतहिय–सर्वथा हित कारक, अणेलिस–अनुपम, धम्म–धर्म, आहु–कहा है, से –वह, केइ–कौन है ?

भावार्थ- सुधर्मा स्वामी से जम्बू स्वामी पूछने लगे, हे आर्य ! ससार समुद्र से पार करने वाला, हितकारी और अनुपम धर्म किसने बताया है? यह ऐसा मुझसे श्रमण, ब्राह्मण, ग्रहस्थ तथा अन्य मतावलम्बी पूछते है।

कह च णाण कह दसण से,
सील कह नायसुतस्स आसी।
जाणासि ण भिक्खु ! जहातहेण,
अहासुय बूहि जहाणिसत ।।२।।

अन्वयार्थ-

से–उस, नायसुतस्स–भगवान् महावीर का, णाण–ज्ञान, दसण–दर्शन, कह–कैसा था, च–ओर, सील–सील, कह–कैसा था, भिक्खू–हे सुधर्मास्वामिन् ! आप, जहातहेण–ठीक ठीक, जाणासि–जानते हो ,अत अहासुय–जैसा सुना है और जहाणिसत–जैसा निश्चय किया है, वैसा बूहि–कहो।

भावार्थ-जम्बू स्वामी आर्य सुधर्मा स्वामी से फिर पूछने लगे कि, हे सुधर्मा स्वामिन् ! आप ठीक ठीक जानते है, इसलिए कृपा करके यह बताइये कि भगवान् महावीर का ज्ञान कैसा था ओर उन्होने उसे कैसे पाया था ? तथा उनका दर्शन–सामान्य प्रतिभास और यम नियम आदि शील किस प्रकार के थे ?

खेयन्ने से कुसले महेसी,
अणतनाणी य अणतदसी।
जससिणो चक्खुपहे ठियस्स,
जाणहि धम्म च धिइ च पेहि ।।३।।

अन्वयार्थ-

से–भगवान् महावीर, खेयन्ने–खेद अथवा क्षेत्र–आत्मा को जानने वाले, कुसले–कुशल, महेसी–महर्षि, अणतनाणी–अनन्त ज्ञानवान्, अणतदसी–अन्नत दर्शनवाले, य–और, जससिणो–यशस्वी हैं अत अर्हन्त दशा मे भगवान् को, चक्खुपहे–ऑखो के विषय रूप स, ठियस्स–स्थित, जाणाहि–जानो,च–ओर, धम्म–भगवान के बताए हुए धर्म को, च–और, धिइ–संयम की दृढता को, पेहि –देखो।

भावार्थ - जम्बू स्वामी के इस प्रकार पूछने पर सुधर्मा स्वामी भगवान् के दर्शन, ज्ञान, शील और यश आदि का वर्णन करने लगे। बोले भगवान् महावीर, ससारी जीवो के कर्म विपाक जनित दु खो को जानते थे इसलिए उनको दूर करने का यथावत् उपदेश दिया है। आत्मा के सच्चे स्वरूप के ज्ञाता थे, कर्मरूपी कुश को उखाडने मे कुशल थे, महान ऋषि थे, अनन्त पदार्थो के जानने वाले होने से अनन्त ज्ञानी थे। अनन्त केवल दर्शन वाले थे, तथा अक्षय और अतुल कीर्ति वाले थे, अतएव भगवान् को अर्हन्त दशा मे ऑखो के समान सूक्ष्मादि पदार्थो के दिखाने वाले जानकर उनके बताए हुए धर्म को, तथा चारित्र सम्बन्धी दृढता को विचारो।

उड्ढ अहेय तिरिय दिसासु,
तसा य जे थावर जे य पाणा।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पण्णे,
दीवे व धम्म समिय उदाहु ।।४।।

अन्वयार्थ -

से–उन, पण्णे–केवलज्ञानी भगवान महावीर ने, उड्ढ–ऊर्ध्व, अहेय – अध और, तिरिय–तिरछी, दिसासु–दिशाओ मे, जे–जो, तसा–त्रस, य–और, थावर–स्थावर, पाणा–प्राणी हैं, उनको, णिच्चणिच्चेहिं–नित्य रूप से और अनित्य रूप से, समिक्ख–जानकर, दीवे व–दीपक की नाई अथवा ससार रूप समुद्र मे गिरे हुए जीवो के लिए द्वीप की भॉति, धम्म– धर्म को, समिय–समानभाव से उदाहु–प्रतिपादन किया।

भावार्थ- सुधर्मास्वामी फिर बोले–भगवान् महावीर ने त्रस और स्थावर



जीवो को, जो ऊपर नीचे और इधर–उधर स्थित है अर्थात सब जगह मौजूद है, पर्यायार्थक नय की अपेक्षा अनित्य और द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा नित्य जाना। अतएव उन ज्ञानवान् भगवान् ने ऐसे उत्तम धर्म का उपदेश दिया जो कि ससार रूपी समुद्र मे पडे हुए प्राणियो को द्वीप की तरह सहारा देने वाला है और अज्ञान रूप अन्धकार को दूर करने के लिए दीपक के समान है। पूर्वोक्त कथन से बौद्ध आदि अनात्मवादी मतो का खण्डन किया गया है तथा वृक्ष आदि मे जीव है, ऐसा सिद्ध किया गया है, और जैन दर्शन के स्याद्वाद सिद्धान्त का भी प्रतिपादन कर दिया गया है।

से सव्वदसी अभिभूय नाणी,
णिरामगधे धिइम ठियप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगसि विज्ज,
गथा अइए अभए अणाऊ ।।५।।

अन्वयार्थ-

से –वह, सव्वदसी–सर्वदर्शी भगवान, अभिभूय–क्षायोपशमिक ज्ञानो को जीत कर, नाणी–केवल ज्ञानवान्, णिरामगधे–निर्दोष चारित्र पालने वाले, धिइम–धीर, ठियप्पा–अपनी आत्मा मे स्थित–लवलीन, सव्वजगसि–समस्त ससार मे, अणुत्तरे–सर्वोत्कृष्ट, विज्ज–पदार्थो के जानने वाले अर्थात् विद्वान, गथा–परिग्रह से , अतीते–रहित, अभए–भय रहित, अणाऊ–और आयु रहित थे।

भावार्थ- भगवान् महावीर स्वामी सामान्यरूप से पदार्थो के जानने वाले, तथा मति श्रुत अवधि और मन पर्याय इन चार क्षयोपशमजन्य

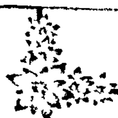
ज्ञानो को हटाकर केवल ज्ञान वाले थे। क्योकि ज्ञान और चारित्र से मोक्ष होता है इसलिए भगवान् के ज्ञान का वर्णन करके चारित्र का वर्णन करते हैं। भगवान् महावीर मूल और उत्तर गुणो को पूरी तरह पालन करते तथा अनेक विघ्न बाधाओ एव परीषहो के आने पर भी चारित्र से चलायमान नहीं हुए थे। भगवान् तीन लोक मे सबसे श्रेष्ठ विद्वान परिग्रह से रहित अतएव निर्ग्रन्थ सात प्रकार भयो से रहित, तथा सम्पूर्ण कर्मो से मुक्त थे।

से भूइपण्णे अणिएअचारी,
ओहतरे धीरे अणतचक्खू।
अणुत्तर तप्पइ सूरिए वा,
वइरोयणिदे व तम पगासे ।।६।।

अन्वयार्थ-

से–वह भगवान्, भूइपण्णे–अत्यन्त बुद्धिमान, अणिएअचारी– अप्रतिबद्ध विहार करने वाले, ओहतरे–ससार रूपी समुद्र को तिरने वाले, धीरे– धीर, अणतचक्खु–अनन्त ज्ञानवान्, अणुत्तर–सबसे ज्यादा, सूरिए वा–सूर्य की भाति तथा, वइरोयणिदे व–वैरोचन नामक अग्नि की तरह तम–अज्ञान अधकार को नष्ट करके, पगासे–ज्ञान को प्रकाशित करने वाले थे।

भावार्थ- उन भगवान महावीर स्वामी की प्रज्ञा ससार का मगल एव रक्षा करने वाली थी । उनका विहार अप्रतिबद्ध था, क्योकि वह सब प्रकार के परिग्रह से परे थे। चरित्र ससार रूप समुद्र से पार करने वाला था। परीषहो को समभाव से सहन करने वाले अतेव धीर, तथा घी–बुद्धि मे राजित–शोभित थे। सपूर्ण ज्ञेय पदार्थो को जानने वाले होने से वे अनन्त ज्ञानवान थे। दुनिया मे सबसे अधिक तप करने वाले थे और वैरोचन नामक अग्नि के



जलने से जैसे अन्धकार नहीं रह सकता, उसी तरह भगवान् भी अज्ञान रूप अन्धकार को नाश करने वाले थे।

अणुत्तर धम्ममिण जिणाण,
णेया मुणी कासव आसुपण्णे।
इन्दे व देवाण महाणु भावे,
सहस्स णेया दिवि णं विसिट्ठे ।।७।।

अन्वयार्थ-

जिणाण–जिन भगवान् के, इण–इस, अणुत्तर–सर्वश्रेष्ठ, धम्म–धर्म के, णेया–नेता, मुणी–मुनि, कासव–कश्यपगोत्रीय, माहणुभावे–महाप्रभावशाली भगवान् महावीर, दिवि–स्वर्ग मे, सहस्स–हजारो, देवाण–देवो के, इदेव–इन्द्र की भॉति, विसिट्ठे–रूप और गुण आदि मे सबसे प्रधान, णेया–नेता थे।

भावार्थ- जिस तरह स्वर्ग के सब देवो मे इन्द्र रूप गुण ओर ऐश्वर्य आदि गुणो से प्रधान होता है, उसी तरह भगवान महावीर स्वामी सव लोगो मे उत्तम थे। ऋषभ आदि पूरे २३ तीर्थकरो द्वारा प्रतिपादित धर्म के नेता–प्रचारक थे। इस कथन से उनका भ्रम दूर किया है जो महावीर स्वामी को ही जैनधर्म का सस्थापक मानते हैं क्योकि महावीर स्वामी जैनधर्म के सस्थापक नही किन्तु उनके पहिले होने वाले २३ तीर्थकरो द्वारा प्ररूपित धर्म के प्रचारक मात्र थे। प्रभु का गोत्र कश्यप था।

से पन्नया अक्खयसायरे वा,
महोदही वावि अणतपारे।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के

सक्के व देवाहिवई जुईम ।।८।।

अन्वयार्थ-

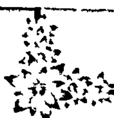
से–वह भगवान् महावीर, पन्नया–बुद्धि से, अणतपारे–अनन्तपार वाले तथा, अणाइले–शुद्ध जल वाले, महोदहीव–स्वयम्भूरमण समूद्र की भॉति, अक्खयसायरे–अक्षयसमुद्र थे तथा, अकसाई – कषाय से रहित, मुक्के–कर्मो से मुक्त, देवाहिवई–तथा देवो के स्वामी, सक्के व–इन्द्र की तरह, जुईम––दीप्तमान् थे।

भावार्थ- भगवान् की उपमा किसी अन्य पदार्थ से नहीं दी जा सकती। किन्तु एकदेशीय उपमा सागर से दी गई है अर्थात् जिस प्रकार स्वयभूरमण अनन्त पार वाला है, उसी तरह भगवान् द्रव्य, क्षेत्र काल और भाव की अपेक्षा अनन्त ज्ञानवान् थे। समुद्र का जल जैसे निर्मल होता है, भगवान् का ज्ञान भी उसी तरह स्पष्ट अर्थात् कलुषता रहित था। भगवान् कषाय से रहित तथा ज्ञानावरणादि कर्मो के बन्धन से मुक्त थे। जैसे इन्द्र का प्रभाव देवो पर होता है, उसी तरह भगवान् का प्रभाव भी प्राय प्राणी मात्र पर था।

से वीरिएण पडिपुन्नवीरिए,
सुदसणे वा णगसव्वसेट्ठे।
सुरालएवासिमुदागरे से,
विरायए णेगगुणोववेए ।।६।।

अन्वयार्थ-

से–भगवान्, वीरिएण–बल से, पडिपुन्नवीरिए–पूर्णशक्तिवाले थे, तथा



* नारी- जागरण के लिए निरन्तर प्रयासरत
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

वा—जैसे, सुदसणे—सुमेरू पर्वत,णगसव्वसेट्ठे—सब पर्वतो मे श्रेष्ठ है, उसी प्रकार प्रभु महावीर भी सर्वश्रेष्ठ थे और सुमेरू जैसे, सुरालएवासिमुदागरे—देवो को हर्ष पैदा करने वाला होता है, वैसे ही भगवान् सबको हर्ष पैदा करने वाले थे तथा सुमेरू जेसे, णेगगुणोववेए—अनेक गुणो से शोभित होता है, से—भगवान् भी अनेक उत्तमोत्तम गुणो से शोभायमान थे।

भावार्थ - भगवान् का वीर्यान्तराय कर्म बिलकुल नष्ट हो गया था। अतएव उनमे वीर्य—अनन्त शक्ति का प्रादुर्भाव हो गया था। सुमेरू पर्वत जैसे सब पर्वतो मे श्रेष्ठ है, भगवान् भी शक्ति आदि गुणो से सर्व—श्रेष्ठ थे तथा स्वर्ग कैसे देवो को जैसे सुमेरु हर्षजनक है, ठीक उसी प्रकार भगवान् भी प्राणीमात्र के हर्ष के उत्पादक थे। सुमेरू जैसे अनेक गुणो से—सुनहरी रग, चन्दनादि गंध और उत्तम फलो से—शोभित होता है, भगवान भी ज्ञान, शक्ति, आदि गुणो से विराजमान थे।

सय सहस्साण उ जोयणाण,
तिकडगे पडगवेजयते।
से जोयणे णवणवई सहस्से,
उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेग ।।१०।।

अन्वयार्थ-

से—वह सुमेरू पर्वत, सय सहस्साण—एक लाख, जोयणाण—योजन का है, तिकडगे—तीन भाग वाला है, पडगवेजयते—जिसकी पाण्डुक वन ध्वजा है, तथा, णवणवइ—(९९) निन्यानवे, सहस्से—हजार, जोयणे—योजन, उद्धु—स्सितो—ऊँचा है, और, एगं—एक, सहस्स—हजार,

हेट्ठ–नीचा है।

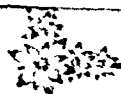
भावार्थ- इस गाथा मे भगवान् की उपमाभूत सुमेरुगिरि का वर्णन किया है। सुमेरू एक लाख योजन ऊँचा है, निन्यानवे हजार योजन ऊपर तथा एक हजार योजन नीचे है। इसके तीन कंटक भाग हैं तीन कण्टको पर पण्डुक वन है। वन ऐसा जान पडता है, मानो ध्वजा है। यह सुमेरू पर्व जैसे समस्त मध्यलोक मे व्याप्त है, भगवान् के ज्ञान और दर्शन आदि गुण भी समस्त लोकालोक मे व्याप्त है।

पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए,
ज सूरिया अणुपरिवट्टयति।
से हेमवण्णे बहुनदणे य,
जसी रइ वेदयती महिदा ।।११।।

अन्वयार्थ-

से–वह, सुमेरु, णभे–आकाश को, पुट्ठे–स्पर्श करके, चिट्ठइ–स्थित है, तथा, भूमिवट्ठिए–भूमि को छूकर स्थित है, ज–जिसकी, सूरिया–सूर्य, अणुपरिवट्टयति–प्रदक्षिणा करते हैं, और जो, हेमवन्ने–सोने की जैसी कान्ति वाला है, जिसमे बहु–बहुत अर्थात् चार, नदणे–नन्दनादि वन है, जंसी–जिसमे महिंदा–महेन्द्र आकर, रइ –रति का, वेदयती–अनुभव करते है।

भावार्थ- फिर भी सुमेरु का वर्णन करते है– वह सुमेरु पर्वत ऊपर आकाश को व्याप्त करके नीचे भूमि को स्पर्श करके स्थित है, अतएव वह ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यक्लोक को स्पर्श करने वाला है।



ज्योतिष्क विमान उसकी प्रदक्षिणा किया करते है। उनका रग सोने की नाई पीला है। उसके ऊपर चार वन है। भूमि मे भद्रशाल वन है, उसके पाच सौ योजन ऊपर नन्दन वन है, उसके बासठ हजार योजन ऊपर सौमनस वन है, उससे छत्तीस हजार योजन ऊपर पाण्डुक वन है। इस तरह वह अनेक क्रीडा स्थलो से युक्त है। उसमे देव और देवेन्द्र भी आकर रतिक्रीडा का अनुभव करते है।

से पव्वए सद्दमहप्पगासे,
विरायइ (ति) कचणमट्ठवण्णे।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे,
गिरिवरे से जलिए व भोमे ।।१२।।

अन्वयार्थ-

से–वह, पव्वए–सुमेरु पर्वत, सद्दमहप्पगासे–शब्दो से गुजायमान है, तथा, कचणमट्ठवन्ने–सोने की तरह पीले वर्ण वाला, विरायइ–शोभित होता है, गिरिसु–सब पर्वतो मे, अणुत्तरे–श्रेष्ठ है, पव्वदुग्गे–पर्वत मेखला आदि के कारण दुर्गम है, और से–वह, गिरिवरे–सब मे प्रधान सुमेरू, भोमे व– पृथ्वी की तरह, जलिए–कान्ति वाला है।

भावार्थ- शब्द का स्वभाव ही गूजने का है। छोटे–छोटे पर्वत ओर मकानो के पास भी अगर आवाज की जाती है तो प्रतिध्वनि होती है। और वह भी इतनी तेज कि पहला शब्द भी उतना जोर का नहीं होता है। सुमेरु पर्वत देवताओ का क्रीडास्थान है, अतएव वह भी उनके द्वारा की गई ध्वनियो से गूँजता है, और वह गूज प्रवल होती है। इसी तरह परमात्मा महावीर स्वामी की दिव्यध्वनि प्रवल ओर जोरदार भी होती है। यही कारण हे कि भगवान् के सदुपदेश का

अमिट तथा शीघ्र प्रभाव होता है। पर्वत के पीले रग की भॉति महावीर स्वामी का पीले रंग का शरीर दर्शनीय था। जैसे सुमेरू पर चढना मुश्किल है, उसी प्रकार भगवान् को जीतना भी कठिन है, क्योकि भगवान् सर्वज्ञ है।

महीए मज्झम्मि ठिये णगिदे
पन्नायते सूरियसुद्धलेसे।
एव सिरीए उ स भूरिवण्णे,
मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ।।१३।।

अन्वयार्थ-

महीए–पृथ्वी के, मज्झम्मि–मध्य मे, ठिये–स्थित, णगिदे–पर्वतो मे प्रधान सुमेरु, पन्नायते–लोक मे उत्कृष्ट रूप से जाना जाता है, तथा सूरियसुद्धलेसे–सूर्य के जैसे शुद्ध तेज वाला, एव – पूर्वोक्त प्रकार की, सिरीए–लक्ष्मी से, उ– विशेष प्रकार से, भूरिवन्ने–विचित्र–विचित्र रत्नो से शोभित होने से अनेक वर्ण वाला, मणोरमे –मनोहर, अच्चिमाली–सूर्य की तरह, जोयइ–दशो दिशाओ को प्रकाशित करता है।

भावार्थ- रत्नप्रभा पृथ्वी के मध्यप्रदेश मे जम्बू द्वीप के ठीक बीच मे सब पर्वतो मे प्रधान सुमेरु पर्वत है, क्योकि सुमेरू पर्वत २ धातकी खाण्ड और २ अर्द्धपुष्कर द्वीप मे भी है, किन्तु उनकी ऊँचाई ८५ हजार योजन ही है और जम्बू द्वीप के मध्य भागस्थ सुमेरू एक लाख योजन ऊँचा है, इसलिए यह पर्वत सब पर्वतो मे प्रधान कहा जाता है। इसी प्रकार ऋषि मुनि और महात्मा तो बहुत है, किन्तु उन सबमे भगवान महावीर प्रधान थे। सुमेरु पर सूर्य की प्रभा पडने से जैसे वह चमकने लगता है भगवान

का शरीर भी वैसा ही चमकदार एव प्रभावशाली था। भगवान् अष्ट प्रातिहार्य आदि लक्ष्मी से शोभायमान थे और अज्ञानान्धकार को नाश करने वाले थे। सूरिय सुद्धलेसे तथा अच्चिमाली जोयइ इन दो शब्दो से यह मालूम होता है कि भगवान् का शरीर स्वय प्रकाशमान था, वह दूसरो को प्रकाश भी देता था।

सुदसणस्सेव जसो गिरिस्स,
पवुच्चइमहतो पव्वयस्स।
एतोवमे समणे नायपुत्ते,
जाईजसोदंसणनाणसीले ।।१४।।

अन्वयार्थ-

महतो–महान्, पव्वयस्स–पर्वत, सुदसणस्सेव–सुदर्शन, गिरिस्स –मेरू पर्वत का, जसो–यश–कीर्ति जैसे कही है उसी प्रकार, पवुच्चइ–भगवान् की कीर्ति करते है, एतोवमे–पूर्वकथितउपमा से उपमित, समणे–श्रमण, नायपुत्ते–ज्ञातपुत्र भगवान महावीर, जाईजसोदसणनाणसीले– जाति, यश, दर्शन ज्ञान और शील मे श्रेष्ठ थे।

भावार्थ -

भगवान् की एकदेशीय उपमा सुमेरू पर्वत से दी गई थी ओर इसी प्रसग को लेकर सुमेरू का कीर्तिगान किया है। अब फिर उपमेय का वर्णन करते है कि ज्ञातवंश के क्षत्रिय कुल में, उत्पन्न भगवान महावीर समस्त ज्ञानवालो तथा दर्शनवालो मे सब चारित्रनिष्ठ पुरुषो मे श्रेष्ठ थे।

गिरी (रि) वरे वा निसहाऽऽययाणं,
रुयए व सेट्ठे वलयायताण।

तओवमे से जगभूइपण्णे,
मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने।।१५।।

अन्वयार्थ -

वा–जैसे, निसह–निषध, आययाण–लम्बे पर्वतो मे, गिरीवरे –श्रेष्ठ पर्वत है तथा, व–जैसे, रूयए–रुचक पर्वत, वलयाययाण–गोल पर्वत मे, सेट्ठे–श्रेष्ठ है, तओवमे–उनकी तरह, से–भगवान् महावीर भी, जगभूइपन्ने–ससार मे प्रभूत प्रज्ञा वाले है। अत, पन्ने–प्रकृष्टज्ञान वालो ने, त–उन्हे, मुणीण–सब मुनियो के, मज्झे–मध्य मे, उदाहु–उत्कृष्ट कहा है।

भावार्थ -

हरिवास क्षेत्र के पर्वत का नाम निषध पर्वत है। वह लम्बाई मे सबसे बडा है तथा रुचक नाम का पर्वत गोलाई मे अद्वितीय है। इसके समान दूसरा नहीं है। उसी प्रकार भगवान महावीर भी ज्ञान मे अद्वितीय थे। उनके जैसा पूर्णज्ञानी उस समय कोई दूसरा नही था, अतएव बुद्धिमानो ने उन्हे उत्कृष्ट कहा है।

अणुत्तर धम्ममुईरइत्ता,
अणुत्तर झाणवर झियाइ।
सुसुक्कसुक्क अपगडसुक्क,
सखिंदुएगतऽवदातसुक्क ।।१६।।

अन्वयार्थ-

अणुत्तर–सब से उत्तम धम्म–धर्म को, उईरइत्ता–कहकर भगवान, अणुत्तर–

प्रधान, झाणवर–व्युपरत क्रियानिवृत्ति नामक ध्यान को, झियाइ–ध्याते है अर्थात्, सुसुक्कसुक्क्–उत्तम श्वेत वस्तु की तरह वह शुक्ल ध्यान, जो कि, अपगडसुक्क्–अर्जुन सोने की तरह अथवा जल के फेन की तरह, या सखिदुएगतऽवदातसुक्क्– शख और चन्द्रमा की तरह शुभ्र है, उसका भगवान् ने ध्यान किया ।

भावार्थ-

भगवान श्रीमहावीर ने ऐसे धर्म का उपदेश दिया, जो कि समस्त धर्मो मे प्रधान है, तथा शुक्ल ध्यान को धारण किया। वह शुक्ल ध्यान सोने की तरह, जल के फेन की तरह, शख की तरह तथा चन्द्रमा की तरह, स्वच्छ है। भगवान् सूक्ष्मकाय योग का निरोध करते हुए शुक्ल ध्यान के तीसरे भेद सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति नामक ध्यान को ध्याते है तथा जब योग का निरोध कर चुकते है, तब व्युपरतक्रियानिवृत्ति नाम के चौथे शुल्क ध्यान को धारण करते है।

अणुत्तरग्गं परम महेसी,
असेसकम्म स विसोहइत्ता।
सिद्धि गइ साइमणत पत्ते,
नाणेण सीलेण य दसणेण।।१७।।

अन्वयार्थ-

से–वह, महेसी–महर्षि भगवान् महावीर असेसकम्म –सव कर्मो को, विसोहइत्ता–पूरी तरह नष्ट करके, अणुत्तरग्ग–सर्व प्रधान, तथा लोकाग्र मे, गइ–स्थित हुए, साइमणत–और सादि अनन्त, तथा, परम–उत्कृष्ट, सिद्धि

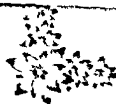
को, नाणेण–ज्ञान, सीलेण–शील, य–और, दंसणेण–दर्शन के द्वारा, पत्ते–प्राप्त हुए।

भावार्थ - भगवान् के क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन और क्षायिक चारित्र ने सर्वोत्तम लोकाग्र मे पहुँचाने वाली मुक्ति को सब कर्मो का नाश करके प्राप्त किया था। वह मुक्ति आदि और अनन्त है। कई लोग जीव मोक्ष से वापिस आ जाता है, ऐसा मानते है, किन्तु वह उक्ति–युक्त नहीं है। क्योकि ससार मे घुमाने वाले राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया आदि विकार है। जब तक ये विकार मौजूद रहते है, तब तक मुक्ति नही मिलती। अतएव मुक्त जीव के विकार नहीं होते और जिसके ये विकार नहीं है, वह ससार मे कैसे घूम सकता है ? अर्थात् मुक्तात्माए रागादि विकारो से रहित होने के कारण ससार मे वापिस नहीं आ सकती । यदि रागादि का सद्भाव माना जाय तो मुक्ति ही नही हो सकती। यदि बाद मे पैदा होते है, ऐसा कहा जाय तो वह भी ठीक नही है क्योकि विकारो को विकार ही पैदा करते हैं। जब मुक्तात्मा निर्विकार है, तो विकार पैदा ही नही हो सकते ।

रूक्खेसु णाए जह सामली वा,
जसिरइ रति वेदयति सुवन्ना।
वणेसु वा नदणमाहु सेट्ठ,
नाणेण सीलेण य भूइपण्णे।।१८।।

अन्वयार्थ-

जह–जैसे, रूक्खेसु–वृक्षो मे, सामली–शाल्मली वृक्ष, वा–तथा, वणेसु–वनो मे, नदण–नन्दन वन, सेट्ठ–श्रेष्ठ णाए–समझा जाता है जसि–जिसमे



कि, सुवन्ना–सुवर्णकुमार नामक भवनवासी देव, रति–रमण क्रीडा का, वेदयति–अनुभव करते है उसी प्रकार भगवान्, नाणेण–ज्ञान से, य–और सीलेण–चारित्र से श्रेष्ठ तथा, भूइपन्ने–प्रभुत ज्ञानशाली, आहु–कहे जाते है।

भावार्थ - जैसे सब वृक्षो मे शाल्मली (सेमल) का वृक्ष प्रधान एव श्रेष्ठ है। वह शाल्मली वृक्ष पृथ्वीकाय का है तथा नित्य है, तथा ससार के समस्त वनो मे नन्दन वन जैसा उत्तम है, क्योकि इन दोनो जगह वहाँ रहने वाले, तथा बाहर से आने वाले सुवर्णकुमार जाति के भवनवासी देव आनन्द क्रीडा करते तथा नानाप्रकार के विलास करते है। उसी प्रकार भगवान् महावीर भी सबमे उत्तम थे। क्योकि उस समय भगवान महावीर की बराबरी करने वाला न तो कोई ज्ञानवान् ही था और न चारित्र धारण करने वाला ही था। इस प्रकार सेमल वृक्ष तथा नन्दनवन की उपमा देकर भगवान् की स्तुति की गई है।

थणिय व सद्दान अणुत्तरे उ,
चदो व ताराण महाणुभावे।
गधेसु वा चदनणमाहु सेट्ठ,
एव मुणीण अपडिन्नमाहु।।१६।।

अन्वयार्थ-

व–जैसे, थणिय–मेघ की गर्जना, सद्दाण–सब शब्दो मे, अणुत्तरे उ–प्रधान है और, व–जैसे, चदो–चन्द्रमा, ताराण–सब तारो मे, महाणुभावे–मनोहर है, वा–अथवा, गधेसु–सब सुगन्धि–द्रव्यो मे, चन्दण–चन्दन को, सेट्ठ–श्रेष्ठ, आहु–कहते है, एव–इसी प्रकार भगवान् को भी, मुणीण – सब मुनियो की

अपेक्षा, अपडिन्न–इस लोक और परलोक की प्रतिज्ञा–कामना से विरक्त, आहु–कहते है।

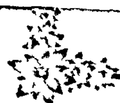
भावार्थ- जैसे सब शब्दो मे मेघ की गर्जना का शब्द बडा प्रबल होता है। सब शब्द उससे नीचे दर्जे के ही है, तथा सब नक्षत्र मण्डल मे चन्द्रमा सबसे सुन्दर एव प्रधान है, और सब सुगधवाले पदार्थो मे मलयज चन्दन उत्तम है, उसी प्रकार समस्त मुनियो मे भगवान् महावीर उस समय सबसे प्रधान थे, क्योकि उन्हे इस लोक और परलोक सम्बन्धी किसी भी विषय की कामना न थी।

जहा सयभू उदहीण सेट्ठे,
नागेसु वा धरणिदमाहु सेट्ठे।
खोओदए वा रसवेजयते,
तवोवहाणे मुणि वेजयते।।२०।।

अन्वयार्थ-

जहा–जैसे, सयभू–स्वयम्भूरमण, उदहीण–सब समुद्रो मे, सेट्ठे–श्रेष्ठ है, वा–तथा, धरणिद–धरणेन्द्र, नागेसु–नागकुमार जाति के भवनवासी देवो मे, सेट्ठे–श्रेष्ठ है, वा–और, खोओदए–इक्षुरस, रसवेजयते–सब रसो मे प्रधान है, उसी प्रकार, तवोवहाणे–विशिष्ट तप से, मुणि–भगवान् को, वेजयते–प्रधान, आहु–कहते है।

भावार्थ-समस्त समुद्रो मे स्वयभूरमण समुद्र प्रधान है, क्योकि वहाँ अनेक प्रकार के देव आकार क्रीडा करते है, तथा अपने चित्त को प्रसन्न करते हैं। उसी प्रकार सब ऋषि मुनियो मे भगवान् प्रधान थे, क्योकि वे भी अज्ञात विषयो का ज्ञान कराकर लोगो का चित्त प्रसन्न कर देते थे तथा नागकुमार–भवनवासियो मे धरणेन्द्र जिस तरह प्रधान है, अथवा समस्त



रसो मे गन्ने का रस जैसे प्रधान है, उसी तरह भगवान् भी सब लोगो मे प्रधान हे।

हत्थीसु एरावणमाहु, णाए,
सीहो मियाण सलिलाण गगा।

पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे,
निव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ।।२१।।

अन्वयार्थ-

हत्थीसु–सब हाथियो मे, ऐरावण णाए–ऐरावत हाथी, प्रधान है, मियाण–पशुओ मे, सीहो–सिह जैसे प्रधान है, सलिलाण–नदियो मे गगा का जल प्रधान है, वा–और, पक्खीसु–पक्षियो मे, वेणुदेवे–वेणुदेव का अर्थात्, गरुले–गरुण पक्षी प्रधान है, उसी प्रकार, इह–इस ससार मे, निव्वाणवादीण–मोक्ष मानने वालो के मध्य, णायपुत्ते–भगवान् महावीर को प्रधान, आहु–कहते है।

भावार्थ-सब हाथियो मे ऐरावत हाथी प्रधान है वह अपना चाहे जैसा रूप बना सकता है। ऐरावत हाथी का वर्णन साहित्य मे सफेद किया जाता है। सफेद हाथी जहॉ होता है वहॉ की श्री–वृद्धि होती है। जबसे भगवान् गर्भ मे आए थे, तब ही से महाराज सिद्धार्थ की श्री–वृद्धि हुई थी। इसीसे भगवान् का नाम भी वर्द्धमान पड गया था। इसीलिए कहा गया है कि सब हाथियो मे ऐरावत हाथी की भॉति तथा पशुओ मे सिह के समान, नदियो मे गगा के जल की तरह और पक्षियो मे गरुड पक्षी की तरह भगवान् समस्त मोक्ष वादियो मे प्रधान थे, क्योकि भगवान् ने ही मोक्ष का यथार्थ स्वरूप और मार्ग बताया है।

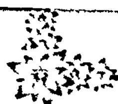
जोहेसु णाए जह वीससेणे,
पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु।
खत्तीणसेट्ठे जह दतवक्के,
इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे।।२२।।

अन्वयार्थ-

जह–जैसे, जोहेसु–योद्धाओ मे, वीससेणे–वासुदेव, णाए–प्रधान है, वा–और, पुप्फेसु–फूलो मे, अरविंद–कमल सुगन्धिवाला है तथा जह–जैसे, खत्तीण–क्षत्रीयो मे, दतवक्के–चक्रवर्ती, सेट्ठे–प्रधान है, तह–उसी प्रकार, इसीण–ऋषियो मे, वद्धमाणे–भगवान वर्द्धमान स्वामी को, सेट्ठे–प्रधान, आहु–कहते है।

भावार्थ-चक्रवर्ती के चौरासी लाख हाथी, चौरासी लाख घोडे और छियानवे करोड पैदल सेना होती है और वह खुद भी बीस लाख अष्टापदो के बल बराबर बल वाला होता है, अतएव चक्रवर्ती से, अथवा वासुदेव से बढिया कोई दूसरा योद्धा नही हो सकता, तथा सब सुगधि वाले पुष्पो मे कमल प्रधान होता है और समस्त क्षत्रियो मे जैसे चक्रवर्ती प्रधान है, उसी तरह भगवान् महावीर उस समय के समस्त ऋषिमुनियो मे श्रेष्ठ थे।

दाणाण सेट्ठ अभयप्पयाण,
सच्चेसु वा अणवज्ज वयति।
तवेसु वा उत्तम बभचेर,
लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते।।२३।।



अन्वयार्थ-

दाणाण–दानो मे, अभयप्पयाण–अभयदान, सेट्ठ–श्रेष्ठ है, वा–और, सच्चेसु–सत्यो मे, अणवज्ज–दूसरो को पीडा न पैदा करने वाला सत्य, वा–और, तवेसु–सब तपो मे, बभचेर–ब्रह्मचर्य को, उत्तम–उत्तम, वयति–कहते है, उसी तरह, समणे–श्रमण–नायपुत्ते–भगवान् महावीर, लोगुत्तमे–लोक मे श्रेष्ठ हे।

भावार्थ-स्व पर के हित के लिए किसी वस्तु का दिया जाना दान कहलाता है। दान अनेक प्रकार का है। उनमे से प्राणियो की रक्षा करने वाला अभयदान सब दानो मे उत्तम है। इसी तरह सत्य के भी कई भेद हे। उनमे से दूसरे को पीडा न पहुचाने वाला–प्रियसत्य अच्छा है और समस्त तपो मे ब्रह्मचर्य जैसे प्रधान है, उसी प्रकार भगवान् महावीर स्वामी भी लोक मे उत्तम थे।

ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा,
सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।

निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा,
ण णायुपत्ता परमत्थि णाणी।।२४।।

अन्वयार्थ-

जह–जेसे, ठिईण–आयु वालो मे, लवसत्तमा–पाच अनुत्तर विमानो मे बसने वाले देव, सेट्ठा–श्रेष्ठ होते है, सभाण–सब सभाओ मे, सुहम्मा–सोधर्म इन्द्र की, सभा–सभा, सेट्ठा–श्रेष्ठ है, सव्वधम्मा–ससार के सब धर्मो मे, निव्वाणसेट्ठा–मोक्ष प्रधान है किन्तु, णायपुत्ता–भगवान् महावीर से,

परम्–उत्तम, णाणी–ज्ञानी, न–कोई भी नहीं अत्थि–है।

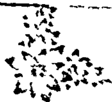
भावार्थ-उत्कृष्ट स्थिति मे सर्वार्थसिद्धि के देव प्रधान हे, क्योकि सुखपूर्वक रहते हुए इतनी स्थिति पाचवे अनुत्तर विमान के देवो के सिवाय ओर किसी की नही है, उनके बराबर सुख भी किसी दूसरे को नहीं हे, तथा जिस तरह सोधर्म इन्द्र की सभा अन्य सभाओ से उत्तम हे, और सव आस्तिक (परलोक, स्वर्ग, नरक, आत्मा आदि पदार्थो को मानने वाले) धर्मो का फल एक मुक्ति ही है क्योकि मिथ्यात्व मार्ग की पुष्टि करने वाले भी अपने को मोक्षमार्गी मानते है अत निर्वाण श्रेष्ठ है, उसी तरह भगवान् भी समस्त ज्ञानियो मे उत्कृष्टज्ञानी थे, उस समय उनकी बरावरी करने वाला कोई दूसरा न था।

पुढोवमे धुणइ विगयगेही,
न सण्णिहि कुव्वइ आसुपन्ने।

तरिउ समुद्द व महाभवोघ,
अभयकरे वीर अणतचक्खू।।२५।।

अन्वयार्थ-

वीर–भगवान् महावीर, पुढोवमे–पृथ्वी की तरह आधारभूत अथवा पृथ्वी की तरह परीषह और उपसर्ग आदि को सहने वाले तथा, धुणइ–अष्ठ कर्मो को दूर करते हैं, विगयगेही–अभिलाषा से रहित तथा जो, सण्णिहिं–द्रव्य आदि का सचय, न–नहीं कुव्वइ–करते, आसुपन्ने–और जिनका ज्ञान हित उपयोग वाला है, समुद्द–समुद्र की, व–भाति, महाभवोघ–पर्यायो के समूहरूप ससार को, तरिउ–तैरकर, अभयकरे–अपनी और दूसरे जीवो की रक्षा करने वाले और, अणतचक्खू–अनन्त दर्शनवान् थे।



* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

भावार्थ-ससार के प्राणी पृथ्वी पर सब प्रकार के कार्य करते हैं किन्तु पृथ्वी किसी पर क्रोध नहीं करती, वह सब कुछ सहन करती है। इसी तरह भगवान् महावीर भी परीषह और उपसर्गादि सब सहन करते थे, न किसी पर अप्रसन्न होते और न प्रसन्न। पृथ्वी जिस तरह सबका आधार है, भगवान् भी रक्षक होने से जीवो के आधाररूप थे। प्रभु महावीर आठ कर्मो से रहित, वाह्य वस्तुओ की ममता से रहित थे, तथा उन्हे किसी वस्तु के जानने के लिए छद्मस्थ की तरह सोचने विचारने की आवश्यकता न थी क्योकि भगवान् हर एक समय उपयोगात्मक ज्ञान से युक्त थे, तथा अनेक दु खो से भरे हुए ससाररूपी समुद्र को तिरकर मुक्त होने वाले, स्वय जीवो की रक्षा करने वाले और उपदेश देकर दूसरो से रक्षा कराने वाले, तथा अनन्त पदार्थो को जानने से अनन्त ज्ञानवान् थे।

कोह च माण च तहेव माय,
लोह चउत्थ अज्झत्थदोसा।
एआणि वता अरहा महेसी,
ण कुव्वई पाव ण कारवेइ।।२६।।

अन्वयार्थ-

भगवान् महावीर स्वामी, कोह–क्रोध, च–और, माणं–मान, च–और, माय–माया को, तहेव–इसी प्रकार, चउत्थ–चौथे, लोह–लोभ को, एआणि–इन, अज्झत्थदोसा–आध्यात्मक–आत्म सबधी दोषो को, वता–त्यागकर, अरहा–अर्हत तथा, महेसी–महर्षि हुए, तथा पाव–पाप, ण–न, कुव्वई–स्वय करते, ण–नही, कारवेइ–दूसरो से कराते हे।

भावार्थ-कारण के नाश होने पर कार्य का भी नाश हो जाता है। ससार के कारण क्रोध, मान, माया और लोभ है, अत इनके नाश होते ही ससार का

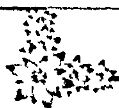
भी नाश हो जाता है, इसलिए भगवान् क्रोध आदि को नष्ट करके अर्हन्तदशा एव महर्षिपद को प्राप्त हुए, क्योकि वास्तव मे क्रोधादि को दूर किये बिना कोई महर्षि नहीं हो सकता। भगवान् न स्वय पाप करते है न दूसरो से पाप कराते है।

किरियाकिरिय वेणईयाणुवाय,
अण्णाणियाण पडियच्च ठाण।
से सव्ववाय इइ वेयइत्ता,
उवट्ठिए सजमदीहराय।।२७।।

अन्वयार्थ-

से—वह भगवान् महावीर, किरिया—किरिय—क्रियावाद और अक्रियावाद के, वेणइयाणुवाय—वैनयिकवाद के, अण्णाणियाण—तथा अज्ञानवाद के, ठाण—पक्ष को, पडियच्च—जानकर तथा सव्ववाय—अन्य समस्त वादो के पक्ष को, इति—सम्यक् प्रकार, वेयइत्ता—समझकर, सजमदीहराय—यावज्जीवन सयम मे, उवट्ठिए—उपस्थित हुए।

भावार्थ-लोक मे अनेक मत प्रचलित हैं। कोई लोग क्रिया से ही मोक्ष मानते है, उनके मत मे दीक्षा लेने मात्र से मुक्ति हो जाती है। कोई लोग अक्रियावादी है उनका मत है कि मुक्ति के लिए सिर्फ ज्ञान की ही आवश्यकता है, चारित्र की आवश्यकता नहीं। गोशालक मत के मानने वाले विनय से ही मोक्ष मानते हैं, तथा कोई—कोई अज्ञान से ही मोक्ष मानते हैं, और भी अनेक प्रकार के सिद्धान्त है, उन सब को भगवान् अच्छी तरह जानकर तथा दूसरो को यथार्थ समझाकर सयम मे तत्पर हो गये अर्थात् जिस प्रकार का उपदेश दिया, उसको ही आचरण मे भी लाए।



से वारिया इत्थि सराइभत्त,
उवहाणव दुक्खखयठ्ठयाए।

लोग विदित्ता आर पर च,
सव्व पभू वारिय सव्ववार ।।२८।।

अन्वयार्थ-

से–उन, उवहाणव–तपस्वी, पभू–भगवान् महावीर ने, दुक्खखयठ्ठयाए–आठ प्रकार के कर्मरूपी दु खो को नाश करने के लिए, सराइभत्त–रात्रि भोजन के साथ ही साथ, इत्थी–स्त्री सभोग आदि पापो को, वारिया–त्याग कर, सव्व–तथा समस्त, आर–इस, लोग–लोक को, च–और, पर–परलोक को, विदित्ता–जानकर, सव्ववार–बहुतायत से, वारिया–निवारण किया।

भावार्थ-जो वक्ता जिस प्रवृत्ति का उपदेश देवे उसे उसी प्रकार वर्ताव करना चाहिए तब ही उपदेश का प्रभाव होता है। भगवान् महावीर ने मोक्ष प्राप्त करने का जो उपदेश दिया, वे स्वय भी उसी मार्ग मे प्रवृत्त हुए। इसीलिए कहा गया है कि भगवान् ने आठ कर्म रूपी दु खो को नाश करने के लिए स्त्री–सम्भोग का तथा रात्रि भोजन, प्राणातिपात मृषावाद आदि समस्त पापो का त्याग किया था तथा घोर तपस्या करके इस लोक और परलोक को अथवा मनुष्यलोक तथा नरकादि लोक को जानकर सब का त्याग किया था।

सोच्चा य धम्म अरहतभासिय,
समाहिय अठ्ठपदोवसुद्ध।

त सद्दहाणा य जणा अणाऊ,
इदे व देवाहिव आगमिस्सति।।२६।।

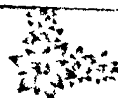
अन्वयार्थ-

समाहित–सम्यक् प्रकार से कहे हुए, य–और, अट्ठपदोवसुद्ध–अर्थ और पदो से निर्दोष, अरहतभासिय–अर्हन्त भगवान् द्वारा कहे हुए, त–उस, धम्म–धर्म को, सोच्चा–सुनकर, सद्दहाणा–श्रद्धा करने वाले, जणा–मनुष्य, देवाहिव–देवो के स्वामी, इन्दे–इन्द्र, व–तथा, अणाऊ–आयुरहित सिद्ध, आगमिस्सति–होवेगे।

भावार्थ-श्री सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी से उपसहार करते हुए कहते है कि जो अर्हन्त भगवान् के द्वारा कहे हुए धर्म का श्रद्धान करते है वे आयु कर्म से रहित हो, मुक्ति प्राप्त करते हैं, अथवा इन्द्रादि होते है और होते रहेगे।

नमि-पव्वज्जा

चइऊण देवलोगाओ उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि।
उवसंत–मोहणिज्जो, सरई पोराणिय जाइ।।१।।
जाइ सरित्तु भवय, सयसबुद्धो अणत्तरे धम्मे।
पुत्त ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया।।२।।
से देवलोग सरिसे अन्तेउर–वर–गओ वरे भोए।
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चियई।।३।।
मिहिल सपुर–जणवय बलमोरोह च परियण सव्व।
चिच्चा अभिनिक्खतो एगत–महिड्ढिओ भयव।।४।।



कोलाहलग–सभूय आसी मिहिलाए पव्वयतम्मि।
तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमतम्मि।।५।।
अब्भुट्ठिय रायरिसि, पव्वज्जा–ठाण–मुत्तम।
सक्को माहण–रूवेण, इम वयण–मब्बवी।।६।।
किण्णु भो! अज्ज मिहिलाए, कोलाहलग–सकुला।
सुव्वति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य।।७।।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविद इणमब्बवी।।८।।
मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे।
पत्त–पुप्फ–फलोवेए, बहूण बहु–गुणे सया।।६।।
वाएण हारमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कदंति भो खगा।।१०।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ नमी रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी।।११।।
एस अग्गी य वाऊ य, एय डज्झइ मदिर।
भयव अतेउर तेण, कीस ण णवपेक्खह?।।१२।।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ नमी रायरिसि, देविद इणमब्बवी।।१३।।
सुह वसामो जीवामो जेसि मो णत्थि किचण।
मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किचण।।१४।।
चत्त–पुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो।

पिय ण विज्जई किंचि, अप्पियं पि न विज्जई।।१५।।
बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ।।१६।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।१७।।
पागारं कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि य।
उस्सूलग-सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया।।१८।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।१९।।
सद्धं णगरं किच्चा, तव-संवरमग्गलं।
खंतिं निउण-पागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं।।२०।।
धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया।
धिइं च केयणं किच्चा सच्चेण पलिमंथए।।२१।।
तव-णारायजुत्तेण, भित्तूणं कम्म-कंचुयं।
मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए।।२२।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।२३।।
पासाए कारइत्ताणं, वद्धमाण गिहाणि य।
वालग्ग-पोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया।।२४।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।२५।।
संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं।

जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासय ।।२६।।
एयमट्ठ निसामित्ता हेउ–कारण–चोइओ।
तओ नमी रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी।।२७।।
आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे।
नगरस्स खेम काऊण, तओ गच्छसि खत्तिया।।२८।।
असइ तु मणुस्सेहि, मिच्छा–दडो पउंजइ।
अकारिणोऽत्थ वज्झति, मुच्चई कारओ जणो।।३०।।
एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ–कारण चोइओ।
तओ णमि रायरिसि देविंदो इणमब्बवी।।३१।।
जे केइ पत्थिवा तुज्झ, णाणमति णराहिवा।
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया।।३२।।
एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ णमी रायरिसि, देविंदं इणमब्बवी।।३३।।
जो सहस्स सहस्साण सगामे दुज्जए जिणे।
एग जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ।।३४।।
अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ।
अप्पणा मेव अप्पाण, जइत्ता सुहमेहए।।३५।।
पचिंदियाणि कोह, माण माय तहेव लोह च।
दुज्जय चेव अप्पाण, सव्वं अप्पे जिए जिय।।३६।।
एयमट्ठ णिसामिता, हेउ–कारण चोइओ।
तओ णमि रायरिसि देविंदो इणमब्बवी।।३७।।

जइत्ता विउले जण्णे, भोइत्ता समण–माहणे।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया।।३८।।
एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ णमी रायरिसि, देविंद इणमब्बवी।।३६।।
जो सहस्स सहस्साण, मासे मासे गव दए।
तस्स वि सजमो सेओ, अदितस्सऽवि किचण।।४०।।
एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ णमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी।।४१।।
घोरासम चइत्ताण, अन्नं पत्थेसि आसम।
इहेव पोसह रओ, भवाहि मणुयाहिवा।।४२।।
एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ णमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी।।४३।।
मासे मासे उ जो बालो, कुसग्गेण तु भुजए।
न सो सुयक्खाय धम्मस्स, कल अग्घइ सोलसि।।४४।।
एयमट्ठ णिसामित्ता हेउ–कारण–चोइओ।
तओ णमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी।।४५।।
हिरण्ण सुवण्ण मणिमुत्तं, कस दूस च वाहण।
कोस वड्ढावइत्ताण, तओ गच्छसि खतिया।।४६।।
एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ णमि रायरिसि, देविंद इणमब्बवी।।४७।।
सुवण्ण–रुप्पस्स उ पव्वया भवे,
सिया हु केलास–समा असखया।।४८।।

णरस्स लुद्धस्स ण तेहि किंचि,
इच्छा हु आगाससमा अणंतिया।।४६।।
पुढवी साली जवा चेव, हिरण्ण पसु भिस्सह।
पडिपुण्ण णालमेगस्स इइ विज्जा तव चरे।।५०।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ णमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी।।५१।।
अच्छेरगमब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा।
असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि।।५२।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ–कारण–चोइओ।
तओ णमि रायरिसी, देविंद इणमब्बवी।।५३।।
सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा।
कामे भोए पत्थेमाणा, अकामा जंति दोग्गइ।।५४।।
अहे वयंति कोहेण, माणेण अहमा गई।
माया गइ–पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं।।५५।।
अवउज्झिऊण माहण–रूव, विउव्विऊण इंदत्तं।
वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहि महुराहि वग्गूहि।।५६।।
अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ।
अहो ते निरक्किया माया, अहो लोहो वसीकओ।।५७।।
अहो ते अज्जवं साहू, अहो ते साहु मद्दवं।
अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा।।५८।।
इह सि उत्तमो भंते, पच्छा होहिसि उत्तमो।

लोगुत्तमुत्तम ठाण, 'सिद्धि गच्छसि नीरओ।।५६।।

एव अभित्थुणतो, रायरिसि उत्तमाए सिद्धाए।
पयाहिण करेतो, पुणो पुणो वदई सक्को।।६०।।

तो वदिऊण पाए, चक्ककुस–लक्खणे मुणिवरस्स।
आगासेणुप्पइओ ललिय–चवल–कुडल–तिरीडी।।६१।।

णमी णमेइ अप्पाण, सक्ख सक्केण चोइओ।
चइऊण गेह च वेदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ।।६२।।

एव करेति सबुद्धा, पडिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसी।।६३।।

– उत्तराध्ययन सूत्र

सुभाषित

चइत्ता भारह वास, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संती सतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तर।।१।।

देव–दाणव–गधव्वा, जक्ख–रक्खस्स–किन्नरा।
बभयारिं नमसति, दुक्कर जे करति त।।२।।

जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयण जे करेति भावेण।
अमला असकिलिट्ठा, ते हुति परित्त–ससारी।।३।।

एगे जिए जिया पच, पच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताण सव्वसत्तू जिणामह।।४।।

रागो य दोसो बिय कम्मबीय,
कम्म च मोहप्पभव वयति।

कम्म च जाईमरणस्स मूल,
दुक्ख च जाईमरण वयति।।५।।

दुक्ख हय जस्स न होइ मोहो,
मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।

तण्हा हया जस्स न होइ लोहो,
लोहो हओ जस्स न किचणाइ।।६।।

नाणेण जाणई भावे, दसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाई, तवेण परिसुज्झई।।७।।

सागारी अनशन के समय

सकोइयसडासा उवट्टते य कायपडिलेहा।
दव्वाइ–उवओग–उस्सास–निरुभणाए।।८।।

जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए।
आहारमुवहि–देह सव्व तिविहेण वोसिरिय।।९।।

पाणाइवायमलिक्क चोरिं मेहुणं दविणमुच्छ।
कोह माण माय लोह पिज्ज तहा दोस।।१०।।

कलहमभक्खाण पेसुन्न रइ–अरइसमाउत्त।
परपरिवाय मायामोस मिच्छत्तसल्ल च।।११।।

वोसिरिसु इमाइ मोक्खमग्गससग्गविग्घभूयाइ।
दुग्गइनिबधणाइ अट्ठारसपावठाणाइ।।१२।।

एगोऽहं, नत्थि मे कोइ, नाहमण्णस्स कस्सई।
एवमदीणमणसा अप्पाणमणुसासइ।।१३।।

एगो मे सासओ अप्पा नाणदसणसजुओ।
सेसा मे बहिरा भावा, सव्वे सजोगलक्खणा।।१४।।

सजोगमूला जीवेण पत्ता दुक्ख–परपरा।
तम्हा सजोगसबध सव्व तिविहेण वोसिरिय।।१५।।

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्त य दुप्पट्ठिय–सुपट्ठिओ।।१६।।

अप्पा नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नदण वण।।१७।।

सारं दसणनाण, सार तव नियत खजन सील।
सार जिणवरधम्म सार सलेहणा पडिय मरण।।१८।।

मज्ज विजय–कसाया, निद्दा विगहा य पचमी भणिया।
एए पच पमाया, जीवा पाडति ससारे।।१६।।

क्षमापना-पाठ

खामेमि सव्वे जीवा, सव्व जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेर मज्झ न केणइ।।२०।।

एवमह आलोइय, निदिय–गरहिय–दुगुच्छिय सव्व।
तिविहेण पडिक्कतो, वदामि जिण चउवीस।।२१।।

आयरिय–उवज्झाए सीसे साहम्मिए कुले गणे य।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि।।२२।।

सव्वस्स समणसघस्स भगवओ अजलि करिय सीसे।
सव्व खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहयपि।।२३।।

सव्वस्स जीवरासिस्स भावओ धम्मिनिहियनियचित्तो।
सव्व खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयपि।।२४।।

धर्ममंगल-स्तुति

धम्मो मगलमुकिट्ठ, अहिसा सजमो तवो।
देवावि त नमसति जस्स धम्मे सया मणो।।२५।।

जाइ–जरा–मरण–सोगपणासणस्स,
कल्लाण–पुक्खलविसालसुहावहस्स।

को देव–दाणव–नरिंदगणच्चिअस्स,
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमाय।।२६।।

सिद्धे भो । पयओ णमो जिणमए नदी सआ सजमे।
देव नाग–सुव्वण–किन्नर–गणस्सब्भूअभावच्चिए।।२७।।

लोगो जत्थ पइह्रिओ जगमिण तेलुक्कमच्चासुर।
धम्मो वड्ढइ सासओ, विजयओ धम्मुत्तर वड्ढउ।।२८।।

लब्भति विमला भोए, लब्भति सुरसपया।
लब्भति पुत्त–मित्त च, एगो धम्मो न लब्भई।।२६।।



मंगल-सूत्र

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र–महिता·
सिद्धाश्च सिद्धि – स्थिता।
आचार्य जिनशासनोन्नतिकरा ,
पूज्या उपाध्यायका ।।
श्रीसिद्धान्त–सुपाठका मुनिवरा,
रत्न – त्रयाराधका।
पचैते परमेष्ठिन प्रतिदिन,
कुर्वन्तु नो. मगलम्।।१।।
अर्हन्तो ज्ञान–भाज सुरवर–महिता,
सिद्धि – सौधस्थ – सिद्धा।
पचाचारप्रवीणा प्रगुणगणधरा,
पाठकाश्चागमानाम् ।।
लोके लोकेश–वन्द्या सकल–यतिवरा,
साधु – धर्माभिलीना,।
पचाऽप्येते सदाऽप्ता विदधतु कुशल,
विघ्न – नाश विधाय।।२।।
वीर सर्वसुरासुरेन्द्र – महितो,
वीर बुधा सश्रिता।
वीरेणाभिहत स्वकर्म–निचयो,
वीराय नित्य नम ।।
वीरात् तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुल,

वीरस्य धीर तपो।
वीरे श्री–धृति–कीर्ति–कान्तिनिचयो,
हे वीर ! भद्र दिश।।३।।
ससार – दावानल – दाह–नीर,
सम्मोह – धूलीहरणे समीरम्।
मायारसादारण – सार – सीर,
नमामि वीर गिरिसार–धीरम् ।।४।।
त्व नाथ ! दु खिजन – वत्सल ! हे शरण्य !
कारुण्य – पुण्य – वसते ! वशिना वरेण्य !
भक्त्या नते मयि महेश ! दया विधाय,
दु खाकुरोद्दलन – तत्परता विधेहि ।।५।।
देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तु – सार !
ससारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ !
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मा पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद – व्यसनाम्बु – राशे ।।६।।

श्री चतुर्विंशति जिन-स्तोत्र

आदौ नेमिजिन नौमि, सभव सुविधि तथा।
धर्मनाथ महादेव, शान्ति शान्तिकर सदा।।१।।
अनन्त सुव्रत भक्त्या, नमिनाथ जिनोत्तमम्।
अजित जितकन्दर्प, चन्द्र चन्द्रसमप्रभम्।।२।।
आदिनाथ तथा देव, सुपार्श्व विमल जिनम्।
मल्लिनाथ गुणोपेत, धनुषा पचविशतिम्।।३।।

अरनाथ महावीर, सुमति च जगद्गुरुम्।
श्रीपद्मप्रभनामान, वासुपूज्य सुरैर्नतम्।।४।।

शीतलं शीतल लोके, श्रेयास श्रेयसे सदा।
कन्थुनाथच वामेय, श्री अभिनन्दन जिनम्।।५।।

जिनाना नामभिर्बद्ध पचषष्ठि – समुद्भव।
यत्रोऽय राजते यत्र, तत्र सौख्य निरन्तरम्।।६।।

यस्मिन् गृहे महाभक्त्या, यत्रोऽय पूज्यते बुधै।
भूत – प्रेत – पिशाचादेर्–भय तत्र न विद्यते।।७।।

सकलगुणनिधान यन्त्रमेन विशुद्ध।
हृदय–कमलकोषे धीमता ध्येयरूपम् ।।८।।

जयतिलकगुरु – श्रीसूरिराजस्य शिष्यो।
वदति सुखनिदान मोक्षलक्ष्मी – निवासम्।।६।।

महावीराष्टक-स्तोत्र

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचित,
सम भान्ति ध्रौव्य–व्यय–जनि–लसन्तोऽन्तरहिता।

जगत् – साक्षी मार्ग – प्रकटनपरो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी नयन – पथ – गामी भवतु मे।।१।।

अताम्र यच्चक्षु–कमल–युगल स्पन्दरहित,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाऽभ्यन्तरमपि।

स्फुट मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वाति विमला,
महावीरस्वामी नयन – पथ – गामी भवतु मे।।२।।

नमन्नाकेन्द्राली–मुकुट – मणिभा – जाल–जटिल,
लसत्पादाम्भोजद्वयमिह यदीय तनु – भृताम्।
भवज्वाला–शान्त्यै प्रभवति जल वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयन – पथ – गामी भवतु मे।।३।।

यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत स्वर्गी गुण–गण–समृद्ध सुख–निधि।
लभन्ते सद्‌भक्ता शिव–सुख–समाज किमु तदा?
महावीरस्वामी नयन–पथ–गामी भवतु मे।।४।।

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर् ज्ञान – निवहो,
विचित्रात्माऽप्येको नृपतिवर – सिद्धार्थ–तनय।
अजन्माऽपि श्रीमान् विगत भवरागोऽद्‌भुतगतिर्,
महावीरस्वामी नयन–पथ–गामी भवतु मे।।५।।

यदीया वाग्–गंगा विविध–नय–कल्लोल–विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनता या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुधजन – मरालै परिचिता,
महावीरस्वामी नयन–पथ–गामी भवतु मे।।६।।

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी काम – सुभट,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजित।

स्फुरन्नित्यानन्द – प्रशमपदराज्याय स जिन,
महावीरस्वामी नयन – पथ – गामी भवतु मे।।७।।

महामोहातक – प्रशमनपराऽऽकस्मिक – भिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर् विदितमहिमा मगल–कर।

शरण्य साधूना भव – भयभृतामुत्तम – गुणो,
महावीरस्वामी नयन – पथ – गामी भवतु मे।।८।।

महावीराष्टक स्तोत्र, भक्त्या भागेन्दुना कृतम्।
य पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमा गतिम्।।६।।

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र

कि कर्पूर – मय सुधारसमय कि चन्द्ररोचिर्मय,
कि लावण्यमय महामणिमय कारुण्यकेलीमयम्।

विश्वानन्दमय महोदयमय शोभामय चिन्मय,
शुक्लध्यानमय वपुर्जिनपतेर्भूयाद् भवालम्बनम्।।१।।

पाताल कलयन् धरा धवलयन्नाकाशमापूरयन्,
दिक्चक्र क्रमयन् सुरासुरनर श्रेणि च विस्मापयन्।

ब्रह्माड सुखयन् जलानि जलधे फेनच्छलाल्लोलयन्,
श्रीचिन्तामणि – पार्श्वसभवयशोहसश्चिर राजते।।२।।

पुण्याना विपणिस्तमोदिन मणि कामेभकुम्भे सृणि,
मोक्षे निस्सरणि· सुरेन्द्रकरिणी ज्योति प्रकाशारणि।

दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणि कृपा – सारिणि,
विश्वानदसुधाघृणिर्भवभिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणि ।।३।।

श्रीचिन्तामणिपार्श्वविश्वजनतासजीवनस्त्व मया,
दृष्टस्तात ! तत श्रिय समभवन्नाशक्रमाचक्रिणम् ।

मुक्ति क्रीडति हस्तयोर्वहुविध सिद्ध मनोवाछित,
दुर्दैव दुरित च दुर्दिनभय कष्ट प्रणष्ट मम ।।४।।

यस्य प्रौढतम – प्रतापतपन प्रोद्दामधामा जगज्,
जघाल कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वसक ।

नित्योद्द्योतपद समस्तकमलाकेलीगृह राजते,
स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकरश्चिन्तामणि पातु माम् ।।५।।

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोपि कल्पाकुरो,
दारिद्र्याणि गजावलीं हरिशिशु काष्ठानि वह्ने कण ।

पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवह यद्वत्तथा ते विभो,
मूर्ति स्फूर्तिमती सती त्रिजगती–कष्टानि हर्तुक्षमा ।।६।।

श्री चिन्तामणिमन्त्रमोकृतियुत हीकारसाराश्रित,
श्रीमर्ह नमिऊणपासकलित त्रैलोक्य वश्यावहम् ।

द्वेधाभूतविषापह विषहर श्रेय – प्रभावाश्रय,
सोल्लास वसहाकित जिनफुलिगानन्दद देहिनाम् ।।७।।

ही श्रीकारवर नमोऽक्षरपर ध्यायन्ति ये योगिनो,
हृत्पद्मे विनिवेश्य पर्श्वमधिप चिन्तामणीसज्ञकम् ।

भाले वामभुजे च नाभिकरयोर् भूयो भुजे दक्षिणे,
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपद द्वित्रैर्भवैर् यान्त्यहो ।।८।।

नो रोगा नैव शोका, न कलहकलना, नारिमारिप्रचारा।
नैवाधिर्नासमाधिर् न च दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो।।

नो शाकिन्यो ग्रहा नो, न हरिकरिगणा, व्यालवैतालजाला।
जायन्ते पर्श्वचिन्तामणि नतिवशत प्राणिनाभक्तिभाजाम्।।६।।

गीर्वाणद्रुमधेनु – कुम्भमणयस्तस्यागणे रिंगिणो,
देवा दानवमानवा सविनय तस्मै हितध्यायिन ।

लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिना ब्रह्माण्डसस्थायिनी,
श्री चितामणिपार्श्वनाथमनिश सस्तौतियो ध्यायति।।१०।।

इति जिनपति – पार्श्व पार्श्वपार्श्वाख्ययक्ष,
प्रदलितदुरितौघ' प्रीणित – प्राणिसार्थ ।

त्रिभुवन – जनवाञ्छादान चिन्तामणीक,
शिवपद – तरुबीज बोधिबीज ददातु।।११।।

श्री जिन-पञ्चर-स्तोत्र

(आचार्य श्री कमलप्रभ)

ॐ ही श्री अर्ह अर्हद्भ्यो नमो नम ।
ॐ ही श्री अर्ह सिद्धेभ्यो नमो नम ।
ॐ ही श्री अर्ह आचार्येभ्यो नमो नम ।
ॐ ही श्री अर्ह उपाध्यायेभ्यो नमो नम ।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्योनमोनम ।।१।।

एष पचनमस्कार सर्व – पाप – क्षयकर ।
मगलाना च सर्वेषा, प्रथम भवति मगलम् ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्ह परमात्मने नम ।
कमलप्रभ – सुरीन्द्रो, भाषते जिनपजरम् ।।३।।

एक भक्तोपवासेन त्रिकाल य पठेदिदम् ।
मनोऽभिलषित सर्व, फल स लभते ध्रुवम् ।।४।।

भूशय्या – ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभ – विवर्जित ।
देवताग्रे पवित्रात्मा, षणमासैर्लभते फलम् ।।५।।

अर्हन्त स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्ध चक्षुर्ललाटके ।
आचार्य श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्याय तु नासिके ।।६।।

साधुवृन्द मुखस्याग्रे, मन शुद्धि विधाय च ।
सूर्य – चन्द्र – निरोधेन, सुधी सर्वार्थसिद्धये ।।७।।

दक्षिणे मदन–द्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिन ।
अङ्ग – सन्धिषु सर्वज्ञ परमेष्ठी शिवकर ।।८।।

पूर्वाशा च जिनो रक्षेद् आग्नयीं विजितेन्द्रिय ।
दक्षिणाशा परं ब्रह्म, नैऋर्तीं च त्रिकालवित् ।।९।।

पश्चिमाशा जगन्नाथो, वायव्या परमेश्वर ।
उत्तरा तीर्थकृत् सर्वामीशानेऽपि निरञ्जन ।।१०।।

पाताल भगवानर्हन्नाकाश पुरुषोत्तम।
रोहिणी – प्रमुखा देव्यो रक्षन्तु सकल कुलम् ।।११।।

ऋषभो मस्तक रक्षेद् अजितोऽपि विलोचने।
सम्भव कर्णमयुगलेऽभिनन्दनस्तु नासिके।।१२।।

ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभु।
जिह्वा सुपार्श्वदेवोऽय तालु चन्द्रप्रभाऽभिध ।।१३।।

कण्ठ श्रीसुविधी रक्षेद् हृदय जिनशीतल।
श्रेयासो बाहुयुगल, वासुपूज्य कर – द्वयम् ।।१४।।

अगुलीविमलो रक्षेद्, अन्नतोऽसौ नखानपि।
श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाभिमण्डलम्।।१५।।

श्रीकुन्थुर्गुह्यक रक्षेद्, अरो लोम कटी तटम्।
मल्लिरुरुपृष्ठमश, पिण्डिका मुनिसुव्रत ।।१६।।

पादागुलीर्नमी रक्षेद्, श्रीनेमिश्चरणद्वयम्।
श्रीपार्श्वनाथ सर्वाग, वर्धमान चिदात्मकम् ।।१७।।

पृथिवी – जल – तेजस्क–वाय्वाकाशमय जगत्।
रक्षेद शेषपापेभ्यो, वीतरागो निरजन ।।१८।।

राजद्वारे श्मशाने च, सग्रामे शत्रु–सकटे।
व्याघ्र – चौराग्नि – सर्पादि – भूत–प्रेत–भयाश्रिते ।।१९।।

अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते।
अपुत्रत्वे महादु खे, मूर्खत्वे रोग–पीडते।।२०।।

डाकिनी – शाकिनी – ग्रस्ते, महाग्रह – गणार्दिते।
नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत्।।२१।।

प्रातरेव समुत्थाय, य स्मरेज्जिनपञ्जरम्।
तस्य किचिद् भय नास्ति, लभते सुखसम्पद।।२२।।

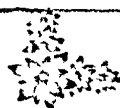
जिनपंजरनामेद, य स्मरेदनुवासरम्।
कमल – प्रभसूरीन्द्र – श्रिय स लभते नर।।२३।।

प्रात समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो,
य स्तोत्रमेतज्जिन – पजरस्य।
आसादयेत् स कमल प्रभाख्यो,
लक्ष्मी - मनोवाञ्छितपूरणाय।।२४।।

श्रीरुद्रपल्लीय – वरेण्य – गच्छे,
देवप्रभाचार्य – पदाब्ज – हस।
वादीन्द्र – चूडामणिरेष जैनो,
जीयादसौ, श्रीकमल – प्रभाख्य ।।२५।।

यह अभेध कवच स्तोत्र है। रक्षा के लिए इस स्तोत्र का और कोई मुकाबला नही है। यह प्रमाणित अनुभूत एव सदा फलदायी स्तोत्र है। इससे पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण, ऊपर–नीचे चारो तरफ से सर्वथा सुरक्षा होती हे। दिशाओ का क्रम क्लोकवाइज होने से यह बहुत जल्दी फल देता है। क्षेत्र शुद्धि, दिशा शुद्धि और काल शुद्धि का अचूक उपाय इसमे गर्भित है।

चौबीस तीर्थकरो की मस्तिष्क से पैर तक प्राण–प्रतिष्ठा कर



दैहिक परमाणु और आत्म–प्रदेशो मे निर्मलता का प्रारभ होता है। वायुमण्डल विशुद्ध होता है। दूषण एव दुरितो का नाश होता है।

विधि–कार्तिक कृष्णा तेरस, चौदस और अमावस्या के दिन तेला करके स्तोत्र का २५० बार पाठ करके इसे सिद्ध किया जाता है। प्रतिदिन तीन बार पाठ करने से सुरक्षा होती है। विशेष परिस्थिति मे जाप करने हेतु एकाशना करके तीन बार पाठ करना चाहिए। किसी बाह्य उपद्रवो के शमन करते समय साधक स्वय अपने लिये पहले स्वय पर कवच स्तोत्र द्वारा तीर्थकर प्रतिष्ठा अवश्य करनी चाहिए और बाद मे ही अन्य पर प्रयोग करे।

श्री ग्रह-शान्ति-स्तोत्र

(आचार्य श्री भद्रबाहु–स्वामी)

जगद्‌गुरु नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्‌गुरु–भाषितम्।
ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि, लोकाना सुख–हेतवे।।१।।

जन्मलग्ने च राशौ च, पीडयन्ति यदा ग्रहा।
तदा सपूजयेद् धीमान् खेचरै सहितान् जिनान्।।२।।

पद्‌म–प्रभस्य मार्तण्डश् – चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भू–पुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च।।३।।

विमलानन्त धर्मारा शान्ति कुन्थुर्नमिस्तथा।
वर्धमानस्तथैतेषा, पाद – पद्‌मे बुधौ न्यसेत्।।४।।

ऋषभाजितसुपार्श्वाश् – चाभिनन्दनशीतलौ।
सुमित सम्भव स्वामी, श्रेयासश्चैषु गीष्पति।।५।।

सुविधे कथित शुक्र, सुव्रतस्य शनैश्चर।
नेमिनाथे भवेद् राहु, केतु श्रीमल्लि–पार्श्वयो।।६।।

जिनानामग्रत कृत्वा, ग्रहाणा शान्ति हेतवे।
नमस्कारशत भक्त्या, जपेदष्टोत्तरै शतम्।।७।।

भद्रबाहुरुवाचैव, पचम श्रुतकेवली।
विद्याप्रवादत पूर्वाद्, ग्रहशान्तिरुदीरिता।।८।।

ॐ ही श्री ग्रहाश्चन्द्र–सूर्यागारक, बुध–बृहस्पति, शुक्र–शनैश्चर, राहु–केतु सहिता खेटा जिनपतिपुर–तीऽवतिष्ठन्तु मम धन–धान्य, जय–विजय, सुख–सौभाग्य, धृति–कीर्ति, कान्ति–शान्ति, तुष्टि–पुष्टि, बुद्धि–लक्ष्मी, धर्मार्थ–कामदा स्यु स्वाहा।

श्री पद्मावती अष्टक स्तोत्र

(पूर्वाचार्य)

श्रीमद्–गीर्वाणचक्रस्फुट–मुकुटतटी–
दिव्य – माणिक्यमाला ।
ज्योतिर्ज्वालाकरालस्फुरित–मुकुरिका
घृष्ट – पादारविन्दे ।।

व्याघ्रोरोल्का–सहस्र–ज्वलदनलशिखा,
लोल – पाशाकुशाढ्ये ।
ॐ क्री हीं मत्ररूपे । क्षपित–कलिमले
रक्ष मा देवि । पद्मे ।।१।।

भित्त्वा पातालमूल चलचलचलिते ।
व्याल – लीला – कराले ।
विद्युतद्दण्ड–प्रचण्ड–प्रहरणसहिते,
सद्भुजैस्तर्जयन्ती ।।
दैत्येन्द्र क्रूरदष्ट्रा–कटकटघटित
स्पष्ट – भीमाट्टहासे ।
मायाजीमूतमाला–कुहरितगगने ।
रक्ष मा देवि । पद्मे ।।२।।

कूजत्कोदण्ड–काण्डोड्डमर–विधुरित–
क्रूर – घोरोपसर्ग ।
दिव्य वज्रातपत्रै प्रगुणमणिरणत्–
किङ्किणी – क्वाण–रम्यम् ।।
भास्वद् वैडूर्य–दण्ड मदनविजयिनो,
विभ्रतो पार्श्व–भर्तु ।।
सा देवी पद्महस्ता विघटयतु
महा – डामर मामकीनम् ।।३।।

भृङ्गी काली कराली परिजनसहिते ।
चण्डि – चामुण्डि । नित्ये ।।
क्षा क्षी क्षू क्षौ क्षणार्द्ध क्षतरिपुनिवहे ।
ह्रौ महामन्त्रवश्ये ।
भ्रा भ्री भ्रू भृङ्ग – सङ्ग
भ्रकुटि–पुटतट–त्रासितोद्दामदैत्ये ।

स्रा स्री स्रू स्रौं प्रचण्डे । स्तुतिशतमुखरे ।
रक्ष मा देवि । पद्मे ।।४।।

चञ्चत् काञ्ची–कलापे । स्तनतटविलुठत् तारहारावलीके ।
प्रोत्फुल्लत्पारिजातद्रुम – कुसुममहा मञ्जरी – पूज्यपादे ।
ह्रा ह्री क्ली ब्लू समेतै भुंवनवशकरी क्षोभिणी द्राविणी त्व ।
ऑ इ ओ पद्महस्ते कुरु कुरु घटने रक्ष मा देवि । पद्मे । ।।५।।

लीला–व्यालोल–नीलोत्पलदलनयने । प्रज्वलद्–वाडवाग्नि
त्रुट्यज्जवालास्फुलिङ्गस्फुरदरुणकणो–दग्र – वज्राग्रहस्ते ।
हा ही हू हौ हरन्ती हर हर हर हु–कारभीमैकनादे ।
पद्मे। पद्मासनस्थे। अपनय दुरित देवि । देवेंन्द्रवन्द्ये ।।।६।।

कोप व झ सहस कुवलयकलितोद् दामलीला–प्रबन्धे ।
हा ही हू पक्षबीजै शशिकरधवले। प्रक्षरत्–क्षीरगौरे।।
व्याल – व्याबद्धकूटे । प्रबलबलमहाकालकूट हरन्ती।
हा हा हुकारनादे । कृतकरमुकुल रक्ष मा देवि । पद्मे।।७।।

प्रातर्बालार्क–रश्मिच्छुरितघनमहा सान्द्रसिन्दूर–धुली ।
सन्ध्यारागारुणाङ्गी त्रिदशवर–वधू–वन्द्य–पादारविन्दे ।
चञ्चच्चण्डासिधारा–प्रहतरिपुकुले । कुण्डलोद्घृष्टगल्ले।
श्रा श्री श्रू श्रौ स्मरन्ती मदगजगमने। रक्षमा देवि। पद्मे ।।।८।।

दिव्य स्तोत्र पवित्र पटुतरपठताभक्ति पूर्व त्रिसन्ध्य।
लक्ष्मी–सोभाग्यरूप दलितकलिमल मङ्गल मङ्गलानाम्।।
पूज्य कल्याणमाला जनयति सततं, पार्श्वनाथ–प्रसादात्।
देवी–पद्मावतीत प्रहसितवदना या स्तुता दानवेन्द्रै ।।९।।

भक्तामर-स्तोत्रम्

भक्तामर–प्रणत–मौलि–मणि–प्रभाणा–,
मुद्योतक दलित–पाप–तमो–वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन–पाद–युग युगादा,
वालम्बन भव––जले पतता जनानाम्।।१।।

य सस्तुत सकल–वाड्ग–मय तत्व–बोधा–
दुद्–भूत–बुद्धि–पटुभि सुरलोक–नाथै।
स्तोत्रैर्–जगत्–त्रितय–चित्त–हरै–रुदारे,
स्तोष्ये किला–हमपि–त प्रथम जिनेन्द्रम्।।२।।

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पाद पीठ।
स्तोतु समुद्यत–मतिर् विगत–त्रपोऽहम्।
बाल विहाय जल–सस्थित–मिन्दु–बिम्ब–
मन्य क इच्छति जन सहसा ग्रहीतुम्।।३।।

वक्तु गुणान् गुण–समुद्र–शशाड्क–कान्तान्,
कस्ते क्षम सुर–गुरु–प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त–काल–पवनो–द्धत–नक्र–चक्र,
को वा तरीतु–मल–मम्बु–निधि भुजाभ्याम्।।४।।

सोऽहं तथापि तव भक्ति–वशान्–मुनीश।
कर्तु स्तवं विगत–शक्ति–रपि–प्रवृत्त।
प्रीत्यात्म–वीर्य–मविचार्य मृगो मृगेन्द्रम्,

नाभ्येति किं निज-शिशो परि-पाल-नार्थम्।।५।।

अल्प-श्रुत श्रुत-वता परिहा-सधाम,
त्वद् भक्ति-रेव मुखरी-कुरुते बलान्-माम्।
यत्-कोकिल किल मधौ मधुर विरौति,
तच्चाम्र-चारू-कलिका-निकरैक-हेतु।।६।।

त्वत्-सस्तवेन भव-सन्तति सन्नि-बद्ध,
पाप क्षणात्-क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम्।
आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,
सुर्याशु-भिन्न-मिव-शार्वर-मन्ध-कारम्।।७।।

मत्वेति नाथ! तव सस्त-वन मयेद-
मारभ्यते तनु-धियाऽपि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सता नलिनी-दलेषु,
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिंदु।।८।।

आस्ता तव-स्तवन-मस्त-समस्त दोष,
त्वत्-सकथापि जगता दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्त्र-किरण कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि-विकाश-भाजि।।९।।

नात्यद्-भुत भुवन-भूषण! भूत-नाथ!
भूतैर्-गुणैर्-भुवि-भवन्त-मभिष्टु-वन्त।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्या-श्रित य इह नात्म-सम करोति।।१०।।

दृष्ट्वा भवन्त–मनि–मेष–विलोकनीय,
नान्यत्र तोष–मुपयाति जनस्य चक्षु ।
पीत्वा पय शशि–कर–द्युति–दुग्ध–सिन्धो,
क्षार जल जल–निधे–रसितु क इच्छेत्।।११।।

यै शान्त–राग–रुचिभि परमाणु–भिस्त्व,
निर्मा–पितस्–त्रि–भुवनैक–ललाम–भूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणव पृथिव्या,
यत्ते समान–मपर नहि रूप–मस्ति।।१२।।

वक्त्र क्व ते सुर–नरो–रग–नेत्र–हारि,
नि शेष–निर्जित जगत्–त्रितयो–पमानम्।
बिम्ब कलङ्क–मलिन क्व निशाकरस्य,
यद्–वासरे भवति पाण्डु–पलाश–कल्पम्।।१३।।

सम्पूर्ण–मडल–शशाङ्क कला–कलाप,
शुभ्रा गुणास्–त्रिभुवन तव लङ्–घयन्ति।
ये सश्रितास्–त्रि–जग–दीश्वर–नाथ–मेक,
कस्तान्–निवारयति सचरतो यथेष्टम्।।१४।।

चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग–नाभिर्,
नीत मना–गपि मनो न विकार–मार्गम्।
कल्पान्त–काल–मरुता–चलिता–चलेन,
कि मन्दराद्रि–शिखरं चलित कदाचित्।।१५।।

निर्धूम–वर्ति–रप–वर्जित–तैल–पूर,
कृत्स्न जगत्–त्रय–मिद प्रकटी–करोपि।

गम्यो न जातु मरूता चलिता—चलाना,
दीपोऽपरस्त्व—मसि नाथ—जगत् प्रकाश ।।१६।।

नास्त कदाचि—दुपयासि न राहु—गम्य
स्पष्टी—करोषि सहसा युग—पज्जगन्ति।
नाम्भो—धरो—दर—निरूद्ध——महा—प्रभाव,
सूर्या—तिशायि महिमासि मुनीन्द्र। लोके।।१७।।

नित्यो—दय दलित—मोह—महान्ध—कार,
गम्य न राहु—वदनस्य न वारि—दानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज—मनल्प—कान्ति
विद्यो तयज्—जगद—पूर्व—शशाड्क—बिम्बम्।।१८।।

कि शर्व—रीषु शशि—नाऽहि विवस्वता वा !,
युष्मन्—मुखेन्दु—दलि—तेषु तमस्सु नाथ।
निष्पन्न—शालि—वन—शालिनि जीव—लोके,
कार्य कियज्—जल—धरैर्—जल—भार—नम्रै ।।१६।।

ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृता—वकाश,
नैव तथा—हरि—हरादिषु नायकेषु।
तेज स्फुरन्—मणिषु याति—यथा महत्त्व,
नैव तु काच—शकले किरणा कुलेऽपि।।२०।।

मन्ये वर हरि—हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदय त्वयि तोष—मेति।
कि वीक्षि—तेन भवता भुवि येन नान्य।

कश्चिन्–मनो हरति नाथ भवान्त–रेऽपि।।२१।।

स्त्रीणा शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्।
नान्या सुत त्वदु–पम जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्र–रश्मि,
प्राच्येव दिग् जनयति रफुर–दशु–जालम्।।२२।।

त्वामाम–नन्ति मुनय परम पुमास––,
मादित्य–वर्ण–ममल तमस परस्तात्।
त्वा–– मेव सम्य–गुपलभ्य जयन्ति मृत्यु,
नान्य शिव शिव–पदस्य मुनीन्द्र पन्था।।२३।।

त्वा–मव्यय विभु–मचिन्त्य–मसख्य–माद्य,
ब्रह्माण–मीश्वर–मनत–मनग–केतुम्।
योगीश्वर विदित–योग–मनेक–मेक,
ज्ञान–स्वरूप–ममल प्रवदन्ति सन्त।।२४।।

बुद्धस्त्व–मेव विबुधार्–चित् बुद्धि–बोधात्––,
त्व शङ्करोऽसि भुवन–त्रयशङ्क–रत्वात्।
धाताऽसि धीर। शिव–मार्ग–विधेर्–विधानात्,
व्यक्त त्वमेव भगवन् पुरुषो–त्तमोसि।।२५।।

तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्ति हराय नाथ।
तुभ्य नम क्षिति–तला–मल–भूषणाय।
तुभ्य नमस्त्रिजगत परमेश्वर–राय,
तुभ्य नमो जिन। भवो–दधि–शोष–णाय।।२६।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै–रशेषै–
स्त्व सश्रितो निरव–काश–तया मुनीश।
दोषै–रूपात्त–विविधा–श्रय–जात–गर्वै
स्वप्ना–न्तरेऽपि न कदाचि–दपी–क्षितोऽसि।।२७।।

उच्चै–रशोक–तरू–सश्रित–मुन्–मयूख–,
माभाति रूप–ममल भवतो नितान्तम्।
स्पष्टो–ल्लसत्–किरण–मस्त–तमो–वितान,
बिम्ब रवे–रिव पयोधर पार्श्ववर्ति।।२८।।

सिहासने मणि–मयूख–शिखा–विचित्रे
विभ्रा–जते तव वपु, कनका–वदातम्।
बिम्ब वियद्–विलस–दशु–लता–वितान,
तुङ्गो दयाद्रि–शिर–सीव सहस्त्र रश्मे।।२९।।

कुन्दा वदात–चल–चामर–चारू–शोभ,
विभ्राजते तव वपु कल–धौत–कान्तम्।
उद्यच्छ–शाङ्क–शुचि–निर्झर–वारि–धार,
मुच्चैस्–तट सुर–गिरे–रिव–शात–कोम्भम्।।३०।।

छत्र–त्रय तव विभाति शशाङ्क–कान्त–,
मुच्चै स्थित स्थगित–भानु–कर–प्रतापम्।
मुक्ता–फल–प्रकर–जाल–विवृद्ध–शोभ,
प्रख्या–पयत्–त्रि–जगत परमेश्व–रत्वम्।।३१।।

गभीर–तार–रव–पूरित–दिग्–विभागस्,
त्रै–लोक्य–लोक–शुभ–संगम–भूति–दक्ष,

सद्धर्म–राज–जय–घोषण–घोपक सन्,
खे, दुन्दुभिरध्वनति ते यशस प्रवादी।।३२।।

मन्दार–सुन्दर–नमेरु–सुपारि–जात,––
सन्तान–कादि–कुसुमो–त्कर–वृष्टि–रुद्धा।
गधोद–बिदु–शुभ–मन्द–मरुत्–प्रपाता,
दिव्या दिव पतति ते वचसा ततिर्वा।।३३।।

शुम्भत्–प्रभा–वलय–भूरि–विभा विभोस्ते,
लोक–त्रय–द्युति–मता द्युति–माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्–दिवाकर–निरतर–भूरि–सख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा–मपि सोम–सौम्याम्।।३४।।

स्वर्गा–पवर्ग–गम–मार्ग–विमार्ग–णेष्ट,
सद्धर्म तत्व–कथनैक–पटुर–त्रिलोक्या।
दिव्य–ध्वनिर्–भवति ते विशदार्थ सर्व,
भाषा–स्वभाव–परिणाम गुणै प्रयोज्य।।३५।।

उन्निद्र–हेम–नव पकज–पुञ्ज–कान्ति,
पर्युल्लसन्–नख–मयूख–शिखा–भिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त
पद्मानि तत्र विबुधा परि–कल्पयन्ति।।३६।।

इत्थ यथा तव विभूति–रभू–ज्जिनेन्द्र !
धर्मो–पदेशन–विधौ न तथा परस्य।
यादृक्–प्रभा दिन–कृत प्रहतान्ध–कारा
तादृक्–कुतो ग्रह–गणस्य विकाशि–नोऽपि।।३७।।

श्च्यो–तन्–मदा–विल–विलोल–कपोल–मूल,
मत्त–भ्रमद्–भ्रमर–नाद–विवृद्ध–कोपम् ।
ऐरा–वताभ मिभ–मुद्धत–मा–पतन्त,
दृष्ट्वा–भय भवति नो भवदा–श्रितानाम् ।।३८।।

भिन्नेभ–कुम्भ–गल–दुज्ज्वल–शोणि–ताक्त–
मुक्ता–फल–प्रकर–भूषित–भूमि–भाग ।
बद्ध–क्रम क्रम–गत हरिणा–धिपोऽपि,
नाक्रा–मति क्रम–युगा–चल–सश्रित ते ।।३९।।

कल्पान्त–काल पवनो–द्धत वहि्न–कल्पं,
दावानल ज्वलित–मुज्ज्वल–मुत्स्फुलिङ्गम्
विश्व जिघत्सु–मिव सम्मुख–मा–पतन्त,
त्वन्नाम–कीर्तन–जल शमयत्य–शेषम् ।।४०।।

रक्ते–क्षण समद्–कोकिल–कण्ठ–नील,
क्रोधो–द्धत फणिन्–मुत्फण मा–पतन्तम्
आक्रा–मति क्रम–युगेन निरस्त–शकस्,
त्वन्नाम–नाग–दमनी–हृदि यस्य पुस ।।४१।।

वल्ग–त्तुरङ्ग–गज–गर्जित–भीम–नाद–
माजौ बल बल–वता–मपि भूपती–नाम्
उद्यद्–दिवाकर–मयूख–शिखा–पविद्ध,
त्वत्–कीर्त–नात्तम इवाशु भिदा मुपैति ।।४२।।

कुन्ताग्र–भिन्न–गज–शोणित वारि–वाह,
वेगा–वतार–तरणा–तुर–योध–भीमे ।

युद्धे जय विजित–दुर्जय–जेय–पक्षास्,
त्वत्–पाद–पकज–वना–श्रयिणो–लभन्ते ।।४३।।

अम्भो निधौ क्षुभित–भीषण नक्र–चक्र,
पाठीन–पीठ–भयदो–ल्वण–वाडवाग्नौ ।
रड्ग त्तरड्ग–शिख–रस्थित–यान–पात्रास्,
त्रास विहाय भवत स्मरणाद्–व्रजन्ति ।।४४।।

उद्–भूत–भीषण–जलो–दर–भार–भुग्ना
शोच्या दशा–मुप–गताश्च्युत–जीवि–ताशा ।
त्वत्–पाद–पकज–रजोऽमृत दिग्ध–देहा,
मर्त्या भवन्ति मकर–ध्वज–तुल्य रूपा ।।४५।।

आपाद–कण्ठ–मुरु–श्रृड्खल–वेष्टि–तागा
गाढ बृहन्–निगड–कोटि–निघृष्ट–जघा ।
त्वन्नाम–मत्र–मनिश मनुजा स्मरन्त,
सद्य स्वय विगत वध–भया भवन्ति ।।४६।।

मत्त–द्विपेन्द्र–मृग–राज–दवा–नलाहि––
सग्राम–वारिधि–महोदर–बन्ध–नोत्थम् ।
तस्याशु नाश–मुप–याति भय भियेव,
यस्ता–वक स्तव–मिम–मति–मान–धीते ।।४७।।

स्तोत्र–स्रज तव जिनेन्द्र गुणैर्–निबद्धा,
भक्त्या मया विविध–वर्ण–विचित्र–पुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठ–गता–मजस्र,
त मान–तुडग–मवशा समुपैति लक्ष्मी ।।४८।।

श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र

कल्याण–मदिर–मुदार–मवद्य–भेदि,
भीता भय–प्रद–मनिन्दित–मघ्रि–पद्मम्।
ससार–सागर–निमज्ज–दशेष–जतु–
पोताय–मान–मभि–नम्य जिनेश्वरस्य।।१।।

यस्य स्वय–सुर गुरुर–गरिमाम्बु–राशे
स्तोत्र सुविस्तृत–मतिर्–न विभुर–विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य–कमठस्–मय–घूम–केतोस्–
तस्याह–मेष–किल सस्त–वन करिष्ये।।२।।

सामान्य–तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप–
मस्मा–दृशा कथ्–मधीश ! भवन्त्य–धीशा।
धृष्टोऽपि कौशिक–शिशुर्–यदि वा दिवान्धो
रूप प्ररूपयति कि किल घर्म रश्मे।।३।।

मोह–क्षयादनु–भवन्–नपि–नाथ ! मर्त्यो
नून गुणान् गणयितु न तव क्षमेत।
कल्पान्त–वान्त पयस प्रकटोऽपि यस्मान्
मीयेत केन जलधेर् ननु रत्न राशि।।४।।

अभ्यु–द्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडा–शयोऽपि।
कर्तुं स्तव लसदसख्य–गुणा–करस्य ?
बालोऽपि कि न निज–बाहुयुग वितत्य।
विस्तीर्ण ता कथयति स्व–धियाऽम्बु राशे ?।।५।।

* नारी जागरण के लिए [illegible]
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

ये योगि-नामपि न यान्ति गुणास् तवेश ।
वक्तु कथ भवति तेषु-ममावकाश ?।
जाता तदेव-मस-मीक्षित कारितेय
जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि।।६।।

आस्ता-मचिन्त्य महिमा जिन ! सस्त-वस्ते
नामापि पाति भवतो-भवतो जगन्ति।
तीव्रा-तपो-पहत पान्थ जनान् निदाघे,
प्रीणाति पद्म सरस सरसोऽनिलोऽपि।।७।।

हृद् वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिली भवन्ति
जन्तो क्षणेन निविडा अपि कर्म बन्धा
सद्यो भुजग-ममया इव मध्य भाग-
मभ्यागते वन शिखण्डिनि चन्दनस्य।।८।।

मुच्यत एव मनुजा सहसा जिनेन्द्र !
रौद्रै-रुपद्रव शतैस् त्वयि वीक्षितेऽपि
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे
चौरै-रिवाशु पशव प्रपलाय-मानै ।।६।।

त्व तारको जिन ! कथ? भविना त एव
त्वा-मुद-वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्त ।
यद्वा दृतिस्-तरति यज्जलमेष नून
मन्तर् गतस्य मरुत स किलानुभाव'।।१०।।

यस्मिन् हर प्रभृत-योऽपि हत-प्रभावा
सोऽपि त्वया रति पति क्षपित क्षणेन।

विध्यापिता हुत भुज पयसाथ येन
पीत न कि तदपि दुर्धर–वाडवेन?।।११।।

स्वामिन् न नल्प गरिमाण–मपि प्रपन्नास्
त्वा जन्तव कथमहो हृदये दधाना।
जन्मोदधि लघु तरन्त्यति लाघवेन
चिन्त्यो न हत महता यदि वा प्रभाव।।१२।।

क्रोधस्–त्वया यदि विभो ! प्रथम निरस्तो
ध्वस्–तास् तदा वत कथ किल कर्म चौरा?।
प्लोषत्य–मुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके
नील द्रुमाणि विपिनानि न कि हिमानी।।१३।।

त्वा योगिनो जिन ! सदा परमात्म रूप
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोश देशे।
पूतस्य निर्मल रुचेर् यदि वा किमन्य
दक्षस्य सभवि पद् ननु कर्णिकाया।।१४।।

ध्याना–ज्जिनेश ! भवतो भविन क्षणेन
देह विहाय परमात्म दशा व्रजन्ति।
तीव्रानला–दुपल भाव–मपास्य लोके
चामीकरत्व–मचिरादिव धातु भेदा।।१५।।

अन्त सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्व
भव्यै कथ तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत् स्वरूप–मथ मध्य–विवर्तिनो हि
यद्–विग्रह प्रशमयन्ति महानुभावा।।१६।।

* नारी जागरण के लिए निरन्तर प्रचाररत
* बलि- निषेध के लिए सदैव समुद्यतता

आत्मा मनीषिभि–रय त्वद–भेद–बुद्धया
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत् प्रभाव ।
पानीय–मप्यमृत मित्यनुचित्य–मान
कि नाम नो विष–विकार–मपा करोति? ।।१७।।

त्वामेव वीत तमस पर वादिनोऽपि
नून विभो ! हरि–हरादि–धिया प्रपन्ना ।
कि काच–कामलिभि–रीश सितोऽपि शखो
नो गृह–येत विविध वर्ण विपर्ययेण ? ।।१८।।

धार्मोपदेश समये सविधानु–भावा
दास्ता जनो भवति ते तरु–रप्य शोक ।
अभ्युद् गते दिन पतौ समही–रूहोऽपि
कि वा ! विबोध–मुपयाति न जीवलोक? ।।१६।।

चित्रं विभो ! कथमवाङ्–मुख वृन्तमेव
विष् वक् पतत्य विरला सुर–पुष्प वृष्टि?
त्वद् गोचरे सुमनसा यदि वा मुनीश !
गच्छन्ति नून–मध एव हि बन्धनानि ।।२०।।

स्थाने गभीर हृदयोदधि सम्भवाया
पीयूषता तव गिर' समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यत परम सम्मद–सग भाजो
भव्या व्रजन्ति तरसाप्य–जरामरत्वम् ।।२१।।

स्वामिन् ! सुदूर–मवनम्य समुत्–पतन्तो
मन्ये वदन्ति शुचय सुर–चामरोघा !

येऽस्मै नति विदधते मुनि पुङ्गवाय
ते नून-मूर्ध्व गतय खलु शुद्ध भावा ।।२२।।

श्याम गभीर गिर-मुज्जवल हेमरत्न-
सिहा सनस्थ-मिह भव्य शिखडिनस् त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्त-मुच्चैश्
चामीकराद्रि शिरसीव नवाम्बु-वाहम् ।।२३।।

उद् गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन
लुप्त-च्छद-च्छवि-रशोक तरुर्-बभूव ।
सान्निध्य-तोऽपि यदि वा तव वीतराग !
नीरागता व्रजति को न सचेतनोऽपि।।२४।।

भो भो ! प्रमाद्-मवधूय भजध्व-मेन-
मागत्य निर्वृति-पुरी प्रति सार्थवाहम्।
एतन् निवेदयति देव ! जगत्-त्रयाय,
मन्ये नदन् नभिनभ सुर दुन्दभिस्ते।।२५।।

उद्द्योति तेषु भवता भुवनेषु नाथ !
तारान्वितो विधुरय विहताधिकार ।
मुक्ता कलाप कलितो-च्छवसि तात पत्र
व्याजात् त्रिधा धृत तनुर् ध्रुव-मप्युपेत ।।२६।।

स्वेन प्रपूरित जगत्त्रय पिण्डितेन
काति प्रताप यशसामिव सचयेन।
माणिक्य हेम रजत प्रवि निर्मितेन
साल त्रयेण भगवन् नभितोविभासि।।२७।।

दिव्यस्र जो जिन ! नमत् त्रिदशाधि–पाना मुत्
सृज्य रत्न–रचितानपि मौलि बन्धान्
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र
त्वत् सगमे सुमनसो न रमन्त एव ।।२८।।

त्व नाथ ! जन्म जलधेर् विपराङ्–मुखोऽपि
यत् तार – यस्य सुमतो निज पृष्ठ लग्नान्
युक्त हि पार्थिव निपस्य सतस्–तवैव
चित्र विभो ! यदसि कर्म विपाक शून्य ।।२६।।

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्–गतस् त्व
कि वाऽक्षर प्रकृति–रप्य लिपिस् त्वमीश !
अज्ञान–वत्यपि सदैव कथचिदेव
ज्ञान त्वयि स्फुरित विश्व विकास हेतु ।।३०।।

प्राग्भार सभृत नभांसि रजासि रोषा–
दुत्थापि तानि कमठेन शठेन यानि
छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो
ग्रस्तस् त्वमीभि–रयमेव पर दुरात्मा ।।३१।।

यद् गर्ज–दूर्जित घनौघ–मदभ्र भीम
भ्रश्यत् तडिन्–मुसल–मासल–घोर धारम्
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर वारि दध्रे
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तर वारि कृत्यम् ।।३२।।

ध्वस्तो–र्ध्व–केश विकृताकृति–मर्त्य मुण्ड
प्रालम्ब–भृद् भयद वक्त्र विनिर्–यदग्नि

प्रेत व्रज प्रति भवन्त – मपीरितो य
सोऽस्याऽभवत् प्रतिभव भव दुख हेतु ।।३३।।

धन्यास्त एव भुवनाधिप । ये त्रिसन्ध्य
माराधयन्ति विधिवद् विधुतान्य कृत्या
भक्त्यो–ल्लसत् पुलक पक्ष्मल–देहदेशा
पाद–द्वय तव विभो । भुवि जन्म भाज ।।३४।।

अस्मिन् न पार भव वारि निधौ मुनीश !
मन्ये न मे श्रवण गोचरता गतोऽसि
आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मत्रो
कि वा विपद् विषधरी सविध समेति?।।३५।।

जन्मान्त–रेऽपि तव पाद युग न देव ।
मन्ये मया महित–मीहित दान दक्षम्
तेनेह–जन्मनि मुनीश । पराभवाना
जातो निकेतन मह मथिताशयानाम्।।३६।।

नून न मोह तिमिरावृत–लोचनेन
पूर्व विभो । सकृदपि प्रवि–लोकितोऽसि
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्था
प्रोद्यत्–प्रबन्ध गतय कथमन्य–थैते?।।३७।।

आ–कर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षि–तोऽपि
नून न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या
जातोऽस्मि तेन जन बान्धव । दुख पात्र
यस्मात् क्रिया प्रति फलन्ति न भाव शून्या ।।३८।।

त्व नाथ ! दु खि जन वत्सल ! हे शरण्य !
कारुण्य पुण्य वसते ! वाशिना वरेण्य !
भक्त्या न ते मयि महेश ! दया विधाय
दु खा कुरोद्–दलन तत्पर ता विधेहि।।३६।।

नि सख्य–सार शरण शरण शरण्य–
मासाद्य सादित–रिपु प्रथिताव–दातम्
त्वत् पाद पकजमपि प्रणिधान वन्ध्यो
वध्योऽस्मि चेद् भुवन पावन ! हा हतोऽस्मि।।४०।।

देवेन्द्र–वन्द्य ! विदिताखिल वस्तुसार !
ससार तारक ! विभो ! भुवनाधि नाथ !
त्रा यस्व देव ! करुणा हृद ! मा पुनीहि
सीदन्त–मद्य भयद–व्यसनाम्बु राशे ।।४१।।

यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रि–सरोरुहाणा
भक्ते फल किमपि सन्तति सचिताया
तन्मे त्वदेक शरणस्य शरण्य ! भूया
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्त–रेऽपि।।४२।।

इत्थ समाहित धियो विधिवज्जिनेन्द्र !
सान्द्रो–ल्लसत् पुलक कचुकिताग भागा।
त्वद् बिम्ब निर्मल मुखाम्बुज बद्ध लक्ष्या
ये सस्तव तव विभो ! रचयति भव्या।।४३।।

जन नयन कुमुद चन्द्र !
प्रभास्वरा स्वर्ग सम्पदो भुक्त्वा।

ते विगलित – मल – निचया,
अचिरान् मोक्ष प्रपद्यन्ते ।।४४।।

।।पूज्य श्री हुक्म्यष्टकम्।।

छन्द–त्रोटक–

गृह–मोह–ममत्व–विनाशकर,
शुभ–सयम–भाव–रत विरतम्
सुसमाधि–युत गणि–कीर्ति–धर,
प्रणमामि, महामुनि–हुक्मि–गुरुम्।।१।।

प्रशमादि–विकास–गुणै कलित,–
मुपदेश–सुधा–वलित मुदितम्।
महिते निज–कार्ये–पथे निरत,
प्रणमामि महामुनि–हुक्मि गुरुम्।।२।।

भव–पातक–मान–रुजा–रहित,
सुखदायक–भाव–युत सततम्।
भव भीति–हर शिव–सत्यवर,
प्रणमामि, महामुनि–हुक्मि गुरुम्।।३।।

तपसा सहित विदुषा–मजित,
शशि–पूर्ण–सुशोभित दिव्य–मुखम्।
रवि–तुल्य–विभासित–दीप्ति–धर,
प्रणमामि महामुनि–हुक्मि–गुरुम्।।४।।

मनसा वचसा, वपुषा विमल,

करुणा–धिषणा–गरिमादि–युतम्।
सुनयै सुगुणै सुकृतै–रनघ,
प्रणमामि, महामुनि–हुक्मि–गुरुम्।।५।।

नगरे–नगरे सुख–शान्तिकर,
बहु–शिष्य–जनै विनयाभिनुतम्।
निज–कर्म–विदारकर विशद,
प्रणमामि, महामुनि–हुक्मि–गुरुम्।।६।।

शरणागत–धारक–रक्षा–पर,
जगती–प्रथित सुयशो–भरितम्।
जन–सकट–नाशक–भक्तिरत,
प्रणमामि, महामुनि–हुक्मि गुरुम्।।७।।

भव–सागर–पक–निमग्न–नृणा,
जिन–भाषित–बोध–सुख–प्रददौ।
तमह गुणसागर–बुद्धि–निधि,
प्रणमामि, महामुनि–हुक्मि–गुरुम्।।८।।

गुरु – हुक्म्यष्टक – स्तोत्रम्,
मुनिज्ञानेन निर्मितम्।
पठन्ति ये नरा भक्त्या,
सिद्धि – सौध व्रजन्ति ते।।६।।

परमेष्ठि मंत्र-महिमाष्टक

य सर्व दुख दलने किल कल्पवृक्ष

चिन्तामणि शुभ मनोरथ पूरणे स ।
कन्दर्प दर्प दहनैक–विधौ दवाग्नि
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मत्र ।।१।।

सर्वागम श्रुत–समुद्र सुधेन्दु–सारा,
चारित्र चन्दन वन सदन सुखानाम् ।
कल्याण कुन्दन खनिर् दमन दराणा,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मत्र ।।२।।

ससार सागर निमज्जद पूर्व नौका,
सिद्धौषधिर् विविध रोग विनाशने य ।
नि शेष लब्धि बल बोध तरोश्च बीज,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मन्त्र ।।३।।

सूर्य सहस्त्र किरणैर् हरति तमासि
सिहो यथा गज गणाश्च नखैर् निहन्ति ।
ससार वर्ति दुरितानि तथैष मन्त्र
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मत्र ।।४।।

पद्मा करेरु चिर रश्मिरि वौषधीश
शीघ्र प्रबोधयति निद्रित–कैरवाणि ।
अन्त सुपुप्त गुण पद्मदलानि चेव,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मन्त्र ।।५।।

भू–मण्डलेषु शुभ वस्तु न विद्यते तद्
ध्यानेन यस्य ननु यन् नहि साधनीयम्

दु ख न तद् भवति यस्य विनाशन नो,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मंत्र ।।६।।

श्रीपाल देव धरणेन्द्र सुदर्शनाद्या,
पल्लीपतिश्च शिव कम्बल शम्बलाद्या ।
ध्यात्वा हि य पदमगु परम पवित्र
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मत्र ।।७।।

भक्त्या दधाति हृदि यो ननु मत्र राज
दिव्या गति व्रजति नूतन मुक्ति मोद
चूर्णी करोति भव सचित कर्म शैल
लोक त्रये विजयते परमेष्ठी मंत्र ।।८।।

श्री परमानन्द-पंचविंशतिका

परमानन्द – सयुक्त, निर्विकार निरामयम्।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितम्।।१।।

अनन्तसुख – सम्पन्न, ज्ञानामृत पयोधरम्।
अनन्तवीर्य – सम्पन्न दर्शन परमात्मन ।।२।।

निर्विकार निराधार सर्वसगविवर्जितम्।
परमानन्द – सपन्न शुद्धचैतन्य – लक्षणम।।३।।

उत्तमाऽध्यात्मचिन्ता च, मोहचिन्ता च मध्यमा।
अधमा कामचिन्ता च, परचिन्ताऽधमाधमा।।४।।

निर्विकल्पसमुत्पन्न, ज्ञानमेव सुधारसम्।
विवेकमजलि कृत्वा, त पिवन्ति तपस्विन ।।५।।

सदानदमय जीव, यो जानाति स पण्डित।
स सेवते निजात्मान, परमानन्द–कारणम्।।६।।

नलिन्या च यथा नीर, भिन्न तिष्ठति सर्वदा।
अयमात्मा स्वभावेन, देहे तिष्ठति सर्वदा।।७।।

द्रव्यकर्म – विनिर्मुक्त, भावकर्म – विवर्जितम्।
नोकर्म – रहित विद्धि, निश्चयेन चिदात्मनम्।।८।।

अनन्तब्रह्मणो रूप निजदेहे व्यवस्थितम्।
ध्यानहीना न पश्यन्ति, जात्यन्धा इव भास्करम्।।६।।

तद्ध्यान क्रियते भव्यैर्, येन कर्म विलीयते।
तत्क्षण दृश्यते शुद्ध, चिच् – चमत्कारलक्षणम्।।१०।।

चिदानदमय शुद्ध, निराकार निरामयम्।
अनत – सुखसम्पन्न, सर्वसगविवर्जितम्।।११।।

लोकमात्रप्रमाणो हि, निश्चये न हि सशय।
व्यवहारे देहमात्र, कथयन्ति मुनीश्वरा।।१२।।

यत्क्षण दृश्यते शुद्ध, तत्क्षण गतविभ्रम।
स्वस्थचित्त स्थिरीभूत, निर्विकल्प समाधिना।।१३।।

स एव परम ब्रह्म, स एव जिनपुगव।
स एव परम तत्त्व, स एव परमो गुरु।।१४।।

स एव परम ज्योति, स एव परम तप।
स एव परम ध्यान, स एव परमात्मकम्।।१५।।

स एव सर्वकल्याण, स एव सुखभाजनम् ।
स एव शुद्धचिद्रूप, स एव परम शिवम् ।।१६।।

स एव ज्ञानरूपो हि, स एवात्मा न चाऽपर ।
स एव परमा शान्ति, स एव भवतारक ।।१७।।

स एव परमानन्द, स एव सुखदायक ।
स एव घन – चैतन्य, स एव गुण–सागर ।।१८।।

परमाह्लाद – सपन्न राग – द्वेषविवर्जितम् ।
सोऽह तु देहमध्यस्थो, यो जानाति स पण्डित ।।१६।।

आकार – रहित शुद्ध, स्वस्वरूपे व्यवस्थितम् ।
सिद्धमष्टगुणोपेतं, निर्विकार निरजनम् ।।२०।।

तत्सम तु निजात्मान, यो जानाति स पण्डित ।
सहजानद – चैतन्य, प्रकाशयति महीयसे ।।२१।।

पाषाणेषु यथा हेम, दुग्ध – मध्ये यथा घृतम् ।
तिल – मध्ये यथा तैल, देह–मध्ये तथा शिव ।।२२।।

काष्ठमध्ये यथा वह्नि, शक्तिरूपेण तिष्ठति ।
अयमात्मा शरीरेषु यो जानाति स पण्डित ।।२३।।

आनन्द – रूप परमात्मतत्त्व,
समस्त–सकल्पविकल्प – मुक्तम् ।
स्वभावलीना निवसन्ति नित्य,
जानाति योगी स्वयमेव तत्त्वम् ।।२४।।

ये धर्मशीला मुनय प्रधानास्,
ते दु खहीना नियत भवन्ति।
सप्राप्य शीघ्र परमात्मतत्त्व,
व्रजन्ति मोक्ष क्षणमेकमध्ये।।२५।।

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

ॐ नम पार्श्वनाथाय, विश्व – चिन्तामणीयते।
ह्री धरणेद्र–वैरोट्या – पद्मादेवी – युतायते।।१।।

शाति –तुष्टि–महापुष्टि – धृतिकीर्तिविधायिने।
ॐ ह्रीं द्विड्–व्याल–वेताल–सर्वाधिव्याधिनाशिने।।२।।

जया जिताख्या विजयाख्याऽपराजितयान्वित।
दिशा पालैर्ग्रहैर्यक्षैर् विद्यादेवीभिरन्वित।।३।।

ॐ असिआउसाय नमस् – तत्र त्रैलोक्यनाथताम्।
चतु षष्टि–सुरेन्द्रास्ते भासन्ते छत्र – चामरै।।४।।

श्री शखेश्वरमण्डनपार्श्वजिन ! प्रणतकल्पतरुकल्प !।
चूरय दुष्टव्रात, पूरय मे वाञ्छित नाथ !।।५।।

नमस्कार स्तवन

(१)

नम्रामरेश्वर – किरीट –निविष्टशोण–
रत्नप्रभा – पटलपाटलिताङ्घ्रिपीठा।

तीर्थेश्वरा शिवपुरी – पथसार्थवाहा,
नि शेषवस्तुपरमार्थविदो जयन्ति।।

(२)

लोकाग्रभागभवना भवभीति – मुक्ता,
ज्ञानावलोकित – समस्त – पदार्थसार्था।
स्वाभाविकस्थिरविशिष्टसुखै समृद्धा,
सिद्धा विलीनघनकर्ममला जयन्ति।।

(३)

आचारपचकसमाचरण – प्रवीणा,
सर्वज्ञ – शासन – धुरैकधुरधरा ये।
ते सूरयो दमितदुर्दमवादिवृन्दा,
विश्वोपकार – करणप्रवणा जयन्ति।।

(४)

सूत्र यतीनति – पटु – स्फुट – युक्तियुक्त–
युक्तिप्रमाण – नयभगगमैर्गभीरम्।
ये पाठयन्ति वरसूरिपदस्य योग्यास,
ते वाचकाश्चतुरचारु – गिरो जयन्ति।।

(५)

सिद्धागना सुखसमागम – वद्धवाञ्छा,
ससार – सागर – समुत्तरणैक – चित्ता।
ज्ञानादिभूपण – विभूपित – देहभागा,
रागादिघातरतयो यतयो जयन्ति।।

श्री वज्रपंजर स्तोत्र

परमेष्ठिनमस्कार, सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्र – पञ्जराभ स्मराम्यहम् ।।१।।

ॐ नमो अरहताण, शिरस्क शिरसि स्थितम् ।
ॐ नमो सव्वसिद्धाण, मुखे मुखपट वरम् ।।२।।

ॐ नमो आयरियाण अगरक्षाऽतिशायिनी ।
ॐ नमो उवज्झायाण, आयुध हस्तयोर्दृढम् ।।३।।

ॐ नमो लोए सव्वसाहूण, मोचके पादयो शुभे ।
एसो पच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ।।४।।

सव्वपाव – प्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहि ।
मगलाण च सव्वेसि, खादिराङ् गारखातिका ।।५।।

स्वाहान्त च पद ज्ञेय, पढम हवइ मगल ।
वप्रोपरि वज्रमय, पिधान देहरक्षणे ।।६।।

महाप्रभावा रक्षेय, क्षुद्रोपद्रव – नाशिनी ।
परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभि ।।७।।

यश्चैव कुरुते रक्षा, परमेष्ठि–पदै सदा ।
तस्य न स्याद् भय व्याधिराधिश्चापि कदाचन ।।८।।

श्री लघुशान्ति-स्तव

शान्ति शान्ति – निशान्त

शान्त शान्ताऽशिव नमस्कृत्य।
स्तोतु शान्ति – निमित्त,
मत्रपदै· शान्तये स्तौमि।।१।।

ओमिति निश्चितवचसे,
नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्।
शान्तिजिनाय जयवते,
यशस्विने स्वामिने दमिनाम्।।२।।

सकलातिशेषक–महासम्पत्ति–
समन्विताय शस्याय।
त्रैलोकपूजिताय च नमो,
नम शान्तिदेवाय।।३।।

सर्वामर सुसमूह – स्वामिक –
सम्पूजिताय निर्जिताय ।
भुवनजनपालनो द्यततमाय,
सतत नमस्तस्मै।।४।।

सर्वदुरितौघ नाशनकराय,
सर्वाऽशिव प्रशमनाय।
दुष्टग्रहभूतपिशाच,
शाकिनीना प्रमथनाय।।५।।

यस्येति नाममत्रप्रधान–
वाक्योपयोग कृततोषा।

विजया कुरुते जनहितमित च,
नुता नमत त शान्तिम्।।६।।

भवतु नमस्ते भगवति ! विजये
सुजये परापरैरजिते !।
अपराजिते ! जगत्या,
जयतीति जयावहे ! भवति !।।७।।

सर्वस्यापि च सघस्य,
भद्रकल्याण मगलप्रददे !।
साधूना च सदा शिव–सुतुष्टि–
पुष्टिप्रदे जीया ।।८।।

भव्याना कृतसिद्धे !
निर्वृत्ति निर्वाण जननि सत्त्वानाम्।
अभयप्रदाननिरते,
नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे ! तुभ्यम्।।६।।

भक्ताना जन्तूना शुभावहे,
नित्यमुद्यते देवि !
सम्यग दृष्टीना,
धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानाय।।१०।।

जिनशासननिरताना
शान्तिनताना च जगति जनतानाम्।
श्रीसम्पत कीर्ति यशोवर्द्धिनि
जय देवि ! विजयस्व।।११।।

सलिलानल – विष–विषधर
दुष्ट ग्रह–राज–रोग–रणभयत ।
राक्षस – रिपुगण – मारि–
चौरेति – श्वापदादिभ्य ।।१२।।

अथ रक्ष रक्ष सुशिव,
कुरु कुरु शान्ति च कुरु कुरु सदेति।
तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि,
कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम्।।१३।।

भगवति गुणवति ! शिवशान्ति
तुष्टिपुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्।
ओमिति नमो नमो हॉ ही
हूँ, ह य क्ष हीं फुट्फुट् स्वाहा।।१४।।

एवं यन्नामाक्षरपुरस्सर
सस्तुता जया देवी।
कुरुते शान्ति नमता,
नमो नम शान्तये तस्मै।।१५।।

इति पूवसूरिदर्शितमत्रपद
विदर्भित स्तव शान्ते ।
सलिलादिभयविनाशी
शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम्।।१६।।

यश्चैनं पठति सदा,
श्रृणोति भावयति वा यथायोगम्।

स हि शान्तिपद यायात्,
सूरि श्रीमानदेवश्च ।।१७।।

बृहच्छान्तिः

(बडी शान्ति)

मूल -

(१) ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयता, भगवन्तोऽर्हन्त. सर्वज्ञा सर्वदर्शिन स्त्रिलोकनाथाः स्त्रिलोकमहितास्त्रिलोक-पूज्यांस्त्रिलोकेश्वरांस्त्रिलोकोद्योतकराः।

शब्दार्थ-

ॐ–ॐकार परमतत्त्व की विशिष्ट सज्ञा प्रणवबीज।

एक अक्षर के रूप मे यह परमतत्त्व का वाचक है और पृथक्–पृथक् करे तो पञ्च–परमेष्ठी का वाचक है।

अर्थ-

ॐ आज का दिन पवित्र है, आज का अवसर माङ्गलिक है। सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, त्रिलोक के नाथ, त्रिलोक से पूजित, त्रिलोक के पूज्य, त्रिलोक के ईश्वर त्रिलोक मे ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले अरिहत भगवान् प्रसन्न हो, प्रसन्न हो।

मूल -

ॐ ऋषभ - अजित - सम्भव - अभिनन्दन - सुमति - पद्म -

प्रभ - सुपार्श्व - चन्द्रप्रभ - सुविधि - शीतल - श्रेयांस - वासुपूज्य - विमल - अनन्त - धर्म - शान्ति - कुन्थु - अर - मल्लि - मुनिसुव्रत - नमि - नेमि - पार्श्व - वर्द्धमानान्ता जिनाः शान्ता शान्ति - करा भवन्तु स्वाहा।

अर्थ-

ॐ ऋषभदेव, अजितनाथ, सम्भवनाथ, अभिनन्दनस्वामी, सुमतिनाथ, पद्मप्रभ, सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभ, सुविधिनाथ, शीतलनाथ, श्रेयासनाथ, वासुपूज्यस्वामी, विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ, शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रतस्वामी, नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ ओर वर्धमानस्वामी अन्तिम जिन है, ऐसे चौबीस शान्त जिन हमे शान्ति प्रदान करने वाले हो। स्वाहा।।

मूल -

(२) ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय-दुर्भिक्ष-कान्ता-रेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्य स्वाहा।

अर्थ -

ॐ शत्रुओ द्वारा किये गये विजय–प्रसङ्ग मे, दुष्काल मे, गहन–अटवी मे (प्रवास प्रसङ्ग मे) तथा विकट मार्ग चलते समय मुनियो मे श्रेष्ठ ऐसे मुनि तुम्हारा नित्य रक्षण करे। स्वाहा।

गूल–

(३) ॐ श्री - ह्रीं - धृति - मति - कीर्ति - कान्ति - बुद्धि - लक्ष्मी - मेधा - विद्या - साधन - प्रवेश - निवेशनेषु सुगृहीत - नामानो जयन्तु ते जिनेन्द्रा।

अर्थ -

ॐ श्री, ही, धृति, मति, कीर्ति, कान्ति, बुद्धि, लक्ष्मी और मेधा इन नौ स्वरूप वाली सरस्वती की साधना मे, योग के प्रवेश मे तथा मन्त्र जप के निवेशन मे जिनके नामो का आदर—पूर्वक उच्चारण किया जाता है, वे जिनवर जय को प्राप्त हो—सान्निध्य करने वाले हो।

मूल-

(४) ॐ रोहिणी - प्रज्ञप्ति - वज्रशृड्खला - वजाड्कुशी - अप्रतिचक्रा - पुरुषदत्ता - काली - महाकाली - गौरी - गान्धारी - सर्वास्त्रामहाज्वाला - मानवी - वैरोट्या - अच्छुप्ता - मानसी - महा - मानसी - षोडशविद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्य स्वाहा।

अर्थ-

ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृड्खला, वजाड्कुशी, अप्रतिचक्रा, पुरुपदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गान्धारी, सर्वास्त्रमहाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसी और महामानसी ये सोलह विद्यादेवियॉ तुम्हारा रक्षण करे।

मूल-

(५) ॐ आचार्योपाध्याय-प्रभृति-चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमण-सड्घस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु।

अर्थ-

ॐ आचार्य, उपाध्याय आदि चार प्रकार के श्रीश्रमण—सड्घ के लिए शान्ति हो, तुष्टि हो, पुष्टि—पोपण हो।

मूल-

(६) ॐ ग्रहाश्चन्द्र - सूर्याङ्गारक - बुध - बृहस्पति - शुक्र - शनैश्चर - राहु - केतु - सहिताः सलोकपाला. सोम - यम - वरुण - कुबेर - वासवाऽऽदित्य - स्कन्द - विनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्राम - नगर-क्षेत्र-देवताऽऽदयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीण-कोष - कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा।

अर्थ-

ॐ चन्द्र, सूर्य, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु आदि ग्रह, लोकपाल—सोम, यम, वरुण, (और) कुबेर, तथा इन्द्र, सूर्य, कार्तिकेय, विनायक आदि देव एवं ग्रामदेवता, नगरदेवता, क्षेत्रदेवता आदि दूसरे भी जो देव हो, वे सब प्रसन्न हो, प्रसन्न हो और राजा अक्षय कोश और कोठारवाले हो। स्वाहा।।

मूल-

(७) ॐ पुत्र - मित्र - भ्रातृ - कलत्र - सुहृत् - स्वजन - सम्बन्धि - वन्धुवर्ग - सहिता नित्यं चामोद - प्रमोद - कारिणः (भवन्तु स्वाहा)।

अर्थ-

ॐ आप पुत्र, मित्र, भाई, स्त्री, हितैषी, स्वजातीय, स्नेहीजन और म्वन्धी परिवार वालो सहित आनन्द—प्रमोद करने वाले हो—सुखी हो।

मूल-

(८) अस्मिंश्च भूमण्डले, आयतन - निवासि - साधु - साध्वी -

श्रावक - श्राविकाणां रोगोपसर्ग - व्याधि - दु:ख - दुर्भिक्ष - दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु।

अर्थ-

इस भूमण्डल पर अपने–अपने स्थान पर रहे हुए साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओ के रोग, उपसर्ग, व्याधि, दु ख, दुष्काल और विषाद के उपशमन द्वारा शान्ति हो।

मूल-

(६) ॐ तुष्टि - पुष्टि - ऋद्धि - वृद्धि - माङ्गल्योत्सवा सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु, दुरितानि, शत्रव पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा।

अर्थ -

ॐ आपकी सदा तुष्टि हो, पुष्टि हो, ऋद्धि मिले, वृद्धि हो, माङ्गल्य की प्राप्ति हो और आपका निरन्तर अभ्युदय हो। आपके प्रादुर्भूत पापकर्म नष्ट हो, भय–कटिनाइयॉ शान्ता हो तथा आपका शत्रुवर्ग विमुख बने।

अनुष्टुम्

(१) श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश - मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये।।

अर्थ -

तीन लोक के प्राणियो को शान्ति करने वाले और देवेन्द्रो के मुकुटो से पूजित चरण वाले, पूज्य श्रीशान्तिनाथ भगवान् को नमस्कार हो।

मूल-

(२) शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान् शान्ति दिशतु मे गुरुः।
शान्तिरेव सदा तेषां, येषा शान्तिर्गृहे गृहे।।

अर्थ-

जगत् मे शान्ति करने वाले, जगत् को धर्म का उपदेश देने वाले, पूज्य शान्तिनाथ भगवान् मुझे शान्ति प्रदान करे। जिनके घर–घर मे श्रीशान्तिनाथ की पूजा होती है उनके (यहाँ) सदा शान्ति ही होती है।

मूल-

(३) उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट-ग्रह-गति-दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि।
सम्पादित - हित-सम्पन्नाम-ग्रहणं जयति शान्तेः।।

अर्थ-

उपद्रव, ग्रहो की दुष्टगति, दु स्वप्न, दुष्ट अङ्गस्फुरण और दुष्ट निमित्तादि का नाश करने वाला तथा आत्महित और सम्पत्ति को प्राप्त कराने वाला श्रीशान्तिनाथ भगवान् का नामोच्चारण जय को प्राप्त होता है।

मूल-

(१) श्रीसङ्घ-जगज्जनपद-राजाधिप-राज-सन्निवेशानाम्।
गोष्ठिक - पुरमुख्याना, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम्।।

अर्थ-

श्रीसङ्घ, जगत् के जनपद, महाराजा और राजाओ के निवास–स्थान, विद्वन्मण्डली के सभ्य तथा अग्रगण्य नागरिको के नाम लेकर शान्ति

बोलनी चाहिए।

मूल -

(२)	श्रीश्रमणसङ्घस्य	शान्तिर्भवतु।
	श्रीजनपदाना	शान्तिर्भवतु।
	श्रीराजाधिपाना	शान्तिर्भवतु।
	श्रीराजसन्निवेशानां	शान्तिर्भवतु।
	श्रीगोष्ठिकाना	शान्तिर्भवतु।
	श्रीपोरमुख्याना	शातिर्भवतु।
	श्रीपौरजनस्य	शान्तिर्भवतु।
	श्रीब्रह्मलोकस्य	शान्तिर्भवतु।

अर्थ -

श्रीश्रमणसङ्घ के लिए शान्ति हो।
श्रीजनपदो (देशो) के लिए शान्ति हो।
श्रीराजाधिपो (महाराजाओ) के लिए शान्ति हो।
श्रीराजाओ के निवास स्थानो के लिए शान्ति हो।
श्रीगोष्ठिको–विद्वन्मण्डली के सभ्यो के लिए शान्ति हो।
श्रीअग्रगण्य नागरिको के लिए शान्ति हो।
श्रीनगरजनो के लिए शान्ति हो।
श्रीब्रह्मलोक के लिए शान्ति हो।

मूल-

ॐ स्वाहा ! ॐ स्वाहा !! ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा !!

अर्थ-

ॐ स्वाहा, ॐ स्वाहा, ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा।

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्रम्

(१)

आद्यताक्षर सलक्ष्यमक्षर व्याप्य यत् स्थितम्।
अग्निज्वाला–सम नाद, बिन्दुरेखा समन्वितम्।।

(२)

अग्निज्वाला समाक्रान्त, मनोमल – विशोधन।
देदीप्यमान हृत्पद्मे, तत्पद नौमि निर्मलम्।।

(३)

'अर्ह' मित्यक्षर ब्रह्म, वाचक परमेष्ठिन।
सिद्धचक्रस्य सद्बीज, सर्वत प्रणिदध्महे।।

(४)

ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नम।
ॐ नम सर्व सूरिभ्य, उपाध्यायेभ्य ॐ नम।।

(५)

ॐ नम सर्व–साधुभ्य', ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नम।
ॐ नम तत्त्वदृष्टिभ्य, चारित्रेभ्यस्तु ॐ नम।।

(६)

श्रेयसेऽस्तु श्रिये स्त्वेत – दर्हदाद्यष्टक शुभम्।
स्थानेष्वष्टसु विन्यस्त, पृथग् बीज समन्वितम्।।

(७)

आद्य पद शिखा रक्षेत्, पर रक्षतु मस्तकम्।
तृतीय रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्य रक्षेच्च नासिकाम।।

(८)

पञ्चमतु मुख रक्षेत् षष्ठ, रक्षेच्च घण्टिकाम्।
नाभ्यन्त सप्तम रक्षेत्, रक्षेत्पादान्तमष्टमम्।।

(९)

पूर्व–प्रणवत सान्त, सरेफो द्व यब्धि पञ्चषान।
सप्ताष्टा दश सूर्याकान्, श्रितो बिन्दु स्वरान् पृथक्।।

(१०)

पूज्यनामाक्षरा आद्या, पञ्चैते ज्ञान दर्शने।
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं–सान्त–समलकृत ।।

(११)

जम्बूवृक्षधरो द्वीप क्षारोदधि – समावृत ।
अर्हदाद्यष्टकैरष्ट काष्ठाधिष्ठैरलकृत ।।

(१२)

तन्मध्ये सगतो मेरु, कूटलक्षैरलकृत ।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, तारा मण्डल मण्डित ।।

(१३)

तस्योपरि सकारान्त, बीज मध्याष्य सर्वगम्।
नमामि बिम्बमार्हन्त्य ललाटस्थ निरजनम।।

(१४)

अक्षय निर्मल शान्त, बहुल जाड्यतोज्झितम्।
निरीह निरहकार, सार सारतर घनम्।।

(१५)

अनुद्धत शुभ स्फीत, सात्विक राजस मतम्।
तामस विरसबुद्ध, तैजस शर्वरी – समम्।।

(१६)

साकार च निराकार, सरस विरस परम्।
परापर परातीतं, परम्पर – परात्परम्।।

(१७)

सकल निष्कल तुष्ट, निर्वृत भ्रान्ति वर्जितम्।
निरजन निराकाक्ष, निर्लेप वीत – सशयम्।।

(१८)

ब्रह्माणमीश्वर बुद्ध, शुद्ध सिद्धमभगुरम्।
ज्योतिरूप महादेव, लोकालोक प्रकाशकम्।।

(१९)

अर्हदाख्य स वर्णान्त, सरेफो बिन्दु – मण्डित।
तुर्यस्वरकलायुक्तो, बहुध्या नदि – मालित।।

(२०)

एक वर्ण – द्विवर्ण च, त्रि वर्ण तुर्य वर्णकम्।
पञ्च वर्ण महावर्ण, सपर च परापरम्।।

(२१)

अस्मिन् बीजे स्थिता सर्वे, ऋषभाद्या जिनोत्तमा ।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगता ।।

(२२)

नादश्चन्द्र – समाकारो, बिन्दुर्नील – समप्रभ ।
कलाऽरुण समासान्त, स्वर्णाभ· सर्वतोमुख ।।

(२३)

शिर सलीन ईकारो, विनीलो वर्णत स्मृत ।
वर्णानुसार सलीन, तीर्थकृन्मण्डल स्तुम

(२४)

चन्द्रप्रभ – पुष्पदन्तौ, 'नाद' स्थिति समाश्रितौ ।
'बिन्दु' मध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ।।

(२५)

पद्मप्रभ वासुपुज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ।
शिर–ई–स्थिति सलीनौ, पार्श्व मल्लि जिनोत्तमौ ।।

(२६)

शेषास्तीर्थकरा सर्वे, 'रह स्थाने नियोजिता ।
माया बीजाक्षर प्राप्ता, चतुर्विंशतिरर्हताम् ।।

(२७)

गत राग द्वेष मोहा, सर्व पाप विवर्जिता ।
सर्वदा सर्व लोकेषु ते भवन्ति जिनोत्तमा ।।

(२८)

देवदेवस्य यच्चक्र तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाङ्ग, हिसन्तु डाकिनी।।

(२९)

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाङ्ग, मा मा हिसन्तु राकिनी।।

(३०)

देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मा हिसन्तु लाकिनी।।

(३१)

देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाङ्ग, मा मा हिसन्तु काकिनी।।

(३२)

देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाङ्ग, मा मा हिसन्तु शाकिनी।।

(३३)

देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाङ्ग, मा मा हिसन्तु हाकिनी।।

(३४)

देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाङ्ग, मा मा हिसन्तु याकिनी।।

(३५)
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाड्ग, मा मा हिसन्तु पन्नगा ।।

(३६)
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाड्ग, मा मा हिसन्तु हस्तिन ।।

(३७)
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाड्ग, मा मा हिसन्तु राक्षसा ।।

(३८)
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाड्ग, मा मा हिसन्तु वन्हय ।।

(३९)
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाड्ग, मा मा हिसन्तु सिहका ।।

(४०)
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाड्ग, मा मा हिसन्तु दुर्जना ।।

(४१)
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वाड्ग, मा मा हिसन्तु भूमिपा ।।

(४२)

श्री गौतमस्य या मुद्रा, तस्य या भुवि लब्धय ।
ताभिरभ्यधिक ज्योति – रर्हन् सर्व – निधीश्वर ।।

(४३)

पाताल वासिनो देवा, देवा भू–पीठ–वासिन ।
स्वर्गवासिनोऽपि ये देवा, सर्वे रक्षन्तु मामित ।।

(४४)

येऽवधि लब्धयो ये तु, परमावधि – लब्धय ।
ते सर्वे मुनयो दिव्या, मा सरक्षन्तु सर्वदा ।।

(४५)

दुर्जना भूत – वेताला, पिशाचा मुद्गलास्तथा ।
ते सर्वेप्युपशाम्यन्तु, देव – देव प्रभावत ।।

(४६)

ॐ श्री हीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गोरी चण्डी सरस्वती ।
जयाऽम्बा विजया नित्या, क्लिन्नाऽजिता मदद्रवा ।।

(४७)

कामागा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी ।
माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलि–प्रिया ।।

(४८)

एता सर्वा महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत् त्रये ।
मह्य सर्वा प्रयच्छन्तु, कान्ति कीर्ति धृति मतिम् ।।

(४६)

दिव्यो गोप्य सुदुष्प्राप्य, श्री ऋषिमण्डलस्तव।
भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत् त्राण – कृतेऽनघ।।

(५०)

रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ।
श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम्।।

(५१)

राज्यभ्रष्टा निज राज्य, पदभ्रष्टा निज पद।
लक्ष्मीभ्रष्टा निजा लक्ष्मी, प्राप्नुवन्ति न सशय।।

(५२)

भार्यार्थी लभते भार्या, सुतार्थी लभते सुतम्।
वित्तार्थी लभते वित्त, नर स्मरण – मात्रत।।

(५३)

स्वर्णे रौप्ये पटे कास्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत्।
तस्येवाष्टमहासिद्धि, गृहे भवति शाश्वती।।

(५४)

भूर्जपत्रे लिखित्वेद, गलके मूर्ध्नि वा भुजे।
धारित सर्वदा दिव्य, सर्व – भीति विनाशकम्।।

(५५)

भूतै प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षै, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलै।
वात पित्त कफोद्रेकै – मुच्यते नात्र सशय।।

(५६)

भूर्भुव स्वस्त्रयी पीठवर्तिन शाश्वता जिना।
तै स्तुतैर्वन्दितै र्दृष्टैर् – यत्फल तत्फल स्मृतो।।

(५७)

एतद् गोप्य महास्तोत्र, न देय यस्य कस्यचित्।
मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बाल – हत्या पदे पदे।।

(५८)

आचाम्लादि तप कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीग्।
अष्ट साहस्त्रिको जाप, कार्यस्तत् सिद्धि – हेतवे।।

(५६)

शतमष्टोत्तर प्रात, ये स्मरन्ति दिने दिने।
तेषा न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापद।।

(६०)

अष्ट मासावधि यावत्, प्रात प्रातस्तु य पठेत।
स्तोत्रमेतन् महातेजो, जिनविम्ब स पश्यति।।

(६१)

दृष्टे सत्यर्हतो विम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवग्।
पदमाप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्द – सम्पदाग्।।

(६२)

विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते।
गत्वा स्थान पर सोऽपि, भूयस्तु न निवर्तते।।

(६३)

इद स्तोत्र महास्तोत्र, स्तुतीनामुत्तम परम्।
पठनात् स्मरणाज्जापात्, लभते पदमव्ययम्।।

श्री वृषभ-जिनस्तवन

(आचार्य समन्तभद्र)

(१)

स्वयम्भुवा भूत–हितेन भूतले,
समञ्जस – ज्ञान–विभूति–चक्षुषा।
विराजित येन विधुन्वता तम,
क्षपाकरणेव गुणोत्करै करै ।।

(२)

प्रजापतिर्य प्रथम जिजीविषु,
शशास कृष्यादिषु कर्मसु प्रजा ।
प्रबुद्ध–तत्त्व पुनरद्भुतोदयो,
ममत्वतो निर्विविदे विदावर ।।

(३)

विहाय य सागर–वारि–वासस,
वधूमिवेमा वसुधा – वधू सतीम्।
मुमुक्षुरिक्ष्वाकु–कुलादिरात्मवान्,
प्रभु प्रवव्राज सहिष्णुरच्युत ।।

(४)

स्वदोष–मूल स्व–समाधितेजसा,

निनाय यो निर्दय–भस्मसात्क्रियाम्।
जगाद तत्त्व जगतेऽर्थिनेऽञ्जसा,
बभूव च ब्रह्म–पदाऽमृतेश्वर ।।
(५)
स विश्व–चक्षुर्वृषभोऽचित सता,
समग्र–विद्यात्म–वपुर् निरञ्जन ।
पुनातु चेतो मम नाभिनन्दनो,
जिनोऽजित–क्षुल्लक–वादिशासन ।।

सोलह सती स्तोत्र

आदौ सती सुभद्रा च, पातु पश्चात्तु सुन्दरी।
ततश्चन्दनबाला च, सुलसा च मृगावती।।१।।
राजीमती ततश्चूला, दमयन्ती तत परम्।
पद्मावती शिवा सीता, ब्राह्मी पुनश्च द्रौपदी।।२।।
कौशल्या च तत कुन्ती, प्रभावती सतीवरा।
सतीनामाक–यन्त्रोऽय चतुस्त्रिशत्–समुद्भव ।।३।।
यस्य पार्श्वे सदा यन्त्रो, वर्तते तस्य साम्प्रतम्।
भूरि–निद्रा न चायाति, नायान्ति भूतप्रेतका.।।४।।
ध्वजाया नृपतेर्यस्य, यन्त्रोऽय वर्तते सदा।
तस्य शत्रुभय नास्ति सग्रामेऽस्य जय सदा।।५।।
गृह–द्वारे सदा यस्य यन्त्रोऽय ध्रियते वर ।

कार्मणादिक तन्त्रैश्च न स्यात् तस्य पराभव ।।६।।

स्तोत्र सतीना सुगुरुप्रसादात्,
कृत मयोद्योत – मृगाधिपेन।
य· स्तोत्रमेतत् पठति प्रभाते,
स प्राप्नुते श सतत मनुष्य ।।७।।

सती यंत्र

(३४)

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

अंतिम मंगल

जिने भक्तिर् जिने भक्तिर्
जिने भक्ति सदाऽस्तु मे।
सम्यक्त्वमेव ससार–
वारण मोक्ष–कारणम्।।१।।

श्रुते भक्ति श्रुते भक्ति,
श्रुते भक्ति सदाऽस्तु मे।
सज्ज्ञानमेव ससार–
वारण मोक्ष–कारणम्।।२।।

गुरौ भक्तिर् गुरौ भक्तिर्,
गुरौ भक्ति सदाऽस्तु मे।
चारित्रमेव ससार–
वारण मोक्ष–कारणम्।।३।।



परिशिष्ट

मंत्र विभाग

सभी मत्रो मे सर्वश्रेष्ठ मत्र नवकार है इसीलिए इसे मत्र भी कहा जाता है। यह सभी पापो का नाश करने वाला व सभी मगलो मे प्रथम मगल है किन्तु मत्रो के प्रति लोगो आकर्षण को ध्यान मे रखते हुए यहा कुछ मत्रो का विभिन्न ो के आधार पर इसमे चयन किया गया है। पाठको । क्षीर विवेकी बुद्धि से जिनवाणी के अनुकूल चलना अपेक्षित है।

- सम्पादक

महामंत्र नवकार कल्प

(मूल नवकार मत्र)

नमो अरिहताण

नमो सिद्धाण

नमो आयरियाण

नमो उवज्झायाण

नमो लोए सव्वसाहूण।

सूचना- यह मत्रराज नवकार मत्र है। इससे बढकर ती लोक मे कोई भी मत्र नही है। पूर्व या उत्तर दिशा को मुख करव पवित्रभाव से एक माला प्रतिदिन फेरने से सब प्रकार का आनद-मगल रहता है, सब सकट दूर हो जाते है।

नवाक्षरी मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हम् नमः क्ष्रीं स्वाहा

सूचना- पहले नौ बार नवकार मत्र पढ कर बाद मे इस मत्र की नौ माला फेरे। निरतर २१ दिन तक जप करने से सब प्रकार का राज-सबधी या अन्य सभी तरह का सकट दूर हो जाता है।

प्रेमभाव वर्द्धक मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं

सूचना- पूर्व दिशा की ओर मुख करके इस मत्र का जप करे। एक बार मत्र का जप करे और नये कपडे मे एक गॉठ लगा दे। इस प्रकार एक-सौ आठ बार जप करे और नये कपडे मे एक-सौ आठ गॉठ लगा दे। ऐसा करने से घर मे, परिवार मे किसी के साथ कलह या अनबन हो तो सब क्लेश शात हो जाता है, आपस मे प्रेम-भाव बढ जाता है।

सर्वकार्य साधक मंत्र

ॐ हा ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्र असिआउसा स्वाहा

सूचना- इस मत्र का सवा लाख जप, अतराल डाले बिना, ३१ दिन करने से मन–चितित सब कार्यो की सिद्धि हो जाती है। यह मत्र दरिद्रता का नाश करने वाला है। उत्तर दिशा की ओर मुख करके एक बार भोजन करे और ब्रह्मचर्य का व्रत रखे।

महासुख प्राप्ति कारक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो सिद्धाणं,
ॐ ह्रीं श्रीं नमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो उवज्झयाणं,
ॐ ह्रीं श्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो नाणस्स,
ॐ ह्रीं श्रीं नमो दंसणस्स, ॐ ह्रीं श्रीं नमो चरित्तस्स, ॐ ह्रीं श्री नमो तवस्स।

विधि- उत्तर दिशा मे मुख करके सोते समय २१ बार जप करने से सब प्रकार के सुखो की प्राप्ति होती है।

संकट निवारक, मनोवांछित दायक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमिउण असुर - सुर - गरुल - भुयग - परिवंदिए, गए किलेसे अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाए सव्वसाहूणं नम. स्वाहा।

विधि- पहले पचमी, दशमी या पूर्णमासी को रवि–पुष्य रवि–मूल या गुरुपुष्य नक्षत्र हो, उस दिन से २७ दिनो मे इसका १२५०० जाप करके इसे सिद्ध कर ले। प्रारभ मे अट्ठमतप (तेला) करे, अन्यथा, बीच–बीच मे आयबिल या एकाशन करे, जप की पूर्णाहुति के दिन

उपवास करे। उसके बाद सकटकाल मे इस मत्र की २१ माला फेरे से शाति हो जाती है। जाप एकात मे करे।

स्मरणशक्ति-वर्द्धक मंत्र

"ॐ ह्रीं चउद्दसपुव्विणं, ॐ ह्रीं पयाणुसारिणं, ॐ ह्रीं एगारसंगधारिणं, ॐ ह्रीं उज्जुमइणं, ॐ ह्रीं विउलमइणं स्वाहा।"

पहले 'तीर्थंकरगणधरप्रसादादेष योग फलतु' यह ७ बार कह कर इस मत्र की एक माला रोजना फेरे। इससे बुद्धि तीव्र होगी।

भूतप्रेतादिनिवारण मंत्र

'ॐ नमो उग्गतवचरणवारीणं, ॐ नमो हिततवाणं, ॐ नमो तत्ततवाणं, ॐ नमो पडिमापडिवन्नाणं एएसिं पराविज्जापहारणे पसिज्जउ स्वाहा।'

विधि- पहले "तीर्थंकरगणधरप्रसादादेप योग फलतु' इस प्रकार ७ बार बोल कर फिर २१ दिन तक प्रतिदिन १ माला फेरे। कोई भी देवदोष की शका होगी तो दूर हो जायेगी।

विशिष्ट विद्याप्राप्ति का मंत्र

'ॐ ह्रीं बीयबुद्धिणं, ॐ ह्रीं कोट्ठबुद्धिणं, ॐ ह्रीं

संभिन्नसोयाणं, ॐ ह्रीं अक्खीण महाणसलद्धिणं सव्वलद्धिण नम· स्वाहा।'

विधि- तेला करके इस मत्र का १२५,०० जप पीली माला से तीन दिन मे कर ले। फिर प्रतिदिन १०८ बार जपे।

बुद्धिवर्द्धक एवं परिक्षोत्तीर्ण-मंत्र

ऐ सरस्वत्यै नम·।

विधि- पहले सवा लाख जप करके इसे सिद्ध कर ले। फिर जब भी कार्य हो, तब ११ माला रात को सोते समय या प्रात उठते समय फेरे। इससे स्मरणशक्ति बढती है। छात्र परीक्षा मे उत्तीर्ण हो जाता है।

ऐश्वर्यदायक मंत्र

ॐ ह्रीं वरे सुवरे असिआउसा नम·।

सूचना- इस मत्र का एकात स्थान मे प्रतिदिन सुबह, दोपहर और शाम तीनो काल मे एक–एक माला करके तीन माला फेरने से सब प्रकार की सम्पत्ति, लक्ष्मी और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। किसी पद आदि की उन्नति के लिए भी इसका जप किया जा सकता है।

रोग-निवारक मंत्र

ॐ नमो आमोसहि पत्ताणं

ॐ नमो विप्पोसहि-पत्ताणं ॐ नमो खेलोसहिपत्ताणं,

ॐ नमो जल्लोसहिपत्ताणं, ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताणं एएसि मम रोगोवसमणे पसिज्जउ स्वाहा।

सूचना- इस मत्र की प्रतिदिन एक माला फेरने से सब प्रकार के रोगो की पीडा शात हो जाती है, रोगी का कष्ट कम हो जाता है।

ग्रहपीड़ा-नाशक मंत्र

जब सूर्य और मगल की पीडा हो तो – **ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं**, चद्रमा और शुक्र की पीडा हो तो – **ॐ ह्रीं नमो अहिरंताण**, बुध की पीडा हो तो – **ॐ ह्रीं नमो उवज्झयाणं**, गुरु–बृहस्पति की पीडा हो तो – **ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं**, तथा शनि, राहु और केतु की पीडा हो तो – **ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं** मत्र का जप करना चाहिए। जितने दिनो तक ग्रह–पीडाकारण रहे उतने दिन तक प्रतिदिन ऊपर लिखे मत्रो का एक हजार जप करना उचित है। इन मत्रो के जप से किसी भी प्रकार की ग्रह–पीडा नही होगी।

परिवार-रक्षा-मंत्र

ॐ अरिहे सर्व रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

सूचना- इस मत्र के द्वारा परिवार की रक्षा करनी चाहिए। परिवार पर आए सब आपत्ति, सकट दूर हो जाते है। अत एक माला प्रात काल और एक सायकाल फेरनी चाहिए।

नवकार का ४५ अक्षर मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमो लाए सव्व साहूणं।

परमेष्ठी मुद्रा से जाप करे तो चोर और दुष्ट मनुष्य आदि का भय न हो। विपत्ति नाश होवे। इसमे ही के बाद श्री लगाने से महान् प्रभावक नमस्कार मत्र होता है।

शुभ मुहूर्त मे साधना प्रारभ करे, शुद्ध वस्त्र पहने, स्फटिक या सूत की माला से २६ दिन तक तीनो समय (प्रात दोपहर, साय) प्रत्येक पद की ६ माला करे।

प्रथम पद की पूरव मुख करके ६ माला, फिर द्वितीय पद की भी पूरव मुख करके ६ माला, फिर तृतीय पद की उत्तर मुख करके ६ माला करे। पुन चौथे पद की पश्चिम मुख होकर ६ माला करे। पाचवे पद की दक्षिण मुख होकर ६ माला करे।

२७ दिन मे पूर्ण होगा। यह अत्यत चमत्कारी तथा प्रभावशाली है। जाप के दिनो मे चमत्कारी घटनाए हो सकती है।

विघ्न हरण नमस्कार मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं णमो अरहंताणं, ॐ क्लीं पैं णमो सिद्धाणं, ॐ क्षौ बैं णमो आयरियाणं, ॐ श्रीं रैं णमो उवज्झायाणं, ॐ ब्लूं लौ णमो लोए सव्व साहूणं। एकात शुद्ध स्थान मे शुद्धि

करके शुभ मुहूर्त मे जाप शुरू करे। १२५०० जाप करने से हर प्रकार की विध्न बाधा दूर होती है।

क्लेश नाशक मंत्र

ॐ अर्ह असि आउसा नमः शुद्धतापूर्वक पूर्व मुख करके सवा लाख बार जपे। यह अत्यत चमत्कारी प्रभावशाली मत्र है।

॥ विवाद विजय ॥

ॐ हंस ॐ ह्रीं अर्ह ऐं श्रीं अ सि आ उ सा यह नमः। इसका सवा लाख जप कर सिद्ध कर लेवे फिर कभी विवाद हो तो उससे पहले २१ बार जाप करके वाद विवाद करे, विजय होगी।

॥ शत्रुनाशक ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अमुकं दुष्टं साधय-साधय अ सि आ उ सा नमः। २१ दिन सुबह एक माला जपने पर सिद्ध होगा। कार्य हेतु एकमाला (१०८ बार) जपे शत्रु भय क्लेश आपत्ति का निवारण होगा। अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम लेवे।

॥ अग्नि शांत करने का मंत्र ॥

ॐ णमो ॐ अर्ह अ सि आ उ सा णमो अरहंताणं नमः १२५०० जपने से सिद्ध होगा। २१ बार पढकर अभिमंत्रित जल अग्नि पर गिराने से वह तुरत शात हो जायगी।

।। दुष्टभय भूतादिभय निवारण मंत्र ।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय जृम्भय जृम्भय अंघय अंघय बधिर बधिरय मूकवत् कारय कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठ स्वाहा।

शत्रु के सामने आने पर मुट्ठी बद रख १०८ बार जपे फिर मुट्ठी शत्रु के सामने करे तो वह परास्त हो जायेगा। १०८ बार झडने से भूतादि बाधा शात होगी। ईशान मुखी होकर आधी रात मे आठ दिन तक साधना करे, प्रति रात ११०० जपे, तो व्यतर बाधा दूर हो।

।। अर्हं मंत्र ।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमः

शुभ दिन, नक्षत्र मे पूर्वाभिमुख होकर १२५००० जपे, सर्वकामना सिद्ध होवे।

।। लक्ष्मी मंत्र ।।

ॐ ह्रीं हूं अर्हं णमो अरहंताणं ह्रीं नमः

शुभ मुहूर्त मे पीला वस्त्र धारण करके पीलीमाला से १२५००० जपे तो लक्ष्मी प्रसन्न होगी, प्रतिदिन एक माला जपे। यह श्रेष्ठ मत्र है।

।। सिद्धि सिद्धि मंत्र ।।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं मम ऋद्धिं वृद्धिं समीहितं-कुरु कुरु स्वाहा।

प्रवेश नही करे। अत्यत लाभ व धन की प्राप्ति होवे, प्रतिदिन एक माला जपे।

॥ सर्व कार्य सिद्धि मंत्र ॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्रीं स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं णमो अरहंताणं

प्रतिपद, षष्ठी, ग्यारस, शुक्रवार, सोमवार को श्वते वस्त्र पहन करके ईशानकोण मे मुख करके श्वेत माला से जपे, स्वल्प आहार लेवे सर्वकार्य सिद्ध होगा।

॥ चोर भय दूर करने हेतु ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं सिद्धदेव नम

२१ दिन प्रात पूर्व मुख कर एक माला जपे तो सिद्ध होवे। यात्रा मे ७ बार पहले ही बोलकर वस्त्र मे गॉठ देवे तो चोरभय मार्ग मे न हो।

॥ सर्व वशीकरण मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं णमो सिद्धाणं

द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी, मगलवार को लाल वस्त्र पहनकर लाल माला से जपे, साथ मे छठे, बारहवे तीर्थकर का जप करे तो सर्व वशीकरण होवे।

॥ लाभकारी मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं द्रूं णमो उवज्झयाणं।

चतुर्थी, नवमी, चौदस, बुधवार नीला वस्त्र पहनकर, पश्चिम मुख करके नीली माला से जपे तो अत्यत लाभ होवे।

॥ सर्वकारी सिद्धि मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं णमो लोए सव्व साहूण

पचमी, दशमी, अमावस, पूर्णिमा को, शनिवार को काला वस्त्र पहन करके उत्तर दिशा मे मुख करके काली माला से जपे तो सर्व कार्य सिद्ध हो।

॥ स्वप्न शुभप्रद मंत्र ॥

ॐ णमो अरिहा ॐ भगवउ बाहुबलीरस य इह समणस्स अमले विमले निम्मल णाण पयासिणी, ॐ णमो सव्व सच्चं भासइ अरिहा सच्च भासई केवलीणं ए एणं सच्चं वयणे णं सच्च होउ मे स्वाहा।

इसका ध्यान रात्रि मे खडे होकर कायोत्सर्ग मे करे नीद आये तो भूमि पर सोये। स्वप्न मे शुभाशुभ ज्ञात हो।

॥ दृव्य प्राप्ति घंटाकर्ण मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मी पूंरय पूरय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा

धनतेरस को ४० माला रूप चौदस को ४२ माला तथा दीपावली को ४३ माला का जाप करे तो वह वर्ष निश्चय ही लक्ष्मी

प्राप्ति के लिए उत्तम होगा। उत्तर की ओर मुख करके जाप करना चाहिए, सफेद वस्त्र, सफेद ऊनी आसन्। लाल माला का व्यवहार करना चाहिए।

।। श्री कलि कुण्ड स्वामी का मंत्र ।।

ओं ऐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलि कुण्ड दण्ड स्वामिने अप्रति चक्रे जये विजये अजिते अपराजिते स्तंभे स्वाहा

छ मास तक एकाशन से रहकर प्रतिदिन एक माला फेरे तो यह सिद्ध हो २१ बार पढकर जाने से विवाद विजय होवे। प्रतिपक्षी का मुख बद होवे। अपने स्थान से १०० कोश की घटना का ज्ञान होवे। शत्रु के स्थान की तरफ तीन दिन तक माला फेरे तो शत्रु का भय मिटे।

।। चंद्र प्रज्ञप्ति विद्या कल्प मंत्र ।।

नमिऊण असुर सुर गरुल भयंग परिवंदिये गए किलेसे अरहे सिद्धायरिये उवज्झये सव्वसाहूणं।

विधि- एक तेले या आयम्बिल की तपस्या करे। उत्तर की ओर मुख करके एकासन पर १२५०० जाप करे तो सर्व कार्य सिद्ध हो। सिद्ध होने पर प्रयोग निम्न प्रकार से करे।

नमिऊण- एक सास मे २१ बार जपने से चोर भय मिटे। असुर- चौविहार तेला करे। तेले की रात एक आसन पर उत्तर की ओर मुह करके १२००० जाप करे तो वैमानिक देव उपस्थित हो।

सुर- एक सास मे ३२ बार जपे तो पिशाच राक्षस आदि का भय टले। **गुरुल-** उत्तर मुख ५००० जपे तो नागदेव का भय टले। **भुयंग-** एक सास मे ३२ बार जपे तो नागसर्प का भय टले। **परिवंदिए-** एक सास मे १०८ बार जपे तो अग्नि शात हो। **गए-** एक सास मे १०८ बार जपे तो हाथी भय टले। **किलेसे-** एक सास मे १०८ बार जाप करे तो शत्रुभय मिटे। **सिद्धा-** एक सास मे १२१ जाप व प्रात एक माला फेरे तो नव निधि प्राप्त हो। **यरिये-** एक सास मे १०८ बार जपे तो चोर भय मिटे, बडा आदमी वश मे हो। **उवज्झये-** एक सास मे १०८ बार जपे, बडा उपद्रव टले। **सव्वसाहूणं-** एक सास मे २१ बार जपे, बडा उपद्रव टले। २७ दिन प्रतिदिन २७ माला करे तो सर्व व्याधि टले, आनद हो, इन दिनो नवकारसी करे, ब्रह्मचर्य मे रहे।

।। सर्वरक्षा नमस्कार मंत्र ।।

मंत्र- ॐ ह्रीँ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं एसो पंच णमुक्कारो, सव्वपावप्पाणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, ॐ ह्रीँ हुं फट् स्वाहा।

विधि- इस मत्र का स्मरण प्रत्येक कार्य मे सुखप्रद है। नित्यप्रति खूब ध्यानपूर्वक इसका जाप करना चाहिए। यह सर्वथा आनद दायक महामत्र है।

।स्वप्न में आवाज आने का अर्हं मंत्र।

मंत्र- ॐ ह्रीं अर्ह क्ष्वीं स्वाहा-

विविध- ललाट पर चदन का तिलक कर इस मत्र की एक माला फेरकर शयन करे तो स्पप्न मे प्रश्न का उत्तर मिल सकता है। एक रात्रि मे नही मिले तो तीन रात्रि तक यह प्रयोग चालू रखे।

।। चिंता निवारण मंत्र।।

ॐ णमो अरहंताणं बुद्धाणं बोहयाणं स्वाहा।

विधि- लगातार ६ माह तक एक माला एकाग्र हो, मन से काकेष्ठाधान पास मे रखकर जाप करने से चितन किए कार्य सफल होते है, चिता दूर हो जाती है।

।। बुद्धि निर्मल मंत्र ।।

ॐ णमो सव्वन्नूणं सव्वै दरिसीणं मम नाणाइसयं कुरु ह्रीं नमः।

विधि- प्रतिदिन इस मत्र की एक माला का जाप करे तो बुद्धि निर्मल हो, दूसरे के मनोभाव जानने की शक्ति प्राप्त हो।

।। डाकिनी-शाकिनी नाशक मंत्र ।।

ओं ह्रीं कुर कुले स्वाहा।

विधि- यह नाग दमनी महाविद्या है इसके स्मरण मात्र से डाकिनी, शाकिनी, राक्षस आदि का नाश होता है।

॥ धरणदूर मंत्र ॥

ॐ चरणी चरणी, माणस तेरी सरणी, मणस का आसा-पासा, छोड रे धरणी, न छोडे तो चतुरंग नाथ जी री आज्ञा फुरे ठः ठः स्वाहा।

विधि- १२५००० जाप कर मत्र सिद्ध करले। फिर जब भी आवश्यकता हो पेट पर हाथ फेरता जाय और मत्र पढता जाय तो धरण अच्छी होगी।

॥ चिणक पर मंत्र ॥

चणकिली, मणकिली, नीवीतीती, जीमती जीमातीती 'अमुक' चिणक गमाय तीति भलो कियो म्हारी बाई।

विधि- दो ककड ले, एक चिणक पर रखे, एक हाथ मे रखे। एक बार मत्र बोले तथा हाथ वाला ककड चिणक वाले ककड से छुआ दे। इस प्रकार सात बार करे चिणक ठीक होती है।

॥ मंगल मंत्र ॥

ॐ अ-सि-आ-उ-सा नमः।

विधि- इस मत्र का सूर्योदय के समय सूर्य की ओर मुख करके १०८ बार जप करने से गृह–कलह दूर हो और धन–सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

॥ द्रव्य-प्राप्ति मंत्र ॥

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं सिद्धाणं आयरियाणं उवज्झायाणं साहूणं मम, ऋद्धि-वृद्धि-समीहितं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि- इस मत्र का नित्य प्रात काल, मध्याह्न और सायकाल को २१ दिन तक त्रिकाल मे जपने से सिद्ध होता है। बत्तीस बार मन मे ही ध्यान के रूप मे मानसिक जप करे। सब प्रकार की सुख–समृद्धि, धन का लाभ और कल्याण हो।

॥ सप्ताक्षरी मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह नम.।

विधि- यह बहुत प्राचीन और प्रभावशाली मत्र है। सब प्रकार के सुख, सम्पत्ति आदि के मनोरथ इससे पूर्ण हो जाते है।

॥ हृदय-जप ॥

जहा हृदय है वहॉ मन के सकल्प से ही पॉच पखुडी का कमल बनाना चाहिए। पहली पखुडी सफेद रग की, दूसरी लाल रग की, तीसरी पीले रग की, चौथी हरे रग की और पाचवी काले रग की। कमल के बीच मे अर्हम् का ध्यान करे और ऊपर लिखी पखुडियो पर क्रमश 'नमो अरिहताण' आदि पाच पदो का मन से ही जप करे। इस प्रकार नौ बार नवकार मत्र का जप करने से आध यात्मिक बल बढता है।

॥ ओम् का जप ॥

'ओम' नवकार मत्र के पॉच पद का वाचक है। हृदय–जप मे बताये गए सफेद, लाल आदि पाचो रगो की पर ओम् का क्रमश ध्यान करना चाहिए।

अ–सि–आ–उ–सा के मत्र मे भी 'ओम्' रहा हुआ है। अत नाभि–कमल मे अ, मस्तक कमल मे सि, मुख कमल मे आ, हृदय कमल मे उ और कठ कमल मे सा अक्षर का ध्यान करने से सब प्रकार से आनद मगल रहता है।

॥ सोऽहम् का जप ॥

'सो' का अर्थ वह यानी 'अर्हत–देव' और "अहम्" का अर्थ 'मै' है। इसका अर्थ होता है कि– मै अर्हलदेव हूॅ। इस मत्र का जप श्वास के साथ करना चाहिए। अदर की ओर श्वास आए, तब 'सो' बोलना और जब बाहर की ओर श्वास जाए, तब 'ऽहम्' कहना चाहिए। यह मत्र निश्चयदृष्टि का है।

॥ अर्हम् का ध्यान ॥

जिसके सब ओर निर्मल सुनहरी किरणे निकलती हो, ऐसे सुवर्णकमल के बीच श्वेत रग मे अर्हम् का ध्यान करना चाहिए। उक्त कमल को सर्वप्रथम ऊॅचे आकाश मे चमकता हुआ विचार करे। बाद मे क्रमश मुख मे प्रवेश करता हुआ, भृकुटि मे भ्रमण करता हुआ, अत

मे भाल–मण्डल मे स्थिर होता हुआ सोचे।

'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हम् अ-सि-आ-उ-सा नम.।'

इस मत्र का १२, ५०० जाप करने से सब प्रकार का रोग, सकट दूर हो जाता है, पुत्ररत्न की प्राप्ति के लिए इस मत्र का सवा लाख जाप पद्मासन लगा कर, पूर्व और उत्तर को मुख रख कर, ब्रह्मचर्य की साधना से जप करना चाहिए।

।। नवपद का ध्यान ।।

अपने हृदय मे सकल्प से आठ पखुडी का कमल बनाएँ– चार पखुडी पूर्व आदि चार दिशाओ मे और चार पखुडी ईशान आदि चार विदिशाओ मे। बीच मे नमो अरहताण का ध्यान करे। फिर चार दिशाओ वाली पखुडियो पर अनुक्रम से **नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं'** का ध्यान करे। इसके बाद चार विदिशाओ वाली पखुडियो पर क्रमश **'नमो दंसणस्स, नमो नाणस्स, नमो चरित्तस्स, नमो तवस्स'** का ध्यान करना चाहिए। दिशाओ का क्रम पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर है और विदिशाए ईशान (उत्तर और पूर्व का मिलन), अग्निकोण (पूर्व और दक्षिण का मिलन) आदि के क्रम से है।

।। लोगस्स कल्प ।।

ऍं ॐ ह्रीं ऍं लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली-मम मनस्तुष्टिं कुरु-कुरु ॐ स्वाहा।

विधि- इस मत्र को पूर्व दिशा की ओर मुख करके सूर्योदय के समय खडा होकर 'काउस्सग्ग' के रूप मे १०८ बार मौन सहित जपे। दिन मे एक बार भोजन करे। ब्रह्मचर्य से रहे, भूमि पर या पट्टे पर सोएँ। निरतर चौदह दिन तक जप करने से मान–सम्मान, धन–सम्पत्ति प्राप्त हो और सब प्रकार का सकट दूर हो।

।। इति प्रथम मण्डल ।।

ॐ क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं उसभमजिय च वंदे, सभवमभिनंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे स्वाहा!

विधि- उत्तर दिशा की ओर मुख रखकर पद्मासन लगाकर १०८ बार जपे। सोमवार से ७ दिन दिन तक मौन रखे, एक बार भोजन करे, बह्मचर्य पाले, भूमि पर शयन करे, झूठ न बोले, सफेद वस्तु – चावल आदि का भोजन करे। गृह–कलह और राज–काल के झगडे दूर हो। सब प्रकार से आनद रहे।

।। इति द्वितीय मण्डल ।।

ॐ ऍं ह्रीं झ्रूं झ्रीं सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि स्वाहा!

विधि- इस मत्र को लाल रग की माला मे १०८ बार जपे,

ब्रह्मचर्य पाले और भूमि पर शयन करे। २१ दिन तक जपते रहने से शत्रु का बल सग्राम मे या मुकदमे मे जय हो।

।। इति तृतीय मण्डल ।।

ॐ ह्रीं श्रीं कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं य। वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च, मम मनोवांछित पूरय-पूरय ह्रीं स्वाहा।

विधि- इस मत्र का १२,००० जप पीले रग की माला से पूर्व दिशा की तरफ मुख करके करना चाहिए। हु फट् फट् बोलने से भूत–प्रेत, शाकिनी की बाधा दूर हो, परिवार की शोभा बढे। लिख कर गले मे बाधने से ज्वर–पीडा भी दूर हो।

।। इति चतुर्थ मण्डल ।।

ॐ ह्रीं ह्रां एवं मए अभित्थुआ, विहयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु स्वाहा।

विधि- इस मत्र का जप ५५०० है। पूर्वदिशा की ओर हाथ जोड कर खडे हो, तथा मुख ऊपर आकाश की तरफ करे। सब प्रकार का सुख मिले, सबको वल्लभ यानी प्रिय लगे।

।। इति पंचम मण्डल ।।

ॐ अंबराय कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु स्वाहा !

विधि- इस मत्र को उत्तरदिशा की ओर मुह करके १५००० बार जपने से सत्–कार्यो मे वृद्धि हो, देवगण भी प्रसन्न हो, जय'–जयकार हो, सब प्रकार का सुख मिले और अत मे समाधिमरण का गौरव प्राप्त हो।

।। इति षष्ठम मण्डल ।।

ॐ ह्रीं ऍं ॐ जीं जौं चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागर-वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु। मम मनोवांछितं पूरय-पूरय स्वाहा।

विधि- इस मत्र का पूर्वदिशा की ओर मुह रख कर १००० जप करने से सब प्रकार से मन की आशा पूर्ण हो। यश और प्रतिष्ठा बढे। सब लोगो का पूजनीय हो।

।। इति सप्तम मण्डल ।।

।। उपसर्गहर स्त्रोत का कल्प ।।

(१) ॐ ह्रीं, श्रीं अर्हम् नमिऊण, पास विसहर, वसह, जिण, फुलिंग, ह्रीं श्रीं नमः।

विधि- उपसर्ग–हर स्तोत्र चौदह पूर्वधर भद्रबाहु स्वामी का बनाया हुआ है। महान् प्रभावशाली है। वह उपसर्गहर स्तोत्र का मूल बीजमत्र है। अतएव कोई भी सकट आ जाए तो पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठे, सबसे पहले 'श्रीभद्रबाहुस्वामिप्रसादात् एव योग फलतु'– ऐसा कहे, फिर ऊपर लिखे बीजमत्र की एक माला

पद्मासन लगातार पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके फेरे और बाद मे उपसर्ग स्त्रोत्र २७ बार पढे। इस प्रकार २७ दिन तक निरतर साधना करने से सब सकट दूर हो जाते है तथा सब प्रकार के आनद, मगल और सुख–समृद्धि की प्राप्ति होती है।

(२) ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीं स्वाहा !

विधि- इस मत्र का जप १०८ बार प्रतिदिन करने से सब प्रकार का सकट दूर हो, राज्य– भय दूर, हो, सघर्ष मे विजय हो।

(३) ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्डस्वामिने नमः।

विधि- इस मत्र का सवा लाख जप करने से कठिन से कठिन कार्य की सिद्धि हो, दरिद्रता दूर हो, लक्ष्मी की प्राप्ति हो। यह जप २१ दिन मे पूर्ण करे। एक बार भोजन करे, ब्रह्मचर्य से रहे और भूमि पर शयन करे।

(४) ॐ नमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय क्षेमं कराय ह्रीं नमः।

विधि- यह क्षेम करने वाला मत्र है। अचानक आने वाला सकट और भय सब दूर हो।

(५) ॐ ह्रीं श्रीं हर-हर स्वाहा।

विधि- यह मत्र प्रतिदिन १०८ बार जप करने के लिए है। रोग हो, आपत्ति हो, किसी भी प्रकार की चिता हो, वह इस मत्र से दूर हो जाती है।

।। संतिकर स्तोत्र की साधना ।।

पर्यूषण पर्व पर अथवा दीपवली के अवसर पर तेला करके सम्पूर्ण सतिकर स्तोत्र का प्रतिदिन १०८ बार पाठ करना चाहिए। उक्त साधना करने के बाद जब कभी रोग, ज्वर आदि किसी का प्रकोप हो, तब ७ बार सम्पूर्ण सतिकर स्तोत्र पढने के बाद दूसरी और तीसरी गाथा का १०८ बार जप करना, सब प्रकार से शीघ्र ही शाति हो।

पाक्षिक, चौमासी और सावत्सरिक प्रतिक्रमण करने के बाद तीन बार सतिकर स्तोत्र का पाठ पढे और दूसरे सब भाई खडे होकर श्रवण करे। ऐसा करने से किसी प्रकार के उपद्रव की शका नही रहती।

।।तिजय पहुत्त स्तोत्र की साधना।।

यह १७० तीर्थकर देवो की स्तुति करने वाला स्तोत्र है। जैन–ससार मे इसकी बहुत बडी महिमा है।

"हर हुंहः सर सुंसुः ॐ क्लीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा!"

इस मत्र का जाप करने से अत्यत कोपायमान अथवा रूष्ठ राजा या शत्रु आदि भी प्रसन्न हो जाता है।

।। तिजय पहुत्त का सर्वतोभद्र यंत्र ।।

२५ ह	८० र	क्षि	१५ हु	५० ह
२० स	४५ र	प	३० सु	७५ स
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
७० ह	३५ र	स्वा	६० हु	५ ह
५५ स	१० र	हा	६५ सु	४० स

इस यत्र का हृदय मे ध्यान करने से बुद्धि निर्मल होती है, सब प्रकार के रोग व सकट दूर हो जाते है। यह यत्र केशर, चदन आदि सुगधित द्रव्य से शुद्ध थाली आदि पात्र मे लिख कर प्रासुक गर्म जल से धोकर रोगी को पिलाने से रोग भी दूर हो जाता है। इस यत्र को दीपावली पर्व पर केशर आदि सुगधित द्रव्य से कागज पर लिखे और १०८ बार पूर्ण तिजयपहुत्त स्तोत्र पढकर उसे सिद्ध कर ले, फिर हमेशा अपने पास रखे तो अपने परिवार और समाज मे सबको प्रिय हो, मान–प्रतिष्ठा बढे, तथा लक्ष्मी की प्राप्ति हो।

।। नमिऊण स्तोत्र की साधना ।।

(१) ॐ नमो भगवओ अरहओ अजिय भगवई महाविज्जा

य अजिअए उवसोमए अणिहए महाविज्जा सुभंकरे स्वाहा।

विधि- यह मत्र चौविहार उपवास करके १००८ बार श्वेत माला से जपना चाहिए। इसके सिद्ध हो जाने पर सब कामनाए पूर्ण हो जाती है।

(२) ॐ नमो अरहंताणं, ॐ नमो भगवईए चंदाई महाविज्जाए।

विधि- ग्राम मे प्रवेश करते समय इस विद्या का सात बार जप करने से कार्य मे सफलता प्राप्त होती है। सम्मान बढता है। परन्तु पहले भगवान पार्श्वनाथ के जन्मदिन 'पौष वदी दशमी' के दिन उपवास रख कर एक हजार जप करके विद्या सिद्ध कर लेनी चाहिए।

(३) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्ह नमः।

विधि- इस मत्र का तीनो काल– प्रात, दोपहर और सायकाल १०८बार जप करने से सब कार्य की सिद्धि होती है।

(४) नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंग।

विधि- नमिऊण स्तोत्र की २३वी गाथा मे जो अठारह अक्षर का मत्र बताया है, वह यही है। यह चितामणि मत्र है। साधना की विधि के लिए मत्राधिराज चितामणि ग्रथ देखना चाहिए। सक्षेप मे, एक माला सूर्योदय के समय फेरनी चाहिए। मन की सब चित दूर हो।

॥ भक्तामर स्तोत्र की साधना ॥

भक्तामर स्तोत्र दोपहर से पहले ही पढना चाहिए, सूर्योदय का समय सबसे उत्तम है। वर्षभर निरतर पढना शुरू करना हो तो श्रावण, भादवा, कार्तिक, मगसिर, पौष या माघ मे करे। तिथि पूर्णा, नदा और जया हो, रिक्ता न हो। शुक्ल–पक्ष हो। उस दिन उपवास रखे या एकाशन करे। ब्रह्मचर्य से रहे।

भक्तामर का दूसरा काव्य लक्ष्मी की प्राप्ति और शत्रु विजय के लिए है। इसी प्रकार छठा बुद्धि विकास के लिए, दसवा वचन–सिद्धि के लिए, ग्यारहवा खोई हुई वस्तु की पुन प्राप्ति के लिए है। पद्रहवा ब्रह्मचर्य, स्वप्नदोष की निवृत्ति, राजदरबार मे सम्मान, प्रतिष्ठा और लक्ष्मी की वृद्धि के लिए है। उन्नीसवे से दूसरो के द्वारा किए हुए जादू, भूत–प्रेत का असर दूर हो, रोजगार अच्छा हो– जन्मदरिद्र भी भूखा न रहे। बीसवे से पुत्र की प्राप्ति हो। इक्कीसवे से स्वजन और परजन सबका प्रेम प्राप्त हो। अठाईसवे से सब प्रकार की मन की शुभ इच्छा पूर्ण हो। छत्तीसवे से सम्पत्ति का लाभ हो। पैतालीसवे से सब प्रकार का भय और उपसर्ग दूर हो, छियालीसवे से राजा का भय दूर हो, जेलखाने से छूटे आदि।

ऊपर बताये काव्यो का जप एक माला फेरकर प्रतिदिन प्रात काल के समय करना चाहिए। यह भक्तामर स्तोत्र महान् प्रभावशाली है। सब प्रकार के आनद–मगल करने वाला है। इसके कर्ता आचार्य मानतुग है। पाठ पूर्व और उत्तर दिशा की ओर मुख करके करना ठीक है।

।। कल्याण-मंदिर की साधना ।।

यह कल्याण–मदिर स्तोत्र आचार्य सिद्धसेन दिवाकर–कृत है। जैन और अजैन ससार मे इसका बहुत अधिक महत्त्व है। यह चमत्कारी स्तोत्र है। इसका पाठ सध्या, सूर्यास्त के समय या सोते समय करना चाहिए। वर्षभर के लिए निरतर जप करना हो, तो भगवान् पार्श्वनाथ के जन्मदिन पोषवदी दशमी के दिन से शुरू करना चाहिए। उस दिन उपवास रखे, ब्रह्मचर्य से रहे। स्तोत्र का पाठ पूर्व और उत्तर दिशा की तरफ मुख करके करना चाहिए।

कल्याण–मदिर का पाचवा काव्य लक्ष्मी और व्यापार के लिए, छठा सतान प्राप्ति के लिए है। दसवे से सब प्रकार के भय दूर हो। सतरहवे से गृह–क्लेश दूर हो। पच्चीसवे से रोग–शोक दूर हो। सत्ताईसवे से शत्रु शात हो, विजय हो। इकत्तीसवे से शुभाशुभ प्रश्न का उत्तर मिले। सैतीसवे से राजा, प्रजा और परिवार मे सम्मान हो, प्रतिष्ठा बढे। तैतालीसवे से बदीखाने से छूटे, सब प्रकार से लक्ष्मी का लाभ हो। प्रतिदिन एक माला का जप करना चाहिए।

।। तपश्चरण की विधि ।।

तीर्थंकर-गोत्रतप

(बीस स्थानक तप)

तीर्थकर गोत्र बध के बीस बोल बताए है। उनके तप का जैन–ससार मे बहुत प्रचलन है। बीस स्थानक तप की बीस ओली पूर्ण करनी होती है। एक ओली मे बीस पद की आराधना करनी

चाहिए। जिस दिन पद की आधारना करे, उस दिन ब्रह्मचर्य मे रहना चाहिए और जमीन पर सोना चाहिए। शक्ति हो तो उपवास करे, अन्यथा आयबिल या एकासन करे। जिस दिन जिस पद की आराध ाना हो, उस दिन नीचे लिखे अनुसार उसी पद की बीस माला फेरे। यह तप महान् है। शुद्ध आराधना होने से तीर्थकर गोत्र का बध हो, तीसरे भव मे मोक्ष प्राप्त हो। माला–जप का क्रम इस प्रकार है–

१. नमो अरहताण	२. नमो सिद्धाण
३. नमो पवयणस्स	४. नमो अयरियाण
५. नमो थेराण	६. नमो उवज्झयाण
७. नमो लोए सव्वसाहूण	८. नमो नाणस्स
९. नमो दसणस्स	१०. नमो विनयसपन्नाण
११. नमो चरित्तस्स	१२. नमो बभवयधारीण
१३. नमो किरियाण	१४. नमो तवस्सीण
१५. नमो गोयमस्स	१६. नमो जिणाण
१७. नमो चरणस्स	१८. नमो अपुव्वनाणस्स
१९. नमो सुयनाणस्स	२०. नमो तित्थस्स

विधि- कुछ पुराने ग्रथो मे उपर्युक्त जप के पहले ॐ ही का भी उल्लेख मिलता है। जैसे ॐ ही नमो अरहताण, ॐ ही नमो सिद्धाण इत्यादि।

।। अष्टकर्म सूदन तप ।।

१. **ज्ञानावरणीय-** एक उपवास का तप। पाच लोगस्स का ध्यान। ॐ ही अनत–ज्ञानगुणेभ्यो नम– इस मत्र की बीस माला फेरनी चाहिए।

२. **दर्शनावरणीय-** एकासणा। नौ लोगस्स का ध्यान। 'ॐ ही अनत दर्शनगुणेभ्यो नम' की बीस माला।

३. **वेदनीय-** एकलसिथ (एक अन्न का दाना ही खाना, शेष तप)। दो लोगस्स का ध्यान। 'ॐ ही अव्याबाधगुणेभ्यो नम' की बीस माला।

४. **मोहनीय-** एकलठाणा (एक बार और एक साथ एक आसन से ही आहार तथा जल ग्रहण करना) अठाईस लोगस्स का ध्यान। 'ॐ ह्री यथाख्यातगुणेभ्यो नम' की बीस माला।

५. **आयुकर्म** - एकदत्ति (एक बार मे एक साथ जो मिले वही खाना, दुबारा नही लेना) चार लोगस्स का ध्यान। 'ॐ ही अक्ष्यनिधिगुणेभ्यो नम' की बीस माला।

६. **नामकर्म-** निवी (घी, दूध और नमक से रहित रूखा खाना) एक सौ तीन लोगस्स का ध्यान। 'ॐ ही अरूपरगुणेभ्यो नम' की बीस माला।

७. **गोत्रकर्म-** आयबिल। दो लोगस्स का ध्यान, 'ॐ ही अगुरूलघुगुणेभ्यो नम.' की बीस माला।

८. **अंतराय-** अष्ट कवल (सिर्फ आठ कौर अर्थात् ग्रास,

खाना) पाच लोगस्स का ध्यान। 'ॐ ही अनतवीर्यगुणेभ्यो नम' की बीस माला।

॥ रोहिणी तप ॥

सत्ताईस नक्षत्रो मे चौथा नक्षत्र रोहिणी है। यह नक्षत्र महीने मे जिस दिन हो, उस दिन उपवास करे और वासुपूज्य–स्वामी की तीन बार भाव वदना करके **'ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनाय नमः'**– इस मत्र की बीस माला फेरे। इस प्रकार सात वर्ष और सात महीने तक यह तप किया जाता है। रोहिणी तप स्त्रिया करती है। इस तप की आराधना करने से मन की अभिलाषा पूर्ण हो, सौभाग्य की वृद्धि हो, पुत्रादि के अभाव का शोक दूर हो।

॥ वर्धमान आयंबिल तप ॥

प्रथम एक आयबिल करे और ऊपर एक उपवास, फिर दो आयबिल और ऊपर एक उपवास, फिर तीन आयबिल और ऊपर एक उपवास– इस क्रम से बढते–बढते सौ आयबिल और ऊपर एक उपवास करे, इस तप से हिसाब से कुल सौ उपवास और पाच हजार पचास आयबिल होते है। इस तप मे तप के दिन 'ॐ ह्री नमो जिणाण' की बीस माला जपनी चाहिए। बारह लोगस्स का ध्यान करे।

॥ ज्ञान-पंचमी तप ॥

कार्तिक सुदी पचमी से यह तप शुरू किया जाता है। हर एक

महीने की सुदी पचमी को उपवास करते हुए पाच वर्ष और पाच मास मे पैसठ उपवास होते है। इस तप मे उपवास के दिन 'ॐ ही नमो नाणस्स' इस मत्र की बीस माला फरेनी चाहिए और इक्कावन लोगस्स का ध्यान करना चाहिए।

॥ पौष दशमी तप ॥

पौष वदी दशमी के पहले 'नवमी' के दिन शक्कर के पानी का एकासणा करे, यानी उस दिन सिर्फ गर्म जल मे शक्कर डालकर एक बार पीवे। बाद मे दशमी के दिन भोजन तथा जल एक साथ एक आसन से ही लेवे और फिर चउविहार करले। फिर एकादशी दिन नवमी के समान शक्कर के पानी का एकाशन कर ले। तीनो दिन ब्रह्मचर्य से रहे, जमीन पर सोए और यदि प्रतिक्रमण आता हो तो सुबह–शाम प्रतिक्रमण भी करे। तीनो दिन 'ॐ ही श्री पार्श्वनाथाय अर्हते नम' इस मत्र की बीस माला फेरे। फिर हर महीने की वदी दशमी को उपवास या एकलठाणा करते रहे। यह तप दस वर्ष मे पूर्ण होता है।

॥ पंचरंगी तप ॥

इस तप मे २५ पुरुष अथवा २५ स्त्रिया होती है।

पहले दिन– पाच जने पाच–पाच उपवास यानी पचोला करे। प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति 'मतिज्ञानाय नम.' पद की दस माला

फेरे। अठाईस लोगस्स का ध्यान करे।

दूसरे दिन– पाच जने चार–चार उपवास यानी चौला करे और प्रतिदिन 'श्रुतज्ञानाय नम' पद की बीस माला फेरे। चौदह लोगस्स का ध्यान करे।

तीसरे दिन– पाच जने तीन–तीन उपवास यानी तेला करे और प्रतिदिन 'अवधिज्ञानाय नम' पद की बीस माला फेरे तथा छह लोगस्स का ध्यान करे।

चौथे दिन– पाच जने दो–दो उपवास यानी बेला करे और 'मन पर्यायज्ञानाय नम' पद की बीस माला फेरे। दो लोगस्स का ध्यान करे।

पांचवे दिन– पाच जने एक–एक उपवास करे और 'केवलज्ञानाय नम' पद की बीस माला फेरे। एक लोगस्स का ध्यान करे।

।। पाक्षिक तप ।।

किसी भी महीने की शुक्ल प्रतिपदा (सुदी एकम) से लेकर पूर्णिमा तक लगातार पद्रह उपवास करने का नाम 'पाक्षिक तप' है। यदि किसी साधक की लगातार पद्रह उपवास करने की शक्ति न हो, तो किसी एक महीने के पहले शुक्लपक्ष की दूज को, फिर तीसरे शुक्लपक्ष की तीज को, इस प्रकार एक–एक करके पद्रह शुक्लपक्ष मे पद्रह उपवास करे। प्रत्येक उपवास मे 'श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञाय

।। णमोक्कार मंत्र तप ।।

यह तप णमोक्कार मत्र का है। णमोक्कार मत्र के मूल पद पाच है। प्रत्येक के क्रमश सात, पाच, सात, सात और नौ अक्षर है। जिस पद के जितने अक्षर हो, उतने ही उपवास करे उसी पद की बीस माला फेरे।

।। नव-पद की ओली ।।

चैत्र सुदी एकम अथवा आसोज सुदी एकम से नवपद की ओली नौ दिन के लिए प्रारभ की जाती है। कुछ ग्रथकार चैत्र सुदी सप्तमी और आसोज सुदी सप्तमी से प्रारभ करके पूर्णिमा तक नौ दिन ओली मनाते है। आज कल इसी की परम्परा है। यदि तिथि घटती हो तो छठ से, और यदि बढती हो तो अष्टमी से भी प्रारभ किया जा सकता है। नौ दिन तक निरतर नौ आयबिल करने चाहिए।

प्रथम पद अरहत का है, गरम जल के साथ श्वेत रग यानी चावल का आयबिल करे। 'नमो अरहताण' की बारह माला जपे। दूसरा पद सिद्ध का है, लाल रग यानी गेहू आदि का आयबिल करे। 'नमो सिद्धाण' की आठ माला जपे। तीसरा पद आचार्य का है, पीले रग यानी चने का आयबिल करे। 'नमो आयरियाण' की छत्तीस माला जपे। चौथ पद उपाध्याय का है, हरे रग यानी मूग का आयबिल करे। 'नमो उवज्झयाण' की पच्चीस माला जपे। पाचवा

पद साधु का है, काले रग यानी उडद का आयबिल करे। 'नमो लोए सव्वसाहूण' की सत्ताईस माला जपे। अतिम चार पद क्रमश दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप के है। अत श्वते रग यानी चावल का आयबिल करे। पद के अनुसार ही 'क्रमश 'नमो दसणस्स' की सडसठ, 'नमो नाणस्स' की इक्यावन, 'नमो चरित्तस्स' की सत्तर, और 'नमो तवस्स' की पचास माला जपनी चाहिए।

॥ आसोज मास ॥

तीर्थकर	तिथि	कल्याणक	स्थान
२२	वदि ३०	केवल	रैवताचल
२१	सुदि ५	जन्म	मिथिला

यह कल्याण तप है। जिस दिन कल्याणक का दिन हो, उस दिन उपवास अथवा एकासणा करना, ब्रह्मचर्य से रहना। ऊपर दिए हुए कल्याणको मे नीचे लिख अनुसार २१ माला का जप करना चाहिए।

१. च्यवन– कल्याणक के दिन कल्याणक वाले तीर्थकर के नाम के साथ **'परमेष्ठिने नमः'** जपना चाहिए, जैसे–**'श्रीऋषभदेव परमेष्ठिने नमः', 'श्री अजितनाथ परमेष्ठिने नमः'** इत्यादि।

२. जन्मकल्याणक के दिन इसी प्रकार **'अर्हते नमः** जपना चाहिए। जैसे **'श्रीऋषभदेव-अर्हते नमः', 'श्री अजितनाथ- अर्हते नमः'** इत्यादि।

३. दीक्षा–कल्याणक के दिन **'नाथाय नमः'** जपना चाहिए। जैसे **श्री ऋषभनाथाय नमः', श्री अजितनाथाय नमः 'श्रीसभवनाथाय नमः'** इत्यादि।

४. केवल–ज्ञान–कल्याणक के दिन **'सर्वज्ञाय नमः'** जपना चाहिए। जैसे **श्री ऋषभदेव सर्वज्ञाय नमः श्री अजितनाथ सर्वज्ञाय नमः** इत्यादि।

।। चौबीस तीर्थंकरों के नाम ।।

१. श्री ऋषभदेवजी	२. श्री अजितनाथजी
३. श्री सभवनाथजी	४. श्री अभिनदन जी
५. श्री सुमतिनाथजी	६. श्री पद्मप्रभजी
७. श्री सुपार्श्वनाथजी	८. श्री चद्रप्रभजी
९. श्री सुविधिनाथजी	१०. श्री शीतलनाथजी
११. श्री श्रेयासनाथजी	१२. श्री वासुपूज्यजी
१३. श्री विमलनाथजी	१४. श्री अनन्तनाथजी
१५. श्री धर्मनाथजी	१६. श्री शातिनाथजी
१७. श्री कुथुनाथजी	१८. श्री अरनाथजी
१९. श्री मल्लिनाथजी	२०. श्री मुनिसुव्रतजी
२१. श्री नमिनाथजी	२२. श्री अरिष्ठनेमिजी
२३. श्री पार्श्वनाथजी	२४. श्री महावीर स्वामीजी

बीस विहरमान तीर्थंकरों के नाम

१. श्री सीमधरस्वामी
२. श्री युगमदिरस्वामी
३. श्री बाहुस्वामी
४. श्री सुबाहुस्वामी
५. श्री सुजातस्वामी
६. श्री स्वयप्रभस्वामी
७. श्री ऋषभाननस्वामी
८. श्री अनतवीर्यस्वामी
९. श्री सूरप्रभस्वामी
१०. श्री विशालस्वामी
११. श्री वज्रधरस्वामी
१२. श्री चद्राननस्वामी
१३. श्री चद्रबाहुस्वामी
१४. श्री भुजड्गस्वामी
१५. श्री ईश्वरस्वामी
१६. श्री नेमीश्वरस्वामी
१७. श्री वीरसेनस्वामी
१८. श्री महाभद्रस्वामी
१९. श्री देवयशस्वामी
२०. श्री अजितवीर्यस्वामी

ग्यारह गणधरों के नाम

१. श्री इन्द्रभूतिजी
२. श्री अग्निभूतिजी
३. श्री वायुभूतिजी
४. श्री व्यक्तस्वामीजी
५. श्री सुधर्मास्वामीजी
६. श्री मण्डितपुत्रजी
७. श्री मौर्यपुत्रजी
८. श्री अकपितजी
९. श्री अचलभ्राताजी
१०. श्री मेतार्यस्वामीजी
११. श्री प्रभासस्वामीजी

सोलह सतियों के नाम

१. श्री ब्राह्मीजी
२. श्री सुदरीजी
३. श्री कौशल्याजी
४. श्री सीताजी
५. श्री राजीमतीजी
६. श्री कुतीजी
७. श्री द्रोपदीजी
८. श्री चदनबालाजी
६. श्री मृगावतीजी
१०. श्री पुष्पचूलाजी
११. श्री प्रभावतीजी
१२. श्री सुभद्राजी
१३. श्री दमयतीजी
१४. श्री सुलसाजी
१५. श्री शिवादेवीजी
१६. श्री पद्मावतीजी

॥ माला ॥

जप के लिए माला उत्तम साधन है। माला दाहिने हाथ मे रखनी चाहिए। अगूठे और अगूठे से जो तीसरी अगुली मध्यमा है, इन दोनो से माला फेरना ठीक है। दूसरी अगुली अर्थात् तर्जनी से भूल कर भी माला न फेरे। माला फेरते समय हाथ को हृदय के पास स्पर्श करते हुए रखना चाहिए। माला मे जो सुमेरू होता है, उसे लाघना ठीक नही है। यदि दूसरी माला फेरनी हो, तो वापस माला बदल कर फेरनी चाहिए। परन्तु आजकल माला के सबध मे विवेक नही रखा जाता है, अत अभीष्ट सिद्धि नही हो पाती है।

।। कर-माला आवर्त्त ।।

आवर्त्त से जप करना माला की अपेक्षा श्रेष्ठ है। प्राचीन काल मे कर–माला से जप किया जाता था, क्योकि यह मन की एकाग्रता मे अधिक सहायक हो सकती है।

कर–माला के आवर्त्त छह है– १. साधारण आवर्त्त, २. शखावर्त, ३. नव–पद आवर्त्त, ४. ही आवर्त्त, ५. नदावर्त्त और ६. ॐ आवर्त्त।

उदाहरण के लिए हम प्रथम साधारण आवर्त्त का परिचय करा देते है, उसी के अनुसार दूसरे आवर्त्तो का भी चित्रो से परिचय किया जा सकता है। दाहिने हाथ की कनिष्ठा अगुली के नीचे के पौरवे से जपना प्रारभ करे। इस प्रकार क्रम से कनिष्ठा के तीनो पौरवे, चौथा अनामिका के ऊपर का, पाचवा मध्यमा के ऊपर का, छठा तर्जनी के ऊपर का, सातवा तर्जनी के मध्य का, आठवा तर्जनी के नीचे का, नौवा मध्यमा के नीचे का, दशवा अनामिका के नीचे का, ग्यारहवा अनामिका के मध्य का और बारहवा मध्यमा के अध्य का– इस प्रकार बारह जप हुए। अस्तु, नौ बार गिन लेने से एक माला पूरी हो जाती है। आवर्त्त के चित्र साथ मे सलग्न है।

पटनावर्त्त

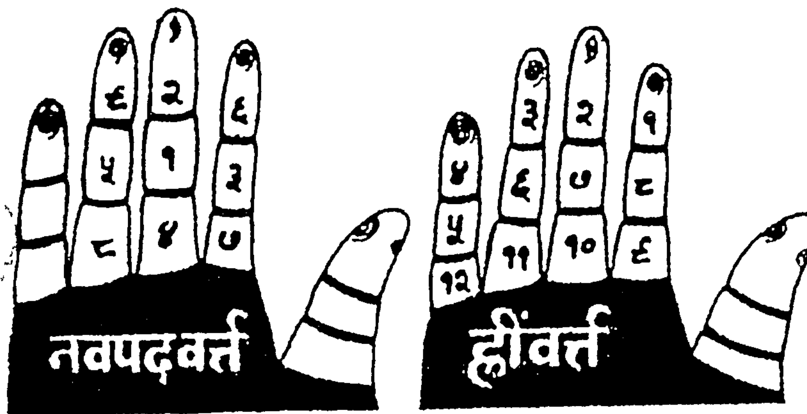
पटनावर्त्त मे पाच पदो का जप किया जाता है। नवकार मत्र के प्रथम पद 'नमो अरहताण' का ब्रह्मरध्र मे, दूसरे पद का ललाट

मे, तीसरे पद का कठ मे, चौथे पद का हृदय मे और पाचवे पद का नाभि कमल मे, इस प्रकार पचपरमेष्ठी का ध्यान करे।

पटनावर्त्त का दूसरा प्रकार यह है कि प्रथम पद ब्रह्मरध्र मे, दूसरा ललाट मे, तीसरा चक्षु मे, चौथा श्रवण मे और पाचवा मुख मे स्थापित करके ध्यान करे।

सिद्धावर्त्त

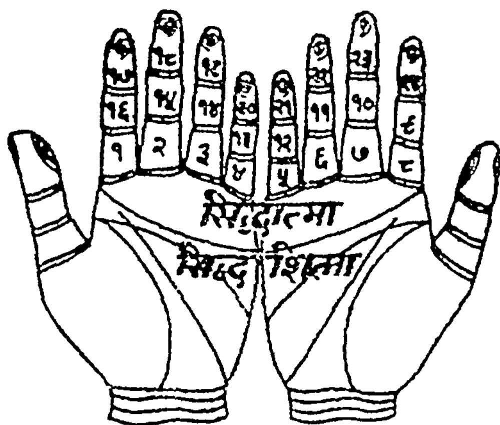
सिद्धावर्त्त मे वर्तमान काल के चौबीस तीर्थकर, जो मोक्ष प्राप्त कर चुके है, उनका ध्यान किया जाता है। दोनो हाथो को मुख के सामने खुले रख कर दोनो हाथो की आयुष्य रेखा को बराबर मिलावे, जो सिद्धशिला की आकृति के समान भासित होने लगे। इसके बाद दोनो हाथो की आठो अगुलियो के चौबीस पोरवो पर चित्र के अनुसार (चित्र साथ मे है) चौबीस तीर्थकारो का ध्यान करे। जप करते समय प्रत्येक तीर्थकर का जप इस प्रकार करे– पहले अक पर **'ॐ ह्रीं श्रीं ऋषभदेवाय नमः।'** दूसरे अक पर 'ॐ ही श्री अजितनाथाय नम'। तीसरे अक पर **'ॐ ह्रीं श्रीं संभवनाथाय नमः'** इत्यादि गुरुगम से समझ लेना चाहिए।


नवपदवर्त्त
ह्रीवर्त्त


४
५
६
३
११
१२
७
२
१०
९
८
१
आवर्त


७
८
९
६
२
१
१०
५
३
१२
११
४
शखावर्त


नन्द्यावर्त्त
ॐवर्त्त


१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
सिद्धात्मा
सिद्ध शिला

मंगल मंत्र और यंत्र

''नमिऊण असुर - सुर - गरुल-भुयग-परिवंदिए।

गयकिलेसे अरिहे, सिद्धायरिए उवज्झाय सव्वसाहूणं।।''

विधि- यह चद्रप्रज्ञप्ति सूत्र का मगलाचरण है, जो अती प्रभावशाली है। इस मत्र का शुद्ध उच्चारण के साथ शारीरि शुद्धिपूर्वक नित्य प्रति प्रात काल २१ बार जप करना चाहिए। सब प्रकार से आनद–मगल हो, आपत्ति, सकट दूर हो।

ॐ	ही	श्री	न	मि	ऊ	ण
ग	य	कि	ले	से	अ	अ
ए	य	स	व्व	सा	रि	सु
दि	ज्झा	न	म	हू	हे	र
व	व	श्री	ही	ण	सि	सु
रि	उ	ए	रि	य	द्धा	र
प	ग	य	भु	ल	रु	ग

यह यत्र चद्रप्रज्ञप्ति के उपर्युक्त मत्र के आधार पर बना है। केशर या अष्टगध से लिख कर पास रखने से भूत–प्रेत, जादू–टोने आदि सब प्रकार के भय दूर हो।

घंटाकर्ण मंत्र

ॐ घटाकर्णो महावीर सर्वव्याधि–विनाशक।
विस्फोटकभय प्राप्ते, रक्ष – रक्ष महाबल ।।१।।

यत्र त्व तिष्ठसे देव! लिखितोऽक्षर–पक्तिभि ।
रोगास्तत्र प्रणश्यति, वातपित्तकफोद्भवा ।।२।।

तत्र राजभय नास्ति, याति कर्णे जपात्क्षयम्।
शाकिनी–भूतवेताला, राक्षसा प्रभवति नो ।।३।।

नाकाले मरण तस्य न च सर्पेण दृश्यते ।
अग्निचौरभय नास्ति, ॐ ह्री श्री घटाकर्ण ।
नमोस्तु ते। ॐ नरवीर। ठ ठ ठ स्वाहा।

विधि- घटाकर्ण मत्र का २१ बार जप करने से राज भय, चोर–भय, अग्नि और सर्प का भय दूर होवे। सब प्रकार की भूत–प्रेत–बाधा भी दूर हो।

दीपावली यंत्र

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्री	श्री	क्ली

विधि- दीपावली के दिन उपवास रखे, शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य पाले। पहली आधी रात तक ''नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स' – इस मत्र की माला फेरे और आधी रात के पश्चात् सूर्योदय तक 'ॐ नमो भगवओ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीणमहाणस्स'' मम मनोवांछित्त आणय-आणय पूरय-पूरय ऋहिं वृद्धि सर्वसिद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा। इस मत्र का जाप करे। अर्धरात्रि के समय या सूर्योदय के समय केशर या अष्टगध से उपर्युक्त यत्र लिख कर अपने पास रखे। लक्ष्मी की प्राप्ति हो, सब प्रकार से आनद हो।

तिथि आदि का विचार

जैन–ज्योतिष मे पद्रह तिथियो के पाच प्रकार बताए गए है–नदा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा। इनमे 'रिक्ता' शुभकार्य मे वर्जनीय है, बाकी सब शुभ है। कौन–से दिन कौन–सी तिथि होती है? इसके लिए निम्नाकित यत्र देखिए–

१	६	११	नदा
२	७	१२	भद्रा
३	८	१३	जया
४	६	१४	रिक्ता
५	१०	१५	पूर्णा

सिद्धि योग

नदातिथि को शुक्रवार हो, भद्रा को बुधवार हो, जया को मगलवार हो, रिक्ता को शनिवार और पूर्णा को गुरुवार हो, तो सिद्धि–योग माना जाता है। सिद्धि–योग मे किए हुए शुभकार्य सफल होते है। नीचे के यत्र मे स्पष्टतया समझ लीजिए कि कौन–सी तिथ और कौन–से वार को सिद्धि–योग होता है।

१	६	११	शुक्र
२	७	१२	बुध
३	८	१३	मगल
४	९	१४	शनि
५	१०	१५	गुरु

मृत्यु-योग

१	६	११	रवि, मगल
२	७	१२	सोम, गुरु
३	८	१३	बुध
४	९	१४	शुक्र
५	१०	१५	शनि

विधि- मृत्यु–योग अशुभ माना जाता है, इसलिए कोई भी शुभकार्य इन दिनो मे प्रारभ नही करना चाहिए।

सूर्य-दग्धा तिथि

धन तथा मीन सक्राति की दौज, वृष तथा कुभ की चौथ, मेष तथा कर्क की छठ, कन्या तथा मिथुन की आठम, वृश्चिक तथा सिह की दशमी, मकर तथा तुला सक्राति की बारस–सूर्यदग्धा तिथि होती है। ये तिथिए सभी शुभ कार्यो मे निषेध है।

चंद्र-दग्धा तिथि

धन तथा कुभराशि का चद्रमा होने पर दौज, मेष तथा मिथुन राशि का चद्रमा होने पर चौथ, तुला तथा सिह राशि का चद्रमा होने पर छठ, मीन तथा मकर राशि का चद्रमा होने पर आठम, वृष तथा कर्क राशि का चद्रमा होने पर दशमी, वृश्चिक तथा कन्या राशि का चद्रमा होने पर बारस–चद्र–दग्धा तिथि मानी जाती है। शुभ कार्य आरभ करते समय इनका भी निषेध है।

अमृत-सिद्धियोग

रविवार को हस्त नक्षत्र हो, गुरुवार को पुष्य हो, बुधवार को अनुराधा हो, शनिवार को रोहिणी हो, सोमवार को मृगशिर हो, शुक्रवार को रेवती हो, और मगलवार को अश्विनी नक्षत्र हो–तो अमृतसिद्धि–योग बनता है। इस योग मे किए गए कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो जाते है।

विजय-योग

विजय योग प्रतिदिन आता है। प्रत्येक दिन के चार पहर होते है। उनमे पहले दो पहर की आखिरी घडी और आगे के दो पहर की पहली घडी, विजय--योग की होती है, इस योग मे किए हुए कार्य सफल होते है। जैन ज्योतिष मे इसकी बडी महिमा है।

चंद्र-विचार

राशि	दिशा
मेष, सिह, धनु	पूर्व दिशा मे
वृष, कन्या, मकर	दक्षिण दिशा मे
मिथुन, तुला, कुभ	पश्चिम दिशा मे
वृश्चिक, कर्क, मीन	उत्तर दिशा मे

सूचना- यात्रा मे सम्मुख चद्रमा हो तो अर्थ का लाभ होता है, दाहिनी तरफ हो तो सुख तथा सम्पत्ति, पीठ पीछे हो तो प्राणो की पीडा और बाई तरफ हो तो धन का क्षय होता हे।

दिशा-शूल विचार

सोम और शनिवार	पूर्व दिशा मे
गुरुवार	दक्षिण दिशा मे
रवि और शुक्रवार	पश्चिम दिशा मे
बुध और मगलवार	उत्तर दिशा मे

विधि- यात्रा मे दिशा–शूल सामने और दाहिने अच्छा नही होता है। यदि किसी आवश्यक कार्य के लिए दिशा–शूल के होते भी जाना पडे तो एक प्राचीन कथन के अनुसार नीचे लिखी वस्तुओ का वार के क्रम से सेवन करे–

गुड मंगल, बुध खांड, बृहस्पति राई खाजे।
शुक्र दही शनिश्चर वायबिडंग खाजे।।
रवि तंबोल, सोम दर्पण, एता कर दिशाशूल भी जावे!

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

विधि- ऊपर के कोष्ठक से यह समझना चाहिए कि ।८ दिन जो वार हो, उस दिन उसी वार के नीचे लिखा ६ चौघडिया (चार घडी का समय) सूर्योदय के समय मे बैठता वह पहला चौघडिया समझना चाहिए। उसके उतरने के ब। उस वार से छठे वार का चौघडिया बैठता है, वह उस व का दूसरा चौघडिया समझना चाहिए। दूसरे के उतरने के ब। उस छठे वार से छठे वार का चौघडिया बैठता है, वह ७ वार का तीसरा चौघडिया समझना चाहिए। यही क्रम आगे म समझना चाहिए।

उदाहरण के लिए देखिए - रविवार के दिन पहला उद्वेग नामक चौघडिया है। उसके उतरने के बाद रविवार से छठवा वार शुक्र है, जिसका चौघडिया चल है, सो वह रविवार का दूसरा चौघडिया हुआ। इसी क्रम से प्रत्येक वार के दिन–भर का चोघडिया जान लेना चाहिए।

जैसे– उदयपुर मे १ जनवरी को सूर्योदय ७ बजकर २० मिनट और सूर्यास्त ५ बजकर ५३ मिनट पर होता है। सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच का समय १० घण्टा ३३ मिनट हुआ। १० घण्टा ३३ मिनट का ८वा हिस्सा १ घण्टा १६ मिनट हुआ वह दिवस का पहला चौघडिया हुआ। इसी प्रकार रात्रि का प्रथम चौघडिया १ घण्टा ४१ मिनट का होगा। इसी क्रम से सर्दी–गर्मी के प्रतिदिन सूर्योदय से

सूर्यास्त के समय के अनुसार दिवस और रात्रि चौघडियो का कालमान समझना चाहिए। क्रमश इनमे से अमृत, शुभ और लाभ– ये तीन चौघडिये उत्तम है तथा उद्‌वेग, रोग और काल– ये तीन चौघडिये अशुभ है। चल नामक चौघडिया मध्यम है। कोई भी शुभ कार्य अच्छे चौघडियो मे करना अच्छा माना जाता है।

रात्रि का चौघड़िया

रवि	सोम	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

के

ऊची छीक कही जयकारी, नीची छीक होय भय भारी।
अपनी छीक महादुखदाई, ऐसे छीक विचारो भाई।।

छीकत खाइए, छीकत पीइए, छीकत रहिये सोय।
छीकत पर घर मत जाइए, तुरत लडाई होय।।
एक नाक दो छीक, काम बने सब ठीक।।

स्वर-विज्ञान

प्रवास- बाहर ग्राम जाने मे, स्कूल या पुस्तकालय आदि के उदघाटन मे, गृह प्रदेश मे, वस्तु सचय करने मे और किसी भी शुभ कार्य मे चद्र नाडी, अर्थात्, नाक का बाया स्वर चलता हुआ श्रेष्ठ समझा जाता है।

युद्ध मे, विवाद मे, विद्यारभ मे, विध्न–शाति मे, व्यापार मे, व्यवहार मे तथा भोजन आदि अन्य छोटे–छोटे कार्यो मे सूर्य नाडी, अर्थात् नाक का दाहिना स्वर चलता हुआ उत्तम माना जाता है।

चद्र नाडी चलती हो, तो पूर्व और उत्तर दिशा मे शूल समझना चाहिए तथा सूर्यनाडी चलती हो, तब पश्चिम तथा दक्षिण दिशा मे शूल मानना चाहिए। शूल वाली दिशा मे गमन करना हितकारी नही है।

'ज्योतिष हीर' ग्रथ मे लिखा है कि कृष्ण पक्ष मे गुरुवार, शुक्रवार, बुधवार, सोमवार के दिन चद्र स्वर चलता हो तो विशेष शुभ माना जाता है तथा शुक्ल पक्ष मे रविवार, मगल और शनिवार के

दिन सूर्य स्वर चलता हो तो विशेष शुभ माना जाता है। रात्रि समय मे चद्र स्वर और दिन के समय मे सूर्य स्वर चलता हो यात्रा करना अच्छा समझा जाता है। 'दिन शुद्धि' ग्रथ मे कहा ‹‹ है कि जिस तरफ का स्वर चलता है, उसी तरफ का पैर ७० क गमन करने से कार्य मे सफलता प्राप्त होती है।

जब दोनो स्वर चलते हो, तब सुषुम्नानाडी होती है। ऽऽ नाडी मे किसी भी शुभकार्य का आरभ नही करना चाहिए।

दाहिने स्वर में भोजन खावे, वाये पीवे नीर।
बांई करवट सोवतां, रहे निरोग शरीर।।

श्रावक के तीन मनोरथ

श्रावक के लिए यह आवश्यक है, कि वह प्रतिदिन प्रात काल सामायिक करते समय अथवा वैसे भी मनोरथो के द्वारा भविष्य के लिए शुभसकल्प करे। भगवान् महावीर ने स्थानागसूत्र मे यह वर्णन किया है।

१– श्रावक का पहला मनोरथ यह है कि "वह धन्य दिन कब होगा, जब मै अपने धन–सम्पत्ति–रूप परिग्रह का पीडित जनता के हित के लिए त्याग गरूगा। यह परिग्रह मेरी आत्मा के लिए सबसे बडा बधन है। यह ममता का जहर आध्यात्मिक जीवन को दूषित कर रहा है। धन का सच्चा उपयोग सग्रह मे अथवा अपन स्वार्थ के

पोषण मे नही है, प्रत्युय जन–हित के लिए अर्पण कर देने मे है। अस्तु, जिस दिन मै अपने परिग्रह का जन–सेवा मे त्याग कर प्रसन्नता का अनुभव करूगा, ममता के भार से हलका हो जाऊगा, वह दिन मेरे लिए महान् कल्याणकारी होगा।"

२. श्रावक का दूसरा मनोरथ यह है, कि "वह धन्य दिन कब होगा, जब मे ससार की मोह–माया और विषय–वासना का त्याग करके साधु–जीवन स्वीकार करूगा? अहिसा आदि पाच महाव्रतो को धारण कर और परीषह उपसर्गो को समभाव से सहन कर जिस दिन मुनि पद की ऊची भूमिका मे विचरण करूगा, वह दिन मेरे लिए महान कल्याणकारी होगा।"

३. श्रावक का तीसरा मनोरथ यह है, कि "वह धन्य दिन कब होगा, जब मे अपनी सयम–यात्रा को सकुशल, निर्विघ्नभाव से पूर्ण कर अत समय मे आलोचना, निदना एव गर्हणा करके सथारा ग्रहण करूगा? सब प्रकार की उपाधि, आहार और जीवन की ममता का भी त्याग कर जिस दिन मै पूर्ण रूप से अपने आपको वीतराग भगवान् की उपासना मे लगाऊगा। वह दिन मेरे लिए कल्याणकारी होगा।"

प्रत्याख्यान-सूत्र

१. नमस्कार (नौकारसी) सहित सूत्र

उग्गए सूरे, नमोक्कारसहियं पच्चक्खामि चउव्हिहं पि आहारं-असण, पाणं, खाइमं, साइमं।

अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, वोसिरामि।

२. पौरुषी-सूत्र

उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं।

अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरामि।

३. पूर्वार्ध-(पुरिमड्ढ) सूत्र

उग्गए सूरे, पुरिमड्ढं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं।

अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेण, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरामि।

४. एकाशन-सूत्र

एगासणं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं।

अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारणेणं, गुरु'-अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठाव- णियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

५॰ एकस्थान-(एकलठाणा) सूत्र

एक्कासणं एगट्ठाणं पच्चक्खामि, तिविहं पि आहारं-असण, खाइमं, साइम।

अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेण, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

६॰ आचाम्ल-(आयंबिल) सूत्र

आयंबिलं पच्चक्खामि, अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, उक्खित्तविवेगेणं, गिहत्थ-संसट्ठेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागोरेण, वोसिरामि।

७॰ अभक्तार्थ-उपवास सूत्र

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि, चउव्हिहं पि आहारं-असणं, पाण, खाइमं, साइमं।

अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, परिट्ठाव- णियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

८॰ दिवसचरिम-सूत्र

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, चउव्हिहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं।

अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

९० अभिग्रह-सूत्र

अभिग्गहं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं।

अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

१०० निर्विकृतिक-(नीवी) सूत्र

विगईओ पच्चक्खामि, अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

उपवास, दिवसचरिम अभिग्रह आदि मे यदि पानी का आगार रखना हो तो 'चउव्विह' के स्थान पर 'तिविह' पाठ बोलना चाहिए और आगे 'पाण' का पाठ नही बोलना चाहिए।

प्रत्याख्यानपारणा सूत्र

उग्गए, सूरे, नमोक्कारसहिय..........पच्चक्खाणं कयं। तं पच्चक्खाणं सम्मं कायेण फासिय, पालिय, तीरियं, किट्टियं, सोहियं, आराहियं। जं च न आराहियं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सूचना- रिक्त स्थान का अभिप्राय यह है कि जो पच्चक्खाण (प्रत्याख्यान) किया हो, उसका नाम बोले जैसे कि नमोक्कारसहिय, पोरसी, एगासण आदि।